सचित्र

अनुयोगद्वार सूत्र

1

श्री अमर मुनि

Illustrated

Anuyog-dvar Sutra

Shri Amar Muni

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनुयोग द्वार सूत्र

अनुयोगद्वार सूत्र जैन आगमों की व्याख्या पद्धति बताने वाला अपनी शैली का अनूठा आगम है। इसे आगम ज्ञान के नगर का प्रवेश द्वार कहा जा सकता है। एक प्राचीन दोहे में कहा है–

ज्यों केले के पात में, पात–पात में पात।

त्यों ज्ञानी की बात में बात–बात में बात।

अनुयोग द्वार के विषय में यह सूक्ति यथार्थ लगती है। एक सूत्र के भेद–प्रभेद–उपभेद–अवान्तर भेद इस प्रकार इसमें बिन्दु का सिन्धु के रूप में विस्तार होता प्रतीत होता है और अन्त में पुनः उसी बिन्दु पर पहुँचकर समूचे विषय का समवतार किया जाता है।

तत्त्वविवेचन की सार्थक और संतुलित पद्धति के अनुसार इस सूत्र में विविध विषयों का विस्तार के साथ वर्णन है। इस आगम का अभ्यास करने पर प्राचीन धर्मग्रन्थों की वर्णन शैली सहज ही समझ में आ सकती है।

ANUYOG-DVAR SUTRA

An Introduction Anuyog-dvar Sutra is a unique Scripture that explains the method of detailed interpretation of Jain Agams. It can be called the gateway of the City of Agamic knowledge. A Hindi couplet aptly applies to the Subject-matter of Anuyog-dvar. That couplet means that a word of the seer leads to many interpretations just as the branch of a plantation has covering of leaves one after the other. One Sutra has many division, Sub-divisions and further divisions just as a drop expanding and expanding takes the shape of an Ocean. And again arriving at the drop, the entire subject is :

Following the meaningful and balanced style to comment on tattvas (the essence), this Sutra deals with many subjects in detail. By studying this book thoroughly, the style of ancient Jain scriptures can be easily understood.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आर्य रक्षित स्थविर संकलित

सचित्र
अनुयोगद्वार सूत्र
(प्रथम भाग)

मूल पाठ–हिन्दी–अंग्रेजी अनुवाद, विवेचन तथा रंगीन चित्रों सहित

✤ प्रधान सम्पादक ✤

उत्तर भारतीय प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. के सुशिष्य

उपप्रवर्तक श्री अमर मुनि

✤ सह-सम्पादक ✤

श्री तरुण मुनि

श्रीचन्द सुराना 'सरस'

✤ अंग्रेजी अनुवाद ✤

सुरेन्द्र बोथरा

पद्म प्रकाशन

पद्म प्रकाशन, नरेला मण्डी, दिल्ली-११० ०४०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सचित्र आगममाला का ग्यारहवाँ पुष्प

- आर्यरक्षित स्थविर संकलित श्री अनुयोगद्वार सूत्र (१)

- **प्रधान सम्पादक**
  उपप्रवर्तक श्री अमर मुनि

- **सह-सम्पादक**
  श्री तरुण मुनि
  श्रीचन्द सुराना 'सरस'

- **अंग्रेजी अनुवाद**
  सुरेन्द्र बोथरा, जयपुर

- **चित्रकार**
  डॉ. श्री त्रिलोक शर्मा

- **प्रकाशक एवं प्राप्ति-स्थान**
  पद्म प्रकाशन
  पद्म धाम, नरेला मण्डी, दिल्ली-११० ०४०

- **मुद्रण-व्यवस्था**
  दिवाकर प्रकाशन
  ए-७, अवागढ़ हाउस, एम. जी. रोड, आगरा-२८२ ००२
  दूरभाष : (०५६२) ३५११६५

- **प्रथम आवृत्ति**
  वि. सं. २०५७, चैत्र
  ईस्वी सन् २००१, मार्च

- **मूल्य**
  पाँच सौ रुपया मात्र

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ILLUSTRATED
ANUYOGADVAR SUTRA

Original compiled by ARYA RAKSHIT STHAVIR

(PART ONE)

Original text with Hindi and English translations, elaboration and colourful illustrations

✤ EDITOR-IN-CHIEF ✤

Up-pravartak Shri Amar Muni

(the disciple of Uttar Bharatiya Pravartak Bhandari Shri Padmachandra Ji Maharaj)

✤ ASSOCIATE-EDITORS ✤

Shri Tarun Muni

Srichand Surana 'Saras'

✤ ENGLISH TRANSLATION ✤

Surendra Bothara

PADMA PRAKASHAN

PADMA DHAM, NARELA MANDI, DELHI-110 040

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

THE ELEVENTH NUMBER OF THE ILLUSTRATED AGAM SERIES

- ILLUSTRATED ANUYOGADVAR SUTRA (PART ONE)
  (Orignially compiled by Arya Rakshit Sthavir)

- *Editor-in-Chief*
  Up-pravartak Shri Amar Muni

- *Associate-Editors*
  Shri Tarun Muni
  Srichand Surana 'Saras'

- *English Translator*
  Surendra Bothara (Jaipur)

- *Illustrator*
  Dr. Shri Trilok Sharma

- *Publisher and Distributor*
  Padma Prakashan
  Padma Dham, Narela Mandi, Delhi-110 040

- *Printer*
  Diwakar Prakashan
  A-7, Awagarh House, M.G. Road, Agra-282 002
  Phone : (0562) 351165

- *First Edition*
  Chaitra, 2057 V.
  March, 2001 A.D.

- *Price*
  Five Hundred Rupees only (Rs. 500)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

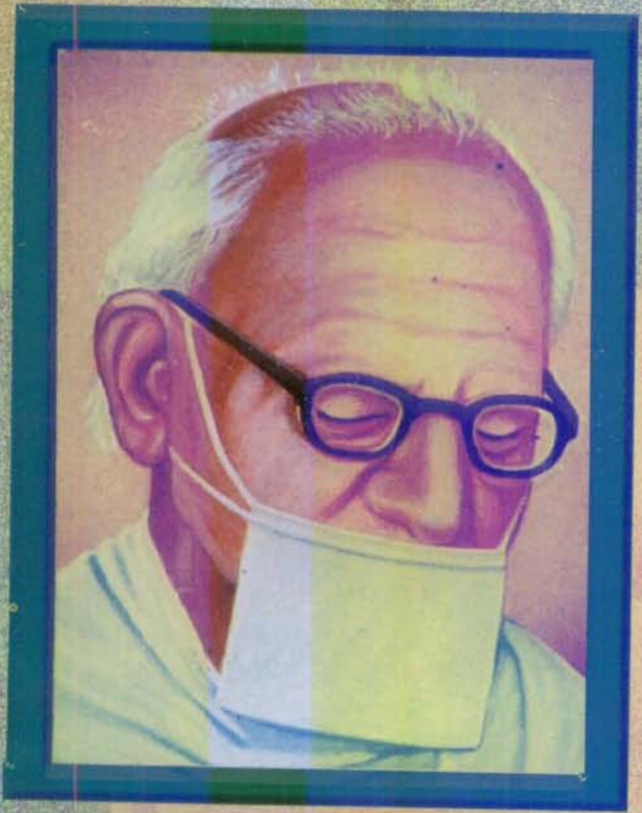

आगमज्ञान महोदधि
परम श्रद्धेय आचार्यसम्राट
श्री आत्मारामजी महाराज

को

सादर सविनय

समर्पण

भण्डारी मुनि पद्मचन्द्र
(उत्तरभारतीय प्रवर्तक)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रुत सेवा में समर्पित सहयोग प्रदाता

श्री ओ. पी. जैन (हरियाणवी)
पीतमपुरा, दिल्ली

श्री अभय कुमार जैन
शास्त्री नगर, दिल्ली

श्री मामचन्द जैन
कुरुक्षेत्र

श्री राजकुमार जैन गोविन्दगढ़ मण्डी

श्री अशोक कुमार जैन (शामड़ी वाले) रोहिणी, दिल्ली

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रुत सेवा में समर्पित सहयोगदाता

श्री रमेशचन्द्र प्रभुलाल शाह श्रीमती मालती बहन रमेश भाई शाह
गुजरात विहार, दिल्ली

श्री निमेष रमेशचन्द्र शाह, सौ. नमिता निमेष शाह
गुजरात विहार, दिल्ली

डॉ. श्री मोजी राम जैन श्रीमती पुष्पा जैन
(खेवड़े वाले) साकेत, दिल्ली

श्री पूर्ण चन्द जैन श्रीमती शान्ती देवी जैन
(मुआने वाले) रोहिणी, दिल्ली

श्री रामेश्वरदास जैन श्रीमती सुजानी देवी जैन
(मुआने वाले) पीतम पुरा, दिल्ली

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रुत सेवा में समर्पित सहयोग प्रदाता

माता शकुन्तला देवी जैन
मातेश्वरी श्री भारत भूषण जैन, श्री स्वदेश भूषण जैन
पश्चिम विहार, दिल्ली

श्री सूरज प्रकाश जैन
(स्यालकोट वाले)
विवेक विहार, दिल्ली

श्री चमनलाल जैन श्रीमती सुशीला रानी जैन
(बनूड वाले), सुन्दर नगर, लुधियाना

श्री सुरेन्द्र कुमार जैन
(दनौदा वाले) शालीमार बाग, दिल्ली

श्री प्रेमराज जैन
मुकर्जी नगर, दिल्ली

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशकीय

"ज्ञानदान सबसे महान दान है"–इस वचन के अनुरूप परम श्रद्धेय उपप्रवर्तक श्री अमर मुनि जी ने भगवद् वाणी के रूप में निबद्ध जैन सूत्रों का हिन्दी–अंग्रेजी अनुवाद कराकर चित्र सहित प्रकाशन की महत्त्वपूर्ण दीर्घकालीन योजना बनाई है। इस योजना में अब तक नौ आगम प्रकाशित हो चुके हैं।

हमारा यह परम सौभाग्य है कि उत्तर भारतीय प्रवर्तक महास्थविर गुरुदेव भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. की सतत प्रेरणा से उपप्रवर्तक श्री अमर मुनि जी आगम सेवा के इस महान पुण्य कार्य में हम सबको प्रेरणा और प्रोत्साहन प्रदान कर युग–युग तक चिरस्थायी रहने वाला ज्ञानदीप प्रज्वलित कर रहे हैं। यह ज्ञान दीप न तूफानों में चंचल होता है और न ही महाकाल के थपेड़ों से बुझ पाता है। वास्तव में 'अमर ज्ञानदीप' जलाकर श्री अमर मुनि जी एक युगान्तरकारी कार्य कर रहे हैं।

सचित्र आगम प्रकाशन योजना में इस जटिल अनुयोगद्वार सूत्र का कार्य लगभग दो वर्ष से चल रहा है, अभी भी यह प्रथम भाग के रूप में आधा ही प्रकाशित हो रहा है। अगला अंग दूसरे भाग में प्रकाशित होगा। अगले वर्ष भी हम दो आगम प्रकाशित करना चहाते हैं।

जैन धर्म दर्शन के मूल शब्दों का अभिप्राय समझकर उनके भाव के अनुसार अंग्रेजी में उनका अनुवाद करना वास्तव में बहुत ही कठिन और व्यापक चिन्तन–मनन का कार्य है। खासकर अनुयोगद्वार जैसे आगम में तो बहुत ही श्रम करना पड़ा है। फिर भी हमें संतोष है कि विद्वान अनुवादक ने आगमों के भाव के अनुसार मनन करके अंग्रेजी परिभाषाएँ बनाई हैं और उनको सुन्दर सहज रूप से प्रस्तुत की है।

श्रीचन्द जी सुराना (अनुवाद, विवेचन व सम्पादन) तथा श्री सुरेन्द्र बोथरा (अंग्रेजी अनुवाद) का सहयोग तो प्रारम्भ से ही हमें उपलब्ध है। इसके साथ ही आगमों के अभ्यासी विद्वान् श्री राजकुमार जी जैन (रिटायर्ड आई. ए. एस. दिल्ली) भी उपासक दशा व अनुत्तरौपपातिक सूत्र के अंग्रेजी अनुवादक के रूप में इस अभियान से जुड़ गये हैं। अनुयोगद्वार सूत्र सहित कुछ अन्य आगमों के अन्तिम प्रूफ भी आपश्री की नजर से निकले हैं।

चित्रकार डॉ त्रिलोक शर्मा ने इस आगम के चित्र बनाये हैं। चित्रों के माध्यम से आगमों का गम्भीर कथन बहुत ही सरल रूप में प्रकट हो गया है, जो सबके लिए सुबोध है। इन चित्रों के रेखांकन आगमों की मर्मज्ञ विदुषी डॉ. सरिता जी म. को भी दिखाये गये हैं और उनके सुझाव अनुसार उचित संशोधन भी किया गया है।

हम सभी सहयोगी बंधुओं के प्रति कृतज्ञ हैं। भविष्य में उनके सहयोग की आशा/आकांक्षा के साथ।

विनीत

महेन्द्रकुमार जैन

(अध्यक्ष) पद्म प्रकाशन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

PUBLISHER'S NOTE

"Imparting knowledge to others is the greatest charity." Translating these words into action Shri Amar Muni ji made a long term plan for publishing the precepts of the Jina, compiled in the form of Jain Sutras (Jain Canon), with Hindi and English translations and suitable multicolored illustrations. In this project the nine Agams have already been published—

We are extremely fortunate that, with the blessings of Uttar Bharatiya Pravartak Gurudev Bhandari Shri Padma Chandra Ji Maharaj, Up-pravartak Shri Amar Muni Ji is inspiring and encouraging us in this noble work of lighting the everlasting lamp of knowledge. This lamp of knowledge neither flickers in any storm nor gets extinguished by the catastrophic sweeps of time. Actually, by lighting this eternal lamp, Shri Amar Muni Ji is doing an epoch-making work.

In this plan of illustrated publications, the work on this complex Anuyogadvar Sutra is going on for about two years. Even now only half of it is ready and is being published as Part 1. The remaining portion will be published as the second part next year when we plan to publish two Sutras once again.

To understand the concepts contained in the original terminology of Jain philosophy and then translate them into English is really a difficult task and needs careful contemplation and pondering. Specially for an Agam like Anuyogadvar Sutra real hard work had to be put in. However, we are contented that the translator has put in all the efforts and sources at his command to translate the philosophical terminology and present it in a simple and comprehensible style.

The contributions of Srichand Ji Surana (Hindi translation, elaborations, and editing) and Shri Surendra Bothra (English translation) have been available right from the beginning of this project. Shri Raj Kumar Jain (IAS Retd., Delhi), who is well versed with Jain Sutras, has also joined the mission with contributions like English translation of recently published Upasak-dasha and

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Anuttaropapatik-dasha Sutra and going through the final proofs of some other Agams including Anuyogadvar Sutra.

Dr. Trilok Sharma has made the illustrations for this Sutra. Through the medium of illustrations, even the complex concepts have been made simple and easily understandable for all. The pencil drawings of these illustrations have been shown to Dr. Sarita Ji Maharaj who possess in depth knowledge of these Sutras. Necessary improvements have been made as per their suggestions.

We are thankful to all those who have extended their cooperation to this project. We wish and hope to get their continued co-operation in future as well.

Mahendra Kumar Jain

PRESIDENT

Padma Prakashan

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रस्तावना : स्वकीयम्

राज व्यवस्था या शासन तंत्र में जो महत्त्व 'शस्त्र' का है, **आत्म-शासन** या अध्यात्म क्षेत्र में वही महत्त्व 'शास्त्र' का है। शस्त्र के बिना राज व्यवस्था नहीं चल सकती, शास्त्र के बिना आत्म-ज्ञान या संयम-साधना नहीं हो सकती। शरीर में जो महत्त्व आँख का है आत्म-कल्याण के लिए वही महत्त्व शास्त्र का है। इसलिए शास्त्र को आत्मा की आँख कहा गया है-**सुयं तइयं चक्खु**।

शास्त्र का अर्थ है जो आत्मा पर, मन पर तथा इन्द्रियों पर शासन करता है या शासन करना सिखाता है। अर्थात् इन पर संयम करके अपना अधिकार या स्वामित्व स्थापित करने का उपाय बताता है वह है शास्त्र। जैसे कहा है-**शासनाच्छास्त्रमिदम्**-आचार्य मलयगिरि का यह कथन वास्तव में शास्त्र को आत्मा पर शासन करने वाला 'शासक' सिद्ध करता है।

वीतराग सर्वज्ञ भगवान की वाणी या उपदेश को 'शास्त्र' कहा जाता है। उन शास्त्रों का स्वाध्याय, अध्ययन, पठन-श्रवण आत्मा को कल्याण के मार्ग पर प्रेरित करता है, आगे बढ़ाता है। जैन परम्परा में 'शास्त्र' के लिए 'आगम' शब्द अधिक प्रचलित है। वर्तमान समय में जो आगम उपलब्ध हैं, उनकी गणना ४५ या ३२ आगमों के रूप में की जाती है। श्वेताम्बर मूर्ति पूजक आम्नाय में ४५ तथा स्थानकवासी तेरापंथी आम्नाय में ३२ आगम की मान्यता प्रचलित है। बत्तीस आगम इस प्रकार हैं-११ अंग, १२ उपांग, चार छेद, चार **मूल** और **आवश्यक** ये ३२। प्रस्तुत अनुयोगद्वार मूल सूत्रों की गणना में आता है। चार मूल सूत्रों में उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, नन्दी और अनुयोगद्वार का नाम है।

जिनेश्वर भगवान ने मोक्ष के चार मार्ग बताये हैं-

नाणं च दंसण चेव चरित्तं च तवो तहा।
एस मग्गु त्ति पन्नत्तो जिणेहिं वरदंसिंहिं। -उत्तराध्ययन ३०

ज्ञान, **दर्शन**, **चारित्र** और **तप** मोक्ष के चार मार्ग हैं। प्राचीन मान्यता के अनुसार नन्दी सूत्र में ज्ञान, अनुयोद्वार में दर्शन, दशवैकालिक में चारित्र तथा उत्तराध्ययन में तप का वर्णन मुख्य रूप में है। यों तो अनुयोगद्वार में **दर्शन** के साथ **श्रुतज्ञान** तथा आवश्यक के रूप में पाँच **चारित्र** का वर्णन भी उपलब्ध है, किन्तु यह सब उपक्रम दर्शन की सम्यक् दर्शन के रूप में शुद्धि के लिए होने से 'दर्शन' को इसका मुख्य विषय माना है।

अनुयोग का अर्थ

'अनुयोग द्वार' सूत्र को समझने के लिए सर्वप्रथम 'अनुयोग' शब्द का अर्थ समझ लेना जरूरी है। 'अनुयोग' का अर्थ है, शब्द के साथ उसके अनुकूल या उपयुक्त अर्थ का सम्बन्ध जोड़ना। अर्थ के भाषक अरिहंत भगवान होते हैं, अरिहंतों या तीर्थंकरों द्वारा कथित अर्थ या शब्द रूप शास्त्र को

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उनके अभिप्रेत अर्थ से जोड़कर देखना चाहिए। एक शब्द के अनेक अर्थ होते हैं, इसलिए वहाँ पर **किस प्रयोजनसे**, किस नय दृष्टि से, किस **निक्षेप** दृष्टि से यह शब्द कहा गया है, इसका उचित विचार **करके उसका वही अर्थ करना**–इसी का नाम अनुयोग है जैसा कि आचार्यों ने कहा है–**अणु ओयण मणुओगो सुयस्स नियएण जमभिहेएण**। (आचार्य जिनभद्रगणि)

अर्थात् श्रुत के नियत अभिधेय को समझने के लिए उसके साथ उपयुक्त अर्थ का योग करना–**अनुयोग है।**

अनुयोग द्वार सूत्र में अनुयोग शब्द पर अधिक चिन्तन नहीं किया गया है। परन्तु शास्त्रों के प्रसिद्ध भाष्यकार आचार्य जिनभद्र गणि तथा वृत्तिकार मलधारी हेमचन्द्र आदि आचार्यों ने 'अनुयोग' शब्द पर बड़े विस्तार के साथ चिन्तन किया है और यह स्पष्ट किया है कि किस कारण इस शास्त्र को 'अनुयोग द्वार' कहा है। अनुयोग द्वार का एक सरल–सा अर्थ है–शासन रूपी महानगर में अपने इच्छित तत्त्वज्ञान को खोजने और पाने के लिए प्रवेश का जो द्वार है, उसका नाम यहाँ अनुयोग द्वार समझ लेना चाहिए। शास्त्र को एक महानगर मान लें तो उस महानगर में प्रवेश करने का मार्ग अनुयोग द्वार है। शास्त्र के गम्भीर भाव या अर्थ को समझने के लिए जिस अनेकान्तवादी, नय–निक्षेप प्रधान दृष्टि की जरूरत है उस दृष्टि का उद्‌घाटन अनुयोग द्वार सूत्र करता है।

अनुयोग का अर्थ समझाने के लिए आचार्य भद्रबाहु स्वामी ने सर्वप्रथम आवश्यक निर्युक्ति (गा. १२८–१२९) में गाय और बछड़े का दृष्टान्त दिया है, इसी दृष्टान्त को विस्तृत रूप में आवश्यक निर्युक्ति के भाष्यकार जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण ने (गा. ४०९–४१०) उदाहरण देकर समझाया है। जिसका वर्णन और चित्र हमने सूत्र २ पर किया है। संक्षेप में जिस गाय का दूध दुहना हो, उसी के बछड़े को उसके पास लाकर उसका स्तन पान कराकर दूध दुहना यह एक प्रकार से 'योग्य संयोग' है। इस दृष्टान्त से अनुयोग का अर्थ सरलता से समझ में आ जाता है।

अनुयोग के चार द्वार

यह जानना चाहिए कि आचार्य आर्य रक्षित ने जैन आगमों के विषयों का चार अनुयोगों में वर्गीकरण किया है। जैसे–धर्म कथानुयोग (दृष्टान्त उदाहरण) चरणानुयोग, (आचार विषय) गणितानुयोग (गणित, ज्योतिष और समुद्र पर्वत आदि का वर्णन) तथा द्रव्यानुयोग (जीव–पुद्‌गल आदि का वर्णन) इनमें प्रस्तुत अनुयोग द्वार की गणना प्रमुख रूपमें किसी भी अनुयोग मे नहीं की जा सकती, किन्तु इसमें प्रसंगानुसार चारों ही अनुयोग समाविष्ट हो जाते हैं। वास्तव में इसका विषय शास्त्र का अर्थ करने की शैली अर्थात् आगम की व्याख्या पद्धति समझाना है। इसलिए इसके विषयों को 'चार द्वार' के रूप में विभक्त किया है, जैसे–(१) उपक्रम, (२) निक्षेप, (३) अनुगम, और (४) नय।

इन चारों द्वारों में सबसे पहले उपक्रम द्वार है। यह सबसे अधिक विस्तृत है। सूत्र का लगभग ७५% अंश उपक्रम के वर्णन में ही पूरा हुआ है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किसी के अभिप्राय को समझना और समझकर उसके अनुकूल प्रयत्न करना उपक्रम है। नाम, स्थापना, द्रव्य, क्षेत्र काल और भाव–इन छह द्वारों से उपक्रम की अनेक प्रकार की व्याख्याएँ की गई हैं और अन्त में प्रशस्त भावोपक्रम को उपादेय बताया है। इसके अनुसार शिष्य गुरु से ज्ञान प्राप्त करने के लिए पहले गुरु को विनय आदि से प्रसन्न करे, उनके भाव–इंगित संकेत आदि को समझकर शास्त्र पढ़ने में प्रवृत्त हो। उपक्रम के भी आनुपूर्वी, नाम, प्रमाण, वक्तव्य, अर्थाधिकार, पाँच भेद बताकर विभिन्न प्रकारों से उपक्रम को समझाया है। दूसरे निक्षेप द्वार में नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव चार निक्षेप के आधार पर तत्त्व को समझने की विधि बताई है। तीसरा द्वार है अनुगम और चौथा द्वार है नय। अनुगम के मुख्य दो भेद बताकर उसके उपभेदों का वर्णन है। इसके बाद नयद्वार में सात नयों की व्याख्या है।

इस प्रकार अनुयोग द्वार सूत्र में चार द्वारों द्वारा शास्त्र का अर्थ समझने, उसकी व्याख्या करने की तर्क व युक्ति संगत शैली का वर्णन है।

प्रासंगिक सामग्री : प्राचीन ग्रन्थों का उल्लेख

अनुयोगद्वार में चार द्वारों के वर्णन में अनेक प्रकार की रोचक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक सामग्री उपलब्ध होती है। इसके अध्ययन से प्राचीन भारत की धार्मिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक तथा सांस्कृतिक सामग्री विविध रूप में मिलती है। धार्मिक और दार्शनिक सामग्री में षड्द्रव्य का विचार, जीव के गुण, शरीर, शरीर की आकृतियाँ, संस्थान, जीवों की आयु आदि विविध प्रकार के विषयों की संयोजना है।

इस सूत्र में जैनेतर साहित्य के १९ प्रसिद्ध ग्रन्थों के नाम भी हैं। (सूत्र ४९) जैसे रामायण, महाभारत, कौटिल्य, वैशेषिक दर्शन, बुद्ध बचन, लोकायत, पुराण, व्याकरण आदि। महाभारत और रामायण के पठन व वाचन के समय की परम्परा का भी उल्लेख है, किन्तु आश्चर्य है, रामायण, महाभारत का उल्लेख करने के बाद भागवत का उल्लेख कहीं नहीं है। इससे यह ध्वनित होता है कि अनुयोग द्वार सूत्र की रचना के पश्चात् भागवत की रचना हुई है।

संगीत–स्वरमंडल

सात स्वरों का सुन्दर और ललित वर्णन इस सूत्र (सूत्र २६०) की एक अपनी विशेषता है। सामवेद में संगीत का वर्णन है। उसी प्रकार इस सूत्र में भी संगीत के स्वर उत्पत्ति स्थान आदि का विस्तृत और उपयोगी वर्णन है। वर्णन की शैली अपनी स्वतंत्र है।

व्याकरण

अष्ट नाम में व्याकरण की आठ विभक्तियों का तथा सात समासों का वर्णन व्याकरण शास्त्र के अभ्यासियों के लिए उपयोगी है। (सूत्र २२८–३१)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवरस

इस सूत्र (२६१-६२) में काव्य शास्त्र के नवरसों का वर्णन अपनी मौलिक स्थापना लिए हैं। काव्य नाटक ग्रन्थों में नवरस है–शृंगार, हास्य, करुणा, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स अद्भुत और शान्त रस। जबकि इस सूत्र में सबसे पहले वीर रस का क्रम रखा है तथा व्रीडनकरस (लज्जा रस) के रूप में एक नया ही रस बताया है। अन्य किसी काव्य शास्त्रीय वर्णन में 'व्रीडनक रस' नहीं है। चूर्णिकार तथा टीकाकार हरिभद्र ने इस विषय में कोई स्पष्टीकरण नहीं किया है, परन्तु आचार्यमलधारी हेमचन्द्र का स्पष्टीकरण है, कि भयोत्पादक सामग्री देखने से भयानक रस की उत्पत्ति होती है। यहाँ पर 'भयानक' रस को 'रौद्र रस' में ही विवक्षित कर दिया है और 'व्रीडनक रस' को अलग प्रस्तुत किया है।

सामुद्रिक शास्त्र

प्रमाण–मान–उन्मान आदि के भेदों में सामुद्रिक लक्षणों वाले उत्तम–मध्यम–अधम पुरुष के लक्षण बताये हैं–(सूत्र ३३४) जैसे जिसके शरीर की ऊँचाई–१०८ आंगुल प्रमाण मात्र है। उस पर शंख, वृषभ आदि के लक्षण–चिन्ह है। मष, तिल आदि व्यंजन हैं, जिसमें क्षमा आदि गुण वह उत्तम पुरुष है। १०४ आंगुल की ऊँचाई वाला मध्यम पुरुष और ९६ आंगुल की ऊंचाई वाला अधम पुरुष। उस समय के सामुद्रिक शास्त्र की धारणा का पता इस वर्णन से चलता है।

इसी प्रकार सूत्र ६५३–५४ में आकाश दर्शन, नक्षत्र आदि के आधार पर सुवृष्टि–कुवृष्टि–सुकाल–दुर्भिक्ष आदि का अनुमान होना बताया है।

मान्यताएँ तथा व्यवसाय

सूत्र २१ में उस युग में प्रचलित वेष भूषा तथा क्रियाकलाप के आधार पर विविध प्रकार की धार्मिक मान्यताओं का उल्लेख है, जैसे–**चरक–चीरिक –चर्मखंडिक गौतम–गौव्रतिक आदि।**

व्यवसाय या कर्म के अनुसार जिन जातियों का नामकरण होता था, उनका उल्लेख यह सूचित करता है कि प्राचीन भारत में 'जाति' जन्मना नहीं, कर्मणा मानी जाती थी। व्यावसायिक जातियों के नाम–**दौसिक**–कपड़ा बनाने वाले, **सौत्रिक**–सूत बुनने वाला, **तांत्रिक**–तंत्री वादक–**मुंजकार**–मूंज की रस्सी बनाने वाले, **वर्ध्रकार**–चमड़े की विविध वस्तुएँ बनाने वाला **पुस्तकार**–कागज बनाने वाला या पुस्तकें लिखने वाला, **दंतकार**–हाथी दाँत आदि का काम करने वाले आदि। (सूत्र ३०४।)

विविध कला निपुण कलाकारों के नामों से पता चलता है, आज की तरह प्राचीन समय में भी शरीर के अवयवों को मोड़ने, घुमाने व विविध प्रकार से जनता का मनोरंजन करने वाले अनेक कलाकार (जिमनास्टिक) उस समय होते थे–जैसे– **नर्तक**–नृत्य करने वाला। **जल्ल**–रस्सी पर नाचने वाला, **मल्ल**–कुश्ती लड़ने वाला, **प्लवक**–गड्डे व नदी तालाब में गहरी छलांग लगाने वाला, **लंख**–मोटे बाँस पर चढ़कर विविध करतब दिखाने वाला आदि। (सूत्र– ३०४)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धान्य-रस-धातु आदि नापने के तोल-माप-बाँट-गज आदि उस युग में अनेक प्रकार के साधन विकसित हो चुके थे। 'सूत्र ३२० से ३४४ तक से मान-उन्मान-क्षेत्र प्रमाण आदि का वर्णन उस युग की प्रचलित और विकसित व्यापार विधियों का अच्छा दिग्दर्शन कराती है।

इस प्रकार अनुयोगद्वार सूत्र में जहाँ दार्शनिक व सैद्धान्तिक चर्चा है-वहाँ सांस्कृतिक विषयों की भी विपुल सामग्री है जो उस समय की लोक कला, व्यापार कला व साहित्य रचना के विकास की सूचना देती है।

संकलनकर्ता का नाम और समय

जैन आगमों में अनुयोगद्वार सूत्र और नन्दी सूत्र सबसे अर्वाचीन शास्त्र हैं।

अनुयोगद्वार सूत्र किसकी रचना है यह प्रश्न आज तक पूर्ण रूप में समाधान नहीं पा सका है। कुछ विद्वानों का अनुमान है कि आर्य वज्रस्वामी तक तो शास्त्रों का अध्ययन अपृथक्त्वानुयोग पद्धति से ही होता था। किन्तु उनके पट्टधर आर्य रक्षित सूरि जो भगवान महावीर के बीसवें पट्टधर थे। (वी. नि. ५२२ से ५९७) ने आगम अभ्यासियों की मति-दुर्बलता, धारणा शक्ति की दुर्बलता को समझकर आगमों का चार अनुयोगों में वर्गीकरण किया। इसलिए उन्हें अनुयोग पृथक्कर्ता माना जाता है। परन्तु अनुयोग द्वार सूत्र के रचनाकार भी वे थे या नहीं, इस विषय में कोई पुष्ट प्रमाण नहीं है किन्तु साथ ही इसका बाधक प्रमाण भी कुछ नहीं है। इस कारण विद्वानों व इतिहास गवेषकों ने अनुयोग पृथक् आर्य रक्षित को ही अनुयोगद्वार सूत्र के रचनाकार या संकलनकर्ता स्वीकार किया है। आर्यरक्षित का समय वीर निर्वाण की छठी शताब्दी है। इस रचना का समय वीर निर्वाण संवत् ५७०-५८४ के मध्य अनुमान किया गया है। अर्थात् विक्रम संवत् ११४ से १२७ के मध्य ईसा की प्रथमशती का अन्तिम चरण ही-इसका रचना समय माना जाता है। इस विषय में आगमों के अनुसंधानकर्ता मुनि पुण्यविजय जी, मुनि जम्बूविजय जी तथा आचार्य महाप्रज्ञ जी तीनों एकमत है।

व्याख्या ग्रन्थ

अनुयोगद्वार सूत्र पर तीन प्राचीन व्याख्या ग्रन्थ उपलब्ध हैं। इस पर कोई निर्युक्ति नहीं है।

चूर्णि-चूर्णि की भाषा-प्राकृत है, इसके कर्ता जिनदासगणि महत्तर विक्रम की ७वीं सदी में हुए।

हरिभद्रीया वृत्ति

हरिभद्रसूरि आगमों के प्रसिद्ध और गम्भीर टीकाकार हैं। उन्होंने आवश्यक और दशवैकालिक सूत्र पर विस्तृत टीकाएँ लिखी है। नन्दी और अनुयोगद्वार पर उनकी संक्षिप्त टीका है। इनका समय विक्रम की आठवीं शताब्दी माना जाता है।

मलधारीया वृत्ति

हरिभद्र सूरि के बाद आचार्य मलधारी हेमचन्द्र ने इस पर बहुत विस्तृत वृत्ति (व्याख्या) लिखी है। इनका समय विक्रम की बारहवीं शताब्दी माना गया है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हमारे सम्पादन का आधार

अनुयोगद्वार सूत्र का विषय गम्भीर है, बिना विवेचन के इसका अर्थ समझना बहुत ही कठिन है। संक्षिप्त विवेचन करने पर भी ग्रन्थ विस्तार से इसे दो भागों में प्रकाशित किया जा रहा है। प्रथम भाग में सूत्र २६२ तक नवनाम प्रकरण में नवरसों के वर्णन तक का पाठ है। इसके आगे का पाठ व विवेचन भाग दो में है। अनेक टीकाओं के अवलोकन पश्चात् हमने अनुवाद व विवेचन की भाषा शैली सरल, सुबोध तथा मध्यम विवेचन वाली रखी है, क्योंकि अधिक लम्बा विवेचन करने से तो इसका विस्तार और अधिक हो जाता।

अस्तु, अन्य आगमों से अनुयोगद्वार सूत्र की शैली तथा प्रतिपाद्य कुछ भिन्न है। इसमें पारिभाषिक शब्दों की बहुलता होने से अर्थ-बोध इतना सरल नहीं है। इसलिए हमने अनुवाद तथा विवेचन में ही विशेष पारिभाषिक शब्दों को भिन्न टाइप में देकर वहीं पर अर्थ व व्याख्या करने का ध्यान रखा है। अंग्रेजी अनुवाद में भी पारिभाषिक शब्दों के अर्थ वहीं पर कोष्ठक में दिये गये हैं जिससे कि पाठक को बार-बार पृष्ट पलटने नहीं पड़ें।

इसके अनुवाद विवेचन में हमने निम्नलिखित पुस्तकों को अपना आधार माना है।

जैनागम रत्नाकर श्रमणसंघ के प्रथम आचार्य सम्राट् आचार्य श्री आत्माराम जी महाराज ने सर्वप्रथम प्राचीन टीका आदि के आधार पर हिन्दी में अनुयोगद्वार की हिन्दी टीका लिखी थी, जो बहुत ही सरल और सुबोध शैली में है। दो भागों में उसका प्रकाशन हुआ। प्रथम भाग का प्रकाशन सन् १९३१ में श्वे. स्था. जैन कॉन्फ्रेंस, मुम्बई से तथा उत्तरार्ध का प्रकाशन पटियाला से हुआ। परन्तु वर्तमान में उसकी उपलब्धता बहुत ही दुर्लभ हो रही है।

आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी म. के विद्वान शिष्य रत्न आगमों के गम्भीर अध्येता श्री ज्ञान मुनि जी म. ने आचार्य श्री की सम्पादित टीका को अति विस्तृत रूप देकर पुनः सम्पादित किया है, जो एक प्रकार से सर्वथा नया व्याख्या ग्रन्थ ही बन गया है। यह आत्म ज्ञान पीयूष वर्षिणी टीका नाम से प्रकाशित है। इसका सम्पादन मुनि श्री नेमीचन्द्र जी म. ने किया है। दो भागों में यह ग्रन्थ आज उपलब्ध है और व्याख्याकार के गम्भीर व्यापक ज्ञान का साक्षिभूत है। हमने विवेचन में इस ग्रन्थ को आधारभूत माना है।

आगम समिति ब्यावर से प्रकाशित युवाचार्य श्री मधुकर मुनि जी के निदेशन में श्री केवल मुनि जी द्वारा अनूदित तथा पं. शोभाचन्द जी भारिल्ल द्वारा संशोधित **अनुयोगद्वार सूत्र** भी हमारे लिए मूल पाठ व विवेचन में उपयोगी बना है।

ताइकेन हानाकी के अनुयोगदाराइं नामक अंग्रेजी अनुवाद का उपयोग विशेष कर अंग्रेजी शब्दावली स्थिर करने के समय किया गया है।

अणुओगदाराइं—नाम से आचार्य महाप्रज्ञ जी द्वारा सम्पादित जैन विश्वभारती लाडनूँ द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ भी हमारे विवेचन में काफी उपयोगी तथा सहायक बना है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इन सबके अतिरिक्त अभी सद्यः प्रकाशित 'अनुयोगद्वार सूत्रम्' **चूर्णि–विवृत्ति–वृत्ति विभूषितम्**– (भाग १) आगमों के गम्भीर अन्वेषक-अध्येता तत्वमर्मज्ञ मुनिराज जम्बू विजय जी म. द्वारा अत्यन्त श्रमपूर्वक संशोधित-संपादित ग्रन्थ हमें इस सम्पादन में मूल-पाठ संशोधन व चूर्णि-टीका आदि के मूल सन्दर्भ देखने में बहुत ही सहायक बना है। अनेक दुरुह स्थलों को समझने के लिए सह सम्पादक श्रीचन्द सुराना 'सरस' ने मुनि श्री से व्यक्तिगत सम्पर्क कर इस विषय में समाधान प्राप्त करने का भी प्रयास किया है। मुनि श्री स्वयं ज्ञानाभ्यासी व उदार हृदय हैं उन्होंने अत्यन्त प्रेम व वात्सल्यपूर्वक सूत्र के गम्भीर अर्थों का स्पष्टीकरण कर संतुष्ट किया है। हम आपके विशेष आभारी हैं। साथ ही उक्त सभी विद्वानों, मुनिवरों के प्रति कृतज्ञ हैं कि इस विवेचन में हम उनके अत्यधिक श्रमपूर्ण सम्पादन से लाभान्वित हुए हैं।

इस सूत्र के सम्पादन में श्रीचन्द सुराना 'सरस' ने प्रशंसनीय योगदान दिया है तथा कठिन परिश्रम किया है। श्री सुरेन्द्र बोथरा ने इस ग्रन्थ-माला के अनेक आगमों के अनुवाद से परिपक्व अनुभव तथा ज्ञान का इसके अंग्रेजी अनुवाद में सराहनीय उपयोग किया है। पारिभाषिक शब्दों के लिए अंग्रेजी में उपयुक्त शब्दों तथा पदों के चयन में पूरी सावधानी रखी गयी है। फिर भी, यह अभी तक एक विकासशील क्षेत्र है। अतः भाषा तथा विवेचन की किसी भी भूल के लिए पाठकों का धैर्य अपेक्षित है। सुश्रावक श्री राजकुमार जी जैन जो आगमों के अध्येता तथा अंग्रेजी के विद्वान हैं, ने भी अन्तिम प्रूफ पढ़कर संपादकीय तथा अनुवादकीय सुझाव के रूप में महत्त्वपूर्ण सेवा-सहयोग प्रदान किया है। लगभग दो वर्ष के कठोर व सतत परिश्रम पश्चात् यह अनुवाद और अंग्रेजी भाषान्तर तैयार हुआ है। फिर भी कहीं शास्त्र विरुद्ध, परम्परा विरुद्ध, कुछ लिखा गया है, तो उसके लिए मैं आत्म-साक्षी से पुनः **'मिच्छामि दुक्कडं'** लेता हूँ। तथा विद्वानों से निवेदन करता हूँ कि वे उचित संशोधन आदि सुझाने की कृपा करें।

अनुयोग के चित्र बनाना भी अन्य आगमों की अपेक्षा कुछ जटिल काम था। विषय को अच्छी प्रकार उदाहरणों द्वारा समझाने में कुछ उदाहरण टीका, भाष्य के तथा अन्य सूत्रों की टीका व अर्थ ग्रन्थ से भी लेने पड़े हैं तथा कुछ लौकिक प्रचलित उदाहरणों का भी प्रयोग किया गया है ताकि सूत्र का भाव पाठक/दर्शक अच्छी प्रकार समझ सकें, फिर भी यदि उन उदाहरणों में कहीं दोष रहा हो तो विशेषज्ञ सूचित करें।

सभी सहभागी बन्धुओं के प्रति पुनः हार्दिक अनुमोदना।

–उपप्रवर्तक अमर मुनि

जैन स्थानक
शास्त्री नगर, दिल्ली
ज्ञान पंचमी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

FROM THE EDITORS PEN

Scriptures (*Shaastra*) have the same importance in the spiritual field that weapons (*shastra*) have in the field of state administration. Administration of a state cannot be run without the help of weapons and spiritual practices and self-discipline cannot be pursued without the help of *Shaastras*. The role of *Shaastras* in beatitude of the self is as important as that of eyes in human body. That is the reason *Shaastras* are said to be the eyes of the soul (*Suyam taiyam chakkhu*).

That which rules over or teaches how to rule over the soul, the mind, and the senses is said to be *Shaastra*. In other words, that which shows the way to discipline and establish command over these is called *Shaastra*. Acharya Malayagiri's statement-'*Shasanacchastramidam*' affirms that *Shaastra* is the ruler who rules over the soul.

The words or teachings of the detached omniscient are called *Shaastra*. Contemplation, study, reading, and listening to the recital of these *Shaastras* inspires the soul to take to the path of beatitude and helps its progress. In Jain terminology the term '*Agam*' instead of '*Shaastra*' is in popular use. At present the number of available *Agams* is said to be 45 and 32. According to the belief in Shvetambar idol-worshipping tradition this number is 45 and according to that in Sthanakavasi tradition it is 32. The list of thirty two *Agams* is divided into sub-groups as follows—11 *Anga Sutras*, 12 *Upanga Sutras*, 4 *Mool Sutras*, 4 *Chhed Sutras* and the *Avashyak Sutra*. This work, *Anuyogadvar Sutra*, belongs to the sub-group of Mool Sutras. The four *Mool Sutras* being *Uttaradhyayan, Dashavaikalik, Nandi* and *Anuyogadvar*.

Bhagavan Mahavir has shown four paths of salvation—knowledge (*jnana*), perception or faith (*darshan*), conduct (*chaaritra*), and austerities (*tap*). According to the ancient tradition *Nandi Sutra* describes knowledge (*jnana*), *Anuyogadvar* describes perception or faith (*darshan*), *Dashavaikalik* describes conduct (*charitra*) and *Uttaradhyayan* describes austerities (*tap*). *Anuyogadvar* includes

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

discussions about *Shrut jnana* (scriptural knowledge) and five kinds of conduct in the form of *avashyak* (essential duties) along with *darshan* (perception). However, as all these are presented as instruments for refining *darshan* (perception) into *samyak darshan* (right perception), *darshan* is considered to be its central theme.

MEANING OF ANUYOGA

To understand *Anuyogadvar Sutra*, the first essential step is to understand the meaning of the term *anuyoga*. To associate (*yoga*) the intended and appropriate meaning (*anu*) with a word is called *Anuyoga*. The concepts (*arth*) are given by Arihant Bhagavan. The concepts given by Arihants or Tirthankars or the scriptures in lingual form should be studied and understood only after associating them with pertinent and appropriate meaning. One word has many meanings, that is why to contemplate that for what purpose, from which viewpoint and with reference to which attribution a specific word has been used, and then to arrive at the appropriate meaning is called *anuyoga* (disquisition). As the *acharyas* have said—"To associate (*yoga*) the intended and prescribed meaning (*anu*) with the concept of an aphorism is *anuyoga*. (In other words to elaborate an aphorism in consonance with the concept of the writer is anuyoga.)" (Acharya Jinabhadragani)

In the text of *Anuyogadvar Sutra* nothing much has been said about the word *Anuyoga*. However, famous commentators of scriptures, including Acharya Jinabhadra Gani (the author of the *Bhashyas*) and Acharya Hemchandra (the author of the *Vrittis*), have presented detailed discussion on the word *'anuyoga'* in their commentaries. They have explained why this work has been titled *Anuyogadvar*. A simple illustrative meaning of *Anuyogadvar* is—the gate (*dvar*) to enter, search, and arrive at the desired part of the knowledge of fundamentals in the great city called Jain order (canon). If we consider *Shaastra* (scripture) to be a great city, *Anuyogadvar* is the name of its entrance. The non-absolutist (*anekant-vadi*) approach, with emphasis on multiple perspectives (*naya*) and attribution (*nikshep*), necessary to understand the profound concepts and ideas contained in scriptures is elucidated in *Anuyogadvar Sutra*.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

The analogy of a cow and her calf in order to explain the meaning of *Anuyogadvar* was given for the first time by Acharya Bhadrabahu in *Avashyak Niryukti* (verse 128-129). The same analogy with a little elaboration in the form of an example has been used by Jinabhadragani Kshamashraman, the commentator (*Bhashya*) of *Avashyak Niryukti* (verses 409-410). We have included it with a suitable illustration in elaboration of aphorism-2. In brief, when a cow is to be milked, the calf of that very cow should be brought for pre-milking suckle. In a way, this is a fitting association. This example facilitates grasping easily the meaning of *anuyoga* (disquisition).

FOUR DVARS OF ANUYOGA (FOUR DOORS OF DISQUISITION)

It should be mentioned here that Acharya Arya Rakshit has divided the subjects contained in Jain *Agams* in four *Anuyogas*—*Dharmkathanuyoga* (narrative literature or religious tales), *Charananuyoga* (conduct and praxis), *Ganitanuyoga* (mathematics, astrology, geography and cosmology), and *Dravyanuyoga* (entities including the living and the non-living; metaphysics). This *Anuyogadvar Sutra* does not exclusively belong to any one of these four types. It envelopes all the four types of *Anuyogas* in some context or the other. In fact, it is aimed at explaining the methodology of interpreting the scriptures or the process of elaborating the *Agam* texts. Therefore, the topics it deals have been divided into four segments presented as *dvars* (doors)—(1) *Upakram* (introduction), (2) *Nikshep* (attribution), (3) *Anugam* (interpretation) and (4) *Naya* (viewpoint or aspect).

The first and the most elaborate of these four doors of disquisition is *Upakram.* It takes up almost three fourths of the total volume of the book.

To understand the viewpoint of a person and to make efforts to act accordingly is *Upakram. Upakram* has been described in detail from six different angles namely *Naam* (name), *Sthapana* (notional installation), *Dravya* (physical aspect) *Kshetra* (area), *Kaal* (time) and *Bhaava* (essence). In conclusion *prashast bhaavopakram* (righteous means of knowing thoughts of others) is termed as the one to be

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

accepted. According to this, in order to gain knowledge from a guru (teacher) a disciple should first please the guru by his qualities including humble behaviour. After that he should understand the feelings and gestures of the guru and should accordingly indulge in studies of scriptures. *Upakram* has been further divided into five sub-categories and explained from various perspectives.

These sub-categories are—*Anupurvi* (sequence or sequential configuration), *Naam* (name), *Praman* (validity), *Vaktavyata* (explication), *Arthadhikar* (giving synopsis), and *Samavatar* (assimilation). In the second door of disquisition, *nikshep* (attribution), the method of understanding fundamentals from four angles—*Naam* (name), *Sthapana* (notional installation), *Dravya* (physical aspect) and *Bhaava* (essence or mental aspect) has been explained. The third door of disquisition is *Anugam* (interpretation) and the fourth is *Naya* (viewpoint or aspect). After mentioning two principle categories of *Anugam* their sub-categories have been described. Then in the Door of *Naya* seven *nayas* (viewpoints) have been mentioned at length.

Thus, *Anuyogadvar Sutra* describes the method of understanding the scriptures and logical and methodical style of elaborating them with the help of four doors of disquisition (*anuyogadvar*).

RELEVANT REFERENCES : MENTION OF ANCIENT WORKS

In the description of four *dvars* (approaches) of *Anuyoga*, one finds ample material of cultural and historical importance. Its study provides a variety of information about the religious, historical, geographical and cultural conditions in ancient India. The religious and philosophical material includes description of six *dravya* (substances), attributes of *Jiva* (the living), the body, its shapes, its structure (*sansthan*), life-span of beings and many other such topics.

This work has mentions of 19 famous books of non-Jain literature (aphorism 49). For instance, *Ramayana, Mahabharat, Kautilya, Vaisheshik* philosophy, the precepts of the Buddha, *Lokayat, Puranas,* grammar, etc. The then prevailing tradition about the time of reading and reciting *Ramayana* and *Mahabharat* has also been mentioned. But it is strange that though *Ramayana* and *Mahabharat* have been

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

mentioned, there is no mention of *Bhagavata* with them or otherwise. This indicates that *Bhagavata* was written after *Anuyogadvar Sutra*.

MUSIC AND MUSICAL NOTES

The description of seven *Svars* (musical notes) in an interesting and lucid style is a special feature of this work (aphorism 260). *Samaved* describes music. Similarly musical notes, their places of origin, and other related topics have been mentioned in detail in this work. It employs its own original style of description.

VYAKARAN (GRAMMAR)

The description of eight *Vibhaktis* (declension) and seven *Samasas* (compounding of words) under the title *Ashtnaam* is useful for students of grammar (aphorisms 225-231).

NAVA RASA (NINE SENTIMENTS)

The description of *nava rasa* (nine sentiments) of poetics (aphorisms 261-262) includes some new concepts and order. Nine sentiments in poetics and drama are—*Shringar-rasa* (amatory or erotic sentiment), *Hasya-rasa* (sentiment of humour or comic sentiment), *Karun-rasa* (pathos or tragic sentiment), *Raudra-rasa* (sentiment of rage or fury), *Vira-rasa* (heroic sentiment), *Bhayanak-rasa* (sentiment of fear or horror), *Vibhatsa-rasa* (sentiment of disgust), *Adbhut-rasa* (sentiment of wonder), and *Shant-rasa* (sentiment of tranquillity). But in this Sutra first in the order is heroism (*Vira-rasa*). A new sentiment is included as *Vridanak-rasa* (sentiment of shame or bashfulness). This sentiment does not find any mention in any other treatise on poetics. The commentator (*Churni* and *Tika*) Haribhadra has given no clarification in this context. But Acharya Maladhari Hemchandra has explained that horrifying things evoke the sentiment of fear or horror. In this work *Bhayanak-rasa* is included in *Raudra-rasa* (sentiment of rage or fury) and *Vridanak-rasa* is described as a separate sentiment.

SAMUDRIK SHAASTRA

With the classification of standard and non-standard structure and dimensions of the human body, signs of good, mediocre or average and

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

bad persons based on body marks have also been mentioned (aphorism 334). For instance, a person whose height is 105 times the finger-width, who has body-marks of conch shell, bullock, etc., has moles and spots on his body, and who has virtues like sense of forgiveness, is called an excellent person. A person whose height is 104 times the finger-width is average and a person whose height is 96 times the finger-width is a bad type. These details help one know about the information contained in the works of that period on interpreting body marks.

Similarly Sutras 653 and 654 include information about how on the basis of the observation of the sky and the position of stars and planets, predictions were made about likely rainfall and its intensity, good or poor crops, and other such forecasts.

BELIEFS AND TRADES

Aphorism 21 gives names of various beliefs on the basis of ways of dressing and other habitual activities prevalent during that period. Some of these are Charak, Cheerak, Charmakhandik, Gautam, Gauvratik, etc.

The mention of caste names derived from business or profession indicates that in medieval India caste was based on trade or profession and was not by birth. Some caste names based on trade and profession are--*Dausik* or weavers, *Sautrik* or yarn-makers, *Tantrik* or musicians playing stringed instruments, *Munjakar* or rope makers, *Vardhkar* or cobblers, *Pustkar* or paper manufacturers and writers, *Dantkar* or those working with ivory and other bones. (aphorism 304)

From the names of performing artists, it is revealed that like in present times, there were expert gymnasts and acrobats during that period also. They presented entertaining performances for the masses by their acrobatics and practiced movement of different parts of their body. Some of these were *Nartak* or a dancer, *Jail* or one who dances on a string, *Malla* or a wrestler, *Plavak* or a diver, *Lankh* or one who shows his acrobatic skills on a thick pole. (aphorism 304)

Many weights and measures had been invented during that period to weigh or measure food-grains, liquids, minerals (aphorisms 320 to

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

344). The description of weights and measures brings out a vivid picture of fairly developed trading practices prevalent during that period.

Thus, *Anuyogadvar Sutra* contains not only philosophical and religious details, but also ample material on culture. This provides information about the highly developed state of art, literature, trade and commerce during that period.

THE NAME AND THE PERIOD OF THE COMPILER

In Jain *Agams, Anuyogadvar Sutra* and *Nandi Sutra* are the most recent.

The question as to who is the author of *Anuyogadvar Sutra* has not yet been satisfactorily answered. Some scholars are of the view that till the time of Vajra Swami, the *Agams* were studied without any classification into different *Anuyogas*. But his chief disciple Arya Rakshit Suri, the twentieth head of the order since Bhagavan Mahavir (570 to 597 ANM), classified the *Agams* into four *Anuyogas*. He realized that the understanding and the power of retention of students of *Agams* has considerably decreased and this inspired him to make this classification.

So he is considered to be the first to classify the *Agams*. But there is no evidence to establish that he was also the author of *Anuyogadvar Sutra*. There is also no evidence even to contradict this. Therefore, the scholars and researchers in history have accepted *Arya Rakshit,* the *Anuyoga* classifier, as the author of *Anuyogadvar Sutra*. The period of Arya rakshit is sixth century after the nirvana of Mahavir (ANM). The period of this text is believed to be 570-584 ANM or 114 to 127 Vikram Samvat or 57 to 70 A. D. Renowned scholars and researchers of *Agams,* Muni Punyavijai Ji, Muni Jambuvijai Ji and Acharya Mahaprajna Ji have unanimity on this conclusion.

COMMENTARIES OF ANUYOGADVAR SUTRA

Three ancient commentaries on *Anuyogadvar Sutra* are available. There is no *Niryukti* on it.

Churni—The language of *Churni* is Prakrit. Its author is Jinadas Gani Mahattar who lived in the seventh century of the Vikram era.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

COMMENTARY (VRITTI) BY HARIBHADRA

Haribhadra Suri is a famous and serious commentator of *Agams*. He authored detailed commentaries on *Avashyak Sutra* and *Dashavaikalik Sutra*. His commentaries on *Nandi Sutra* and *Anuyogadvar Sutra* are brief. His period is believed to be eighth century of the Vikram Calendar.

COMMENTARY (VRITTI) BY MALADHARI

After Haribhadra Suri, Acharya Maladhari Hemchandra has written a much detailed commentary on *Anuyogadvar Sutra*. His period is twelfth century of the Vikram Calendar.

BASIS OF THIS EDITION

The subject of *Anuyogadvar Sutra* is very complex. It is very difficult to understand it without elaboration. Even with brief elaboration it is being published in two parts. In the first part, the portion up to Sutra 262, namely NAVA RASA, in the chapter of NAVA NAAM has been covered. The later portion is included in the second Part. After studying many commentaries on it, a simple and easily intelligible prose style has been adopted for its translation and elaborations. Further, the elaboration is of a medium order because a detailed elaboration would have made it voluminous.

The theme and style of *Anuyogadvar Sutra* is slightly different from those of other *Agams*. It is not easy to understand this work because it has abundance of technical terms. Therefore care has been taken to provide meanings and definitions of technical terms along with the translation and elaboration using different font. As all such terms do not have equivalent terms in English, the original term has been given in roman script with explanatory translation in parenthesis. This may appear cumbersome at first glance but should be more convenient than repeatedly consulting a glossary at the end of the book.

The following books have been consulted for translation and elaboration—

The first head of Shraman Sangh, Jain Agam Ratnakar, Acharya Samrat Shri Atmaram Ji Maharaj was the first author of a Hindi

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

commentary on *Anuyogadvar Sutra* based on ancient commentaries. Its style is simple and can be easily understood. It was published in two parts. The first part was published by Shvetambar Sthanakavasi Jain Conference Bombay in 1931 A. D. and the second part was published from Patiala. But at present, its availability is extremely difficult.

Shri Jnanamuni Ji, the learned disciple of Acharya Samrat Atmaram Ji who is a great scholar of Agamic literature, re-edited the commentary of Acharya Shri by elaborating it further. It has thus become almost a new treatise on *Anuyogadvar Sutra*. It was published with the caption—*Atma Jnana Piyush Varshini Tika*. It was edited by Muni Shri Nemichand M. It is available in two parts and is an evidence of the profound knowledge of the commentator. This work has been taken as the primary reference book for the present edition.

Anuyogadvar Sutra translated by Shri Kewal Muni under the direction of Yuvacharya Shri Madhukar Muni and revised by Shri Shobha Chand Bharill, published by Agam Samiti, Beavar, has also been a useful reference work for the text as well as commentary.

The English translation titled '*Anuogaddaraim*' translated by Taiken Hanaki was also consulted, specially while finalizing English terminology.

The commentary by Acharya Mahaprajna published under the title *Anuogadaraim* from Jain Vishvabharati, Ladnu has provided valuable references for the commentary.

In addition to all these, recently published '*Anuyogadvar Sutram, Churni-Vivritti-Vritti Vibhushitam* (Part 1), corrected and edited by the profound and renowned researcher of *Agams* and scholar of Agamic knowledge, saint Jambuvijai Ji M., has been extremely useful in correcting and properly interpreting the original text and studying the original references from commentaries, *Churni* etc. In order to properly understand the complex portions the associate editor, Srichand Surana 'Saras', personally contacted Muni Ji and sought clarifications. Muni Ji is very devoted to studies of *Agams* and is a broad-minded scholar. He explained the difficult portions of the text with affection and care. We are highly indebted to him. We also express our gratitude to all aforesaid scholars and saints whose

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

immaculate and scholarly commentaries and works have been of great help in the editing of this book.

In the editing of this Sutra, Srichand Surana 'Saras' has put in admirable efforts and strenuous work. For the English translation Shri Surendra Bothra has made a commendable contribution with all the knowledge and experience he has gained through translating many of the Agams published in this series. A great care has been taken to find appropriate words and terminology for the technical terms in English language. However, as it is still an evolving field forbearance of readers is solicited for any mistake and misinterpretation. Shri Raj Kumar Jain, a devoted shravak well versed with *Agams* and having a command over English language, has provided valuable services in the form of editorial and translation advise by going through the final proofs of the book. It took hard and continuous efforts lasting over a period of two years to complete this translation and commentary in Hindi and English. Still in case, at any place something has been mentioned against the purport of the scripture or not in line with the tradition, I sincerely feel and convey—'Micchami dukkadam' (May my misdeeds be undone). I also request the scholarly readers to oblige us with their advice and suggestions.

To prepare illustrations concerning *Anuyoga* was also difficult as compared to illustrating other Agams. In order to properly elucidate the subject with examples, some of them have been selected from commentaries (*Tika* and *Bhashya*) and translations of this as well as other *Shaastras* and others from commonly used popular analogies. This should help the reader and the listener properly understand the underlying idea of the Sutra. Still in case any example is found unsuitable or improper, the experts in the field may kindly send their suggestions to us.

I once again express my heartfelt gratitude for all those who have contributed towards the publication of this work.

Up-pravartak Amar Muni

Jain Sthanak
Shastri Nagar, Delhi
Jnan Panchami

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनुक्रमणिका

CONTENTS

आवश्यक प्रकरण		The Discussion on Essentials	
पाँच ज्ञान का वर्णन	३	Five Types of Knowledge	3
श्रुतज्ञान का महत्त्व	१०	The Importance of Shrut-Jnana	10
आवश्यक पद का निक्षेप	१८	Attribution of the Term Avashyak	18
निक्षेप की सूचना	२०	Informing about Attribution of Terms Like Avashyak	20
आवश्यक के निक्षेप	२४	Attributions of Avashyak	24
(१) नाम आवश्यक	२५	(1) Naam Avashyak	26
(२) स्थापना आवश्यक	२६	(2) Sthapana Avashyak	26
(३) द्रव्य आवश्यक	३१	(3) Dravya Avashyak	31
(१) आगमतः द्रव्य आवश्यक	३२	(1) Agamatah Dravya Avashyak	33
(१) आगमतः द्रव्य आवश्यक और नय दृष्टियाँ	४६	(1) Agamatah Dravya Avashyak and Naya Aspects	46
(२) नो-आगमतः द्रव्य आवश्यक	४८	(2) No-Agamatah Dravya Avashyak	49
(१) ज्ञायक शरीर द्रव्य आवश्यक	४९	(1) Jnayak Sharir Dravya Avashyak	50
(२) भव्य शरीर द्रव्य आवश्यक	५१	(2) Bhavya Sharir Dravya Avashyak	52
(३) ज्ञायक शरीर-भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य आवश्यक	५३	(3) Jnayak Sharir-Bhavya Sharir Vyatirikta Dravya Avashyak	53
(१) लौकिक द्रव्य आवश्यक	५४	(1) Laukik Dravya Avashyak	55
(२) कुप्रावचनिक द्रव्य आवश्यक	५५	(2) Kupravachanik Dravya Avashyak	56
(३) लोकोत्तरिक द्रव्य आवश्यक	५९	(3) Lokottarik Dravya Avashyak	60
(४) भाव आवश्यक	६५	(4) Bhaava Avashyak	65
(१) आगमतः भाव आवश्यक	६६	(1) Agamatah Bhaava Avashyak	66
(२) नो-आगमतः भाव आवश्यक	६६	(2) No-Agamatah Bhaava Avashyak	66
(१) लौकिक भाव आवश्यक	६७	(1) Laukik Bhaava Avashyak	67
(२) कुप्रावचनिक भाव आवश्यक	६८	(2) Kupravachanik Bhaava Avashyak	68
(३) लोकोत्तरिक भाव आवश्यक	६९	(3) Lokottarik Bhaava Avashyak	70
आवश्यक के पर्यायवाची नाम	७०	Synonyms of Avashyak	71

श्रुत प्रकरण		The Discussion on Shrut	
श्रुत के भेद	७३	Categories of Shrut	73
(१) नाम श्रुत	७३	(1) Naam Shrut	74
(२) स्थापना श्रुत	७४	(2) Sthapana Shrut	74

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(३) द्रव्य श्रुत	७५	(3) Dravya Shrut	75
(१) आगमतः द्रव्य श्रुत	७५	(1) Agamatah Dravya Shrut	76
(२) नो-आगमतः द्रव्य श्रुत	७६	(2) No-Agamatah Dravya Shrut	77
(१) ज्ञायक शरीर द्रव्य श्रुत	७७	(1) Jnayak Sharir Dravya Shrut	78
(२) भव्य शरीर द्रव्य श्रुत	७९	(2) Bhavya Sharir Dravya Shrut	79
(३) ज्ञायक शरीर-भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य श्रुत	८०	(3) Jnayak Sharir-Bhavya Sharir Vyatirikta Dravya Shrut	80
(४) भाव श्रुत	८६	(4) Bhaava Shrut	87
(१) आगमतः भाव श्रुत	८७	(1) Agamatah Bhaava Shrut	87
(२) नो-आगमतः भाव श्रुत	८७	(2) No-Agamatah Bhaava Shrut	88
(१) लौकिक भाव श्रुत	८८	(1) Laukik Bhaava Shrut	88
(२) लोकोत्तरिक भाव श्रुत	८९	(2) Lokottarik Bhaava Shrut	90
श्रुत के पर्यायवाची नाम	९१	Synonyms of Shrut	91
स्कन्ध प्रकरण		**The Discussion on Skandh**	
निक्षेप दृष्टि से स्कन्ध निरूपण	९३	Attribution of Skandh	93
(१) नाम स्कन्ध	९३	(1) Naam Skandh	94
(२) स्थापना स्कन्ध	९४	(2) Sthapana Skandh	94
(३) द्रव्य स्कन्ध	९५	(3) Dravya Skandh	95
(१) आगमतः द्रव्य स्कन्ध	९५	(1) Agamatah Dravya Skandh	96
(२) नो-आगमतः द्रव्य स्कन्ध	९८	(2) No-Agamatah Dravya Skandh	98
(१) ज्ञायक शरीर द्रव्य स्कन्ध	९८	(1) Jnayak Sharir Dravya Skandh	99
(२) भव्य शरीर द्रव्य स्कन्ध	९९	(2) Bhavya Sharir Dravya Skandh	100
(३) ज्ञायक शरीर-भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य स्कन्ध	१००	(3) Jnayak Sharir-Bhavya Sharir Vyatirikta Dravya Skandh	100
(१) सचित्त द्रव्य स्कन्ध	१०१	(1) Sachitta Dravya Skandh	101
(२) अचित्त द्रव्य स्कन्ध	१०२	(2) Achitta Dravya Skandh	102
(३) मिश्र द्रव्य स्कन्ध	१०३	(3) Mishra Dravya Skandh	103
प्रकारान्तर से स्कन्ध के अन्य भेद	१०४	Alternative Classification	104
(१) कृत्स्न स्कन्ध का स्वरूप	१०४	(1) Kritsna Skandh	105
(२) अकृत्स्न स्कन्ध का स्वरूप	१०५	(2) Akritsna Skandh	105
(३) अनेक द्रव्य स्कन्ध का स्वरूप	१०६	(3) Aneka Dravya Skandh	106
(४) भाव स्कन्ध	१०७	(4) Bhaava Skandh	107
(१) आगमतः भाव स्कन्ध	१०८	(1) Agamatah Bhaava Skandh	108
(२) नो-आगमतः भाव स्कन्ध	१०८	(2) No-Agamatah Bhaava Skandh	109
स्कन्ध के पर्यायवाची नाम	१०९	Synonyms of Skandh	110

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

आवश्यक अर्थाधिकार प्रकरण		The Discussion on Purview of Avashyak	
अर्थाधिकार प्ररूपणा	११२	Purview of Avashyak	112
अनुयोगद्वार-नामनिर्देश	११६	Anuyogadvar	116
उपक्रम प्रकरण The Discussion on Upakram			
उपक्रम के भेद	११९	Types of Upakram	119
(१) नाम और (२) स्थापना उपक्रम	११९	(1) Naam and (2) Sthapana Upakram	119
(३) द्रव्य उपक्रम	१२०	(3) Dravya Upakram	120
(१) सचित्त द्रव्य उपक्रम	१२२	(1) Sachitta Dravya Upakram	122
(२) अचित्त द्रव्य उपक्रम	१२५	(2) Achitta Dravya Upakram	125
(३) मिश्र द्रव्य उपक्रम	१२६	(3) Mishra Dravya Upakram	126
(४) क्षेत्र उपक्रम	१२७	(4) Kshetra Upakram	127
(५) काल उपक्रम	१२८	(5) Kaal Upakram	128
(६) भाव उपक्रम	१२९	(6) Bhaava Upakram	129
(१) आगमतः भाव उपक्रम	१२९	(1) Agamatah Bhaava Upakram	129
(२) नो-आगमतः भाव उपक्रम	१३०	(2) No-Agamatah Bhaava Upakram	130
उपक्रम के छह प्रकार	१३८	Six Kinds of Upakram	138
आनुपूर्वी प्रकरण		**The Discussion on Anupurvi**	
आनुपूर्वी के दस भेद	१४०	Ten Kinds of Anupurvi	140
नाम-स्थापना आनुपूर्वी	१४०	Naama and Sthapana Anupurvi	141
द्रव्यानुपूर्वी का स्वरूप	१४१	Drvayanupurvi	141
अनौपनिधिकी द्रव्यानुपूर्वी के भेद	१४५	Types of Anaupanidhiki Dravya-Anupurvi	145
नैगम-व्यवहारनयसंमत अर्थपदप्ररूपणा	१४७	Naigam-Vyavahar Naya Sammat Arth-Padprarupana	147
नैगम-व्यवहारनयसंमत भंगसमुत्कीर्तनता	१५१	Naigam-Vyavahar Naya Sammat Bhang-Samutkirtanata	153
छब्बीस भंगों का स्थापना यंत्र	१५६	Table of 26 Divisions or Bhangs	157
नैगम-व्यवहारनयसंमत भंगोपदर्शनता	१५९	Naigam-Vyavahar Naya Sammat Bhangopadarshanata	161
समवतार प्ररूपणा (आनुपूर्वी द्रव्य)	१६४	Samavatara : Anupurvi Dravya	164
अनानुपूर्वी द्रव्य	१६५	Ananupurvi Dravya	165
अवक्तव्य द्रव्य	१६६	Avaktavya Dravya	166
नवविध-अनुगम प्ररूपणा	१६७	Anugam : Nine Kinds	168
(1) सत्पद प्ररूपणा द्वार	१७०	(1) Satpad-Prarupana-Dvar	170

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(२) द्रव्य प्रमाण द्वार	१७१	(2) Dravya-Pramana-Dvar	171
(३) क्षेत्र द्वार	१७२	(3) Kshetra-Dvar	173
(४) स्पर्शना द्वार	१७८	(4) Sparshana-Dvar	178
(५) काल द्वार	१८०	(5) Kaal-Dvar	180
(६) अन्तर प्ररूपणा द्वार	१८३	(6) Antar-Dvar	183
(७) भाग प्ररूपणा द्वार	१८६	(7) Bhaag-Dvar	187
(८) भाव प्ररूपणा द्वार	१८९	(8) Bhaava-Dvar	189
(९) अल्प-बहुत्व द्वार	१९०	(9) Alpa-Bahutva-Dvar	191
द्रव्यों का अल्प-बहुत्व स्थापना यंत्र	१९५	Comparative Chart of Quantum of Substances	197
संग्रहनयसम्मत अनौपनिधिकी द्रव्यानुपूर्वी प्ररूपणा	१९९	Samgraha Naya Sammat Anaupanidhiki Dravya-Anupurvi	199
संग्रहनयसम्मत अर्थपदप्ररूपणता	१९९	Samgraha Naya Sammat Arth-Padaprarupanata	200
संग्रहनयसम्मत भंगसमुत्कीर्तना	२०२	Samgraha Naya Sammat Bhang-Samutkirtanata	202
संग्रहनयसम्मत भंगोपदर्शनता	२०३	Samgraha Naya Sammat Bhangopadrshanata	204
समवतार प्ररूपणा	२०५	Samavatara : Anupurvi Dravya	206
संग्रहनयसम्मत अनुगम के आठ प्रकार	२०६	Samgraha Naya Sammat Anugam : Eight Kinds	207
(१) सत्पदप्ररूपणा का अर्थ	२०७	(1) Satpadprarupana-Dvar	207
(२) द्रव्यप्रमाणप्ररूपणा	२०७	(2) Dravyapramana-Dvar	208
(३) क्षेत्रप्ररूपणा	२०९	(3) Kshetra-Dvar	209
(४) स्पर्शना प्ररूपणा	२१०	(4) Sparshana-Dvar	210
(५-६) काल और अन्तर की प्ररूपणा	२११	(5-6) Kaal-Dvar and Antar-Dvar	211
(७) भागप्ररूपणा	२१२	(7) Bhaag-Dvar	212
(८) भावप्ररूपणा	२१४	(8) Bhaava-Dvar	214
औपनिधिकी द्रव्यानुपूर्वीनिरूपण	२१५	Aupanidhiki Dravya-Anupurvi	215
पूर्वानुपूर्वी का स्वरूप	२१६	Purvanupurvi	216
पश्चानुपूर्वी का स्वरूप	२१७	Pashchanupurvi	217
अनानुपूर्वी	२१७	Ananupurvi	218
औपनिधिकी द्रव्यानुपूर्वी का दूसरा प्रकार	२१९	Another Aupanidhiki Dravya-Anupurvi	219
पूर्वानुपूर्वी का स्वरूप	२१९	Purvanupurvi	220
पश्चानुपूर्वी का स्वरूप	२२०	Pashchanupurvi	221
अनानुपूर्वी का स्वरूप	२२१	Ananupurvi	222

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्षेत्रानुपूर्वी के प्रकार	२२२	Kshetranupurvi	223
नैगम-व्यवहारनयसम्मत अनौपनिधिकी क्षेत्रानुपूर्वी	२२३	Naigam-Vyavahar Naya Sammat Anaupanidhiki Kshetr-Anupurvi	224
नैगम-व्यवहारवनयसम्मत अर्थपदप्ररूपणा और प्रयोजन	२२४	Naigam-Vyavahar Naya Sammat Arth-Padaprarupana	225
क्षेत्रानुपूर्वी-भंगसमुत्कीर्तनता एवं प्रयोजन	२२७	Kshetranupurvi : Bhang-Samutkirtanata	228
नैगम-व्यवहारनयसम्मत भंगोपदर्शनता	२२९	Naigam-Vyavahar Naya Sammat Bhangopadarshanata	229
क्षेत्रानुपूर्वी की समवतार प्ररूपणा	२३०	Kshetranupurvi : Samavatara	231
क्षेत्रानुपूर्वी की अनुगमप्ररूपणा	२३१	Kshetranupurvi : Anugam	232
(१) क्षेत्रानुपूर्वी : सत्पदप्ररूपणता	२३२	(1) Kshetranupurvi : Satpadprarupana-Dvar	232
(२) क्षेत्रानुपूर्वी : द्रव्यप्रमाण	२३३	(2) Kshetranupurvi : Dravyapramana-Dvar	233
(३) क्षेत्रानुपूर्वी की अनुगमान्तर्वर्ती क्षेत्रप्ररूपणा	२३४	(3) Kshetranupurvi : Kshetra-Dvar	235
(४) अनुगम के अनुसार स्पर्शना प्ररूपणा	२३९	(4) Kshetranupurvi : Sparshana-Dvar	240
(५) अनुगम से कालप्ररूपणा	२४१	(5) Kshetranupurvi : Kaal-Dvar	241
(६) अनुगम से अन्तरप्ररूपणा	२४१	(6) Kshetranupurvi : Antar-Dvar	242
(७) अनुगम से भागप्ररूपणा	२४२	(7) Kshetranupurvi : Bhaag-Dvar	242
(८) अनुगम से भावप्ररूपणा	२४३	(8) Kshetranupurvi : Bhaava-Dvar	244
(९) अनुगम से अल्प-बहुत्व प्ररूपणा	२४४	(9) Alpa-Bahutva-Dvar	244
संग्रहनयसम्मत अनौपनिधिकी क्षेत्रानुपूर्वी	२४८	Samgraha Naya Sammat Anaupanidhiki Kshetra-Anupurvi	249
औपनिधिकी क्षेत्रानुपूर्वी की विशेष प्ररूपणा	२४९	Aupanidhiki Kshetra-Anupurvi	249
पूर्वानुपूर्वी	२५०	Purvanupurvi	250
पश्चानुपूर्वी	२५०	Pashchanupurvi	251
अनानुपूर्वी	२५१	Ananupurvi	251
अधोलोक क्षेत्रानुपूर्वी	२५३	Adholoka Kshetra-Anupurvi	253
तिर्यग् (मध्य) लोक क्षेत्रानुपूर्वी	२५५	Tiryak-Loka Kshetra-Anupurvi	255
ऊर्ध्वलोकक्षेत्रानुपूर्वी	२६०	Urdhvaloka Kshetra-Anupurvi	260
क्षेत्रानुपूर्वी के वर्णन का द्वितीय प्रकार	२६२	Another Aupanidhiki Kshetra-Anupurvi	262
कालानुपूर्वीप्ररूपणा	२६४	Kaal-Anupurvi	265
नैगम-व्यवहारनयसम्मत अनौपनिधिकी कालानुपूर्वी	२६५	Naigam-Vyavahar Naya Sammat Anaupanidhiki Kaal-Anupurvi	266

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(क) अर्थपदप्ररूपणता	२६७	(a) Naigam-Vyavahar Naya Sammat Arth-Padaprarupana	268
(ख) भंगसमुत्कीर्तनता	२६९	(b) Kaal-Anupurvi : Bhang-Samutkirtanata	269
(ग) भंगोपदर्शनता	२७१	(c) Naigam-Vyavahar Naya Sammat Bhangopadarshanata	272
(घ) समवतार	२७३	(d) Kaalnupurvi : Samavatara	273
(ङ) अनुगम	२७५	(e) Kaalnupurvi : Anugam	275
(ङ-१) सत्पदप्ररूपणता	२७५	(e-1) Kaalnupurvi : Satpadprarupana-Dvar	276
(ङ-२) द्रव्यप्रमाण	२७६	(e-2) Kaalnupurvi : Dravyapramana-Dvar	276
(ङ-३, ४) क्षेत्र और स्पर्शना प्ररूपणा	२७८	(e-3, 4) Kaalnupurvi : Ksheta-Dvar and Sparshana-Dvar	278
(ङ-५) कालप्ररूपणा	२७९	(e-5) Kaalnupurvi : Kaal-Dvar	279
(ङ-६) अन्तरप्ररूपणा	२८२	(e-6) Kaalnupurvi : Antar-Dvar	282
(ङ-७) भागद्वार	२८४	(e-7) Kaalnupurvi : Bhaag-Dvar	284
(ङ-८, ९) भाव और अल्पबहुत्व द्वार	२८४	(e-8, 9) Kaalnupurvi : Bhaava-Dvar and Alpabahutva-Dvar	285
संग्रहनयसम्मत अनौपनिधिकी कालानुपूर्वी	२८५	Samgraha Naya Sammat Anaupanidhiki Kaal-Anupurvi	285
संग्रहनयसम्मत अर्थपदप्ररूपणता	२८६	Samgraha Naya Sammat Arth-Padaprarupana	286
औपनिधिकी कालानुपूर्वी	२८७	Aupanidhiki Kaal-Anupurvi	287
औपनिधिकी कालानुपूर्वी : द्वितीय प्रकार	२८९	Another Aupanidhiki Kaal-Anupurvi	289
उत्कीर्तनानुपूर्वी निरूपण	२९४	Utkirtana-Anupurvi	294
गणनानुपूर्वी प्ररूपणा	२९७	Ganana-Anupurvi	297
संस्थानानुपूर्वी प्ररूपणा	२९९	Samsthana-Anupurvi	300
समाचारी-आनुपूर्वीप्ररूपणा	३०३	Samachari-Anupurvi	303
भावानुपूर्वीप्ररूपणा	३०७	Bhaava-Anupurvi	307

नामाधिकार प्रकरण		**The Discussion on Nama**	

नाम	३१०	Nama	310
(१) एक नाम	३११	(1) Eka Nama (One-Named)	312
(२) द्विनाम	३१२	(2) Do Nama (Two-Named)	312
दो नाम के सामान्य-विशेष भेद	३१५	Specific and General	315

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अजीव द्रव्य के सामान्य विशेष नाम	३३१	General and Specific Names of Non-Living Substance	331
(३) त्रिनाम	३३२	(3) Trinama	332
(क) द्रव्यनाम	३३३	(a) Dravya-Nama	334
(ख) गुणनाम	३३४	(b) Guna-Nama	334
वर्णनाम के भेद	३३५	Varna-Nama	336
गंधनाम	३३६	Gandh-Nama	336
रसनाम	३३७	Rasa-Nama	337
स्पर्शनाम	३३७	Sparsh-Nama	338
संस्थाननाम	३३८	Samsthana-Nama (Structure-Name)	338
(ग) पर्यायनाम	३३९	(c) Paryaya-Nama	340
त्रिनाम का दूसरा प्रकार	३४२	Another Type of Trinama	343
(४) चतुर्नाम	३४४	(4) Chaturnama (Four-Named)	345
(५) पंचनाम	३४७	(5) Panch Nama (Five-Named)	347

भाव प्रकरण — **The Discussion on Bhaava**

भाव वर्णन : छह नाम	३४९	Chhaha Nama (Six-Named)	349
(१) औदयिक भाव	३५२	(1) Audayik Bhaava	352
जीवोदयनिष्पन्न औदयिकभाव का स्वरूप	३५४	Jivodaya-Nishpanna Audayik-Bhaava	355
अजीवोदयनिष्पन्न औदयिकभाव का स्वरूप	३५५	Ajivodaya-Nishpanna Audayik Bhaava	356
(२) औपशमिकभाव का स्वरूप	३५८	(2) Aupashamik-Bhaava	358
(३) क्षायिक भाव का स्वरूप	३६०	(3) Kshayik-Bhaava (Extinct State)	360
(४) क्षायोपशमिकभाव का वर्णन	३६५	(4) Kshayopashamik-Bhaava	366
(५) पारिणामिकभाव	३६९	(5) Parinamik Bhaava	369
(६) सान्निपातिक भाव	३७४	(6) Sannipatik-Bhaava	375
द्विकसंयोगज दस सान्निपातिक भाव नाम	३७५	Sannipatik-Bhaava with a Combination of Two	376
त्रिकसंयोगज दस सान्निपातिकभाव	३८१	Sannipatik-Bhaava with a Combination of Three	382
चतुःसंयोगज सान्निपातिकभाव	३८९	Sannipatik-Bhaava with a Combination of Four	389
पंचसंयोगी भाव	३९४	Sannipatik-Bhaava with a Combination of Five	394

स्वर-मण्डल प्रकरण — **The Discussion on Svar**

सप्तनाम निरूपण	३९६	Saat Nama (Seven-Named)	396
सात स्वरों के स्वरस्थान	३९८	Places of Origin of Seven Svars	399

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जीवनिश्रित सप्त स्वर	४००	Svars Associated with Beings	401
अजीवनिश्रित सप्त स्वर	४०१	Svars Associated with Non-Beings	402
सप्तस्वरों के स्वरलक्षण तथा फल	४०३	Characteristics and Results of Seven Svars	405
सप्तस्वरों के ग्राम और उनकी मूर्च्छनाएँ	४०६	Gram and Murcchana of Seven Svars	406
सप्त स्वरोत्पत्ति विषयक जिज्ञासा : समाधान	४०८	Some Queries about Seven Svars	409
गीतगायक की योग्यता का निरूपण	४०९	Attributes of a Singer	409
गीत के छह दोष	४०९	Six Faults of a Singing	410
गीत के आठ गुण	४१०	Eight Merits of Singing	411
दूसरी प्रकार से संगीत के आठ गुण	४११	Other Eight Merits of Singing	412
गीत के वृत्त-छन्द	४१५	Vritta of Song	415
गीत की भाषा	४१६	Language of a Song	416
गीतगायक के प्रकार	४१६	Types of Singer	417
उपसंहार	४१७	Conclusion	417
विभक्ति प्रकरण		**The Discussion on Declension**	
आठ विभक्तियों के उदाहरण	४११	Examples of Eight Vibhaktis	420
नवरस प्रकरण		**The Discussion on Nine-Sentiments**	
नवनाम : काव्य-रस प्रकरण	४२४	No Name	424
(१) वीररस	४२६	(1) Vira-Rasa	427
(२) शृंगाररस	४२७	(2) Shringar-Rasa	427
(३) अद्‌भुतरस	४२८	(3) Adbhut-Rasa	428
(४) रौद्ररस	४२९	(4) Raudra-Rasa	429
(५) व्रीडनकरस	४२९	(5) Vridanak-Rasa	430
(६) वीभत्सरस	४३१	(6) Vibhatsa-Rasa	431
(७) हास्यरस	४३२	(7) Hasya-Rasa	432
(८) करुणरस	४३३	(8) Karun-Rasa	433
(९) प्रशान्त रस	४३३	(9) Prashant-Rasa	434
बत्तीस दोष	४३८	Thirty Two Faults	439

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

अनुयोगद्वार सूत्र
ANUYOGADVAR SUTRA

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नमो नाणस्स : नमो सुय देवस्स
NAMO NANASSA : NAMO SUYA DEVASSA

आवश्यक प्रकरण
THE DISCUSSION ON ESSENTIALS

पाँच ज्ञान का वर्णन

१. नाणं पंचविहं पण्णत्तं। तं जहा–(१) आभिणिबोहियणाणं, (२) सुयणाणं, (३) ओहिणाणं, (४) मणपज्जवणाणं, (५) केवलणाणं।

१. ज्ञान पाँच प्रकार का है। जैसे–(१) आभिनिबोधिकज्ञान, (२) श्रुतज्ञान, (३) अवधिज्ञान, (४) मनःपर्यवज्ञान, और (५) केवलज्ञान।

FIVE TYPES OF KNOWLEDGE

1. *Jnana* or knowledge is said to be of five types—(1) *Abhinibodhik-jnana* (sensory knowledge), (2) *Shrut-jnana* (scriptural knowledge), (3) *Avadhi-jnana* (extra-sensory perception of the physical dimension; something akin to clairvoyance), (4) *Manahparyav-jnana* (extra-sensory perception and knowledge of thought process and thought-forms of other beings; something akin to but more subtle than telepathy), and (5) *Keval-jnana* (omniscience).

विवेचन–नन्दीसूत्र में पाँच ज्ञान का विस्तार से वर्णन किया गया है (देखें, सचित्र नन्दीसूत्र)। इस अनुयोगद्वार सूत्र में ज्ञान के द्वितीय मुख्य भेद श्रुतज्ञान की चर्चा विशेष विस्तार से है। पाँच ज्ञानों में चार ज्ञान–मतिज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान तथा केवलज्ञान मूक/अभाषक हैं। किन्तु श्रुतज्ञान अमूक/भाषक है।

मूलतः ज्ञान दो प्रकार का होता है–एक अनुभवात्मक/संवेदनात्मक तथा दूसरा शब्दात्मक/व्याख्यात्मक। अनुभवात्मक ज्ञान से व्यक्ति स्वयं लाभ उठाता है। किन्तु जब उस ज्ञान से दूसरों को लाभान्वित करने का प्रसंग आता है तो वह अनुभवात्मक ज्ञान शब्दात्मक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बन जाता है। मूक ज्ञान भाषक बन जाता है। स्वार्थ-स्व-हित करने वाला ज्ञान परार्थ-परोपकारी बन जाता है।

मतिज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान और केवलज्ञान का वाणी से कोई सम्बन्ध नहीं है। अतः इन्हें मूक, स्वार्थ या स्व-संवेद्य कहा गया है। श्रुतज्ञान भाषक है। वह वाणी का विषय है। इसलिए उसे स्वार्थ और परार्थ दोनों ही माना गया है।

श्रुतज्ञान का अर्थ है, वह ज्ञान जो सुना जाता है। **सुणेइ त्ति-सुयं** (नंदी) जो सुना जाता है वह श्रुत है। **जं सुणइ तं सुयं भणियं** (वि. भा. ९८)। दूसरों की वाणी से या परोपदेश से जो ज्ञान प्राप्त होता है, वह श्रुत-सुना हुआ ज्ञान है। मूलतः ऐसा सुना हुआ श्रुतज्ञान स्वार्थ या स्व-संवेद्य कोटि का है। परन्तु इसके पश्चात् यह सुना हुआ ज्ञान जब शब्द का विषय बनता है, वाणी द्वारा प्रकट होता है तब वह परार्थ या परोपकारी बन जाता है। शब्द-आश्रित श्रुतज्ञान, द्रव्य श्रुत है तथा वह ज्ञान, जो जीव का परिणाम है, भाव श्रुत है।

आचार्य जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण ने श्रुतज्ञान को दीपक की उपमा दी है। दीपक उत्पत्ति में पराश्रित है, किन्तु प्रज्वलित होने पर स्वयं को प्रकाशित करता है और दूसरों को भी-

पाएण पराहीणं दीवो व्व परप्पबोहयं जं च।
सुयनाणं तेण परप्पबोहणत्थं तदणुओगो।।

-विशेषावश्यक भाष्य ८३९

दीपक की तरह श्रुतज्ञान भी परोपदेश से प्रकट होता है। प्रकट होने पर श्रुतज्ञान स्व को भी प्रकाशित करता है और दूसरों को प्रबोध देने में समर्थ होता है। इसलिए यह स्व-पर प्रकाशक है।

ज्ञान आत्मा का परिणाम है, जीव का गुण या लक्षण है। **उवओगलक्खणो जीवो**-(उत्तराध्ययनसूत्र) प्रत्येक जीव में चाहे वह मुक्त जीव है या संसारी जीव है; चाहे मनुष्य, देव, नारक, तिर्यंच और निगोद का जीव है, ज्ञान का कुछ न कुछ अंश उसमें विद्यमान रहता ही है। जिसमें ज्ञान (चेतना) नहीं है, वह जीव नहीं है।

ज्ञातिः ज्ञानम्-जानना ज्ञान है। जिससे जाना जाता है वह आत्मा है, जो आत्मा है वह भी ज्ञान है-**जेण वि जाणइ से आया। जे आया से विन्नाणे**-यह आगम वचन ज्ञान और आत्मा की एकात्मकता सिद्ध करता है। प्रश्न होता है, ज्ञान जब आत्मा का अभिन्न गुण है तो फिर उसके भेद क्यों किये गये? ज्ञान तो एक सम्पूर्ण सूर्यमण्डल है, उसका प्रकाश विभक्त नहीं किया जा सकता। फिर ज्ञान के मति, श्रुत आदि पाँच भेद किस कारण किये गये?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इसका उत्तर देते हुए नन्दीसूत्र में सूर्य और बादल का दृष्टान्त दिया है। सूर्य पर जब बादल आ जाते हैं तो उसकी प्रभा या प्रकाश आवृत्त हो जाता है। यदि बादल सघन होते हैं तो प्रकाश अधिक मात्रा में आवृत्त रहता है। जितने भाग में बादल ढँके रहते हैं उतना सूर्य का प्रकाश भी मन्द रहता है। इसी प्रकार आत्मा में ज्ञान की अनन्त सत्ता है, परन्तु मोह कर्म और ज्ञानावरणीय कर्म की सघनता के कारण जितना भाग आवृत्त रहता है, ज्ञान का प्रकाश उतना ही कम होता है। कर्मों के क्षयोपशम भाव की तरतमता के कारण ही ज्ञान शक्ति में अन्तर पड़ता है।

आत्मा में पूर्णतः प्रकाशित अनन्त ज्ञान केवलज्ञान कहलाता है। परन्तु जब तक वह ज्ञान-सूर्य समग्र रूप में प्रकाशित नहीं होता तब तक मतिज्ञानावरण के क्षयोपशम से मतिज्ञान, श्रुतज्ञानावरण के क्षयोपशम से श्रुतज्ञान की उपलब्धि होती रहती है। इसलिए ज्ञान मूलतः एक होने पर भी कर्मों के क्षयोपशम के कारण उसके पाँच भेद बताये हैं।

चूर्णिकार ने प्रश्न उठाया है कि सूत्र की आदि में पाँच ज्ञान का वर्णन क्यों किया है? जबकि इस सूत्र का विषय तो श्रुतज्ञान का वर्णन करना ही है। इसका समाधान भी चूर्णिकार ने दिया है-**विग्घोवसमणनिमित्तं आदीए मंगल परिग्गहं करेइ**-विघ्न की उपशान्ति के लिए आदि में 'मंगल' किया जाता है। जैसे-भाव मंगल के रूप में **'णमो अरिहंताणं'** पद का स्मरण किया जाता है। उसी प्रकार **णाणं पयासयरे**-ज्ञान समस्त भावों का प्रकाश करने वाला है; आत्म आनन्द प्रदाता होने से स्वयं मंगल रूप है। अतः ज्ञान को मंगल रूप मानकर यहाँ सर्वप्रथम पाँच प्रकार के ज्ञान का कथन है।

पाँच ज्ञान का स्वरूप

(१) **आभिनिबोधिक ज्ञान (मतिज्ञान)**-मन और इन्द्रियों की सहायता से जो बुद्धि, संवेदना और अनुभव रूप ज्ञान होता है वह आभिनिबोधिक ज्ञान है। इसे सामान्यतया मतिज्ञान कहते हैं।

(२) **श्रुतज्ञान**-बोले गये शब्द, ध्वनि या वचन द्वारा अर्थ रूप में ज्ञान होता है वह श्रुतज्ञान है। यद्यपि यह भी इन्द्रिय और मन की सहायता से ही होता है परन्तु इसमें चिन्तन व मनन की मुख्यता रहती है, अतः इसे बुद्धि अथवा मन की क्रिया माना है। इसके दो नियम हैं-(१) मतिपूर्वक, और (२) परोपदेश से। नन्दीसूत्र में बताया है-**पुव्वं सुयं न मइ सुयपुव्विआ** मतिज्ञान के बाद श्रुतज्ञान होता है तथा वह शब्द आदि सापेक्ष होता है। तत्त्वार्थ सूत्र (१/११) के अनुसार यह परोपदेश से होता है-**परोपदेशत्वाच्च श्रुतज्ञानम्**।

(३) **अवधिज्ञान**-इन्द्रिय और मन की सहायता के बिना केवल आत्मा द्वारा जो अर्थबोध होता है, वह अवधिज्ञान है। इसमें भी दो नियम हैं-(१) यह केवल रूपी पदार्थों को ही प्रत्यक्ष

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जानता है, अरूपी को नहीं। (२) अपनी एक अवधि-सीमा के भीतर रहे पदार्थों को ही जान सकता है।

(४) **मनःपर्यवज्ञान**—मन वाले जीव संज्ञी जीव कहलाते हैं। संज्ञी जीवों के मनोभावों को, उनके चिन्तन रूप मनःपरिणामों को जानना मनःपर्यवज्ञान है।

(५) **केवलज्ञान**—समस्त ज्ञानावरणीय कर्मों के क्षय से आत्मा की सम्पूर्ण ज्ञान शक्ति का प्रकाश होने पर लोक-अलोकवर्ती समस्त ज्ञेय पदार्थों को उनकी त्रिकालवर्ती, गुण-पर्यायों को जानने वाला केवलज्ञान है।

मतिज्ञान और श्रुतज्ञान सभी संसारी प्राणियों को होता है।

अवधिज्ञान देव, नरक भूमि में जन्म के साथ तथा मनुष्य व तिर्यंचों में विशेष कर्मों के क्षयोपशम से होता है।

मनःपर्यवज्ञान केवल विशिष्ट तपस्वी श्रमणों को ही होता है।

केवलज्ञान वीतराग आत्मा के चार घनघाती कर्म क्षय होने पर होता है। केवलज्ञान में अन्य चारों ज्ञान का अस्तित्व स्वयं समाहित हो जाता है। *(पाँच ज्ञान का विस्तृत वर्णन सचित्र नन्दीसूत्र, पृष्ठ ७०-१८० देखें।)*

Elaboration—*Nandi Sutra* has discussed five types of knowledge in details (see *Illustrated Nandi Sutra*). In this *Anuyogadvar Sutra shrut-jnana,* the second of these five, has been discussed in greater detail. Of the five kinds of knowledge four—*abhinibodhik-jnana (mati-jnana), avadhi-jnana, manahparyav-jnana* and *Keval-jnana*—are non-vocal or non-lingual. Only *shrut-jnana* is vocal or lingual.

Basically knowledge is of two types—One is intuitive or cognitive and the other is linguistic or descriptive. Cognitive knowledge is beneficial to the individual who experiences it. But when it comes to benefitting others that cognitive knowledge turns into vocal knowledge. Non-lingual knowledge turns into linguistic knowledge. The self-oriented knowledge becomes other-oriented or beneficial to others.

Mati-jnana, avadhi-jnana, manahparyav-jnana and *Keval-jnana* have no connection with speech. Thus they are called non-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

vocal, self-oriented or auto-experienced. *Shrut-jnana* is lingual. It is a subject of speech. Thus it is believed to be self-oriented as well as other-oriented.

Shrut-jnana means the knowledge that is heard or listened. That which is listened is *shrut (Nandi Sutra).* That which is acquired by hearing utterance or discourse of others is called *shrut* or listened knowledge (*Visheshavashyak Bhashya* 98). When originally listened, this knowledge belongs to the self-oriented or auto-experienced category. But after that when this listened knowledge becomes vocal and expressed through speech it is meant for others or for the benefit of others. *Shrut-jnana* in lingual form is *dravya-shrut* (physical aspect of *shrut*) and that which is intuitive is *bhaava-shrut* (mental aspect of *shrut*).

Acharya Jinabhadra Gani has used lamp as an analogy for *shrut-jnana.* A lamp is dependent on others for its origin and emission of light but once lit it enlightens itself as well as others.

Like a lamp *shrut-jnana* is acquired through an act of edifying by others but once acquired it helps one enlighten himself, making him capable of enlightening others. Therefore it is self-enlightening as well as other-enlightening.

Knowledge is the activity of soul, an attribute of living being (*Uttaradhyayan Sutra*). Be it in liberated or worldly (human, god, hell-being, animal, and dormant) form, every soul possesses knowledge no matter in how minute a fraction it is. That which is devoid of knowledge or *chetana* (sentience or consciousness) is not a soul.

To know is knowledge. 'That which knows is soul and that which is soul is knowledge.' This statement from *Agam* is evidence of oneness of knowledge and soul. A question arises—When knowledge is the inherent essential attribute of soul why it has been divided into categories ? Knowledge is like the complete orb of the sun, its light cannot be divided. Then why has it been divided into five categories like *mati-jnana* and *shrut-jnana* ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

In reply *Nandi Sutra* gives an analogy of the sun and clouds. When the sun is covered by clouds, its light is obstructed. If the clouds are dense there is greater obstruction. Sunlight is reduced in the portion obstructed by clouds. In the same way the soul has infinite potency of knowledge but the denseness of deluding *karmas* and knowledge obstructing *karmas* veils the light of knowledge in the proportion it obstructs. There is a difference in the potency of knowledge depending on the ratio of destruction-cum-suppression of *karmas*.

The completely unveiled infinite knowledge of soul is called *keval-jnana*. But as long as that sun of light does not scintillate with all its radiance the process of acquiring *mati-jnana* and *shrut-jnana* through *kshayopasham* (destruction-cum-suppression) of *mati-jnanavarana* (sensory-knowledge obscuring) and *shrut-jnanavarana* (scriptural-knowledge obscuring) *karmas* respectively continues. For this reason five categories of knowledge have been defined although fundamentally it is singular.

The commentator *(Churni)* has raised another question that when the theme of the book is only *shrut-jnana*, why the book starts with a description of five kinds of knowledge ? He himself suggests the answer—In order to pacify the source of impediments while commencing a work, first of all an auspicious verse or word or symbol is written or uttered or placed. For example *'Namo Arihantanam'* is recited at the beginning. Knowledge is the destroyer of all *karmas*. As it is the source of bliss, it is auspicious. Therefore, considering knowledge to be auspicious its five categories have been stated at the beginning.

DEFINITIONS OF FIVE KINDS OF KNOWLEDGE

(1) *Abhinibodhik-jnana* or *Mati-jnana* (Sensory knowledge)—The knowledge acquired by means of five sense organs and the mind in the form of wisdom, perception and experience is called *abhinibodhik-jnana*. It is popularly known as *mati-jnana*.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(2) *Shrut-jnana* (Scriptural knowledge)—The knowledge acquired by hearing sound, word or speech in the form of meaning is called *shrut-jnana.* Although this type of knowledge is also received with the help of sense organs and the mind, because of the larger involvement of the processes of thinking and contemplating it is primarily considered to be an activity of mind. There are two processes involved in acquiring this knowledge—(1) Through thinking, and (2) through edifying experience. It is stated in *Nandi Sutra* that *shrut-jnana* follows *mati-jnana* and it is word oriented. According to *Tattvarth Sutra* (1/11) it is taught by others.

(3) *Avadhi-jnana* (Extra-sensory perception of the physical dimension)—The knowledge acquired by the soul without the help of sense organs and mind is known as *avadhi-jnana.* It follows two rules—(1) Its capacity is to see and know only material things; the formless things are beyond its capacity. (2) It has the capacity to directly perceive material things only within certain defined parameters *(avadhi).*

(4) *Manahparyav-jnana*—Beings endowed with mind are called *sanjni* or sentient. The knowledge that perceives and interprets transformations taking place within the mind of sentient beings in the form of thoughts and attitudes is known as *manahparyav-jnana.*

(5) *Keval-jnana*—The knowledge which comes with the total extinction of the *Jnanavaraniya Karma* is *keval-jnana.* It covers all attributes and modes of all things worth knowing, in the occupied and unoccupied space, in all the three sections of time.

All beings in the world possess *mati-jnana* and *shrut-jnana.*

The beings of the divine and infernal realms have *avadhi-jnana* since birth. Human beings and animals acquire it only as a consequence of *kshayopasham* (the process of extinction-cum-pacification) of specific *karmas.*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Only some ascetics practicing higher level of austerities acquire *manahparyav-jnana*.

Keval-jnana is acquired when the four intense vitiating *karmas* are destroyed. The other four kinds of *jnana* merge in *keval-jnana*. (for detailed description of five kinds of *jnana* see *Illustrated Nandi Sutra*, p. 70-180.)

श्रुतज्ञान का महत्त्व

२. तत्थ चत्तारि ठाणाइं ठप्पाइं ठवणिज्जाइं, णो उद्दिस्संति, णो समुद्दिस्संति, णो अणुण्णविज्जंति।

सुयनाणस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो य पवत्तइ।

२. उनमें चार ज्ञान (मतिज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान और केवलज्ञान) स्थाप्य हैं (प्रतिपादन में असमर्थ होने के कारण व्यवहार योग्य नहीं है अतः स्थापनीय या उपेक्षा करने योग्य है) उनका (गुरु द्वारा शिष्यों को) उद्देश-(पढ़ने की आज्ञा या विधि का कथन या उपदेश), **समुद्देश**-(पढ़े हुए ज्ञान को स्थिर रखने के लिए परिवर्तन का निर्देश), तथा **अनुज्ञा**-(दूसरों को पढ़ाने की आज्ञा) नहीं होती। किन्तु श्रुतज्ञान का उद्देश, समुद्देश, अनुज्ञा और अनुयोग (व्याख्या) होता है।

THE IMPORTANCE OF *SHRUT-JNANA*

2. Four out of these (*mati-jnana, avadhi-jnana, manahparyav-jnana* and *keval-jnana*) are only to be stabilized or ensconced (as they cannot be conveyed they are beyond propagation, therefore, they can only be ensconced thus conventionally avoidable). They are not permitted to be studied or preached (*uddesh*), to be revised and memorized (*samuddesh*), and to be taught (*anujna*). Only *shrut-jnana* is allowed to be studied or preached (*uddesh*), to be revised and memorized (*samuddesh*), and to be taught (*anujna*) as also to be subjected to disquisition or elaboration (*anuyoga*).

विवेचन-इस सूत्र की व्याख्या करते हुए चूर्णिकार कहते हैं-श्रुतज्ञान के सिवाय चारों ज्ञान केवल स्थाप्य हैं, अर्थात् इनका दूसरों के लिए कोई उपयोग नहीं होता। ये केवल

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनुभावात्मक ज्ञान है इसलिए ये स्थापना योग्य है। परन्तु श्रुतज्ञान शब्द व्यवहार में समर्थ है, परोपदेश में समर्थ है, शब्दात्मक है अतः वह लोकोपकारी है। उसके उद्देश आदि होते हैं। श्रुतज्ञान का विषय सबसे अधिक व्यापक है, गम्भीर है, अतः वह गुरु के उपदेश आदि की अपेक्षा रखता है।

Elaboration—Elaborating this aphorism the commentator (*Churni*) states—Besides *shrut-jnana* all the four kinds of *jnana* are only to be stabilized and ensconced. This means that they are of no use to others. These are subjects of self-experience and thus worth stabilizing only. But *shrut-jnana* can be used, can be preached to others, and is verbal. Thus it can be used for the benefit of people. It can be studied, revised and taught. The field of *shrut-jnana* is very wide and profound, therefore it requires teaching or preaching by a *guru*.

पारिभाषिक शब्द–उद्देश–सर्वप्रथम शास्त्र पढ़ने के लिए शिष्य गुरु से आज्ञा माँगता है। तब गुरु उपदेश या प्रेरणा देते हैं, मार्गदर्शन करते हैं। शास्त्र पाठ की विधि बताते हैं। यह उद्देश कहा जाता है।

समुद्देश–पढ़े हुए आगम का, श्रुतज्ञान का उच्चारण कैसे करना, कब करना, उसके हीनाक्षर आदि दोषों का परिहार करके बार-बार स्वाध्याय की प्रेरणा देना, ताकि पढ़ा हुआ श्रुतज्ञान स्थिर रह सके, यह समुद्देश है।

अनुज्ञा–पढ़े हुए श्रुतज्ञान को अपने हृदय में, स्मृति में, संस्कारबद्ध करके धारण करना और फिर दूसरों के उपकार के लिए उसका अध्ययन कराने की प्रेरणा देना अनुज्ञा है।

अनुयोग–पढ़े हुए श्रुतज्ञान को योग्य अर्थ के साथ जोड़कर उसकी अर्थ-संगति करना, उसकी व्याख्या करना अनुयोग है।

सूत्र अणुरूप अर्थात् संक्षिप्त होता है और अर्थ विस्तृत होता है। एक सूत्र के अनेक अर्थ हो सकते हैं। कहाँ पर कौन-सा अर्थ उपयुक्त है, इसका योग करना अनुयोग है। वृत्तिकार ने कहा है–

निययाणुकूलो जोगो सुत्तत्थस्स जो य अणुओगो।
सुत्तं च अणु तेण जोगो अत्थस्स अणुओगो।।

–वृत्ति पत्र ७

'अनु' अर्थात् नियत और निश्चित अर्थ को सूत्र अभिप्राय के साथ जोड़ना; 'योग करना'–अर्थात् सूत्रकार के आशय के अनुरूप उसके अर्थ की व्याख्या करना अनुयोग है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनुयोग के महत्त्व को समझाने के लिए टीकाकार हरिभद्रसूरि ने एक दृष्टान्त दिया है। एक ग्वाले के पास सफेद, काली, चितकबरी आदि अनेक रंग की गायें हैं और उनके बछड़े भी हैं। जब जिस गाय का दूध दुहना होता है, तब वह उसी गाय के बछड़े को उसके स्तनों से लगाता है, तो गाय दूध देने लगती है। यदि काली गाय के स्तनों से सफेद गाय का बछड़ा लगा देगा तो गाय दूध नहीं देगी। उसी प्रकार जिस सूत्र का जहाँ जो अर्थ या भाव समझना चाहिए, वहाँ उसी के अनुसार अर्थ का योग करना चाहिए। इसे अनुयोग कहा जाता है।

इस अनुयोगद्वारसूत्र का मूल विषय पढ़े हुए श्रुतज्ञान का शिक्षण देने एवं व्याख्या करने की योग्यता सिखाना है। इसलिए अनुयोगद्वार आगमज्ञान की व्याख्या पद्धति तथा शिक्षा की विधि का प्रतिपादन करने वाला शास्त्र है।

Technical Terms—Uddesh—First step in study of the canon is to seek permission to study scriptures from the teacher. Then the teacher preaches, inspires or gives directions and explains the procedure of reciting. This is called *uddesh* or consent to study.

Samuddesh—To instruct when to recite *Agam* or *shrut-jnana* that one has read; to correct the mistakes in text and pronunciation; and to advise to study again and again in order to fix it in memory is called *samuddesh.*

Anujna—To first memorize and understand the acquired *shrut-jnana* so that it can be instantaneously recalled; and then to advise and direct others to study the same for their benefit is called a*nujna.*

Anuyoga—To understand the read scriptures with the help of proper meaning of the words; to systematically analyze and elaborate the words and text is called *anuyoga* (disquisition).

An aphorism is brief or minute like an *anu* (atom) and meaning is detailed or extensive. One aphorism can have various meanings. To fit (*yoga*) the right meaning at right place is called *anuyoga.* The commentator (*Vritti)* states—to associate (*yoga*) the intended and prescribed meaning (*anu*) with the concept of an aphorism is *anuyoga.* In other words to elaborate an aphorism in consonance with the writer is *anuyoga.*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

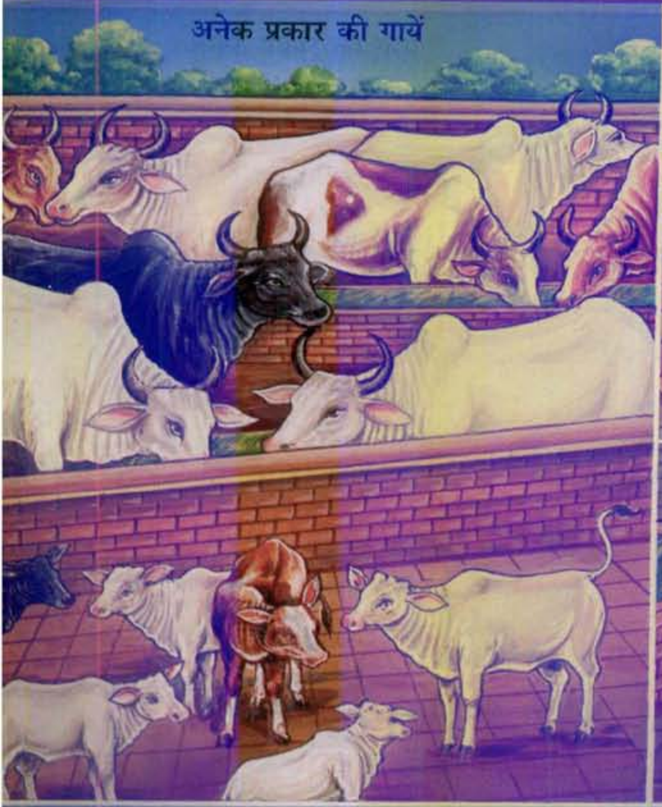

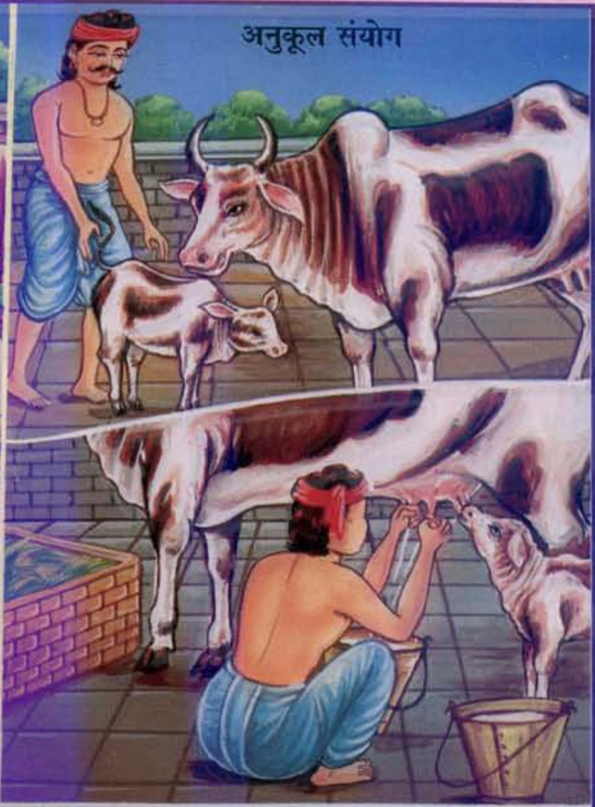

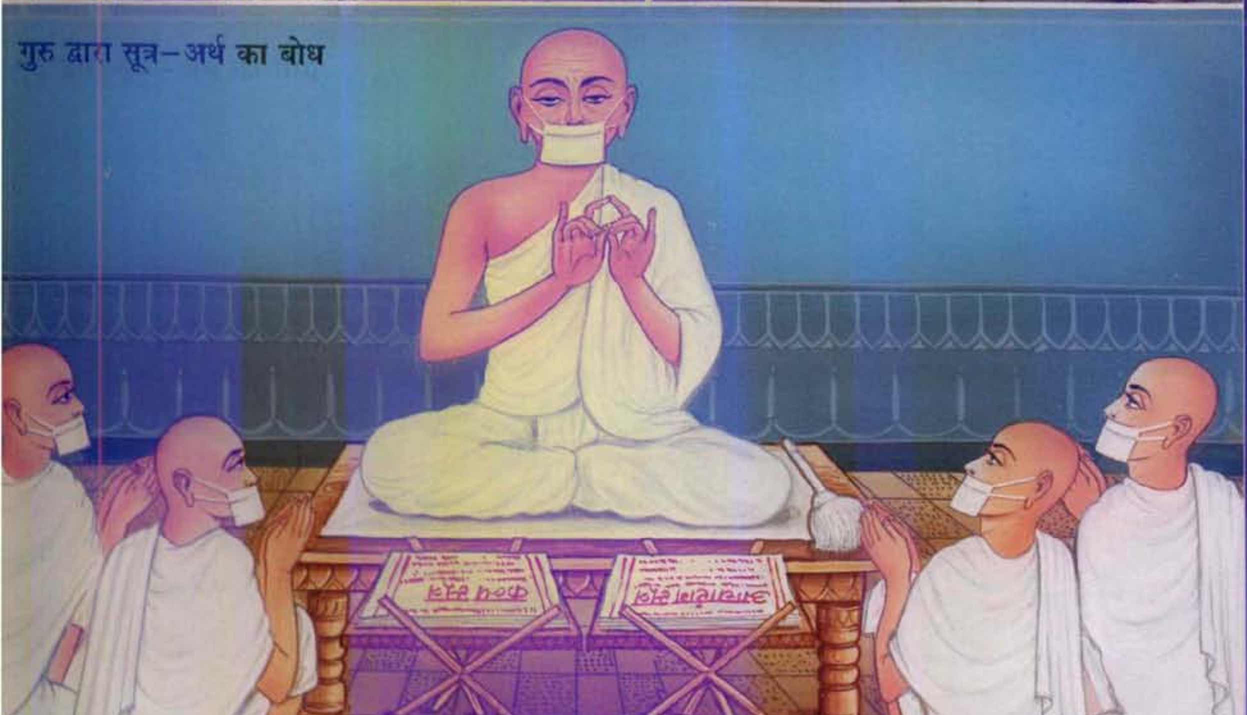

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

चित्र परिचय १

Illustration No. 1

अनुयोग का अर्थ

सूत्र का उसके अनूकूल अर्थ के साथ योग करना अनुयोग है। जिस प्रकार किसी ग्वाले के पास सफेद, काली, पीली, चितकबरी अनेक रंगों की गायें हैं। उनके वैसे ही बछड़े हैं। दूध दुहने के समय जिस गाय का जो बछड़ा है उसी बछड़ें को गाय के स्तनों से लगाता है तो गाय दूध देने लगती है। यह अनुयोग का उदाहरण है। यदि काली गाय का बछड़ा सफेद गाय के स्तनों से लगा दिया तो गाय दूध नहीं देगी। इसे अन+अनुयोग समझना चाहिए।

इसी प्रकार शास्त्र या सूत्र के भाव के अनुसार अनुकूल अर्थ करते हुए गुरु शिष्यों को शास्त्र का रहस्य समझाते हैं कि किस सूत्र का क्या अर्थ है। इस प्रक्रिया का नाम अनुयोग है।

–सूत्र २

MEANING OF ANUYOGA

To associate *(yoga)* the intended and prescribed meaning *(anu)* with the concept of an aphorism is *anuyoga*. In other words to elaborate an aphorism in consonance with the concept of the writer is *anuyoga* or disquisition. A cowherd has cows of many colours like white, black, and spotted. Each of them has a calf. When he wants to milk a cow he allows the calf of that particular cow to suckle and the cow yields milk. If he will use the calf of the black cow with the white cow it will not yield milk. This is *anu + yoga*.

In the same way a guru reveals the secrets of the scriptures to his disciples by giving appropriate meaning and elaborating an aphorism in consonance with the concept of the writer. This process is called *anuyoga*.

—*Sutra : 2*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

To convey the importance of *anuyoga,* Haribhadrasuri the commentator (*Tika*) has cited an example. A cowherd has cows of many colours like white, black and spotted. Each of them has a calf. When he wants to milk a cow he allows the calf of that particular cow to suckle and the cow yields milk. If he will use the calf of the black cow with the white cow it will not yield milk. In the same way appropriate meaning or elaboration should be used with a specific aphorism to understand it correctly. This process is called *anuyoga.*

The basic theme of this *Anuyogadvar Sutra* is to impart to a person the proficiency to teach and elaborate the knowledge of scriptures he has read or studied. Thus *Anuyogadvar Sutra* is a scripture that defines the process of elaborating and teaching the knowledge contained in *Agams.*

३. जइ सुयणाणस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो य पवत्तइ, किं अंगपविट्ठस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो य पवत्तइ ? अंगबाहिरस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो य पवत्तइ ?

अंगपविट्ठस्स वि उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो य पवत्तइ, अंगबाहिरस्स वि उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो य पवत्तइ।

इमं पुण पट्ठवणं पडुच्च अंगबाहिरस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो।

३. **(प्रश्न)** यदि श्रुतज्ञान में उद्देश, समुद्देश, अनुज्ञा और अनुयोग की प्रवृत्ति (प्रयोग) होती है, तो क्या वह उद्देश, समुद्देश, अनुज्ञा और अनुयोग की प्रवृत्ति अंगप्रविष्ट श्रुत में होती है अथवा अंगबाह्य श्रुत में उद्देश, समुद्देश, अनुज्ञा और अनुयोग की प्रवृत्ति होती है ?

(उत्तर) अंगप्रविष्ट (आचारांग आदि) श्रुत में उद्देश, समुद्देश, अनुज्ञा और अनुयोग की प्रवृत्ति होती है, तथा अंगबाह्य श्रुत में भी उद्देश, समुद्देश, अनुज्ञा और अनुयोग की प्रवृत्ति होती है।

(किन्तु) प्रस्तुत प्रस्थापना की दृष्टि से (हम वर्तमान में अंगबाह्य श्रुत की व्याख्या करना चाहते हैं, इस दृष्टि से) यहाँ अनंगप्रविष्ट (अंगबाह्य) श्रुत का उद्देश, समुद्देश, अनुज्ञा तथा अनुयोग करना हमारा अभीष्ट है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

3. (Question) If *shrut-jnana* is allowed to be studied or preached (*uddesh*), to be revised and memorized (*samuddesh*), and to be taught (*anujna*) as also to be subjected to disquisition or elaboration (*anuyoga*) then is only *Anga Pravishta Sutra* (the corpus of scriptures that is called the Twelve *Angas*) allowed to be studied or preached, to be revised and memorized, and to be taught as also to be subjected to disquisition or elaboration or is *Anga Bahya Sutra* (the corpus of scriptures that is called *Anga Bahya* or other than the twelve *Angas*) also allowed to be studied or preached, to be revised and memorized, and to be taught as also to be subjected to disquisition or elaboration.

(Answer) *Anga Pravishta Shrut* (the corpus of scriptures that is called the Twelve *Angas*) is allowed to be studied or preached (*uddesh*), to be revised and memorized (*samuddesh*), and to be taught (*anujna*) as also to be subjected to disquisition or elaboration (*anuyoga*) and *Anga Bahya Shrut* (the corpus of scriptures that is called *Anga Bahya* or other than the twelve *Angas*) is also allowed to be studied or preached, to be revised and memorized, and to be taught as also to be subjected to disquisition or elaboration.

(But) In present context (as at present it is intended to discuss the *Anga Bahya Shrut*) the aim is to indulge in study or preaching (*uddesh*), revision and memorizing (*samuddesh*), teaching (*anujna*) and disquisition or elaboration (*anuyoga*) of *Anga Bahya Shrut*.

४. जइ अंगबाहिरस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो य पवत्तइ, किं कालियस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो ? उक्कालियस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो ?

कालियस्स वि उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो। उक्कालियस्स वि उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो।

इमं पुण पट्ठवणं पडुच्च उक्कालियस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. (प्रश्न) यदि अंगबाह्य श्रुत में भी उद्देश, समुद्देश, अनुज्ञा एवं अनुयोग की प्रवृत्ति होती है, तो क्या कालिक श्रुत में उद्देश, समुद्देश, अनुज्ञा और अनुयोग की प्रवृत्ति है, अथवा उत्कालिक श्रुत में उद्देश आदि प्रवर्तमान होते हैं?

(उत्तर) कालिक श्रुत में भी उद्देश आदि (चारों) की प्रवृत्ति होती है और उत्कालिक श्रुत में भी उद्देश आदि होते हैं।

अब यहाँ प्रस्तुत प्रस्थापना की दृष्टि से उत्कालिक श्रुत का उद्देश, समुद्देश, अनुज्ञा और अनुयोग का प्रारम्भ/प्रवर्तन किया जाता है। *(कालिक तथा उत्कालिक श्रुत का विस्तृत वर्णन सचित्र नन्दीसूत्र, पृ. ३६८-३७६ में देखें।)*

4. (Question) If *Anga Bahya Shrut* is allowed to be studied or preached (*uddesh*), to be revised and memorized (*samuddesh*), and to be taught (*anujna*) as also to be subjected to disquisition or elaboration (*anuyoga*) then is *Kalika Shrut* (the scriptures that can be studied at specific time) allowed to be studied or preached, to be revised and memorized, and to be taught as also to be subjected to disquisition or elaboration or is *Utkalika Shrut* (the scriptures that can be studied at any time) also allowed to be studied or preached (*uddesh*), etc. ?

(Answer) *Kalika Shrut* (the scriptures that can be studied at specific time) is allowed to be studied or preached (*uddesh*), etc. and *Utkalika Shrut* (the scriptures that can be studied at any time) is also allowed to be studied or preached (*uddesh*), etc.

Now in present context we commence the study or preaching (*uddesh*), revision and memorizing (*samuddesh*), teaching (*anujna*) and disquisition or elaboration (*anuyoga*) of *Utkalika Shrut* (the scriptures that can be studied at any time). (for detailed discussion of *Kalika* and *Utkalika Shrut* refer to *Illustrated Nandi Sutra,* p. 368-376.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५. जइ उक्कालियस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो ? किं आवस्सगस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो ? आवस्सगवइरित्तस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो ?

आवस्सगस्स वि उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो, आवस्सगवइरित्तस्स वि उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो।

इमं पुण पट्ठवणं पडुच्च आवस्सगस्स अणुओगो।

५. (प्रश्न) यदि उत्कालिक श्रुत के उद्देश, समुद्देश आदि होते हैं, तो क्या वे उद्देश आदि आवश्यक के होते हैं अथवा आवश्यक व्यतिरिक्त श्रुत (आवश्यकसूत्र से अन्य) उत्कालिक श्रुत के होते हैं?

(उत्तर) आवश्यकसूत्र का भी उद्देश आदि होता है और आवश्यक व्यतिरिक्त सूत्रों का भी उद्देश आदि होता है।

यहाँ प्रस्तुत में आवश्यकसूत्र का अनुयोग प्रारम्भ किया जाता है।

5. (Question) If *Utkalika Shrut* is allowed to be studied or preached (*uddesh*), to be revised and memorized (*samuddesh*), and to be taught (*anujna*) as also to be subjected to disquisition or elaboration (*anuyoga*) then is *Avashyak (Sutra)* (one of the books falling under the classification of *Utkalika Shrut*) allowed to be studied or preached (*uddesh*), etc. or is *Avashyak-vyatirikta Shrut* (books other than the said *Avashyak Sutra,* falling under the classification of *Utkalika Shrut*) also allowed to be studied or preached (*uddesh*), etc. ?

(Answer) *Avashyak Sutra* is allowed to be studied or preached (*uddesh*), etc. and *Avashyak-vyatirikta Sutras* are also allowed to be studied or preached (*uddesh*), etc.

Now in present context we commence the disquisition or elaboration (*anuyoga*) of *Avashyak Sutra.*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवेचन–उक्त सूत्रों में यह स्पष्ट बताया है कि अंगप्रविष्ट श्रुत और अंगबाह्य श्रुत आदि सभी आगमों का अध्ययन करने में उद्देश, समुद्देश, अनुज्ञा और अनुयोग का व्यवहार होता है, किन्तु फिर भी बाकी सबको छोड़कर यहाँ पर केवल आवश्यकसूत्र का ही अनुयोग करने का प्रारम्भ क्यों किया जा रहा है ?

चूर्णि एवं टीका आदि में इसका समाधान करते हुए कहा है–"श्रमणों की समस्त समाचारी का मूल आधार आवश्यकसूत्र है। इसलिए अन्य आगमों को छोड़कर इसी की व्याख्या को प्राथमिकता दी गई है।" आचार्य मलधारी ने इसी दृष्टि से कहा है–**तत्र श्रमणैः श्रावकैश्च उभय संध्यं अवश्यं करणादावश्यकं**–यह प्रत्येक श्रमण और श्रावक के लिए उभयकाल (प्रातः-सायं) अवश्य करणीय है, इसलिए इसे 'आवश्यक' कहा गया है। इसीलिए सबसे प्रथम इसकी व्याख्या की जाती है। *(आवश्यक के सम्बन्ध में विस्तार के लिए देखें, अनुयोगद्वार सूत्र हिन्दी टीका श्री ज्ञान मुनि, भाग १, पृ. १२३।)*

Elaboration—In the aforesaid aphorisms it has been clearly stated that in study of all *Agams* included in both *Anga Pravishta Shrut* and *Anga Bahya Shrut* the processes of studying or preaching (*uddesh*), revising and memorizing (*samuddesh*), teaching (*anujna*) as also subjecting to disquisition or elaboration (*anuyoga*) are employed. Then why, leaving all other scriptures, disquisition of only *Avashyak Sutra* is commenced here ?

Clarifying this the commentaries (*Churni, Tika,* etc.) state—"The basis of all ascetic-praxis is *Avashyak Sutra.* Therefore priority has been given to this book over all other *Agams.*" Confirming this view Acharya Maladhari has stated—As this (activities mentioned in this book) is obligatory or essential activity or conduct to be performed every morning and evening by every ascetic and *Shravak* (a householder who has accepted the religious code of conduct) it is named *'Avashyak'*. That is why it is discussed first of all. (for details about *Avashyak Sutra* see Commentary on *Anuyogadvar Sutra* by Shri Jnana Muni, part 1, p. 123.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. जइ आवस्सयस्स अणुओगो आवस्सयण्णं किमंगं अंगाइं ? सुयक्खंधो सुयक्खंधा ? अज्झयणं अज्झयणाइं ? उद्देसगो उद्देसगा ?

आवस्सयण्णं णो अंगं णो अंगाइं, सुयक्खंधो णो सुयक्खंधा, णो अज्झयणं, अज्झयणाइं, णो उद्देसगो, णो उद्देसगा।

६. (प्रश्न) यदि आवश्यक का अनुयोग (व्याख्या) करना है तो वह क्या एक अंग है अथवा अनेक अंग हैं ? एक श्रुतस्कन्ध है या अनेक श्रुतस्कन्ध हैं ? एक अध्ययन है अथवा अनेक अध्ययन हैं ? एक उद्देशक है अथवा अनेक उद्देशक हैं ?

(उत्तर) आवश्यक एक अंग नहीं है (अंगबाह्य है) और अनेक अंग भी नहीं हैं। एक श्रुतस्कन्ध है अनेक श्रुतस्कन्ध रूप नहीं हैं। एक अध्ययन नहीं है, अपितु अनेक (छह) अध्ययन रूप हैं। एक उद्देशक भी नहीं है, और अनेक उद्देशक भी नहीं हैं।

ATTRIBUTION OF THE TERM *AVASHYAK*

6. (Question) If disquisition of *Avashyak (Sutra)* has to be done then is it one *Anga* or many *Angas* ? One *Shrutskandh* or many *Shrutskandhs* ? One *Adhyayan* or many *Adhyayans* ? One *Uddeshak* or many *Uddeshaks* ?

(Answer) *Avashyak* is neither one *Anga* (it is outside the *Anga* corpus) nor many *Angas* ? It is one *Shrutskandh* (book) not many *Shrutskandhs* ? It is not one *Adhyayan* (chapter) but many (six) *Adhyayans* ? It is neither one *Uddeshak* (section) nor many *Uddeshaks* ?

विवेचन–इस सूत्र में आठ प्रश्नों के माध्यम से आवश्यक सम्बन्धी जानकारी दी है–

अंग–तीर्थंकरों के द्वारा साक्षात् उपदिष्ट अर्थ को गणधरों द्वारा शब्द रूप में गुँथा हुआ श्रुत अंग कहलाता है। ग्यारह अंग प्रसिद्ध हैं।

श्रुतस्कन्ध–अनेक अध्ययनों का समूह, एक वृहत्काय खण्ड, पृथक् विषयों के विभाग को श्रुतस्कन्ध कहा जाता है। कुछ शास्त्र या सूत्र दो विभाग या दो श्रुतस्कन्ध के रूप में मिलते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अध्ययन–किसी विशिष्ट अर्थ के प्रतिपादक अंश को अध्ययन कहा जाता है। आगमों में अध्ययन, शतक, पद या स्थान ये चारों श्रुतस्कन्ध के उपविभाग के रूप में प्रसिद्ध हैं।

उद्देशक–एक अध्ययन के अनेक विषयों के छोटे-छोटे उपविभाग–उद्देशक कहे जाते हैं। इसको विपरीत क्रम से यों समझ सकते हैं–अनेक सूत्र, गाथा या श्लोकों के समूह को उद्देशक कहा जाता है। अनेक उद्देशकों का समूह अध्ययन, कई अध्ययनों का समुदाय श्रुतस्कन्ध और दो (अधिक भी) श्रुतस्कन्ध के समुदाय को शास्त्र कहा जाता है। वर्तमान में उपलब्ध आचारांग आदि किसी भी शास्त्र में दो से अधिक श्रुतस्कन्ध नहीं मिलते हैं। आवश्यकसूत्र के छह अध्ययन हैं–(१) सामायिक, (२) चतुर्विंशतिस्तव, (३) वन्दना, (४) प्रतिक्रमण, (५) कायोत्सर्ग, और (६) प्रत्याख्यान। जिनके विषय में आगे बताया जायेगा।

Elaboration—In this aphorism skeletal information about *Avashyak (Sutra)* has been mentioned with the help of eight questions—

Anga—The lingual compilation (*Shrut*), done by *Ganadhars,* of sermons (*Artha*) by *Tirthankars* in person is called *Anga.* The number of popularly known *Angas* is eleven.

Shrutskandh—A collection of chapters or a large section of a book with many different topics is called *Shrutskandh* or part. There are some scriptures or *Sutras* having two parts or *Shrutskandhs.*

Adhyayan—A section dealing with some specific topic is called an *Adhyayan* or a chapter. In *Agams* the popular names of sub-sections (chapters) of *Shrutskandh* are popularly known as—*Adhyayan, Shatak, Pad* and *Sthan.*

Uddeshak—Smaller sections on different topics within a chapter are called *Uddeshak.* In reverse order it can be explained as—a group of numerous aphorisms, verses or couplets is called a section (*Uddeshak*). A group of many such sections is called a chapter (*adhyayan*), a group of many chapters is called a part or volume (*shrutskandh*); and a group of two or more parts is called a scripture (*shastra*). In the available scriptures including *Acharanga* none has more than two *Shrutskandhs. Avashyak Sutra* has six chapters—(1) *Samayik,*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(2) *Chaturvinshatistava,* (3) *Vandana,* (4) *Pratikraman,* (5) *Kayotsarga,* and (6) *Pratyakhyan.* These will be discussed in due course.

निक्षेप की सूचना

७. तम्हा आवस्सयं णिक्खिविस्सामि, सुयं णिक्खिविस्सामि, खंधं णिक्खिविस्सामि, अज्झयणं णिक्खिविस्सामि।

७. इसलिए मैं यहाँ आवश्यक का निक्षेप करूँगा, श्रुत का निक्षेप करूँगा, स्कंध का निक्षेप करूँगा, अध्ययन का निक्षेप करूँगा।

INFORMING ABOUT ATTRIBUTION OF TERMS LIKE *AVASHYAK*

7. Therefore I undertake *nikshep* (attribution) of *Avashyak,* attribution of *Shrut,* attribution of *Skandh,* and attribution of *Adhyayan.*

८. जत्थ य जं जाणेज्जा णिक्खेवं णिक्खिवे णिरवसेसं।
जत्थ वि य न जाणेज्जा चउक्कयं निक्खिवे तत्थ॥१॥

८. निक्षेप करने वाला जिस विषय पर, जितने निक्षेपों की जरूरत समझता हो, वहाँ उन सभी निक्षेपों का न्यास करना चाहिए। यदि निक्षेप्ता को सब निक्षेपों का ज्ञान न हो तो वहाँ कम से कम निक्षेप चतुष्टय (चार निक्षेप–नाम, स्थापना, द्रव्य, भाव) का निक्षेप तो करना चाहिए।

8. One should apply to a subject all required types of attributions known to him about the subject. Where he does not have the knowledge of all the *nikshep*s, he should at least apply the primary quartet of attributions (*naam, sthapana, dravya* and *bhaav*).

विवेचन–उक्त दो सूत्रों में निक्षेप करने की बात कही गई है। जैनदर्शन अनेकान्तवादी है, वह वस्तु के सत्य स्वरूप को समझाने के लिए, शब्द के यथार्थ समुचित अर्थ का ज्ञान कराने के लिए अनेक दृष्टियों से उसकी व्याख्या करता है। क्योंकि शब्द बहुत सीमित है और अर्थ असीम है। एक शब्द में अनेक अर्थ छिपे रहते हैं। कौन कहाँ पर कौन-सा अर्थ प्रकट करना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चाहता है और हमें कौन-सा अर्थ ग्रहण करना चाहिए इसका सम्यक् व्यवहार तभी हो सकता है जब हम निक्षेप दृष्टि से विचार करें।

जैनशास्त्रों में शब्दों की उपयुक्त और वांछित व्याख्या करने के लिए निक्षेप पद्धति का उपयोग किया गया है। निक्षेप पद्धति से 'भाषा' और 'भाव' के बीच उचित संगति बैठ सकती है।

आचार्यों ने निक्षेप की अनेक परिभाषाएँ और व्याख्याएँ की हैं। श्री जिनभद्रगणि ने बताया है–'नि' का अर्थ है–'नियत' और 'निश्चित'। 'क्षेप' का अर्थ है–न्यास करना। वक्ता शब्द द्वारा जिस भाव को प्रकट करना चाहता है, उस भाव को, उस शब्द में फिट करना, क्षेप अर्थात् 'न्यास' अथवा स्थापना करना 'निक्षेप' है। (विशेषावश्यक भाष्य, गाथा ९१२) 'निक्षेप' कम से कम चार प्रकार का होता है–नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव। अधिक की कोई सीमा नहीं है।

(१) **नाम-निक्षेप**–किसी वस्तु को पहचानने के लिए उसका कोई न कोई नाम या संज्ञा रखना नाम-निक्षेप है। जैसे किसी का नाम रख दिया–'महावीर' या 'भगवान'। उसमें महावीर या भगवान का कोई भी गुण नहीं है, किन्तु केवल उसकी पहचान या उसे पुकारने के लिए उसका नाम महावीर है। गुणहीन होने पर भी केवल पहचान मात्र के लिए नाम-निक्षेप की उपयोगिता है। किसी मूर्ख का नाम विद्यासागर रख देना, भिखारी को राजा कहना नाम-निक्षेप के उदाहरण हैं।

(२) **स्थापना-निक्षेप**–वस्तु की पहचान के लिए चित्र, मूर्ति या प्रतीक में उस नाम की स्थापना कर देना। किसी मूर्ति या चित्र को 'महावीर' नाम से स्थापित कर देना, यह स्थापना-निक्षेप है। नाटक के विविध पात्र विभिन्न वेशभूषा धारण करके राम, रावण का अभिनय करते हैं। यह स्थापना-निक्षेप है।

(३) **द्रव्य-निक्षेप**–बालक रूप महावीर को अथवा मोक्ष के बाद भगवान महावीर के निर्जीव शरीर को या 'महावीर' नामक किसी व्यक्ति की निर्जीव देह को 'महावीर' नाम से पहचानना, पुकारना। यह द्रव्य-निक्षेप है।

अतीत में जो कभी अध्यापक रहा है उसे 'गुरुजी' नाम से पुकारना या भविष्य में मंत्री बनने वाला है, उसे 'मंत्रीजी' कहना, यह सभी द्रव्य-निक्षेप में आते हैं। द्रव्य-निक्षेप के अनेक भेदोपभेद हैं–मुख्य तीन भेद इस प्रकार हैं–

(१) ज्ञ (ज्ञायक) शरीर,

(२) भव्य शरीर,

(३) तद्व्यतिरिक्त।

द्रव्य-निक्षेप, भाव-निक्षेप की पूर्व या पश्चात्वर्ती अवस्था विशेष है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(४) भाव-निक्षेप–जो कष्टों को सहन करते हुए वास्तव में ही 'महावीर' बने हैं या वास्तविक महावीर जब साक्षात् विद्यमान थे, उन्हें 'भाव महावीर' कहना भाव-निक्षेप है। महावीर के गुणों से युक्त, गुण-सम्पन्न अवस्था को महावीर कहना, सेवा करते हुए को सेवक मानना, पढ़ाते हुए को अध्यापक कहना आदि भाव-निक्षेप के उदाहरण हैं। भाव-निक्षेप 'वर्तमान' को तथा 'गुण-सम्पन्नता' को महत्त्व देता है। इसके भी अनेक भेद हैं, जिनकी चर्चा यथा प्रसंग सूत्र ५३४ से आगे की जायेगी।

'निक्षेप' पद्धति तत्त्वज्ञान या शास्त्र समझने में जितनी उपयोगी है, व्यवहार में भी उतनी ही उपयोगी है। हम प्रतिदिन के व्यवहार में जाने-अनजाने इन चारों का उपयोग करते ही रहते हैं, इन्हीं चारों निक्षेपों के माध्यम से हम अपना इच्छित अभिप्राय दूसरों को समझा सकते हैं।

Elaboration—The aforesaid two aphorims inform about *nikshep* (attribution). Jain Philosophy is non-absolutistic. In order to explain the true form of a thing and to understand the true and comprehensive meaning of a word it defines that word from numerous viewpoints. Words are limited but their meanings are unlimited. There are numerous meanings concealed in a word. Who wants to convey what meaning at what place and which meaning should one accept can be comprehended correctly and precisely if we employ the process of attribution (*nikshep*).

In order to properly and appropriately interpret and elaborate words, Jain scriptures have employed the process of *nikshep* (attribution). Proper harmony between language and idea can be established with the use of this process.

Acharyas have given various interpretations and definitions of the term *nikshep*. Shri Jinabhadragani states—*'Ni'* means *niyat* (given) and *nischita* (particular). *'Kshepa'* means to install or attribute. To attribute the specific meaning a narrator desires to convey through a word to that particular word is called *nikshep* or attribution. (*Visheshavashyak Bhashya,* verse 912) Minimum number of types of *nikshep* (attribution) can be four—*naam* (name), *sthapana* (notional installation), *dravya* (physical

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

चित्र परिचय २

Illustration No. 2

चार प्रकार का निक्षेप

निक्षेप में शब्द मुख्य नहीं, अभिप्राय अथवा भाव मुख्य होता है। इसलिए इसे चार प्रकार से समझाया है। नाम, स्थापना द्रव्य और भाव निक्षेप। उदाहरण--

नाम निक्षेप--जैसे किसी एक दुबले-पतले साधारण गुणहीन व्यक्ति को 'महावीर' नाम से पुकारना।

स्थापना निक्षेप--किसी चित्र या प्रतिमा को 'महावीर' नाम से स्थापित कर देना।

द्रव्य निक्षेप--भविष्य में होने वाले या भूतकाल में हो चुके व्यक्ति को उसी नाम से पुकारना। जैसे बाल्य अवस्था में भी कुमार वर्द्धमान को, महावीर कहना या महावीर के निर्जीव शरीर को 'महावीर भगवान' कहना।

भाव निक्षेप--भयंकर परीषहों में क्षमा, धैर्य, सहनशीलता आदि गुणों से युक्त महावीर की वास्तविक गुण सम्पन्न अवस्था को 'महावीर' कहना।

सूत्र ८-१०

FOUR TYPES OF NIKSHEP

In *nikshep* (attribution) word is not important. What is important is its meaning or the concept. Therefore it has been explained four ways—*nama* (name), *sthapana* (notional installation), *dravya* (physical aspect), *bhaava* (mental aspect or essence). Examples—

Nama nikshep (name attribution)—To call an emaciated, ordinary, and worthless person as Mahavir (very strong and brave).

Sthapana nikshep (notional installation)—To install a picture or an idol with the name Mahavir or as that of Mahavir.

Dravya nikshep (physical aspect of attribution)—To call a person belonging to some future or past time with the same name in the present also. To call prince Vardhaman even in his infancy or the lifeless body of Bhagavan Mahavir as 'Mahavir'.

***Bhaava nikshep* (essence attribution)**—To call (Bhagavan) Mahavir as *'Mahavir'* (one endowed with great courage) during his life time when he is in the state endowed with qualities of *'Mahavir'* displaying unprecedented endurance while facing grave afflictions.

—Sutra : 8-10

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

aspect), *bhaav* (mental aspect or essence). There is no limit to the maximum number of types of *nikshep*.

(1) *Naam nikshep* (Name attribution)—To give a name or assign a noun to a particular thing just for its identification is called name attribution. For example, some one is given a name Mahavir or Bhagavan. He has no qualities attributed to the words Mahavir or Bhagavan; it is simply for the convenience of calling him or identifying him that the name is given to him. Irrespective of the absence of specific qualities the usefulness of name attribution lies in identification of things. Some examples are—to call a weakling Hercules or to call an idiot Apollo.

(2) *Sthapana nikshep* (Notional installation)—To instal a specific and known name in a thing such as a picture, image or symbol so that it gets identified with that name. For example, an idol is installed with the name Mahavir or as that of Mahavir. Another example is roles of characters like Rama, Ravana, etc. in a drama played by actors wearing various dresses identified with those characters. This is notional installation.

(3) *Dravya nikshep* (Physical aspect of attribution)—To recognize or call the dead or lifeless body of Bhagavan Mahavir or some other person named Mahavir as 'Mahavir' even after his death is physical aspect of attribution. The lifeless body of Mahavir is physical or material Mahavir.

To call a person who used to teach in the past as 'teacher' or to call a person who is going to be a minister in future as 'minister' are also inclusive in this category. There are numerous categories and sub-categories of physical aspect of attribution; prominent out of these are three—

(1) *Jna Sharir* or *Jnayak Sharir* (a body that has acquired some thing).

(2) *Bhavya Sharir* (a body that has the potential of acquiring some thing).

(3) *Tadvaytirikta* (other than these two).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Thus physical aspect of attribution is a specific past or future state of essence attribution.

(4) *Bhaav nikshep* (Essence attribution)—To call a person who shows great courage while enduring afflictions as 'Mahavir' or to call (*Bhagavan*) Mahavir as 'Mahavir' (one endowed with great courage) during his life time is essence attribution. In other words it is to call the state having qualities of *mahavir* (one endowed with great courage) as 'Mahavir'. To accept one who serves as servant and to call one who teaches as teacher are examples of essence attribution. It lays emphasis on 'the present' and 'possession of attributes'. This is also of many types, which will be discussed in due course (Aphorism 534).

The method of attribution is as useful in context of the mundane as it is in context of understanding metaphysics or scriptures. Consciously or unconsciously we make use of these four kinds of attributions. Only with the help of these we convey our desires and ideas.

आवश्यक के निक्षेप

९. से किं तं आवस्सयं ?

आवस्सयं चउव्विहं पण्णत्तं। तं जहा–(१) नामावस्सयं, (२) ठवणावस्सयं, (३) दव्वावस्सयं, (४) भावावस्सयं।

९. (प्रश्न) आवश्यक क्या है ?

(उत्तर) आवश्यक चार प्रकार का है–(१) नाम आवश्यक, (२) स्थापना आवश्यक, (३) द्रव्य आवश्यक, तथा (४) भाव आवश्यक।

ATTRIBUTIONS OF *AVASHYAK*

9. (Question) What is *Avashyak* ?

(Answer) *Avashyak* is of four types—(1) *Naam Avashyak*, (2) *Sthapana Avashyak*, (3) *Dravya Avashyak*, and (4) *Bhaav Avashyak*.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवेचन–'आवश्यक' एक पारिभाषिक शब्द है। यों तो जो भी कार्य अवश्य करने योग्य होता है, वह सभी 'आवश्यक' कहा जाता है। जैसे–शौच, स्नान, भोजन, शयन आदि। परन्तु यहाँ पर इनसे कोई प्रयोजन नहीं है। यह अध्यात्मशास्त्र है, इसलिए आत्म-शुद्धि के लिए जो अवश्य करने योग्य क्रिया है उसे ही यहाँ आवश्यक कहा गया है–**अवश्यं कर्तव्यम् आवश्यकम्**–इसकी दूसरी परिभाषा यह है–**गुणानां आसमन्ताद् वश्यं आत्मानं करोतीत्यावश्यकम्**–जो दुर्गुणों को हटाकर आत्मा को गुणों के वश्य/अधीन करता है, अर्थात् सद्गुणों को अपने वश में करने की प्रक्रिया को आवश्यक कहा गया है। साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकाओं को प्रतिदिन प्रातः-सायंकाल आत्म-शुद्धि के लिए जो क्रिया करनी होती है उसे 'आवश्यक' कहा है। उसके छह भेद हैं जिसे षडावश्यक कहा जाता है।

Elaboration—'*Avashyak*' is a technical term. The literal meaning of *avashyak* is essential or obligatory. All that has to be essentially or obligatorily performed is called *avashyak;* for example—excretion, bathing, eating, sleeping, etc. But here it conveys a different meaning. The subject of this book is spiritual. Therefore, the activities that are essential for purification of soul are called *avashyak* here. Another definition is—that which removes vices from soul and submits it to virtues is called *avashyak*. In other words the process of acquiring virtues is called *avashyak*. The obligatory acts to be performed by ascetics and laity every morning and evening with the purpose of purification of soul are called *avashyak*. As it is inclusive of six acts it is called *Shadavashyak* (sextet of six obligatory duties).

(१) नाम आवश्यक

१०. से किं तं नामावस्सयं ?

नामावस्सयं जस्स णं जीवस्स वा अजीवस्स वा जीवाण वा अजीवाण वा तदुभयस्स वा तदुभयाण वा आवस्सए त्ति नामं कीरए। से तं नामावस्सयं।

१०. (प्रश्न) नाम आवश्यक क्या है?

(उत्तर) जिस प्रकार जीव या अजीव का, जीवों या अजीवों का, जीव-अजीव दोनों (तदुभय) का, तथा जीवों-अजीवों दोनों का, 'आवश्यक' नाम रखना। यह नाम आवश्यक है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(1) *NAAM AVASHYAK*

10. (Question) What is *naam avashyak* (*avashyak* as name)?

(Answer) To assign *avashyak* as a name to a living being, a non-living thing, many living beings, many non-living things, an aggregate of living and non-living, and many aggregates of living and non-living is called *naam avashyak* or *avashyak* as name.

(२) स्थापना आवश्यक

११. से किं तं ठवणावस्सयं ?

जण्णं कट्ठकम्मे वा चित्तकम्मे वा पोत्थकम्मे वा लेप्पकम्मे वा गंथिमे वा वेढिमे वा पूरिमे वा संघाइमे वा अक्खे वा वराडए वा एगो वा अणेगा वा सब्भावठवणाए, असब्भावठवणाए वा आवस्सए त्ति ठवणा ठविज्जति। से तं ठवणावस्सयं।

११. (प्रश्न) स्थापना आवश्यक क्या है?

(उत्तर) स्थापना आवश्यक का स्वरूप इस प्रकार है–काष्ठकर्म, चित्रकर्म, पुस्तककर्म, लेप्यकर्म, ग्रन्थिम, वेष्टिम, पूरिम, संघातिम, अक्ष अथवा वराटक (कौड़ी में) एक या अनेक सद्भाव स्थापना (वास्तविक आकृति) अथवा असद् भाव स्थापना (काल्पनिक आरोपण) के द्वारा आवश्यक (आवश्यक क्रिया करते हुए व्यक्ति) की जो स्थापना, रूपांकन या कल्पना की जाती है, वह स्थापना आवश्यक है।

(2) *STHAPANA AVASHYAK*

11. (Question) What is *sthapana avashyak* (*avashyak* as notional installation)?

(Answer) The notional installation or illustration or imagination of *avashyak* (an individual performing obligatory duties) in or through (things or medias like) wood work, painting, book or doll, clay moulding, fiber or cloth work, knit work or applique work, casting, combining many cloth pieces or flowers, blocks or dice made of fossils or

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

wood, and shells realistically or unrealistically is called *sthapana avashyak* (*avashyak* as notional installation).

१२. नाम ठ्ठवणाणं को पइविसेसो ?

नामं आवकहियं, ठवणा इत्तरिया वा होज्जा आवकहिया वा।

१२. (**प्रश्न**) नाम और स्थापना में क्या भिन्नता है?

(**उत्तर**) नाम यावत्कथिक (आजीवन) होता है, किन्तु स्थापना इत्वरिक (अल्पकालिक) और यावत्कथिक (यावज्जीवन) दोनों ही प्रकार की होती है।

12. (Question) What is the difference between *naam* and *sthapana avashyak* (*avashyak* as name and as notional installation)?

(Answer) Name is life long whereas *sthapana* can be temporary as well as lifelong both.

विवेचन–किसी जीव या अजीव को पुकारने या पहचानने के लिए उसका 'आवश्यक' नाम रख देना नाम आवश्यक है। नाम एक संकेत मात्र होता है, जिससे हमारा दैनिक लोक-व्यवहार चलता है। नाम में उसके उपयुक्त गुण भी हों यह कोई जरूरी नहीं। नाम को यादृच्छिक (इच्छानुरूप) कहा है। नाम में मूल शब्द के अर्थ से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं होता। किसी भी व्यक्ति का या किसी पुस्तक का 'आवश्यक' नाम रखा जा सकता है। इसे नाम आवश्यक कहा गया है।

किसी पदार्थ का नामकरण करने के पश्चात् यह वही है, उस अभिप्राय से उसकी व्यवस्थापना करने का नाम स्थापना है। जैसे इन्द्र नामक व्यक्ति विशेष की यह आकृति (चित्र, मूर्ति आदि) है, इस कल्पना का आरोपण करना स्थापना है।

स्थापना में मूल शब्द का गुण या भाव नहीं होता, केवल कल्पित आकृति मात्र होती है।

आचार्य हरिभद्र तथा मलधारी हेमचन्द्रसूरि ने वृत्ति में इसके दो भेद किये हैं–(१) **सद्भाव स्थापना**–विवक्षित (जो हम कहना चाहते हैं) उस वस्तु के समान आकृति वाली स्थापना, तथा (२) **असद्भाव स्थापना**–मुख्य आकार से शून्य कल्पित आकृति असद्भाव स्थापना है।

नाम आजीवन के लिए होता है अतः वह **यावत्कथित**–जब तक वह वस्तु रहे तब तक यावज्जीवन के लिए होता है, जबकि स्थापना **इत्वरिक**–कुछ समय विशेष के लिए या

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अल्पकाल के लिए भी होती है और यावत्कथित भी होती है। दोनों में यह एक मुख्य भेद है। वृत्तिकार का कथन है–यद्यपि कभी-कभी नाम भी अल्पकालिक हो सकता है, नाम भी बदल लिया जाता है, परन्तु नाम बदलने पर भी नाम वाला पदार्थ या व्यक्ति सुरक्षित रहता है, इस अपेक्षा से उसे यावत्कथित कहा गया है। (वृत्ति पत्र १३-१४)

दूसरा भेद यह है कि स्थापना–आकृति देखने से वस्तु के प्रति जो आदर, अनादर, हर्ष, उल्लास आदि का भाव प्रकट होता है, वैसा नाम सुनने से नहीं होता इसलिए 'नाम' से 'स्थापना' अधिक प्रभावोत्पादक होती है। जैसे 'भगवान' नाम सुनने से इतना उल्लास उत्पन्न नहीं होता, जितना 'भगवान' की आकृति, मूर्ति या चित्र देखने से होता है। नाम में पहचान मुख्य होती है, स्थापना में आकार के प्रति भावना प्रधान होती है। दोनों ही गुण शून्य होते हैं। (राजवार्तिक १/५/१३/२९/२५)

Elaboration—To give the name *'avashyak'* to a living being or non-living thing for the sake of calling it or identifying it is called *avashyak* as name. Name is just a formal identity for routine social convenience. It is not necessary that the name is inclusive of the attributes of the thing. Name is said to be an arbitrary thing and there is no direct relationship with the meaning of the word. Any person or a book can be named *Avashyak.* This is said to be *avashyak* as name.

After giving a name to a particular thing the act of installing it with the notion that it is what it has been named is called *sthapana.* For example—this image (picture, idol, etc.) is of a particular individual named Indra. To instal this notion in the image is called *sthapana.*

In *sthapana* it is not necessary to have the meaning or essence of the word (name). It is just an imaginary shape.

Acharya Haribhadra and Maladhari Hemachandra Suri have stated two types of this—(1) *Sadbhaav sthapana* or installation of realistic image of a thing, and (2) *Asadbhaav sthapana* or installation of imaginary or unrealistic image of a thing.

Name is for the whole life therefore it is *yavatkathit* (as long as the thing exists or lifelong), whereas *sthapana* can be *itvarik* (for a specific period of time or temporary) as well as *yavatkathit*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(lifelong). This is the main difference between the two. The commentator (*Vritti*) states—Although name can also be temporary because it is also changed, however, in spite of the change in name the thing or person remains the same. Keeping this in view it is called lifelong. (*Vritti* leaf 13-14)

Another difference between the two is that the respect, disrespect, joy, excitement and other feelings inspired by an image are absent in mere name. Thus installation is more effective than name. For example hearing the word God does not inspire such joy as that inspired by seeing an image, picture, or idol of God. Name is just for identification whereas installation includes feelings towards the image. However, both are devoid of actual attributes. (*Raja Varttik* 1/5/13/29/25)

विशेष शब्दों के अर्थ–(१) **कट्ठ कम्मे (काष्ठ कर्म)**–काठ या लकड़ी में उकेरी गई आकृति। प्राचीनकाल में इन्द्र, स्कन्द, मुकुन्द आदि की प्रतिमाएँ काठ की बनती थीं।

(२) **चित्त कम्मे (चित्र कर्म)**–कागज या दीवार पर चित्रित आकृति।

(३) **पोत्थ कम्मे (पुस्तकर्म)**–कपड़े या ताड़-पत्र आदि पर अंकित आकृति या छेद कर बनाये गये आकार या कपड़े की बनी पुतली आदि। कुछ विद्वानों का मत है–'पुस्त' शब्द पहलवी भाषा का है, जिसका अर्थ है–चमड़ा। प्राचीनकाल में चमड़े के चित्र बनते थे व चमड़े पर ग्रन्थ भी लिखे जाते थे। (अनुयोगद्वार, आचार्य महाप्रज्ञ, पृ. १९)

(४) **लेप्पकम्मे (लेप्य कर्म)**–गीली मिट्टी आदि के लेप से बनी आकृति।

(५) **गन्थिमे (ग्रन्थिम)**–वस्त्र, रस्सी या सूत, धागे आदि को गूँथकर उसमें गाँठें डालकर बनाई गई आकृति। सूत की माला, जाली आदि प्राचीन समय में भी बनती थी। जिसका उल्लेख आचार्य हरिभद्र ने किया है।

(६) **वेढिमे (वेष्टिम)**–एक, दो या अनेक वस्त्र खण्डों को लपेटकर बनाई गई आकृति, जैसे–पुतली। फूलों को गूँथकर बनी आकृति भी वेष्टिम कही जाती थी। (मलधारी वृत्ति, पृ. १२)

(७) **पूरिमे (पूरिम)**–गर्म ताँबे, पीतल आदि धातुओं को साँचे में ढालकर भरकर बनाई गई आकृति।

(८) **संघाइमे (संघातिम)**–अनेक वस्त्र खण्डों व फूलों को साँधकर, जोड़कर बनाई आकृति।

(९) **अक्खे (अक्ष)**–चौपड़ के पाँसे आदि से बनी आकृति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(१०) वराडए (वराटक)–कौड़ी, शंख आदि वस्तुओं से निर्मित आकृति।

ये सभी असद्भाव (अतदाकार) स्थापना के उदाहरण हैं।

Technical Terms—(1) Kattha kamme (kashtha karma)—Wood work; a shape or design carved or engraved in wood. In ancient times images of deities like Indra, Skanda, Mukunda, etc. were made of wood.

(2) Chitta kamme (chitra karma)—Painting; image or design painted on paper or wall.

(3) Pottha kamme (pust karma)—Images drawn or made by making perforations with needle on cloth, palm leaf or other surface; also dolls made of cloth. Some scholars are of the opinion that '*pust*' is a word from Pahalvi language and it means leather. In ancient times painting was done and books were written on leather. (*Anuyogadvar*, Acharya Mahaprajna, p. 19)

(4) Lepya kamme (lepya karma)—Images made by plastering or moulding damp clay.

(5) Ganthime (granthim or made by stringing)—Things or designs such as garland, net, wall hanging, etc. made by stringing or knitting or knotting cloth, cord or thread. As mentioned by Acharya Haribhadra such things were popular in ancient times also.

(6) Vedhime (veshtim or made by wrapping)—Things made by wrapping one or more pieces of cloth, such as dolls. Things made by entwining flowers were also called veshtim. (Maladhari's *Vritti*, p. 12)

(7) Purime (purim made by filling or pouring)—Images made by casting molten metal like copper and brass in a mould.

(8) Sanghaime (sanghatim made by interweaving or entwining)—Things made by entwining one or more pieces of cloth or flowers, such as dolls.

(9) Akkhe (aksha)—Blocks or dices made of fossils or wood.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्थापना के दस भेद

TEN TYPES OF REPRESENTATION (STHAPANA)

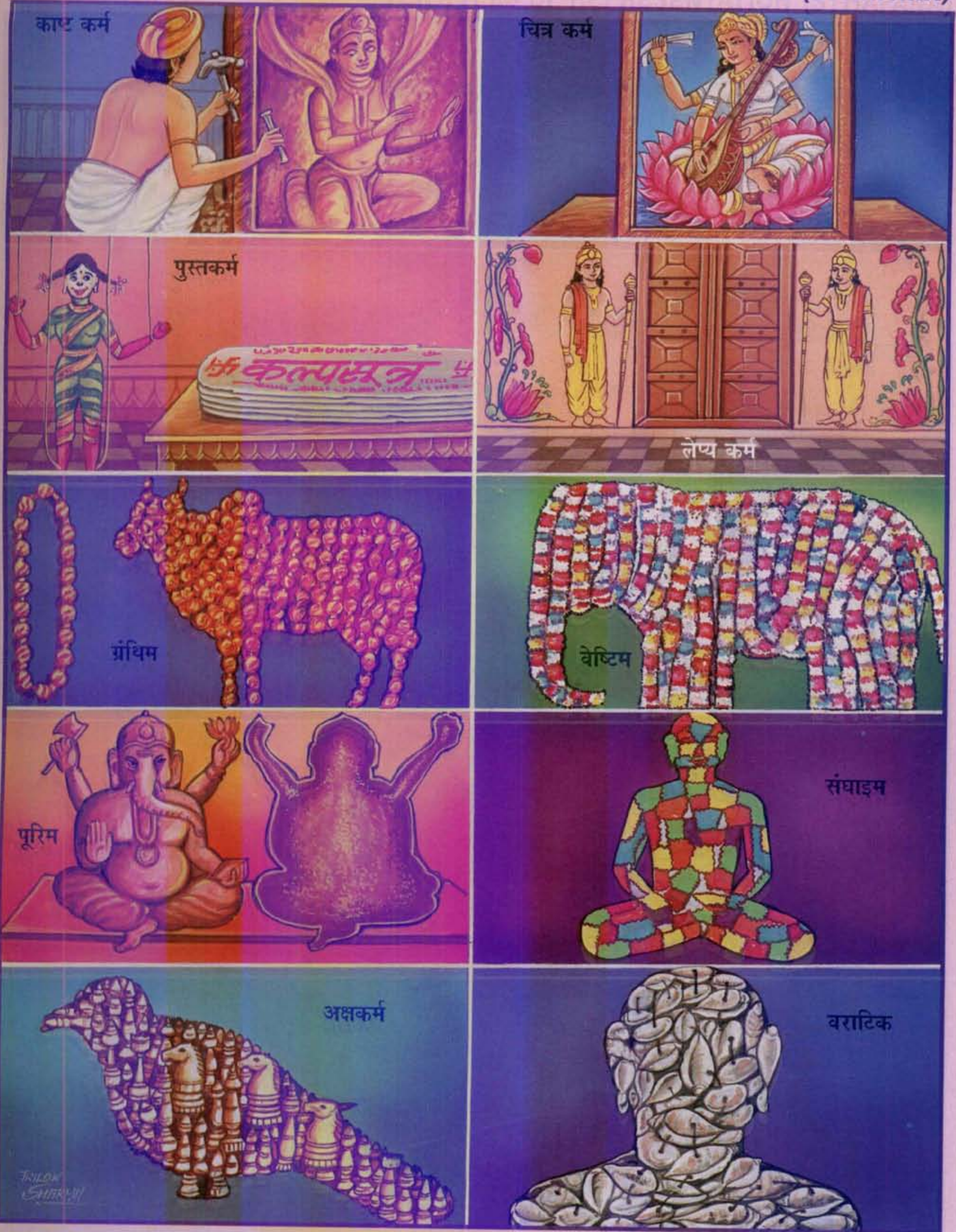

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्र परिचय ३

Illustration No. 3

स्थापना के दस भेद

आकृतियों में किसी वस्तु या व्यक्ति विशेष नाम की स्थापना करना स्थापना निक्षेप समझना चाहिए। इसके अनेक भेद हैं। जैसे–

(१) काष्ठ कर्म–काठ में इन्द्र स्कन्द आदि किसी की कल्पित आकृति स्थापित करना।

(२) चित्र कर्म--चित्र में लक्ष्मी, सरस्वती आदि किसी आकृति की स्थापना करना।

(३) पुस्तकर्म–कपड़े की पुतली या ताड़पत्र आदि पर लिखित पुस्तक व चित्र आदि।

(४) लेप्य कर्म–मिट्टी आदि के लेपसे निर्मित प्रतिमा या दीवार पर सोंधिया, पहरेदार आदि के चित्र।

(५) ग्रंथिम कर्म–वस्त्र, रस्सी या धागे आदि में गाँठे डालकर माला वृषभ आदि की कोई आकृति बनाना।

(६) वेष्टिम कर्म–फूलों से गूँथकर हाथी आदि कोई आकृति बनाना।

(७) पूरिम–पीतल, चाँदी, चूना, प्लास्टर आदि की प्रतिमा जो भीतर से पोली होती है।

(८) संघातिम–वस्त्र के छोटे-छोटे रंग-बिरंगे टुकड़ों को जोड़कर मनुष्य आदि की बनाई हुई आकृति।

(९) अक्ष कर्म–पासों या मोहरों से बनी आकृति।

(१०) वराटक–कौड़ी या, सीप शंख आदि से बनी आकृति।

–सूत्र १०

TEN TYPES OF STHAPANA

The unrealistic notional installations of some specific thing or person in some images is called *sthapana nikshep*. This is done through many medias like—

(1) Kast karma (wood work)—An imaginary form of deities like Indra and Skanda made of wood.

(2) Chitra karma (painting)—Image of Lakshmi, Sarasvati, or other deities painted on paper or other surface.

(3) Pusta karma—Dolls made of cloth; text or images written or drawn on, palm-leaf, or other surfaces.

(4) Lepya karma—Images made by plastering or moulding damp clay; also frescoes painted on walls.

(5) Granthim (made by stringing)—Garlands or shapes like a bull made by knitting or knotting cloth, cord, or thread.

(6) *Veshtim* (entwining)—Things, such as shape of an elephant, made by entwining flowers.

(7) *Purim* (made by filling or pouring)—Hollow images made of brass, silver, lime-mortar, plaster, etc.

(8) *Sanghatim* (made by interweaving or entwining)—Human or other form made by entwining or joining multicolored pieces of cloth.

(9) Aksha karma—Images made of blocks or dices.

(10) Varatak—Images made of shells like *kaudi* and conch shells.

—Sutra : 10

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(10) Varadaye (varatak)—Things made of shells like *kaudi* and conch shells.

All these are examples of unrealistic notional installations.

(३) द्रव्य आवश्यक

१३. से किं तं दव्वावस्सयं ?

दव्वावस्सयं दुविहं पण्णत्तं। तं जहा—१ आगमतो य २ णो आगमतो य।

१३. (प्रश्न) द्रव्य आवश्यक किसे कहते हैं ?

(उत्तर) द्रव्य आवश्यक दो प्रकार का है—(१) आगमतः (ज्ञान की अपेक्षा से), और (२) नो-आगमतः (मात्र क्रिया की अपेक्षा) से।

(3) *DRAVYA AVASHYAK*
(PHYSICAL ASPECT OF *AVASHYAK*)

13. (Question) What is *dravya avashyak* (physical aspect of *avashyak*) ?

(Answer) *Dravya avashyak* (physical aspect of *avashyak*) is of two kinds—(1) *Agamatah dravya avashyak* (physical aspect of *avashyak* in context of *Agam* or in context of knowledge), and (2) *No-Agamatah dravya avashyak* (physical aspect of *avashyak* not in context of *Agam* or only in context of action).

विवेचन—द्रव्य शब्द के अनेक अर्थ हैं। वृत्तिकार के अनुसार यहाँ द्रव्य शब्द का अर्थ है, जो भूतकालीन और भविष्यकालीन भावों/दशाओं का मूल कारण होता है उसे द्रव्य कहा है। वह चेतन या अचेतन दोनों प्रकार का होता है। जैसे—

भूतस्य भाविनो वा भावस्य हि कारणं तु यल्लोके।
तद् द्रव्यं तत्त्वज्ञैः स चेतनाऽचेतनं कथितम्॥

उदाहरण के रूप में भविष्य में होने वाले जिन भगवान का जीव छद्मस्थ अवस्था में भी 'जिन' कहा जाता है तथा जिनेश्वर देव की निष्प्राण देह भी 'जिन' कही जाती है। तत्त्व दृष्टि से यह दोनों ही 'द्रव्य जिन' हैं। (पंचाध्यायी पूर्वार्द्ध)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(१) **आगमतः द्रव्य आवश्यक**–जो आगम का ज्ञाता है, आगम का अर्थ जानता है, परन्तु वर्तमान काल में आगम के अर्थ में उपयोग शून्य है, वह आगमतः द्रव्य आवश्यक कहा जाता है।

(२) **नो-आगमतः द्रव्य आवश्यक**–आगम को जानने वाले व्यक्ति का शरीर (मृत अवस्था में) आगम का ज्ञाता नहीं रहता, वह नो-आगमतः द्रव्य आवश्यक है। यहाँ पर 'नो' शब्द कहीं पर पूर्ण निषेध का वाचक है और कहीं एक आंशिक निषेध में प्रयुक्त हुआ है। (विशेषावश्यक भाष्य, गा. २९/४४-४५)

Elaboration—The term *dravya* has many meanings. According to the commentator (*Vritti*) here it has been used to indicate that which is the basic cause of past and future states. It can be both conscious and non-conscious. For example the body of the person destined to be a Jina is called Jina even before enlightenment. Also the lifeless body of the Jina even after his *nirvana* is called Jina. Ontologically these two are *dravya*-Jina or physical aspect of Jina. (*Panchadhyayi,* first part)

(1) Agamatah dravya avashyak—A person who has studied and understands *Agam* but is unable to recall it or put it to any use at present is called physical aspect of *avashyak* in context of *Agam* or physical *avashyak* with scriptural knowledge.

(2) No-agamatah dravya avashyak—The lifeless body of a scholar of *Agams,* when he is dead, is devoid of the knowledge of *Agam.* It is called physical aspect of *no-avashyak* in context of *Agam* or physical *avashyak* without scriptural knowledge. The word '*no*' has been used both for complete as well as partial negation. (*Visheshavashyak Bhashya,* verse 29/44-45)

(१) आगमतः द्रव्य आवश्यक

१४. से किं तं आगमतो दव्वावस्सयं ?

आगमतो दव्वावस्सयं जस्स णं आवस्सए त्ति पदं सिक्खितं ठितं जितं मितं परिजितं णामसमं घोससमं अहीणक्खरं अणच्चक्खरं अव्वाइद्धक्खरं अक्खलियं अमिलियं अवच्चामेलियं पडिपुण्णं पडिपुण्णघोसं कंठोट्ठविप्पमुक्कं गुरुवायणोवगयं। से णं तत्थ वायणाए पुच्छणाए परियट्टणाए धम्मकहाए, णो अणुप्पेहाए। कम्हा ? "अणुवओगो दव्व" मिति कट्टु।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४. (प्रश्न) आगमतः द्रव्य आवश्यक किसे कहते हैं ?

(उत्तर) आगम से द्रव्य आवश्यक का स्वरूप इस प्रकार है–जिस (श्रमण) ने आवश्यक पद **शिक्षित**–सीख लिया है। **ठित**–(हृदय में) स्थिर कर लिया है। **जित**–स्मृति में धारण कर लिया है। **मित**–श्लोक, पद आदि की संख्या से भलीभाँति अभ्यास कर लिया है। **परिजित**–आनुपूर्वी-अनानुपूर्वीपूर्वक परावर्तित कर लिया है। **नामसमं**–अपने नाम के समान याद कर लिया है। **घोषसमं**–उदात्त-अनुदात्त स्वरों के अनुरूप उच्चारण किया है। **अहीणक्खरं**–अक्षरों की हीनतारहित। **अनत्यक्षर**–अक्षरों की अधिकतारहित। **अव्याविद्धाक्षर**–व्यतिक्रमरहित, उच्चारण किया है। **अस्खलित**–बीच-बीच में विराम दिये बिना अथवा अक्षरों को छोड़े बिना धारा-प्रवाह। **अमीलित**-दूसरे पदों को बिना मिलाये अमिश्रित उच्चारण किया है। **अव्यत्याम्रेड़ित**–एक ही शास्त्र के भिन्न-भिन्न सूत्रों को एकत्रित करके पाठ नहीं किया है। **प्रतिपूर्ण, प्रतिपूर्णघोषयुक्त,** कण्ठ और होठ से निकला हुआ तथा जिसे गुरु वाचना से प्राप्त किया गया है, वह आवश्यक पद के अध्ययन, प्रश्न, परावर्तन और धर्मकथा में प्रवृत्त होता है, तब आगमतः द्रव्य आवश्यक है। किन्तु वह **अनुप्रेक्षा**–अर्थ के अनुचिन्तन रूप उपयोग से शून्य होता है इसलिए उस चित्त की प्रवृत्ति से शून्य को आगमतः द्रव्य आवश्यक कहा है। क्योंकि अनुप्रेक्षारहित उपयोगशून्य क्रिया द्रव्य है।

(1) AGAMATAH DRAVYA AVASHYAK

14. (Question) What is *agamatah dravya avashyak* (physical *avashyak* with scriptural knowledge) ?

(Answer) Physical *avashyak* in context of *Agam* is like this—(For instance) a person (an ascetic) has studied properly (*shikshit*); understood and absorbed (*thit*); retained in mind (*jit*); made assessment in terms of number of verses, words, syllables, etc. (*mit*); perfected by revising in normal and reverse sequence (*parijit*); committed to memory as firmly as one's own name (*naamsamam*) the text of *Avashyak (Sutra)* and recited it fluently with phonetic perfection (*ghoshasamam*) without shortening syllables (*ahinaksharam*); without extending syllables (*anatyakshar*),

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

without shifting syllables (*avyaviddhakshar*); and without skipping syllables (*askhalit*); without mixing up of different phrases (*amilit*); and without combining different phrases and aphorisms (*avyatyamredit*). When such person proceeds to study, inquire into, revise and teach this *Avashyak Sutra* acquired through the discourse of the *guru* (*guruvachanopagat*) emanating from vocal cords and lips (*kanthoshtavipramukta*) and rendered eloquently (*pratipurna*) in perfect accent (*pratipurnaghosh*), he is known as physical *avashyak* in context of *Agam*. This is so due to the fact that he is devoid of the faculty of contemplating the meaning (spirit) of the text and any action devoid of the faculty of contemplating is only physical (*dravya*).

विवेचन–इस सूत्र में आगमतः द्रव्य आवश्यक के सत्रह विशेषण उसकी पूर्ण शुद्धि के सूचक हैं। जैसे–

(१) **सिक्खितं (शिक्षित)**–आदि से अन्त तक पूर्ण रूप से पढ़ लिया है।

(२) **ठितं (ठित)**–स्मृति में अच्छी प्रकार जमा लिया है।

(३) **जितं (जित)**–उस पाठ को इतना स्थिर कर लिया है कि पुनरावर्तन के समय तुरन्त स्मृति में आ जाये।

(४) **मितं (मित)**–सीखे हुए ग्रन्थ का श्लोक, पद, वर्ण, मात्रा आदि से भली प्रकार निर्धारण कर लिया है।

(५) **परिजितं (परिजित)**–ग्रंथ का पाठ इतना पक्का जमा लिया है कि उसे क्रम या व्युत्क्रम किसी प्रकार पूछने पर तत्काल दुहरा सकता है।

(६) **णामसमं (नामसम)**–अपने नाम की तरह ग्रन्थ के प्रत्येक भाग को याद रखना।

ये छह विशेषण आगम पाठ कण्ठस्थ करने की प्राचीन पद्धति के सूचक हैं। अगले विशेषण उच्चारण-शुद्धि से सम्बन्धित हैं–

(७) **घोससमं (घोषसम)**–गुरु से सूत्र ग्रहण करते समय उदात्त, अनुदात्त स्वरों का आरोह, अवरोहपूर्वक उच्चारण करना। ध्वनि विज्ञान में उसे ही रीजिंग-फौलिंग टोन कहते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(८)–(९) **अहीणक्खरं (अहीनाक्षर) तथा अणच्चक्खरं (अन्त्यक्षर)**–हीन व अधिक अक्षर-दोषों से रहित सूत्र का उच्चारण करना। क्योंकि आगम पाठ का एक अक्षर कम होने पर वांछित अर्थ का ज्ञान नहीं हो सकता। उसी प्रकार उसमें अधिक अक्षर जोड़ देने पर अर्थ का अनर्थ भी हो सकता है। टीकाकार ने दो दृष्टान्त देकर इसे स्पष्ट किया है–

हीनाक्षर दोष का उदाहरण

(१) राजगृह नगर में भगवान महावीर स्वामी का प्रवचन समाप्त होने पर जब श्रेणिक राजा मंत्री अभयकुमार के साथ अपने राजमहल को वापस लौटने वाले थे, तभी उन्होंने आकाश से नीचे गिरते और पुनः आकाश में उड़ते एक विद्याधर को देखा। भगवान महावीर से उन्होंने विद्याधर के बार-बार ऐसी चेष्टा करने का कारण पूछा तो उन्होंने फरमाया–"यह विद्याधर आकाशगामिनी विद्या की साधना कर रहा है, परन्तु यह अपनी साधना में विद्या का एक अक्षर भूल गया है। इसी कारण उसकी यह विद्या सिद्ध नहीं हो रही है और वह पंख कटे पक्षी की तरह आकाश में उड़कर वापस नीचे गिर जाता है।" महामंत्री अभयकुमार के पास पदानुसारिणी लब्धि थी। वे उस लब्धि के प्रभाव से किसी भी बात के एक पद (अक्षर) को सुनकर अन्य सभी अक्षरों (पदों) को जान लेने की शक्ति रखते थे। अतः भगवान की बात सुनते ही अभयकुमार तुरन्त उस विद्याधर के पास आये और बोले–"भाई विद्याधर ! यदि तुम मुझे यह आकाशगामिनी विद्या सुना दो तो मैं अपनी लब्धि के प्रभाव से तुम्हें विद्या के विस्मृत अक्षर को बता सकता हूँ।" इस पर विद्याधर अभयकुमार की बात पर सहमत हो गया। उसने अभयकुमार को अपनी आकाशगामिनी विद्या का मंत्र सुनाया। मंत्र सुनते ही पदानुसारिणी लब्धि के बल पर अभयकुमार ने मंत्र का विस्मृत अक्षर बता दिया। इस बार मंत्रोच्चारण के समय अक्षर पूर्ण होने से वह विद्याधर उक्त विद्या के प्रभाव से आकाश में निर्विघ्नतापूर्वक उड़ गया।

इस कथा से यह स्पष्ट है कि मंत्र में एक भी अक्षर कम हो तो ज्ञान लाभकारी नहीं होता है। जब भौतिक मंत्रों में भी एक अक्षर की न्यूनता क्षम्य या अभीष्ट नहीं है तो लोकोत्तर महामंत्र रूप शास्त्र-पाठ में एक भी अक्षर की हीनता कैसे क्षम्य हो सकती है? अतः शास्त्र-पाठ हीनाक्षर युक्त नहीं होना चाहिए। अहीनाक्षर शास्त्र ही परम साध्य मोक्ष रूप फल को प्राप्त करा सकता है। (**हारिभद्रीया वृत्ति, पृ. ४० मु. जं.**) इस प्रसंग में–विशेषावश्यक भाष्य, गाथा ८६४ में कहा है–

विज्जाहररायगिहे उप्पप्पडणं च हीणदोसेण।
कहणो सरणागमणं पयाणुसारिस्स दाणं च॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अधिक अक्षर से क्या हानि है? इसे वृत्तिकार निम्न दृष्टान्त द्वारा समझाते हैं–

(२) पाटलीपुत्र नगर में मौर्य वंश में उत्पन्न सम्राट् अशोक राज्य करता था। अशोक को अपनी रानी से एक पुत्र हुआ था, जिसका नाम कुणाल था। कुछ समय के बाद ही राजकुमार कुणाल को उज्जयिनी भेज दिया गया। राजकुमार कुणाल उज्जयिनी में रहते-रहते जब आठ वर्ष का हुआ, तब एक सन्देशवाहक द्वारा राजा को खबर मिली कि आपका राजकुमार अब आठ साल का हो गया है। ये समाचार जानकर सम्राट् अशोक ने राजमहल में बैठे-बैठे ही अपने हाथ से एक पत्र लिखा। जिसमें लिखा कि "**इदानीमधीयतां कुमारः।**" (कुमार अब अध्ययन करें)। परन्तु राजा उस पत्र को लिफाफे में बन्द किये बिना वहीं छोड़कर किसी आवश्यक कार्यवश वहाँ से चले गये। वहाँ जो दूसरी रानी तिष्यरक्षिता खड़ी थी, उसने अवसर पाकर वह पत्र उठाकर पढ़ा। पढ़कर सोचा–'मेरे भी एक पुत्र है महेन्द्र लेकिन कुणाल से उम्र में छोटा है। राजा कुणाल को ही राज्य देंगे, क्योंकि कुणाल ही राजगद्दी के योग्य है मेरा पुत्र नहीं।' यह सोचकर मन ही मन कुछ निर्णय किया, और एक सलाई ली, उसे काजल में डुबोकर उस कागज में जहाँ '**अधीयताम्**' शब्द था, वहाँ '**अंधीयताम्**' (कुमार को अंधा कर दो) कर दिया। अब तो एक मात्रा के परिवर्तन से सारा ही अर्थ बदल गया। रानी ने वह पत्र वहीं रख दिया। राजा बाहर से आये तो उस पत्र को दुबारा पढ़े बिना ही पत्रवाहक के साथ कुणाल को वह पत्र लिफाफे में बन्द करके भेज दिया। कुमार के विश्वस्त सेवक ने पत्र में अप्रिय बात लिखी हुई होने से जोर से बोलकर नहीं सुनाई। कुमार ने उसे पढ़कर सुनाने का आदेश दिया तो उसने डरते-डरते उस पत्र को पढ़कर सुना दिया। पत्र में लिखित भाषा पर से कुमार ने सोचा कि 'हमारे मौर्यवंश में उत्पन्न किसी भी व्यक्ति ने आज तक राजाओं की आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया है, फिर मैं इसी वंश में उत्पन्न होकर पिताजी की आज्ञा का उल्लंघन कैसे कर सकता हूँ? ऐसा हो नहीं सकता!' यह सोचकर कुणाल ने तत्काल आग में तपाई हुई लोहे की सलाई ली और शोकाकुल परिवार के मना करते-करते ही उस गर्म सलाई से अपनी दोनों आँखों को आंज लिया। कुणाल अंधा हो गया। (विशेषावश्यक भाष्य, गाथा ८६१ वृत्ति; हारिभद्रीया वृत्ति, पृ. ४१ मु. जं.)

अधिक अक्षर दोष पर बन्दर की कथा

अधिक मात्रा के सम्बन्ध में (विशेषावश्यक भाष्य, गाथा ८६३ तथा हारिभद्रीया वृत्ति, पृ. ४१) एक उदाहरण है।

(३) किसी वन में एक बड़ा सरोवर था। जनता में वह कामिक तीर्थ के नाम से प्रसिद्ध था। सरोवर के किनारे बंजुल का पेड़ था। उस तीर्थ में एक चमत्कार था कि अगर कोई तिर्यंच बंजुल वृक्ष की शाखा पर चढ़कर सरोवर के पानी में गिरता, तो वह उस तीर्थ के प्रभाव से

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मनुष्य हो जाता और अगर कोई मनुष्य गिरता, तो वह देव हो जाता किन्तु अगर कोई अधिक लोभवश दुबारा इस शाखा पर से सरोवर के जल में गिरता तो वह अपनी भूतपूर्व मूल अवस्था को प्राप्त कर लेता था। एक दिन एक वानर-युगल के देखते ही देखते एक मानव-युगल (दम्पत्ति) उस बंजुल वृक्ष की शाखा पर से उक्त सरोवर में गिर पड़ा और उस तीर्थ के प्रभाव से देव-युगल हो गया। यह देखकर बन्दर का जोड़ा भी इसी प्रकार सरोवर में गिरा और गिरते ही मनुष्य-युगल हो गया। मनुष्यरूप में बने हुए वानर ने अधिक लोभवश अपनी स्त्री से कहा– "प्रिये ! आओ। हम पुनः इस सरोवर में कूदें, ताकि देव रूप बन जायें।" स्त्री ने इस बात से इन्कार करते हुए कहा–"फिर पानी में गिरने से न मालूम क्या हो जाये ? हमारा जो यह मनुष्य रूप है, वही बस है। शास्त्रों में अतिलोभ को अनर्थकर बताकर उसका निषेध किया है।" इस प्रकार स्त्री के मना करने पर भी वह मनुष्यरूपधारी वानर अतिलोभवश पुनः उसी सरोवर में कूद पड़ा और दुर्भाग्य से फिर अपने मूल स्वरूप वानररूप में वह बन्दर बन गया। उसके पश्चात् वहाँ कोई राजा आया। वह उस स्त्री को देखकर उसके रूप पर मोहित हो गया और उसे अपनी रानी बना लिया। उधर उस बन्दर को कोई मदारी ले गया। एक दिन मदारी उस बन्दर को लेकर खेल दिखाने के लिए उस स्त्री (अपनी भूतपूर्व पत्नी) के साथ बैठे हुए राजा के पास आया। बन्दर ने अपनी मनुष्यरूप भूतपूर्व पत्नी को पहचान लिया। वह स्त्री भी बन्दर को पहचान गई। अतः जंजीर से बँधा होने पर भी बन्दर रानी को लेने के लिए बार-बार उसके सम्मुख दौड़ने लगा। अतः रानी ने उससे कहा–"अरे बन्दर ! जैसा जो समय हो, उसी के अनुसार व्यवहार कर। बंजुल के पेड़ से गिरने के लोभ में आकर भ्रष्ट हुए बन्दर ! अब पुरानी बातों को भूल जाओ। अब तो जैसी हालत में हो, उसी में रहो।"

जैसे अधिक लोभ में आकर सरोवर में कूदना बन्दर के लिए दुःखदायी हुआ, वैसे ही अधिक लोभवश शास्त्र-पाठ में मात्रा, अक्षर आदि बढ़ा देने से वह भी अनर्थकर होता है। सारांश यह है कि–

अत्थस्स विसंवाओ सुयभेयाओ तओ चरणभेओ।
तत्तो मोक्खाभावो, मोक्खाभावेऽफला दिक्खा॥८६॥

कम अक्षर या अधिक अक्षर होने से सूत्र के अर्थ में विसंवाद उत्पन्न हो जाता है। सूत्र का सूत्रत्व नष्ट हो जाता है। अथवा हीनाधिक अक्षर होने से उस सूत्र-पाठ में अन्तर पड़ जाता है। सूत्र-पाठ में भिन्नता होने से अर्थ में भी भिन्नता आ जाती है। अर्थ में भिन्नता होने से चारित्र छिन्न-भिन्न हो जाता है, चारित्र के छिन्न-भिन्न हो जाने से मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती और मोक्ष-प्राप्ति के अभाव में महाव्रत दीक्षा या श्रावक की अणुव्रत दीक्षा निष्फल हो जाती है। (हारिभद्रीया वृत्ति, पृ. ४२)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(१०) अव्वाइद्धक्खरं (अव्याविद्धाक्षर)–सूत्र के अक्षर आगे-पीछे करके पाठ करना व्याविद्धाक्षर दोष है। उससे रहित सूत्र का अक्षर पाठ।

(११) अक्खलियं (अस्खलित)–जैसे पथरीली भूमि पर हल बीच-बीच में रुक-रुककर चलता है, वैसे ही रुक-रुककर अथवा अक्षरों को छोड़कर शब्द का उच्चारण करने से उसका अर्थ समझ में नहीं आ सकता। अतः सूत्र का उच्चारण अस्खलित होना चाहिए।

(१२) अमिलियं (अमीलित)–अनेक सूत्रों को मिलाकर एक साथ उच्चारण करना मीलित दोष है, जैसे अनेक प्रकार के धान्य मिलाकर पकाने से भली प्रकार नहीं पकते।

अमीलित दोष पर निम्न उदाहरण ध्यान देने योग्य हैं–

(४) कुछ तंतुवाय जुलाहे मिलकर गोकुल में गये। वहाँ खीर बनाने का निश्चय किया। खीर के लिए बहुत-सा दूध उबाल लिया। फिर सोचा–'इस उबलते दूध में कुछ भी डाला जाये तो खीर बन जायेगी।' यह सोचकर चावल, चौला, मूँग, तिल आदि सब कुछ उसमें डाल दिया। परिणाम यह हुआ कि खीर की जगह भूसा बन गया, जिसका कोई उपयोग नहीं हुआ। ठीक इसी प्रकार एक आगम के सूत्रों में दूसरे आगम का मिश्रण होने से वह किसी भी काम का उपयोगी नहीं रहता।

(१३) अवच्चामेलियं (अव्यत्याम्रेडित)–इसके दो अर्थ हैं–सूत्र-पाठ उच्चारण करते समय जहाँ विराम लेना हो वहाँ विराम नहीं लेना और जहाँ विराम नहीं लेना हो वहाँ विराम लेना तथा बीच-बीच में अपनी बुद्धि से कल्पित सूत्रों का प्रक्षेप करके पढ़ना अव्यत्याम्रेडित दोष है। वृत्तिकार ने दो दृष्टान्त देकर विषय को स्पष्ट किया है–

अव्यत्याम्रेडित दोष पर भेरी कथा

(५) द्वारिका नगरी में महाराज श्रीकृष्ण राज्य करते थे। उनके पास देवता द्वारा दी हुई तीन भेरियाँ थीं–कौमुदकी, सांग्रामिकी और औद्‌भुतिकी। कौमुदी उत्सव की सूचना के लिए पहली, संग्राम की सूचना के लिए दूसरी और आकस्मिक प्रयोजन को सूचित करने के लिए तीसरी भेरी बजाई जाती थी।

श्रीकृष्ण के पास देव-प्रदत्त श्रीखण्ड गोशीर्षमयी एक भेरी और थी जो छह महीने में एक बार बजाई जाती थी। इस भेरी का शब्द सुनने वालों के छह मास का रोग आदि उपशान्त हो जाता और अनागत छह मास तक रोग उत्पन्न नहीं होता था।

एक दिन दाह-ज्वर से पीड़ित कोई व्यक्ति आया। उसने भेरी बजाने का समय पूछा तो भेरी रक्षक ने कहा–"अब तो छह महीने पश्चात् भेरी बजेगी। वह श्रीकृष्ण ही बजा सकेंगे।"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तब उसने भेरीरक्षक को हजार सुवर्ण-मुद्राओं का प्रलोभन देकर भेरी का कुछ अंश माँगा। लोभवश रक्षक ने वैसा कर लिया और भेरी के कटे भाग में दूसरे चन्दन का थिग्गल लगवा दिया। इसी प्रकार कुछ और व्यक्ति भेरीरक्षक के पास आये और उसने धन के लोभ में थोड़ा-थोड़ा हिस्सा काटकर दे दिया तथा स्थान-स्थान पर दूसरे चन्दन के थिग्गल लगवा दिये।

छह महीने बाद नियत समय पर श्रीकृष्ण ने भेरी मँगाई और व्याधियों की उपशान्ति के लिए उसे बजाना प्रारम्भ किया। भेरी तो बजी पर व्याधियों की उपशान्ति नहीं हुई। श्रीकृष्ण ने इस रहस्य को जानने की कोशिश की तब रक्षक की अप्रामाणिकता स्पष्ट हो गई। थिग्गल लगवाने का इतिहास जानकर श्रीकृष्ण ने उस भेरीरक्षक को दण्डित किया।

श्रीकृष्ण ने पुनः देवाराधना करके दूसरी भेरी प्राप्त की और दूसरा रक्षक नियुक्त किया। वह रक्षक बहुत ईमानदार था अतः प्रयत्नपूर्वक भेरी की रक्षा में सजग रहता।

तात्पर्य यह है कि जो शिष्य गुरु से प्राप्त श्रुत में अन्यतीर्थिकों से प्राप्त श्रुत के थिग्गल जोड़कर उसे जर्जरित करता है, वह शिष्य अयोग्य होता है और श्रुत की यथावत् सुरक्षा करने वाला शिष्य द्वितीय भेरीरक्षक की भाँति योग्य होता है। अव्यत्याम्रेडित का आशय मूल रूप में स्थित श्रुत है। जो आगम गणधरों के द्वारा जिस रूप में रचित है, उसका उसी रूप में पाठ होना चाहिए। (विशेषावश्यक भाष्य, गाथा ८५५)

(१४) **पडिपुण्णं (प्रतिपूर्ण)**—बिन्दु, मात्रा छन्द आदि में हीन या अधिक न हों।

(१५) **पडिपुण्णघोसं (प्रतिपूर्णघोष)**—सूत्र के पुनरावर्तन के समय लघु, गुरु तथा उदात्त आदि घोषों से युक्त उच्चारण करना।

(१६) **कंठोट्ठविप्पमुक्कं (कण्ठोष्टविप्रमुक्त)**—शब्द उच्चारण के दो मुख्य अंग हैं—कण्ठ और होठ। कण्ठ व होठ से स्पष्ट उच्चारण करना।

(१७) **गुरुवायणोवगयं (गुरु वाचनोपगत)**—गुरु की वाचना से प्राप्त। गुरु दूसरों को वाचना देते हों तब उसे छिपकर सुनना या स्वयं ही पढ़ा हुआ शास्त्र गुरु वाचनोपगत नहीं होता। प्राचीन समय में प्रत्येक शास्त्र की वाचना विधिपूर्वक गुरुजनों से प्राप्त की जाती थी।

सूत्र के अन्त में एक सबसे महत्त्वपूर्ण बात कही है कि इन १७ दोषों से रहित आवश्यक का पूर्ण शुद्ध रीति से उच्चारण, परावर्तन करने पर भी वह द्रव्य आवश्यक क्यों है? इसके उत्तर में कहा है—**णो अणुवेक्खा** उसमें अनुप्रेक्षा नहीं है। जिस प्रकार लौह-पिण्ड को तपाने पर वह अग्निमय बन जाता है, उसी प्रकार सूत्र अर्थ के चिन्तन से वह आत्म-शुद्धि प्रदाता बन जाता है। ऐसे चिन्तन आदि में तन्मय हो जाना अनुप्रेक्षा है। **"तप्तायसपिण्डवदर्पितचेतसो मनसाभ्यासोऽनुप्रेक्षा।"** (तत्त्वार्थ वार्तिक ९/२५)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Elaboration—The seventeen adjectives used for physical *avashyak* with scriptural knowledge inform about its absolute correctness. They are—

(1) ***Sikkhitam*** **(shikshit)**—studied or read properly from beginning to end.

(2) ***Thitam*** **(thit)**—understood and absorbed in memory.

(3) ***Jitam*** **(jit)**—retained in mind so as to recall at once at the time of revision.

(4) ***Mitam*** **(mit)**—studied and assessed in terms of number of verses, words, syllables, meter etc.

(5) ***Parijitam*** **(parijit)**—perfected by revising in normal and reverse sequence so as to acquire the ability to recite at will in any desired sequence.

(6) ***Namasamam*** **(namasam)**—to commit every part of the book to memory as firmly as ones own name.

These six adjectives inform about the ancient process of memorizing the *Agam* text. The following adjectives are related to perfection in elocution—

(7) ***Ghosasamam*** **(ghoshasam)**—to recite the text fluently with phonetic perfection in the required high or low pitch. In modern terms it is called rising and falling tone.

(8)—(9) Ahinakkharam (ahinakshar) and Anachchakkharam (antyakshar)—to recite without shortening or extending syllables. This is because, if a syllable is missed from the *Agam* text the desired meaning cannot be grasped. In the same way adding syllables can also cause confusion. The commentator (*Tika*) has explained this with examples—

(1) **Missing a syllable**—In Rajagriha city, on conclusion of the discourse of Bhagavan Mahavir, when king Shrenik and minister Abhaya Kumar were about to return to the palace they saw a *vidyadhar* (a type of god) falling from the sky and again

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

going up. They asked Bhagavan Mahavir the reason for the *vidyadhar's* continued failure at efforts to fly. He said—"This *vidyadhar* is trying to perfect the magical power of flying in the sky. But he is missing one letter from the *mantra* and therefore is unable to perfect it. He flies and falls back like a bird with clipped wings." Prime minister Abhaya Kumar was endowed with the *Padanusarini Labdhi* (the skill of knowing the complete verse or *mantra* by listening just one letter or word of the verse). On hearing Bhagavan's comment he at once went to the *vidyadhar* and said—"Brother ! If you recite the mantra of the power to fly I will be able to tell you the missing letter." The *vidyadhar* agreed and recited the *mantra*. Abhaya Kumar was able to know the missing letter with the help of his skill. When the *vidyadhar* chanted the then complete *mantra* he flew in the sky without any problem.

This story explains how missing of just one letter from a *mantra* makes it worthless. When missing of just one letter is not desired in mundane *mantras* how can it be tolerated in reciting scriptures, which are spiritual *mantras* ? Therefore, reciting of scriptures should be without missing any letter. Reading without missing a syllable alone can lead to liberation. (for details see Haribhadriya *Vritti* of *Visheshavashyak Bhashya*, verse 864, p. 40, Ed. Muni Jambu Vijaya)

(2) **Extending a syllable**—(i) Patliputra was the capital of the Mauryan emperor Ashoka. He had a son named Kunal from his senior queen. When he grew a little he was sent to Ujjaini. When he became eight years old a messenger from Ujjaini brought the news to the emperor. Ashoka at once wrote a note to be sent to Ujjaini—***"Idanimadhiyatam kumarah."*** (make the prince commence his education). After writing, the emperor proceeded to attend some urgent task and left the note unsealed. His other queen, who was standing there, got the chance to read the note. She thought—'I too have a son, Mahendra, who is younger than Kunal. The king will make Kunal his heir because it is his right and not that of my son.' Thinking thus she took a

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

decision. She took a needle, dipped it into soot and added a dot over the letter *'a'* in the note. This turned *adhiyatam* into *andhiyatam* (make the prince blind). Adding of just one syllable had completely changed the meaning. She replaced the note from where she had lifted it. On returning, the king sealed the note without reading it again and sent it with the messenger. When the attendant of the prince read the note he was dumbfounded. He did not read aloud the unpleasant message. When the prince ordered him to read he did so reluctantly. The prince understood the conspiracy but he thought—'No one in this Maurya clan had disobeyed an order from the king, how can I disobey this order from my father, the king. This is impossible.' With these thoughts Kunal took a heated needle and pierced both his eyes in spite of opposition from grief-stricken family members. Kunal became blind. (Haribhadriya *Vritti* of *Visheshavashyak Bhashya*, verse 861, p. 41, Ed. Muni Jambu Vijaya)

(3) There was a large pond in a jungle. It was popularly called *Kamik-tirth*. On the edge of the pond there was a *banjul* tree. It was a miraculous place because if some animal climbed the *banjul* tree and from there jumped into the pond it turned into a human being. If a human being did the same he or she turned into a god or goddess. However, if out of greed someone repeated the act, he would regain the original form. One day in presence of a monkey-couple a human-couple fell from a branch of the *banjul* tree into the pond and at once turned into a divine-couple. Seeing this the monkey-couple also imitated the act and at once turned into a human-couple. The man turned monkey said to his woman turned mate—"Come darling ! Let's do it again so that we become gods." The woman refused, saying—"We don't know what will happen if we fall into the water once again ? I am satisfied with this human form. Excessive greed is harmful and it is censured in the scriptures." But driven by excessive greed the man turned monkey jumped into the pond once again and to his bad luck, he regained his original form, a monkey. Sometime

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

later a king came there. When he saw that beautiful woman he fell in love with her and married her. The monkey was captured by a *madari* (a person who trains animals and earns his living by displaying their tricks). One day this *madari* happened to take the monkey for a performance before that king and the woman turned monkey. The monkey and the woman, now the queen, recognized each other. In spite of being chained, the monkey kept on jumping to grab the queen. At this the queen said—"O monkey ! Behave yourself in accordance with the prevailing circumstances. You were corrupted by the greed to jump into the pond from the *banjul* tree. Hey monkey ! Now forget your past and be satisfied with your life as a monkey."

As jumping once again into the pond out of greed was painful for the monkey, so is extending syllables, letters or sounds in the text of the scriptures for the reader. The conclusion is—Meaning gets distorted when syllables are missing or extended. The aphorism or sentence no more remains true to its form. In other words the original text is distorted due to more or less syllables. The distortion in text causes distortion in meaning. This distortion in meaning distorts conduct. A distorted conduct does not lead to liberation. In absence of chance of getting liberated the initiation as an ascetic or a *shravak* goes waste. (Haribhadriya *Vritti,* p. 42)

(10) *Avvaiddhakkharam* (avyaviddhakshar)—to recite without shifting syllables.

(11) *Akkhaliyam* (askhalit)—on a stony land the movement of a plough is inconsistant and it also skips areas. Such breaks and skipping in reciting distorts the meaning. To avoid such pauses and skipping while reciting is called *askhalit.*

(12) *Amiliyam* (ameelit)—to recite without mixing up of different phrases or aphorisms. Mixed grains are difficult to cook properly. The commentator (*Tika*) has explained this with the following example—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(4) A group of weavers went to a cow-shed and decided to cook and eat *Kheer* (a pudding of rice cooked in milk). They boiled a large quantity of milk. After that they thought—'Whatever they put in the boiling milk will be cooked and turned into *Kheer.*' With this idea they put a variety of grains like rice, *chaula* (a type of pulse), *moong* (green gram), *til* (sesame), (etc.). The result was that they got an inedible paste instead of *Kheer.* In the same way mixing aphorisms of one *Agam* with those of others makes them useless.

(13) *Avachchameliyam* (avyatyamredit)—This includes avoiding two faults. To pause where a pause is not required and not to pause where a pause is required during elocution. Expanding the text by interpolating it with one's own ideas and matter. The commentator (*Tika*) has explained this with an example.

(5) In Dwarka city ruled king Shrikrishna. He had three divine bugles or trumpets named—Kaumudaki, Sangramiki and Audbhutiki. The first was blown to announce the Kaumudi (moonlit night) festival, the second to announce a war and the third for some sudden warning.

Shrikrishna had one more divine trumpet coated with divine sandalwood paste. This was blown every six months. Those who heard the sound of this trumpet were cured of any disease they contracted during past six months and also became immune to any disease for coming six months.

One day a person suffering from high fever came and asked when the trumpet was scheduled to be blown ? The keeper of the trumpet informed that it was to be blown after six months and only Shrikrishna could blow it. The patient now offered the keeper one thousand gold coins and sought a small portion of the sandalwood coating. Out of greed the keeper agreed. He scraped a small part of the coating replacing it with fresh sandalwood paste. Once started, this process continued and many more

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ailing persons enjoyed this benefit on payment. Soon the trumpet was left with a coating of ordinary sandalwood only.

After six months, at the scheduled time Shrikrishna called for the trumpet and blew it for pacifying ailments. The trumpet produced sound but it failed to pacify ailments. When Shrikrishna investigated he found about the misdeed by the keeper. He punished the keeper.

Shrikrishna again performed worship of gods and acquired a new curative trumpet. This time he appointed another keeper who was very honest and was ever alert to protect the divine trumpet.

The lesson of this story is that a disciple who mixes some text obtained from heretics with the lessons given to him by his *guru* and spoils the scriptures is undeserving and the one who protects the scriptures and keeps it undefiled is deserving like the second keeper of the trumpet. *Avyatyamredit* means perfect original text or scripture. The original text of *Agam* as given by *Ganadharas* should be read and recited as it is. (*Visheshavashyak Bhashya*, verse 855)

(14) *Padipunnam* (pratipurna)—rendered eloquently and with metrical perfection, not missing any letter or syllable.

(15) *Padipunnaghosam* (pratipurnaghosh)—rendered in perfect accent ensuring perfection in low and high pitch as well.

(16) *Kanthotthavippamukkam* (kanthoshtavipramukta)—recited perfectly and clearly with vocal cords and lips, these two being the prominent organs of speech in human body.

(17) *Guruvayanovagayam* (guruvachanopagat)—acquired through the discourse of the *guru*. That acquired by hearing the *guru's* discourse stealthily or acquired just through reading is excluded from this. In the ancient times each script was learned from the *guru* strictly following the prescribed procedure.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

A very important statement is included at the end of this aphorism—even after perfectly reciting and revising the *Avashyak* without any of these seventeen faults why it is still classified as *dravya avashyak* (physical *avashyak*) ? The answer is *'no anuvekkha'* or it has not been pondered over. When a lump of iron is heated it turns into a ball of fire. In the same way when the text goes through the process of contemplation, rumination, and so on, it turns into the energy needed for purification of the self. To be absorbed in such contemplation is called *anuvekkha (anupreksha)*. (*Tattvarth Vartik* 9/25).

(१) आगमतः द्रव्य आवश्यक और नय दृष्टियाँ

१५. (१) णेगमस्स एगो अणुवउत्तो आगमओ एगं दव्वावस्सयं, दोण्णि अणुवउत्ता आगमओ दोण्णि दव्वावस्सयाइं, तिण्णि अणुवउत्ता आगमओ तिण्णि दव्वावस्सयाइं, एवं जावइया अणुवउत्ता तावइयाइं ताइं णेगमस्स आगमओ दव्वावस्सयाइं।

१५. (१) नैगम नय (सामान्य-विशेष दोनों को ग्रहण करता है) की अपेक्षा एक अनुपयुक्त–उपयोगशून्य आत्मा आगमतः एक द्रव्य आवश्यक है। दो उपयोगशून्य आत्माएँ आगमतः दो द्रव्य आवश्यक हैं। तीन अनुपयुक्त आत्माएँ आगमतः तीन द्रव्य आवश्यक हैं। इस प्रकार जितनी भी अनुपयुक्त आत्माएँ हैं, नैगमनय की अपेक्षा उतनी ही आगमतः द्रव्य आवश्यक हैं।

(1) ***AGAMATAH DRAVYA AVASHYAK* AND NAYA ASPECTS**

15. (1) According to the *Naigam naya* (co-ordinated viewpoint that includes ordinary and special both) one non-contemplative soul is one *agamatah dravya avashyak* (physical *avashyak* with scriptural knowledge). Two non-contemplative souls are two physical *avashyaks* with scriptural knowledge. Three non-contemplative souls are three physical *avashyaks* with scriptural knowledge. In the same way as many non-contemplative souls are, there are that many *agamatah dravya avashyaks* (physical *avashyaks* with scriptural knowledge).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(२) एवमेव ववहारस्स वि।

(२) इसी प्रकार व्यवहार नय (विशेष अथवा भेद को ग्रहण करने वाला) भी आगमतः द्रव्य आवश्यक के भेद स्वीकार करता है। (नैगम और व्यवहार की कथन-शैली एक समान है)

(2) Same is true for *Vyavahar naya* (particularized viewpoint). (The style of stating is same for both co-ordinated and particularized viewpoints).

(३) संगहस्स एगो वा अणेगा वा अणुवउत्तो वा अणुवउत्ता वा आगमओ दव्वावस्सयं वा दव्वावस्सयाणि वा से एगे दव्वावस्सए।

(३) संग्रह नय (सामान्य मात्र को ग्रहण करने वाला) एक अनुपयुक्त आत्मा आगमतः एक द्रव्य आवश्यक है। (किन्तु अनेक अनुपयुक्त आत्माएँ आगमतः अनेक द्रव्य आवश्यक हैं-ऐसा स्वीकार नहीं करता है।) वह सभी आत्माओं को एक द्रव्य आवश्यक ही मानता है। क्योंकि वह समूहग्राही है।

(3) According to *Samgraha naya* (generalized viewpoint) one non-contemplative soul is one *agamatah dravya avashyak* (physical *avashyak* with scriptural knowledge). (But it does not accept that many non-contemplative souls are many physical *avashyaks* with scriptural knowledge. According to this all non-contemplative souls fall into just one category of physical *avashyak* with scriptural knowledge. This is because it is collective standpoint.

(४) उज्जुसुयस्स एगो अणुवउत्तो आगमओ एगं दव्वावस्सयं, पुहत्तं नेच्छइ।

(४) ऋजुसूत्र नय (पर्याय मात्र को ग्रहण करने वाला) की अपेक्षा एक अनुपयुक्त आत्मा आगमतः एक द्रव्य आवश्यक है। वह पृथक्त्व (भेदों) को, भिन्नता को स्वीकार नहीं करता।

(4) According to *Rijusutra naya* (precisionistic viewpoint; viewpoint related to specific point or period of time) one non-contemplative soul is one *agamatah dravya avashyak*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(physical *avashyak* with scriptural knowledge). This viewpoint has no scope for variations or differences.

(५) तिण्हं सद्दनयाणं जाणए अणुवउत्ते अवत्थू। कम्हा ? जइ जाणए अणुवउत्ते ण भवइ। से तं आगमओ दव्वावस्सयं।

(५) तीनों शब्द नय (शब्द, समभिरूढ़, एवंभूत नय) जो शब्द को ही अपना विषय बनाते हैं, ज्ञायक यदि अनुपयुक्त उपयोगशून्य होता है, तो उसे अवस्तु (अवास्तविक) मानते हैं। क्योंकि ज्ञायक (ज्ञाता) उपयोगशून्य नहीं होता। यदि उपयोगशून्य है तो वह वास्तव में ज्ञायक नहीं है।

यह आगम से द्रव्य आवश्यक का स्वरूप कहा है।

(नयों की विस्तृत व्याख्या आगे नयद्वार में दी जायेगी। यहाँ पर केवल सात नयों की अपेक्षा से आवश्यक क्या है इसी पर संक्षिप्त प्रकाश डाला है।)

(5) According to the three *Shabda nayas* (*Shabda naya, Samabhirudha naya* and *Evambhuta naya*) or verbal viewpoints (verbal viewpoint, conventional viewpoint and etymological viewpoint) if a knower is devoid of the faculty of contemplation he is unreal. This is because without the faculty of contemplation he cannot be a knower. Thus if he is non-contemplative he is in fact not a knower.

This concludes the description of *agamatah dravya avashyak* (physical *avashyak* with scriptural knowledge).

(The subject of *nayas* or viewpoints will be dealt in details in the chapter on *nayas*. Here only *Avashyak* has been defined according to the seven viewpoints in brief.)

(२) नो-आगमतः द्रव्य आवश्यक

१६. से किं तं नोआगमतो दव्वावस्सयं ?

नोआगमतो दव्वावस्सयं तिविहं पण्णत्तं। तं जहा-(१) जाणगसरीरदव्वावस्सयं (२) भवियसरीरदव्वावस्सयं (३) जाणगसरीर भवियसरीरवतिरित्तं दव्वावस्सयं।

१६. (प्रश्न) नो-आगमतः द्रव्य आवश्यक क्या है

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(उत्तर) नो-आगमतः द्रव्य आवश्यक तीन प्रकार का है–(१) ज्ञायक शरीर द्रव्य आवश्यक, (२) भव्य शरीर द्रव्य आवश्यक, (३) ज्ञायक शरीर-भव्य शरीर तट व्यतिरिक्त द्रव्य आवश्यक।

(2) NO-AGAMATAH DRAVYA AVASHYAK

16. (Question) What is *no-agamatah dravya avashyak* (physical *avashyak* without scriptural knowledge)?

(Answer) *No-agamatah dravya avashyak* (physical *avashyak* without scriptural knowledge) is of three types—(1) *Jnayak sharir dravya avashyak,* (2) *Bhavya sharir dravya avashyak,* and (3) *Jnayak sharir-bhavya sharir vyatirikta dravya avashyak.*

(१) ज्ञायक शरीर द्रव्य आवश्यक

१७. से किं तं जाणगसरीरदव्वावस्सयं ?

जाणगसरीरदव्वावस्सयं-आवस्सए त्ति पयत्थाधिगारजाणगस्स जं सरीरयं ववगय-चुय-चाविय-चत्तदेहं जीवविप्पजढं सेज्जागयं वा संथारगयं वा सिद्धसिलातलगयं वा पासित्ता णं कोइ वएज्जा–अहो ! णं इमेणं सरीरमुस्सएणं जिणदिट्ठेणं भावेणं आवस्सए त्ति पयं आघवियं पण्णवियं परूवियं दंसियं निदंसियं उवदंसियं।

जहा को दिट्ठंतो ? अयं महुकुंभे आसी, अयं घयकुंभे आसी। से तं जाणगसरीर दव्वावस्सयं।

१७. (प्रश्न) ज्ञायक शरीर द्रव्य आवश्यक क्या है ?

(उत्तर) ज्ञायक शरीर द्रव्य आवश्यक इस प्रकार है–यह आवश्यक पद के अर्थाधिकार को जानने वाले का ऐसा शरीर है, जो **व्यपगत** है–चेतनारहित है। **च्युत**–आयुष्यकर्म के क्षय होने से प्राण चले गये हैं–**च्यावित** अथवा शस्त्रादि प्रयोग से जिसे प्राणरहित किया गया है। **त्यक्तदेह**–अनशन आदि द्वारा जीव से विप्रमुक्त है। (इसका कारण यह है कि) उस शरीर को शय्या, बिछौने, श्मशान भूमि या सिद्धशिला तल पर देखकर यह सामान्य बात है कि कोई कहे–अहो (आश्चर्य है) इस पौद्गलिक शरीर ने

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिन-उपदिष्ट भाव के अनुसार आवश्यक पद का आख्यान किया था, गुरु से अध्ययन किया था, प्रज्ञापन किया था, शिष्यों को पढ़ाया था, प्ररूपणा की थी। **दर्शन**–अपने आचरण द्वारा शिष्यों को दिखाया था। **निदर्शन**–अक्षम शिष्यों को विशेष रूप से समझाया था। **उपदर्शन**–नयों एवं युक्तियों द्वारा शिष्यों के हृदयों में उतारा था।

प्रश्न–(शिष्य पूछता है) इसका समर्थक कोई दृष्टान्त है ?

उत्तर–(गुरु) हाँ, जैसे खाली घड़े को सामान्यतया ऐसा कहते हैं कि यह मधु घट था, यह घृत घट था (परन्तु वर्तमान में मधु या घृत से रहित है)। यह ज्ञायक शरीर द्रव्य आवश्यक का स्वरूप है।

(1) JNAYAK SHARIR DRAVYA AVASHYAK

17. (Question) What is *Jnayak sharir dravya avashyak* (physical *avashyak* as body of the knower).

(Answer) *Jnayak sharir dravya avashyak* (physical *avashyak* as body of the knower) is explained thus—It is such a body of the knower of the purview of the meaning of the *Avashyak* that is dead or devoid of life because of end of life-span defining *karmas* (*chyut*), that has been killed or deprived of life using a weapon or other means (*chyavit*), or that has voluntarily embraced death or has been voluntarily abandoned by the soul through fasting or other such religious act (*tyaktadeha*). (This is because it is a natural reaction that) seeing such a body lying on a bed, mattress, cremation ground or *Siddhashila* someone utters—Oh ! this physical body was the instrument of learning the *Avashyak (Sutra)*, as preached by the Jina, from the *guru;* reciting and explaining it to disciples, confirming it by demonstration, giving its special lessons to weak students, and affirming it with the help of logic and multiple perspectives (*naya*).

Question—(asked by a disciple) Is there some analogy to confirm this ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Answer—(by the *guru*) Yes, for example (it is conventionally said that) this was a pot of honey or this was a pot of butter (although at present it contains neither honey nor butter).

This concludes the description of *Jnayak sharir dravya avashyak* (physical *avashyak* as body of the knower).

विशेष शब्दों के अर्थ–शय्या–देह प्रमाण बिछौना।

संस्तारक–ढाई हाथ प्रमाण बिछौना।

सिद्धशिला–यहाँ सिद्धशिला का अर्थ ईषत् प्राग्भारा नामक पृथ्वी से नहीं है, जहाँ पर सिद्ध आत्मा विराजमान हैं, परन्तु जिस शिला तल पर साधु अनशन आदि स्वीकार कर चुके हैं अथवा जहाँ किसी महान ऋषि ने शरीर त्यागा है, वह शिला पट या क्षेत्र 'सिद्धशिला' कहा जाता है। उस क्षेत्र में प्रकम्पन/प्रभाव ऐसा होता है कि वहाँ बैठकर साधना करने में शीघ्र सफलता मिल जाती है। उसे यहाँ पर सिद्ध शिला तल समझना चाहिए। (मलधारी वृत्ति १२ तथा चूर्णि, पृ. ९)

Technical Terms—**Shayya**—a body-size bed.

Samstarak—a two and a half yard bed.

Siddha Shila—Here the term *'Siddha Shila'* has not been used in its conventional meaning of *Ishat Pragbhara* earth or the realm of liberated souls located at the edge of inhabited space (*Lokakasha*). Here it means the surface of the rock over which ascetics have taken the ultimate vow or a place where some great ascetic has embraced meditational death. Such places are supposed to have an atmosphere or vibrations conducive to spiritual practices. Such a place should be considered a *Siddha Shila* here. (Maladhari's *Vritti* 12, *Churni, p*. 9)

(२) भव्य शरीर द्रव्य आवश्यक

१८. से किं तं भवियसरीरदव्वावस्सयं ?

भवियसरीरदव्वावस्सयं–जे जीवे जोणिजम्मणणिक्खंते इमेणं चेव सरीरसमुस्सएणं आदत्तएणं जिणोवदिट्ठेणं भावेणं आवस्सए त्ति पयं सेयकाले सिक्खिस्सइ, न ताव सिक्खइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहा को दिट्ठंतो ?

अयं महुकुंभे भविस्सइ, अयं घयकुंभे भविस्सइ। से तं भवियसरीरदव्वावस्सयं।

१८. (प्रश्न) भव्य शरीर द्रव्य आवश्यक क्या है ?

(उत्तर)–गर्भकाल की स्थिति पूर्ण होने पर जब जीव बाहर निकलता है तो वह इस पौद्गलिक शरीर से जिन उपदिष्ट भावों के अनुसार भविष्य में आवश्यक पद सीखेगा, किन्तु अभी वर्तमान में नहीं सीख रहा है, तब तक वह जीव भव्य शरीर द्रव्य आवश्यक कहलाता है।

प्रश्न–(शिष्य पूछता है) इसको समझने के लिए कोई दृष्टान्त है ?

उत्तर–(गुरु कहते हैं) यह मधु कुंभ होगा, घृत कुम्भ होगा।

यह भव्य शरीर द्रव्य आवश्यक का स्वरूप है।

ये दोनों दृष्टान्त संकल्प मात्र को ग्रहण करने वाले नैगम नय की अपेक्षा से कहे गये हैं।

(2) BHAVYA SHARIR DRAVYA AVASHYAK

18. (Question) What is *bhavya sharir dravya avashyak* (physical *avashyak* as body of the potential knower) ?

(Answer) On maturity a being comes out of the womb or is born and it has the potential to learn the *Avashyak (Sutra),* as preached by the Jina in future, but it is not learning at present. As long as it is not learning, this being is called *bhavya sharir dravya avashyak* (physical *avashyak* as body of the potential knower).

(Question) (asked by a disciple) Is there some analogy to confirm this ?

(Answer) (by the *guru*) Yes, for example (it is conventionally said that) this will be a pot of honey or this will be a pot of butter (although at present it contains neither honey nor butter).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

This concludes the description of *bhavya sharir dravya avashyak* (physical *avashyak* as body of the potential knower).

These two analogies are based on *Naigama naya* (co-ordinated viewpoint) that deals with concepts and plurality.

(३) ज्ञायक शरीर-भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य आवश्यक

१९. से किं तं जाणगसरीर भवियसरीरवतिरित्ते दव्वावस्सए ?

जाणगसरीर-भवियसरीरवतिरित्ते दव्वावस्सए तिविहे पण्णत्ते। तं जहा– (१) लोइए (२) कुप्पावयणिए (३) लोउत्तरिए।

१९. (प्रश्न) ज्ञायक शरीर-भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य आवश्यक क्या है ?

(उत्तर) ज्ञायक शरीर-भव्य शरीर व्यतिरिक्त (उन दोनों से भिन्न) द्रव्य आवश्यक तीन प्रकार का है–जैसे–(१) लौकिक, (२) कुप्रावचनिक, और (३) लोकोत्तरिक।

(3) JNAYAK SHARIR-BHAVYA SHARIR VYATIRIKTA DRAVYA AVASHYAK

19. (Question) What is *Jnayak sharir-bhavya sharir vyatirikta dravya avashyak* (physical *avashyak* other than the body of the knower and the body of the potential knower)?

(Answer) *Jnayak sharir-bhavya sharir vyatirikta dravya avashyak* (physical *avashyak* other than the body of the knower and the body of the potential knower) is of three kinds—(1) *Laukik,* (2) *Kupravachanik,* and (3) *Lokottarik.*

विवेचन–जो लोक व्यवहार में आवश्यक कृत्य होते हैं, उन्हें लौकिक द्रव्य आवश्यक कहा है। यह समाज में प्रचलित अर्थ की अपेक्षा से है। कुप्रावचनिक का अर्थ है–एकान्तवादी धर्म प्ररूपक और लोकोत्तर का अर्थ है, अनेकान्तवादी श्रेष्ठ धर्म के प्ररूपक। इनका स्वरूप अगले सूत्रों में बताया है–

Elaboration—*Laukik* means mundane and here it includes mundane obligatory duties. *Kupravachanik* means related to

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

pervert teachings and here it includes teachings of absolutistic schools of thought. *Lokottar* means exceptional or spiritual, here it includes teachings of non-absolutism, the best of all religions. These have been described in the following aphorisms—

(१) लौकिक द्रव्य आवश्यक

२०. से किं तं लोइयं दव्वावस्सयं ?

लोइयं दव्वावस्सयं—जे इमे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइओ कल्लं पाउप्पभायाए रमणीए सुविमलाए फुल्लुप्पल-कमल कोमलुम्मिलियम्मि अहपंडुरे पभाए रत्तासोगप्पगास-किंसुय-सुयमुह-गुंजद्धरागसरिसे कमलागरःनलिणिसंडबोहए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते मुहधोयण-दंतपक्खालण-तेल्ल-फणिह-सिद्धत्थय-हरियालिय-अद्दाग-धूव-पुप्फ-मल्ल-गंध-तंबोल-वत्थमाइयाइं दव्वावस्सयाइं करेत्ता ततो पच्छा रायकुलं वा देवकुलं वा आरामं वा उज्जाणं वा सभं वा पवं वा गच्छन्ति। से तं लोइयं दव्वावस्सयं।

२०. (प्रश्न) लौकिक द्रव्य आवश्यक क्या है ?

(उत्तर) लौकिक द्रव्य आवश्यक का स्वरूप इस प्रकार है–जो ये राजेश्वर, तलवर, माडंबिक, कौटुम्बिक, इभ्य, श्रेष्ठी, सेनापति, सार्थवाह आदि हैं, वे रात्रि व्यतीत होने पर, प्रभातकालीन प्रकाश होने पर, रात का अंधकार छँटकर निर्मल हो जाने पर, कमल प्रफुल्लित होने पर, पीली आभा वाले अरुणिम प्रभात के समय लाल अशोक की दीप्ति, पलाश के पत्तों जैसे लाल आभा, तोते के मुख और गुंजा (चिरमी) के अर्ध-भाग जैसे लाल रंग वाले जलाशय में रहे कमलों का उद्‌बोधक सहस्र रश्मि दिनकर सूर्य के उदित होने पर, तेज से देदीप्यमान होने पर अपनी दैनिक आवश्यक क्रियाएँ करने लगते हैं। जैसे–मुँह धोते हैं, दाँत माँजते हैं, तेल मालिश करते हैं, स्नान, कंघी आदि करके केशों को सँवारते हैं। मंगल के लिए सरसों, पुष्प, दूब आदि का प्रक्षेपण करते हैं, दर्पण में मुख देखते हैं, धूप जलाते हैं, पुष्प और पुष्पमालाएँ धारण करते हैं, पान खाते हैं, स्वच्छ वस्त्र पहनते हैं, ये आवश्यक क्रियाएँ सम्पन्न करके राज सभाओं में, देवालयों में, आरामों, उद्यानों में, सभा अथवा प्रपा की ओर जाते हैं, ये सब क्रियाएँ लौकिक द्रव्य आवश्यक हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(1) LAUKIK DRAVYA AVASHYAK

20. (Question) What is *Laukik dravya avashyak* (mundane physical *avashyak*) ?

(Answer) *Laukik dravya avashyak* (mundane physical *avashyak*) is explained thus—There are people like kings, princes, knights of honour, landlords, village-heads, senior citizens, businessmen, merchants, commanders, caravan chiefs etc. These people commence their daily chores when night ends, light of the dawn spreads, black of the night scatters, lotus blossoms, and when at the time of the crimson hued pale dawn the sun, the lord of the day, rises with its thousands of rays and grows in brilliance stirring the bunch of lotus flowers to blossom in a pond as red as red *Ashoka* flower, *Palash* leaves, beak of a parrot and the red half of the *Chirmi* seed (*Abru precatorious*). These chores include ablution, brushing teeth, oil massage, bathing and combing hair. They also throw around mustard seeds, flowers and grass as an auspicious act, look into the mirror, burn incense, wear garlands and flowers, chew beetle-leaves and wear clean dress. After concluding these essential duties they proceed to royal assemblies, temples, gardens, parks, congregations or water huts. All these activities are called *Laukik dravya avashyak* (mundane physical *avashyak*).

(२) कुप्रावचनिक द्रव्य आवश्यक

२१. से किं तं कुप्पावयणियं दव्वावस्सयं ?

कुप्पावयणियं दव्वावस्सयं जे इमे चरग-चीरिग-चम्मखंडिय-भिच्छुंडग-पंडुरंग-गोयम-गोव्वइय-गिहिधम्म-धम्मचिंतग-अविरुद्ध-विरुद्ध-वुड्ढसावगप्पभिइयो पासंडत्था कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव तेयसा जलंते इंदस्स वा खंदस्स वा रुद्दस्स वा सिवस्स वा वेसमणस्स वा देवस्स वा नागस्स वा जक्खस्स वा भूयस्स वा मुगुंदस्स वा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अज्जाए वा कोट्टकिरियाए वा उवलेवणसम्मज्जणाऽवरिसण-धूव-पुप्फ-गंध-मल्लाइयाइं दव्वावस्सयाइं करेंति। से तं कुप्पावयणियं दव्वावस्सयं।

२१. (प्रश्न) कुप्रावचनिक द्रव्य आवश्यक क्या है?

(उत्तर) कुप्रावचनिक द्रव्य आवश्यक का स्वरूप इस प्रकार है–उषाकाल में पौ फटने पर, रात्रि के निर्मल होने पर, सूर्य तेज से जाज्वल्यमान दीप्त होने पर जो ये चरक, चीरिक, चर्म-खण्डिक, भिक्षोण्डक, पाण्डुरंग, गौतम, गौव्रतिक, गृहीधर्मी, धर्मचिन्तक अविरुद्ध, विरुद्ध, वृद्ध श्रावक आदि पाषण्डी, इन्द्र, स्कन्द, रुद्र, शिव, वैश्रमण, कुबेर अथवा देव, नाग, यक्ष, भूत, मुकुन्द आर्यादेवी, कोट्टक्रियादेवी आदि की उपासना करते हैं। उपलेपन, संमार्जन, सिंचन, धूप, फूल, गन्ध और माला आदि द्वारा पूजा करके द्रव्य आवश्यक क्रियाएँ सम्पन्न करते हैं। यह कुप्रावचनिक द्रव्य आवश्यक है।

(2) KUPRAVACHANIK DRAVYA AVASHYAK

21. (Question) What is *Kupravachanik dravya avashyak* (pervert physical *avashyak*)?

(Answer) *Kupravachanik dravya avashyak* (pervert physical *avashyak*) is explained thus—When night ends, darkness of the night is shattered, and the sun spreads its brilliance, heretics like *Charak, Cheerik, Charmakhandik, Bhikshondak, Pandurang, Gautam, Gauvratik, Grihidharmi, Dharmachintak, Aviruddha, Viruddha, Vriddha Shravak,* etc. worship deities like Indra, Skanda, Rudra, Shiva, Vaishraman, Kuber or gods, *naags, yakshas, bhoots,* Mukund, *aryas,* Kottakriyadevi, etc. They perform the *dravy avashyak* activities (physical obligatory duties) by smearing (cowdung or sandalwood paste on the floor), sweeping (with broom or cleaning the floor), sprinkling water, burning incense, offering flowers, perfumes and garlands, etc. These activities are *Kupravachanik dravya avashyak* (pervert physical *avashyak*).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विशेष शब्दों के अर्थ–**चरग (चरक)**–समुदाय रूप में एकत्रित होकर भिक्षा माँगने वाले।

चीरिग (चीरिक)–मार्ग में पड़े वस्त्र खण्डों व चिथड़ों को पहनने वाले।

चम्मखंडिय (चर्मखण्डिक)–चमड़े को वस्त्र रूप में पहनने वाले।

भिच्छुंडग (भिक्षोण्डक)–भिक्षा में प्राप्त अन्न से ही उदर-पूर्ति करने वाले।

पंडुरंग (पाण्डुरांग)–शरीर पर भस्म–राख का लेप करने वाले।

गोयम (गौतम)–बैल को कौड़ियों की मालाओं से विभूषित करके उसकी विस्मयकारक चाल दिखाकर भिक्षावृत्ति करने वाले ।

गोव्वइय (गोव्रतिक)–गोव्रत का पालन करने वाले। ये गायों के मध्य में रहने की इच्छा से गायें जब गाँव से निकलती हैं तब उनके साथ ही निकलते हैं, वे जब बैठती हैं तब बैठते हैं, जब खड़ी होती हैं तब खड़े होते हैं, जब चरती हैं तब कन्द, मूल, फल आदि का भोजन करते हैं और जब जल पीती हैं तब जल पीते हैं।

गिहिधम्म (गृहिधर्मा)–गृहस्थ धर्म ही श्रेयस्कर है, ऐसी जिनकी मान्यता है।

धम्मचिंतग (धर्मचिन्तक)–याज्ञवल्क्य और ऋषि प्रणीत धर्मसंहिता आदि के अनुसार धर्म का चिन्तन और तदनुसार दैनिक आचरण करने वाले।

अविरुद्ध (अविरुद्ध)–देव, नृप, माता-पिता और तिर्यंचादि का बिना किसी भेदभाव के एक-सा विनय करने वाले।

विरुद्ध (विरुद्ध)–पुण्य, पाप, परलोक आदि को नहीं मानने वाले अक्रियावादी।

वुड्ढ सावग (वृद्ध श्रावक)–ब्राह्मण। प्राचीनकाल की अपेक्षा इनमें वृद्धता मानी है क्योंकि भरत चक्रवर्ती ने अपने शासनकाल में देव, धर्म, गुरु का स्वरूप सुनाने के लिए इनकी स्थापना की थी। अथवा वृद्धावस्था में दीक्षा अंगीकार करके तपस्या करने वाले श्रावक।

पासंडत्था (पाषण्डस्थ)–पाषण्ड अर्थात् कुव्रतों का पालन करने वाले।

इंद (इन्द्र)–देवताओं का राजा।

खंद (स्कन्द)–कार्तिकेय–महेश्वर का पुत्र।

रुद्द (रुद्र)–महादेव।

सिव (शिव)–व्यंतरदेव विशेष।

वेसमण (वैश्रमण)–कुबेर, धनरक्षक यक्ष-विशेष।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नाग (नागकुमार)–भवनपति निकाय का देव-विशेष।

जक्ख (यक्ष) तथा भूय (भूत)–व्यंतर जातीय देव।

मुगुंद (मुकुन्द)–बलदेव।

अज्जा (आर्या)–देवी।

कोट्टकिरिया (कोट्टक्रिया)–महिषासुर का कुट्टन-वध करने वाली देवी।

Technical Terms—**Charag (Charak)**—those who beg for alms in groups.

Cheerig (Cheerik)—those who wear discarded rags or tattered clothes.

Chammakhandiya (Charmakhandik)—those who wear leather.

Bhichchhunda (Bhikshondak)—those who live exclusively on begged grains.

Pandurang (Pandurang)—those who smear ash on their body.

Goyam (Gautam)—mendicants who decorate a bull with garlands of *kaudi* (small shells) and seek alms by displaying its strange playful gait.

Govvaiya (Gauvratik)—those who take a vow of following the routine of a cow. When a herd of cows moves out of a village for grazing, such mendicants accompany the herd. When cows sit they also sit, when cows stand they too stand, when cows graze they also eat fruits or vegetables, and when cows drink water they also drink water.

Gihidhamma (Grihidharma)—those who believe that the householders way is the best.

Dhammachintag (Dharmachintak)—those who think and act according to the *Dharmasamhita* written by Yajnavalkya and other sages.

Aviruddha (Aviruddha)—those who are modest and courteous in behaviour towards god, king, parents and even animals without any discrimination.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Viruddha (Viruddha)—those who do not believe in merit, demerit, next world, (etc.) like the *Akriyavadis.*

Vuddha Savag (Vriddha Shravak)—Brahmans. They are taken to be seniors or ancients because their clan is believed to have been established by Bharat Chakravarti for teaching about gods, religion and *guru.* Also the *shravaks* who get initiated in old age and indulge in austerities.

Pasandattha (Pashandasth)—heretics who observe perverse vows.

Inda (Indra)—king of gods.

Khanda (Skanda)—the popular deity Kartikeya, the son of Maheshvara.

Rudda (Rudra)—Mahadeva.

Siva (Shiva)—a specific *vyantara deva* (interstitial gods).

Vesaman (Vaishraman)—Kuber or god of wealth.

Naag (Naagkumar)—specific god of *Bhavanpati nikaya* (the realm of gods living in mansions).

Jakkha (Yaksha) and Bhooya (Bhoots)—*vyantara devas* (interstitial gods).

Mugund (Mukund)—Baladeva (elder brother of Vasudev).

Ajja (Aryaa)—goddess.

Kottakiriya (Kottakriya)—the goddess who killed the buffalo demon.

(३) लोकोत्तरिक द्रव्य आवश्यक

२२. से किं लोगोत्तरियं दव्वावस्सयं ?

लोगोत्तरियं दव्वावस्सयं जे इमे समण-गुणमुक्कजोगी छक्कायनिरणुकंपा हया इव उद्दामा, गया इव निरंकुसा, घट्टा मट्टा तुप्पोट्टा पंडरपाउरणा जिणाणं अणाणाए सच्छंदं विहरिऊणं उभओकालं आवस्सगस्स उवट्ठंति। से तं लोगुत्तरियं दव्वावस्सयं। से तं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाणगसरीर-भवियसरीरवइरित्तं दव्वावस्सयं। से तं नोआगमतो दव्वावस्सयं। से तं दव्वावस्सयं।

२२. (प्रश्न) लोकोत्तरिक द्रव्य आवश्यक क्या है ?

(उत्तर) लोकोत्तरिक द्रव्य आवश्यक का स्वरूप इस प्रकार है–जो (साधु) श्रमण के मूल और उत्तर गुणों से रहित हों, छह काय के जीवों के प्रति अनुकम्पा न होने के कारण अश्व की तरह उद्दाम (जल्दी-जल्दी चलने वाले) हों, हस्तिवत् निरंकुश हों, स्निग्ध पदार्थों के लेप से अंग-प्रत्यंगों को कोमल, सलौना बनाते हों, जल आदि से बार-बार शरीर को धोते हों, अथवा तेलादि से केशों का संस्कार करते हों, ओठों को मुलायम रखने के लिए मक्खन लगाते हों, पहनने-ओढ़ने के वस्त्रों को धोते हों और जिनेन्द्र भगवान की आज्ञा की उपेक्षा कर स्वच्छंद विहार करते हों, फिर भी प्रातः-सायंकाल दोनों काल आवश्यक करने के लिए उपस्थित हों तो उनकी वह क्रिया लोकोत्तरिक द्रव्य आवश्यक है।

इस प्रकार यह ज्ञायक शरीर-भव्यशरीर तथातद् व्यतिरिक्त द्रव्य आवश्यक का स्वरूप है। यह नो-आगमतः द्रव्य आवश्यक का निरूपण हुआ।

(3) LOKOTTARIK DRAVYA AVASHYAK

22. (Question) What is *Lokottarik dravya avashyak* (spiritual physical *avashyak*) ?

(Answer) *Lokottarik dravya avashyak* (spiritual physical *avashyak*) is explained thus—There are ascetics who are devoid of the basic and auxiliary attributes of a *shraman* (Jain ascetic), in absence of any compassion for six life-forms who gallop (like a horse), who are unrestrained like an elephant, who make every part of body delicate and smooth by rubbing oily preparations, who often wash their body with water, who rub oil to their hair, who apply butter to lips to keep them soft, who wash their dress and other clothes, and who wander around freely ignoring the teachings of the Jina. (While having such wayward ways—) when they still proceed to indulge in obligatory duties

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(*avashyak*) every morning and evening, their this act is known as *Lokottarik dravya avashyak* (spiritual physical *avashyak*).

This concludes the description of *Jnayak sharir-bhavya sharir vyatirikta dravya avashyak* (physical *avashyak* other than the body of the knower and the body of the potential knower). This (also) concludes the description of *no-agamatah dravya-avashyak* (physical *avashyak* without scriptural knowledge).

विवेचन–यहाँ आवश्यक के साथ लोकोत्तरिक और द्रव्य ये दो विशेषण जोड़े हैं। इसका अभिप्राय है–आवश्यक एक आध्यात्मिक विधि-विधान है, इसलिए वह लोकोत्तरिक है, परन्तु यदि आवश्यक का पाठ बोलने वाला श्रमण गुणों से हीन है तो उसका वह लोकोत्तर कृत्य भी द्रव्य है, वह आवश्यक के फल से शून्य है।

जो आवश्यक करने का नाटक करता रहता है और बार-बार दोष-सेवन भी करता जाता है, उसका आवश्यक भी द्रव्य आवश्यक है। इस विषय पर एक दृष्टान्त दिया गया है–

वसन्तपुर नामक नगर था। वहाँ एक समय अगीतार्थ (अल्पज्ञानी) एवं असंविग्न (वैराग्य वृत्तिरहित) साधुओं का संघ आया। उसमें साधु-गुणों से रहित एक साधु था जो ऊपर-ऊपर से वैराग्य दिखाने वाला था। वह प्रतिदिन पुरःकर्म आदि दोषों से युक्त अनेषणीय आहार ले आता था, किन्तु प्रतिक्रमण (आवश्यक) करते समय बड़े ही वैराग्य भाव से अपने दोषों की आलोचना करता था। गच्छाचार्य स्वयं अगीतार्थ थे, इसलिए उसे प्रायश्चित्त देते हुए समस्त साधुओं को लक्ष्य करके कहते थे–"देखो ! यह साधु कितना भला है कि अपने एक भी दोष को नहीं छिपाता, अपितु सरल भाव से सबकी आलोचना करता है। दोषों का सेवन हो जाना सहज है, किन्तु इस प्रकार से उनकी आलोचना करना बड़ा कठिन काम है। यह साधु किसी प्रकार के मायाचार के बिना अपने दोषों की आलोचना करके शुद्ध हो जाता है।"

आचार्य के द्वारा इस प्रकार की गई उसकी प्रशंसा सुनकर संघ के अन्य अगीतार्थ श्रमण भी उसकी प्रशंसा करने लग जाते। सोचते कि गुरु के सामने इस प्रकार आलोचना करने मात्र से अगर दोषों की शुद्धि हो जाती है, तो बार-बार दोषों के सेवन करने में कोई हर्ज नहीं है।

कुछ समय के बाद एक बार एक संविग्न (क्रियापात्र) गीतार्थ साधु विहार करता हुआ आया और उस संघ के साथ रहने लगा। उसने जब प्रतिदिन इस प्रकार की हरकतें देखीं तो उससे नहीं रहा गया। एक दिन उसने आचार्य से कहा–"भंते ! इस प्रकार से इस शठ साधु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

की प्रशंसा करना अग्निभक्त की प्रशंसा करने वाले राजा की तरह हानिकारक है।" उदाहरण देते हुए उसने कहा–

जैसे गिरि नगर में एक अग्निभक्त व्यापारी रहता था। वह प्रतिवर्ष पद्मरागरत्नों से घर भर देता था और एक दिन उसमें आग लगा देता था। उसके अविवेकपूर्ण कार्य की वहाँ के राजा और प्रजाजन प्रशंसा करने लगे–"धन्य है इस व्यापारी को, जो प्रतिवर्ष अत्यन्त उदारता और भक्तिवश पद्मरागमणियाँ जलाकर अग्निदेव को प्रसन्न करता है।"

एक दिन की बात है, उस व्यापारी ने घर में भरी हुई पद्मरागमणियों को आग लगाई। उसी समय प्रबल आँधी चल रही थी, उसके कारण आग की लपटें दूर-दूर तक इतनी अधिक फैल गईं कि उनको सँभालना मुश्किल हो गया। देखते ही देखते उस आग ने राजमहल सहित सारे नगर को भस्म कर दिया। राजा ने जब इस परिस्थिति पर विचार किया तो उसे अपनी अज्ञानता पर बड़ा पश्चात्ताप हुआ। अन्त में राजा ने उस व्यापारी को दण्डित करके नगर से निकाल दिया। जैसे उस राजा ने उस व्यापारी की झूठी प्रशंसा करके अपना और नगर का विनाश कर लिया, वैसे ही आप भी अविधिपूर्वक प्रवृत्त हुए इस साधु की जो प्रशंसा करते हैं, वह आपके और समस्त गच्छ के लिए विनाशकारी सिद्ध होगी।"

यदि आप इस संघ में से किसी एक साधु को भी दण्ड दे देंगे तो फिर आप अपराधी को दण्ड देने वाले उस राजा की तरह समस्त नगरजन सहित निरापद होकर निश्चिंतता का अनुभव करेंगे।

जैसे, एक राजा था, उसके राज्य में उस अग्निभक्त व्यापारी की तरह एक व्यापारी रहता था। वह भी पद्मरागमणियों को घर में भरकर प्रतिवर्ष उनमें आग लगा देता था। इस तरह अग्नि को संतुष्ट करने की उसकी प्रवृत्ति का राजा को पता लगा। राजा ने उसे अपने पास बुलाकर कहा–"देखो ! यदि पद्मरागमणियाँ जलाकर अग्नि को सन्तुष्ट करना तुम्हारे लिए आवश्यक है, तो तुम यह कार्य नगर में रहकर क्यों करते हो ? जंगल में जाकर क्यों नहीं करते ? क्योंकि तुम्हारी इस प्रवृत्ति से कभी न कभी सारे नगर के नष्ट होने की सम्भावना है। अतः तुम इस दुष्प्रवृत्ति का त्याग कर दो, अन्यथा नगर से बाहर निकल जाओ।"

इस प्रकार डाँट-डपटकर उस राजा ने उक्त व्यापारी को दण्डित करके नगर से बाहर निकाल दिया।

इसी तरह आप भी अपने और संघ के कल्याण के लिए ऐसा ही कीजिए। इस प्रकार उस संविग्न एवं गीतार्थ साधु ने उक्त गच्छाचार्य को बहुत समझाया। परन्तु इतना समझाने पर भी जब वे नहीं माने, तब आगन्तुक संविग्न गीतार्थ साधु ने उस गच्छ के साधुओं से इस प्रकार

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कहा–"देखो ! यह गच्छाधिपति आचार्य असंविग्न (वैराग्यरहित) एवं अगीतीर्थ है, इनके साथ रहने से आपको बड़ा भारी खतरा पैदा हो सकता है। इनसे अलग हुए बिना आप लोग उस बड़े भारी अनर्थ से बच नहीं सकेंगे।"

इसी प्रकार जो आवश्यक है, वह तो लोकोत्तर है, किन्तु उस आवश्यक प्रक्रिया का जो आचरण है, वह दोष सेवन करते जाने और आलोचना का दिखावा करते जाने वाले उक्त साधु की तरह निष्प्राण, भावशून्य और थोथा है, इसलिए उसे लोकोत्तरिक द्रव्य आवश्यक कहा गया है।

(मलधारी हेमचन्द्र वृत्ति, पृ. ७१ मुनि जम्बू विजय जी)

Elaboration—Here two adjectives, *lokottarik* (spiritual) and *dravya* (physical) have been added to *avashyak* (obligatory duties). The intended meaning is—as *avashyak* is a spiritual code it is supernatural or exceptional but because the ascetic reciting this code is devoid of the virtues of a *shraman,* this spiritual act by him is a mere formality or just physical (*dravya*) and is devoid of any fruits of *avashyak.*

There are persons who act as if they are sincere in observing the obligatory duties but continue to commit transgressions. The *avashyak* (obligatory duties) performed by such a person is also called *dravya avashyak* (physical *avashyak*). This has been explained with an example—

There was a city named Vasantpur. Once a group of ascetics came there. These ascetics were neither scholarly nor completely detached. There was an ascetic in this group who formally pretended to be detached but was in fact devoid of ascetic virtues. Each day he brought unacceptable and faulty food but at the time of *pratikraman* (critical review; one of the six obligatory duties) he would pose as if he is very sincerely criticizing his faults and wants to atone for them. The *acharya* (head of the group) was also ill-educated. While prescribing atonement for this ascetic the *acharya* commended him before all his disciples—"See ! How sincere is this ascetic. Instead of concealing his faults he criticizes each fault sincerely. To commit a fault is a normal human weakness but such sincere self-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

criticism is very difficult. By criticizing his faults without deception this ascetic progresses towards inner purity."

This praise by the *acharya* inspired other ascetics of the group to praise that ascetic. They thought that if such criticism of faults is all that is required for inner purification there is nothing wrong in committing faults frequently.

Once a true and steadfast ascetic came wandering and joined this group. When he saw such superficial atonement as a regular feature within that group, he could not contain himself. One day he approached the *acharya*—"Sir ! Praising a crafty ascetic you are acting like the king who praised the fire-worshipper." And he narreted the story—

In the town of Giri lived a merchant who worshipped fire. Every year he would collect yellow-sapphire gems in his house and would set the house to fire one day. The king and the townsfolk started praising this irrational act—"This merchant is great. Every year he pleases the fire-god by generously and devotedly offering heaps of gems."

As it turned out, one day when the merchant set fire to his house strong wind was blowing and the fire spread rapidly. It became impossible to contain it and soon the conflagration consumed the whole town including the palace. When the king thought over the tragedy he cursed himself for his own foolishness. He finally punished and exiled the merchant. As that king caused the destruction of his kingdom by falsely praising the merchant, likewise your praise for this fraudulent ascetic will prove to be detrimental for you and your sect.

However if you punish even a single ascetic for his lax behaviour you will feel relieved like the king and his subjects who dealt punishment to the offender. Illustrating his version, he said—

There was a king in whose city also lived a merchant like the fire-worshipper in the said town. He also collected sapphire gems and set them to fire every year. The king got the news of his obsession with such fire-worship. He summoned the merchant

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

and said—"If you feel that to worship fire-god by offering sapphire gems to fire is your essential duty, why do it in the town ? Why don't you go to some remote place in the jungle and perform it ? Your indulgence may some day destroy the whole town. Therefore, either you abstain from indulging in this act or leave the town."

Reprimanding thus the king punished the merchant and exiled him. You should also take such steps for the good of your sect.

The sincere and upright ascetic thus tried to convince the *acharya*. But when he did not heed to him in spite of all this, the visiting ascetic said to his disciples—"See, this head of your sect is ignorant and driven by mundane attachments. Living with him will lead you to difficult predicament. Unless you abandon him you will not be able to avoid your downfall."

Thus what is essential and obligatory duty (*avashyak*) for ascetics is perfect and spiritual. But by committing faults in observation and pretending self-criticism for such faults turns it into a hollow and non-spiritual ritual. That is why it is classified as *lokottarik dravya-avashyak* (spiritual physical *avashyak*).

(४) भाव आवश्यक

२३. से किं तं भावावस्सयं ?

भावावस्सयं दुविहं पण्णत्तं। तं जहा–(१) आगमओ य (२) णोआगमओ य।

२३. (प्रश्न) वह भाव आवश्यक क्या है ?

(उत्तर) भाव आवश्यक दो प्रकार का है–(१) आगमतः भाव आवश्यक, और (२) नो-आगमतः भाव आवश्यक।

(4) *BHAAVA AVASHYAK*

23. (Question) What is *Bhaava avashyak* (*avashyak* as essence or perfect *avashyak*) ?

(Answer) *Bhaava avashyak* (perfect *avashyak*) is of two types—(1) *Agamatah bhaava avashyak* (perfect *avashyak* in

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

context of *Agam* or in context of knowledge), and (2) *No-Agamatah bhaava avashyak* (perfect *avashyak* not in context of *Agam* or only in context of action).

(१) आगमतः भाव आवश्यक

२४. से किं तं आगमओ भावावस्सयं ?

आगमओ भावावस्सयं जाणए उवउत्ते। से तं आगमओ भावावस्सयं।

२४. (प्रश्न) आगमतः भाव आवश्यक क्या है ?

(उत्तर) जो आवश्यक पद का ज्ञाता हो और साथ ही उपयोगयुक्त हो, वह आगमतः भाव आवश्यक कहलाता है।

(1) *AGAMATAH BHAAVA AVASHYAK*

24. (Question) What is *Agamatah bhaava avashyak* (perfect *avashyak* with scriptural knowledge) ?

(Answer) One who knows the *Avashyak (Sutra)* and is sincerely involved with it is called *Agamatah bhaava avashyak* (perfect *avashyak* with scriptural knowledge).

(२) नो-आगमतः भाव आवश्यक

२५. से किं तं नोआगमओ भावावस्सयं ?

नोआगमओ भावावस्सयं तिविहं पण्णत्तं। तं जहा-(१) लोइयं (२) कुप्पावयणियं, (३) लोगुत्तरियं।

२५. (प्रश्न) नो-आगमतः भाव आवश्यक किसे कहते हैं ?

(उत्तर) नो-आगमतः भाव आवश्यक तीन प्रकार का है। जैसे-(१) लौकिक, (२) कुप्रावचनिक, और (३) लोकोत्तरिक।

(2) NO-AGAMATAH BHAAVA AVASHYAK

25. (Question) What is *no-agamatah bhaava avashyak* (perfect *avashyak* without scriptural knowledge) ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(**Answer**) *No-agamatah-bhaava-avashyak* (perfect-*avashyak* without scriptural knowledge) is of three types—(1) *Laukik,* (2) *Kupravachanik,* and (3) *Lokottarik.*

(१) लौकिक भाव आवश्यक

२६. से किं तं लोइयं भावावस्सयं ?

लोइयं भावावस्सयं पुव्वण्हे भारहं, अवरण्हे रामायणं। से तं लोइयं भावावस्सयं।

२६. **(प्रश्न)** लौकिक भाव आवश्यक किसे कहते हैं ?

(उत्तर) दिन के पूर्वार्ध में महाभारत का और उत्तरार्ध में रामायण का वाचन या श्रवण करने को लौकिक नो-आगमतः भाव आवश्यक कहते हैं।

(1) **LAUKIK BHAAVA AVASHYAK**

26. (Question) What is *Laukik bhaava avashyak* (mundane perfect *avashyak*) ?

(Answer) To listen to the recital of *Mahabharat* during first half of the day and that of *Ramayan* during the second half of the day is called *laukik no-agamatah bhaava avashyak* (mundane perfect *avashyak* without scriptural knowledge).

विवेचन—इस सूत्र में महाभारत और रामायण जैसे ग्रन्थों का पठन-श्रवण लौकिक नो-आगमतः भाव आवश्यक कहने का अभिप्राय यह है लोक मान्यता के अनुसार महाभारत दिन के प्रथम दो प्रहर में और रामायण दोपहर के बाद आवश्यक अनुष्ठान के रूप में पढ़ा जाता है। ये लौकिक आगम है अर्थात् लोक में प्रचलित ज्ञान के साधन हैं और इनके पढ़ने-सुनने में वक्ता-श्रोता उपयोग रूप दत्तचित्त रहते हैं तब लौकिक भाव आवश्यक हो जाता है। किन्तु नो-आगमतः कहने का अभिप्राय यह है कि जन-साधारण की दृष्टि में तो ये आगम हैं, परन्तु पुस्तक के पन्ने पलटना, श्रोता द्वारा हाथ जोड़ना ये सब क्रियाएँ साथ में जुड़ी रहने से एक अपेक्षा से ये नो-आगमतः भी हैं। क्योंकि क्रिया आगम नहीं है, केवलज्ञान की प्रवृत्ति ही आगम है। यहाँ 'नो' शब्द सर्व निषेधवाचक हैं, किन्तु केवल क्रिया का निषेध सूचन करने की दृष्टि से नो-आगमतः कहा है।

Elaboration—The reason for stating reading and reciting of *Ramayan* and *Mahabharat* as mundane perfect *avashyak* without scriptural knowledge is that according to the popular belief

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Mahabharat was recited during the first quarter of the day and *Ramayan* after the second quarter of the day as an obligatory ritual. These are widely popular sources of knowledge and are therefore called mundane scriptures. When a reader or listener is sincerely involved in them they are said to be mundane perfect *avashyak*. Although in popular belief they are *Agam* (scriptures), reading and reciting them has been called 'without scriptural knowledge' (*no-agamtah*) because turning of pages, joining palms in devotion, and other such ritual activities are also essentially part of the procedure. The true definition of *Agam* is sincere involvement with knowledge and not just ritual actions. Although the prefix '*no*' means complete negation, here the negation is with respect to the rituals only.

(२) कुप्रावचनिक भाव आवश्यक

२७. से किं तं कुप्पावयणियं भावावस्सयं ?

कुप्पावयणियं भावावस्सयं जे इमे चरग-चीरिय जाव पासंडत्था इज्जंजलि-होम-जप्प-उंदुरुक्क-नमोक्कारमाइयाइं भावावस्सयाइं करेंति। से तं कुप्पावयणियं भावावस्सयं।

२७. (प्रश्न) कुप्रावचनिक भाव आवश्यक क्या है ?

(उत्तर) जो ये चरक, चीरिक यावत् पाषण्डस्थ–इज्या–यज्ञ, अंजलि, होम–हवन, जाप, उन्दुरुक्क–धूपप्रक्षेप या बैल जैसी ध्वनि, वंदना आदि भाव आवश्यक करते हैं, वह कुप्रावचनिक भाव आवश्यक है।

(2) KUPRAVACHANIK BHAAVA AVASHYAK

27. (Question) What is *Kupravachanik bhaava avashyak* (pervert perfect *avashyak*) ?

(Answer) The rituals like *yajna* (the Vedic rite of offerings to deities), *anjali* (offerings or salutations with hollowed hands), *hoam* (offerings in fire), *jap* (reciting *mantras*), *undurukka* (burning incense or producing sound like an ox), and *namokkaramaiyai* (offering salutations or homage) performed as perfect *avashyak* by heretics like *Charak*,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Chirak, (upto-) *Pashandasth* (as in aphorism 21) are called *kupravachanik bhaava avashyak* (pervert perfect *avashyak*).

विवेचन–सूत्र में कुप्रावचनिक भाव आवश्यक का स्वरूप बतलाया है। मिथ्या शास्त्रों को मानने वाले चरक, चीरिक आदि पाषंडी यथावसर जो भाव सहित उपयोगपूर्वक यज्ञ आदि क्रियायें करते हैं, वह कुप्रावचनिक भाव आवश्यक है।

मिथ्या शास्त्रों को मानने पर भी चरक आदि द्वारा निश्चित रूप से किये जाने से यज्ञ आदि आवश्यक रूप हैं तथा इनके करने वालों की इन क्रियाओं में उपयोग एवं श्रद्धा होने से भावरूपता भी है। किन्तु इनका आधार मिथ्या शास्त्र होने से इन क्रियाओं को कुप्रावचनिक भाव आवश्यक कहा है।

Elaboration—This aphorism explains the meaning of *kupravachanik bhaava avashyak* (pervert perfect *avashyak*). The rituals like *yajna* performed with sincere involvement from time to time by heretics like *Charak* who believe in heretical scriptures are called pervert perfect *avashyak*.

In spite of their belief in pervert scriptures the *yajna* like rituals are accepted as obligatory duties by the heretics and they also have sincere involvement in them, thus they indeed are perfect *avashyak*. But because their basis is pervert scriptures they are called pervert perfect *avashyak*.

(३) लोकोत्तरिक भाव आवश्यक

२८. से किं तं लोगोत्तरियं भावावस्सयं ?

लोगोत्तरियं भावावस्सय–जण्णं इमं समणे वा समणी वा सावए वा साविया वा तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तदप्पियकरणे तब्भावणाभाविए अण्णत्थ कत्थइ मणं अकरेमाणे उभओकालं आवस्सयं करेंति, से तं लोगोत्तरियं भावावस्सयं। से तं नोआगमतो भावावस्सयं। से तं भावावस्सयं।

२८. (प्रश्न) लोकोत्तरिक भाव आवश्यक क्या है?

(उत्तर) जो ये श्रमण, श्रमणी, श्रावक, श्राविकायें दत्तचित्त होकर मन की एकाग्रता के साथ, शुभ लेश्या एवं अध्यवसाय से युक्त, यथाविधि क्रिया को करने के लिए उद्यत अध्यवसायों से सम्पन्न होकर, तीव्र आत्मोत्साहपूर्वक आवश्यक के अर्थ में उपयोगयुक्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

होकर एवं तदर्पित करणों–शरीरादि को उसमें नियोजित कर, उसकी भावना से भावित होकर, अन्यत्र कहीं भी मन को डोलायमान किये बिना उभयकाल (प्रातः-संध्या समय) आवश्यक प्रतिक्रमणादि करते हैं, वह लोकोत्तरिक भाव आवश्यक है।

(3) LOKOTTARIK BHAAVA AVASHYAK

28. (Question) What is *Lokottarik bhaava avashyak* (spiritual perfect *avashyak*)?

(Answer) There are *shramans* (male ascetics), *shramanis* (female ascetics), *shravaks* (Jain laymen) and *shravikas* (Jain lay-women) who perform the *avashyak* (obligatory duties) including *pratikraman* (critical review of thoughts and deeds of the past) every morning and evening with full attention and concentration, pious attitude (*leshya* being the colour-code indicator of purity of soul) and perseverance, with assiduous intent to follow proper procedure, with intense enthusiasm, with sincere involvement in the meaning of *avashyak,* employing all the required equipment including the body, inspired by its essence and without diverting their mind anywhere else. This is called *Lokottarik bhaava avashyak* (spiritual perfect *avashyak*).

आवश्यक के पर्यायवाची नाम

२९. तस्स णं इमे एगट्ठिया णाणाघोसा णाणावंजणा णामधेज्जा भवंति। तं जहा–

(१) आवस्सयं (२) अवस्सकरणिज्जं (३) धुवणिग्गहो (४) विसोही य।

(५) अज्झयणछक्कवग्गो (६) नाओ (७) आराहणा (८) मग्गो॥२॥

अंतो अहो निसिस्स उ तम्हा आवस्सयं नाम॥३॥

से तं आवस्सयं।

(२९) उस आवश्यक के नाना घोष और अनेक व्यंजन वाले एकार्थक अनेक नाम इस प्रकार हैं–

(१) आवश्यक, (२) अवश्यकरणीय, (३) ध्रुव निग्रह, (४) विशोधि, (५) अध्ययन-षट्कवर्ग, (६) न्याय, (७) आराधना, और (८) मार्ग।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रमणों और श्रावकों द्वारा दिन एवं रात्रि के अन्त में अवश्य करने योग्य होने के कारण इसका नाम आवश्यक है।

यह आवश्यक का स्वरूप है।

SYNONYMS OF AVASHYAK

29. Some synonyms, having a variety of vowels and consonants, of this *avashyak* are as follows—

(1) *Avashyak,* (2) *Avashyakaraniya,* (3) *Dhruva nigraha,* (4) *Vishodhi,* (5) *Adhyayan-shatkavarg,* (6) *Nyaya,* (7) *Aradhana,* and (8) *Marg.*

As it is to be essentially (*avashyak*) performed by *shramans* and *shravaks* both at the end of the day and at the end of the night it is named *avashyak* or obligatory duty.

This concludes the description of *avashyak.*

विवेचन–यहाँ आवश्यक के पर्यायवाची नाम बतलाये हैं। जो पृथक् पृथक् उदात्तादि स्वर वाले और अनेक प्रकार के ककारादि व्यंजन वाले होने से किंचित् अर्थभेद रखते हुए भी एकार्थ-समानार्थवाचक हैं–

(१) **आवश्यक**–अवश्य करने योग्य कार्य को आवश्यक कहते हैं। सामायिक आदि की साधना साधु आदि के द्वारा अवश्य–निश्चित रूप से किये जाने योग्य होने से आवश्यक है।

(२) **अवश्यकरणीय**–मुमुक्षु साधकों द्वारा नियमतः अवश्य करने योग्य होने के कारण अवश्यकरणीय है।

(३) **ध्रुव निग्रह**–चूर्णि के अनुसार 'ध्रुव' शब्द का अर्थ है, आठ प्रकार के–कर्म, कषाय तथा इन्द्रिय। आवश्यक द्वारा इनका निग्रह होता है। अथवा अनादि होने के कारण कर्मों को तथा कर्मों के फल जन्म-जरा-मरणादि रूप संसार को ध्रुव कहते हैं और आवश्यक उस कर्मफलरूप संसार का निग्रह करने वाला होने के कारण 'ध्रुव निग्रह' है।

(४) **विशोधि**–कर्म से मलिन आत्मा की विशुद्धि का हेतु होने से आवश्यक विशोधि कहलाता है।

(५) **अध्ययनषट्कवर्ग**–आवश्यकसूत्र में सामायिक, चतुर्विंशति स्तव, वन्दन, प्रतिक्रमण, कायोत्सर्ग और प्रत्याख्यान ये छह अध्ययन होने से यह अध्ययनषट्कवर्ग है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(६) न्याय–अभीष्ट अर्थ की सिद्धि का सम्यक् उपाय होने से न्याय है।

(७) आराधना–आराध्य–मोक्ष-प्राप्ति का हेतु होने से आराधना करने योग्य है।

(८) मार्ग–मार्ग का अर्थ है उपाय। मोक्ष का प्रापक–उपाय होने से मार्ग है।

Elaboration—Here some synonyms of *avashyak* have been mentioned. Although they are composed of a variety of vowels and consonants and have slight variation in meaning also but generally speaking they are synonyms—

(1) Avashyak—An essential duty or an act to be performed compulsorily is called *avashyak*. As it is obligatory for an ascetic to perform *samayik* and other such practices they are included in *avashyak*.

(2) Avashyakaraniya—As it is to be performed by ascetics as a rule it is called *avashyakaraniya*.

(3) Dhruva nigraha—*Dhruva* is eternal or permanent and *nigraha* is to discipline or to restrain. According to the commentator (*Churni*) the eight types of *karmas,* passions and sense organs are eternal (*dhruva*) and the disciplining (*nigraha*) of these is *avashyak*. Also the *karmas* and their fruits in the form of birth, decay and death are without a beginning or an end, therefore eternal (*dhruva*), that which restrains (*nigraha*) these fruits of *karma* is *avashyak*. Thus *avashyak* means *dhruva nigraha*.

(4) Vishodhi—That which purifies is called *vishodhi*. As *avashyak* is instrumental in cleansing the tarnished soul it is *vishodhi*.

(5) Adhyayan-shatkavarg—six chapters—As *Avashyak (Sutra)* has six chapters, viz. *Samayik, Chaturvimshati Stav, Vandan, Pratikraman, Kayotsarga* and *Pratyakhyan,* it is *Adhyayan-shatkavarg*.

(6) Nyaya—right—As *avashyak* is the right means of attaining the desired it is *nyaya*.

(7) Aradhana—worship—As *avashyak* is the cause of attaining liberation it is worth worship and so *aradhana*.

(8) Marg—path, means or instrument—As *avashyak* is the means of attaining liberation, it is *marg*.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रुत प्रकरण
THE DISCUSSION ON SHRUT

श्रुत के भेद

३०. से किं तं सुयं ?

सुयं चउव्विहं पण्णत्तं। तं जहा–

(१) नामसुयं, (२) ठवणासुयं, (३) दव्वसुयं, (४) भावसुयं।

३०. (प्रश्न) श्रुत क्या है ?

(उत्तर) श्रुत चार प्रकार का है–

(१) नाम श्रुत, (२) स्थापना श्रुत, (३) द्रव्य श्रुत, और (४) भाव श्रुत।

CATEGORIES OF SHRUT

30. (Question) What is *Shrut* ?

(Answer) *Shrut* (lingual knowledge) is of four types—(1) *Naam Shrut,* (2) *Sthapana Shrut,* (3) *Dravya Shrut,* and (4) *Bhaava Shrut.*

(१) नाम श्रुत

३१. से किं तं नामसुयं ?

नामसुयं जस्स णं जीवस्स वा अजीवस्स वा जीवाण वा अजीवाण वा तदुभयस्स वा तदुभयाणं वा सुए इ नामं कीरति। से तं नामसुयं।

३१. (प्रश्न) नाम श्रुत क्या है ?

(उत्तर) जिस किसी जीव या अजीव का, जीवों या अजीवों का, जीव-अजीव दोनों का अथवा जीवों-अजीवों दोनों का 'श्रुत' नाम रख लिया जाता है, उसे नाम श्रुत कहते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(1) NAAM SHRUT

31. (Question) What is *naam shrut* (*shrut* as name)?

(Answer) To assign *shrut* as a name to a living being, a non-living being, many living beings, many non-living things, an aggregate of living and non-living, and many aggregates of living and non-living is called *nama shrut* or *shrut* as name.

(२) स्थापना श्रुत

३२. से किं तं ठवणासुयं ?

ठवणासुयं जण्णं कट्ठकम्मे वा जाव सुए इ ठवणा ठविज्जति। से तं ठवणासुयं।

३२. (प्रश्न) स्थापना श्रुत किसे कहते हैं ?

(उत्तर) काष्ठ यावत् कौड़ी आदि आकृति में यह श्रुत है, इस प्रकार की स्थापना, कल्पना या आरोप किया जाता है, वह स्थापना श्रुत है। (विशेष पाठ सूत्र ११ के अनुसार समझें।)

(2) STHAPANA SHRUT

32. (Question) What is *sthapana shrut* (*shrut* as notional installation)?

(Answer) The notional installation or illustration or imagination of *shrut* in or through (things or medias like-) wood work, (up to-) *kaudi* or shells realistically or unrealistically is called *sthapana shrut* (*shrut* as notional installation). (refer to aphorism 11 for more details.)

३३. नाम-ठवणाणं को पइविसेसो ?

नामं आवकहियं, ठवणा इत्तरिया वा होज्ञा आवकहिया वा।

३३. (प्रश्न) नाम और स्थापना में क्या अन्तर है ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(उत्तर) नाम यावत्कथिक होता है, जबकि स्थापना इत्वरिक और यावत्कथिक दोनों प्रकार की होती है। (विशेष पाठ सूत्र १२ के अनुसार समझें।)

33. (Question) What is the difference between *naam* and *sthapana* (name and notional installation) ?

(Answer) Name is life-long whereas *sthapana* can be both temporary as well as life-long. (refer to aphorism 12 for more details.)

(३) द्रव्य श्रुत

३४. से किं तं दव्वसुयं?

दव्वसुयं दुविहं पण्णत्तं। तं जहा–(१) आगमतो य (२) नोआगमतो य।

३४. (प्रश्न) द्रव्य श्रुत क्या है ?

(उत्तर) द्रव्य श्रुत दो प्रकार का है। जैसे–(१) आगमतः द्रव्य श्रुत, (२) नो-आगमतः द्रव्य श्रुत।

(3) DRAVYA-SHRUT

34. (Question) What is *dravya shrut* (physical aspect of *shrut*) ?

(Answer) *Dravya shrut* (physical aspect of *shrut*) is of two kinds—(1) *Agamatah dravya shrut* (physical aspect of *shrut* in context of *Agam* or in context of knowledge), and (2) *No-Agamatah dravya shrut* (physical aspect of *shrut* not in context of *Agam* or only in context of action).

(१) आगमतः द्रव्य श्रुत

३५. से किं तं आगमतो दव्वसुयं ?

आगमतो दव्वसुयं जस्स णं सुए त्ति पयं सिक्खियं ठियं जियं मियं परिजियं जाव कम्हा ? जइ जाणते अणुवउत्ते ण भवइ। से तं आगमतो दव्वसुयं।

३५. (प्रश्न) आगमों की अपेक्षा द्रव्य श्रुत क्या है ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(उत्तर) जिसने 'श्रुत' यह पद सीखा है, स्थिर, जित, मित, परिजित किया है। वह जानता हुआ भी अर्थ के अनुचिन्तन रूप अनुप्रेक्षा में उपयोगशून्य है। यह आगमतः द्रव्य श्रुत है।

(1) AGAMATAH DRAVYA SHRUT

35. (Question) What is *Agamatah dravya shrut* (physical *shrut* with scriptural knowledge)?

(Answer) Physical *shrut* in context of *Agam* is like this—(For instance) a person (an ascetic) has studied, absorbed, retained, assessed, perfected, and memorized the text of *Shrut (Sutra)*. In spite of all this he is devoid of the faculty of contemplating the meaning (spirit) of the text. This is *Agamatah dravya shrut* (physical *shrut* with scriptural knowledge).

विवेचन—सूत्र में आगमतः द्रव्य श्रुत का स्वरूप बतलाया है कि श्रुतपद के अभिधेय आचारादि शास्त्रों को जिसने सीख तो लिया है, किन्तु उसके उपयोग से शून्य है, वह आगम से द्रव्य श्रुत है।

'जाव कम्हा' पद द्वारा आवश्यक विषयक पूर्वोक्त सूत्र १४, १५ की तरह नैगम नय आदि की मान्यता सम्बन्धी सूत्रालापक का सूचन किया है।

Elaboration—This aphorism describes *Agamatah dravya shrut* (physical *shrut* with scriptural knowledge) as a person who has learned the scriptures like *Acharanga* but is devoid of activities like contemplation.

The term *'java kamha'* means that all the details about this aphorism should be considered same as those mentioned in context with *avashyak* in aphorisms 14, 15.

(२) नो-आगमतः द्रव्य श्रुत

३६. से किं तं णोआगमतो दव्वसुयं ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णोआगमतो दव्वसुयं तिविहं पन्नत्तं। तं जहा-(१) जाणयसरीरदव्वसुयं (२) भवियसरीरदव्वसुयं (३) जाणयसरीर-भवियसरीरवइरित्तं दव्वसुयं।

३६. (प्रश्न) नो-आगमतः द्रव्य श्रुत क्या है ?

(उत्तर) नो-आगमतः द्रव्य श्रुत तीन प्रकार का है। जैसे-(१) ज्ञायक शरीर द्रव्य श्रुत, (२) भव्य शरीर द्रव्य श्रुत, (३) ज्ञायक शरीर-भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य श्रुत।

(2) NO-AGAMATAH DRAVYA SHRUT

36. (Question) What is *No-Agamatah dravya shrut* (physical *shrut* without scriptural knowledge) ?

(Answer) *No-Agamatah dravya shrut* (physical *shrut* without scriptural knowledge) is of three types—(1) *Jnayak sharir dravya shrut,* (2) *Bhavya sharir dravya shrut,* and (3) *Jnayak sharir-bhavya sharir vyatirikta dravya shrut.*

(१) ज्ञायक शरीर द्रव्य श्रुत

३७. से किं तं जाणयसरीरदव्वसुयं ?

जाणयसरीरदव्वसुयं सुएत्ति पदत्थाहिकारजाणयस्स जं सरीरयं ववगय-चुत-चाविय-चत्तदेह जीवविप्पजढं सेज्जागयं वा संथारगयं वा सिद्धसिलातलगयं वा, अहो ! णं इमेणं सरीरसमुस्सएणं जिणदिट्ठेणं भावेणं सुए इ पयं आघवियं पण्णवियं परूवियं दंसियं निदंसियं उवदंसियं।

जहा को दिट्ठंतो ? अयं मधुकुंभे आसी, अयं घयकुंभे आसी। से तं जाणयसरीरदव्वसुयं।

३७. (प्रश्न) ज्ञायक शरीर द्रव्य श्रुत का क्या अर्थ है ?

(उत्तर) श्रुतपद के अर्थाधिकार को जानने वाले व्यक्ति के व्यपगत, च्युत, च्यावित, त्यक्त, जीवरहित शरीर को शय्यागत, संस्तारकगत अथवा सिद्धशिला-तपोभूमिगत देखकर कोई कहे-अहो ! इस पौद्गलिक शरीर ने जिनोपदेशित भावों के अनुसार

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'श्रुत' इस पद की गुरु से वाचना ली थी, शिष्यों को सामान्य रूप से प्रज्ञापित और विशेष रूप से प्ररूपित, दर्शित, निदर्शित, उपदर्शित किया था, उसका वह शरीर ज्ञायक शरीर द्रव्य श्रुत है।

(शिष्य) इसका दृष्टान्त ?

(आचार्य) (जैसे किसी घड़े में से मधु या घी निकाल लिए जाने के बाद कहा जाये कि) यह मधु का घड़ा है, यह घी का घड़ा है। (इसी प्रकार निर्जीव शरीर भूतकालीन श्रुत-पर्याय का आधाररूप होने से ज्ञायक शरीर द्रव्य श्रुत कहलाता है।)

यह ज्ञायक शरीर द्रव्य श्रुत है।

(1) JNAYAK SHARIR DRAVYA SHRUT

37. (Question) What is *jnayak sharir dravya shrut* (physical *shrut* as body of the knower) ?

(Answer) *Jnayak sharir dravya shrut* (physical *shrut* as body of the knower) is explained thus. It is such a body of the knower of the true meaning of the *Shrut* who is dead, who has been killed, or who has voluntarily embraced death. (This is because it is a natural reaction that) seeing such a body lying on a bed, mattress, cremation ground or *Siddhashila* someone utters—Oh ! this physical body was the instrument of learning the *Shrut (Sutra),* as preached by the Jina, from the *guru*; reciting and explaining it to disciples, confirming it by demonstration, giving its special lessons, and affirming it with the help of logic and multiple perspectives (*naya*). (details same as aphorism 17)

(Question asked by a disciple) Is there some analogy to confirm this ?

(Answer by the *guru*) Yes, for example (it is conventionally said that) this was a pot of honey or this was a pot of butter (although *at present it contains* neither honey nor butter). (In the same way a lifeless body, being

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्र परिचय ४

Illustration No. 4

द्रव्यश्रुत के भेद

(१) **आगमतः द्रव्यश्रुत**—एक व्यक्ति श्रुत का अध्ययन कर रहा है। उसका अर्थ आदि भी समझता है, परन्तु वर्तमान में वार्तालाप में संलग्न होने से श्रुत में उपयोग शून्य है।

(२) नो आगमतः द्रव्यश्रुत के तीन भेद हैं—

(अ) **ज्ञायक शरीर**—भूतकाल में जिसने श्रुतज्ञान का अभ्यास किया था, शिष्यों को भी श्रुतज्ञान पढ़ाया था, परन्तु वर्तमान में उससे निवृत्त है। जैस–श्रुतज्ञान के अभ्यासी गुरु का मृत शरीर।

(ब) **भव्य शरीर**—जिन घड़ों में भविष्य में मधु या घृत भरा जायेगा या भरा जा रहा है, किन्तु अभी तक भरा नहीं है। भविष्य की अपेक्षा उनको वर्तमान में मधु का घड़ा, घी का घड़ा कहा जाता है।

(स) **उभय व्यतिरिक्त द्रव्यश्रुत**—कागजों व ताड़ पत्रों पर लिखित शास्त्र–भावश्रुत का कारण है। उक्त दोनों प्रकारों से भिन्न होने का कारण इसे उभय व्यतिरिक्त द्रव्यश्रुत कहा जाता है।

–सूत्र ३५ से ३७

TYPES OF DRAVYA-SHRUT (PHYSICAL-SHRUT)

(1) Agamatah-dravya-shrut—A person is studying the text of *Shrut (Sutra).* He also understands its meaning but at the moment he is busy talking. Thus his attention is diverted from contemplating the text or its meaning.

(2) No-Agamatah-dravya-shrut is of three types—

(a) Jnayak sharir—is a person who had learned the *Shrut* and taught it to disciples but is no more doing so. For example—the dead body of a learned guru.

(b) Bhavya sharir—Pots in which honey or butter will be filled in future but are empty at present, are conventionally called pots of honey or butter in context of future.

(c) Ubhaya vyatirikta dravya-shrut—The texts written on palm leaves or paper are instruments of scriptural knowledge. As they are other than the said two they are called *ubhaya vyatirikta dravya-shrut* (physical-shrut other than the said two).

—Sutra : 35 to 37

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

the instrument of scriptural knowledge in the past, is called physical *shrut* as merely body of the knower.)

This concludes the description of *jnayak sharir dravya shrut* (physical *shrut* as body of the knower).

(२) भव्य शरीर द्रव्य श्रुत

३८. से किं तं भवियसरीदव्वसुयं ?

भवियसरीरदव्वसुयं जे जीवे जोणीजम्मणं निक्खंते इमेणं चेव सरीरसमुस्सएणं आदत्तएणं जिणोवइट्ठेणं भावेणं सुए इ पयं सेयकाले सिक्खिस्सति, ण ताव सिक्खति।

जहा को दिट्ठंतो ? अयं मधुकुंभे भविस्सति, अयं घयकुंभे भविस्सति। से तं भवियसरीरदव्वसुयं।

३८. **(प्रश्न)** भव्य शरीर द्रव्य श्रुत क्या है ?

(उत्तर) भव्य शरीर द्रव्य श्रुत का स्वरूप इस प्रकार है–समय परिपक्व होने पर जो जीव योनि में से निकला और प्राप्त पौद्गलिक शरीर द्वारा भविष्य में जिन द्वारा उपदिष्ट भाव के अनुसार श्रुत सीखेगा, किन्तु वर्तमान में सीख नहीं रहा है, तब तक उस जीव का वह शरीर भव्य शरीर द्रव्य श्रुत कहा जाता है।

(शिष्य) इसका दृष्टान्त क्या है ?

(आचार्य) (मधु और घी जिन घड़ों में भरा जाने वाला है, परन्तु अभी भरा नहीं है, उनके लिए) 'यह मधुघट है, यह घृतघट है' ऐसा कहा जाता है।

(यहाँ भविष्य में भाव श्रुत की कारणरूप पर्याय होने की योग्यता की अपेक्षा भव्य शरीर द्रव्य श्रुत का स्वरूप बताया है।)

(2) BHAVYA SHARIR DRAVYA SHRUT

38. (Question) What is *bhavya sharir dravya shrut* (physical *shrut* as body of the potential knower) ?

(Answer) On maturity a being comes out of the womb or is born and with its physical body it has the potential to learn the *shrut (Sutra),* as preached by the Jina, but it is

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

not learning at present. As long as it is not learning, that physical body of this being is called *bhavya sharir dravya shrut* (physical *shrut* as body of the potential knower).

(Question asked by a disciple) Is there some analogy to confirm this ?

(Answer by the *guru*) Yes, for example (it is conventionally said that) this will be a pot of honey or this will be a pot of butter (although at present it contains neither honey nor butter). (In the same way physical *shrut* as body of the potential knower has been described in context of the future potential of learning essence of scriptures.)

This concludes the description of *bhavya sharir dravya shrut* (physical *shrut* as body of the potential knower).

(३) ज्ञायक शरीर-भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य श्रुत

३९. से किं तं जाणयसरीर-भवियसरीरवतिरित्तं दव्वसुयं ?

जाणयसरीर-भवियसरीरवतिरित्तं पत्तयपोत्थयलिहियं।

३९. (प्रश्न) ज्ञायक शरीर-भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य श्रुत क्या है ?

(उत्तर) ताड़-पत्रों अथवा पत्रों के समूह रूप पुस्तक में अथवा वस्त्र-खण्डों पर लिखित श्रुत ज्ञायक शरीर-भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य श्रुत है।

(3) JNAYAK SHARIR-BHAVYA SHARIR VYATIRIKTA DRAVYA SHRUT

39. (Question) What is *jnayak sharir-bhavya sharir vyatirikta dravya shrut* (physical *shrut* other than the body of the knower and the body of the potential knower) ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(Answer) *Jnayak sharir-bhavya sharir vyatirikta dravya shrut* (physical *shrut* other than the body of the knower and the body of the potential knower) is the *shrut* (scriptural knowledge) written on palm-leaves, bunch of palm-leaves (in book form) or pieces of cloth.

विवेचन–पूर्वोक्त ज्ञायक शरीर और भव्य शरीर द्रव्य श्रुत का लक्षण जहाँ घटित न होता हो उनसे भिन्न यह द्रव्य श्रुत का लक्षण यहाँ निरूपित किया है। पत्रादि पर लिखित श्रुत भाव श्रुत का कारण तो है किन्तु स्वयं में उपयोग के अभाव में वह द्रव्य श्रुत ही है। ज्ञायक तथा भव्य दोनों न होने के कारण इसे उभय व्यतिरिक्त–दोनों से भिन्न द्रव्य श्रुत की श्रेणी में रखा है।

Elaboration—The *Shrut* (scriptural knowledge not included in the aforesaid two categories, *jnayak sharir and bhavya sharir dravya shrut,* is described here. Although the *shrut* written on palm-leaves, (etc.) is a source of *bhaava shrut* (mental or spiritual *shrut*), in absence of the faculty of contemplation it remains *dravya shrut* (physical *shrut*). As it is neither the body of a knower nor that of a potential knower it has been classified as *dravya shrut* other than these two.

४०. अहवा सुत्तं पंचविहं पण्णत्तं। तं जहा–(१) अंडयं, (२) बोंडयं, (३) कीडयं, (४) वालयं, (५) वक्कयं।

४०. अथवा अन्य प्रकार से सूत्र पाँच प्रकार का कहा है–(१) अंडज, (२) बोंडज, (३) कीटज, (४) वालज, (५) बल्कज।

40. Also, *sutra* (fiber or yarn) is said to be of five types—(1) of egg origin (silk), (2) of fruit origin (cotton), (3) of insect origin (silk), (4) of hair origin (wool), (5) of bark origin (hessian and linen).

विवेचन–इसी आगम के ५१वें सूत्र में सूत्र के दस पर्यायवाची नाम बताये गये हैं। उनमें प्रथम दो नाम **'सुय'** और **'सुत्त'** हैं। 'सुय' का संस्कृत रूप 'श्रुत' और 'सुत्त' का संस्कृत रूप सूत्र होता है। सूत्र का अर्थ शास्त्र तथा सुभाषित (संक्षिप्त गद्यांश या अर्थगर्भित वाक्य) के अतिरिक्त सूत (तंतु) भी होता है। बौद्धिक विकास में अर्थ वैविध्यता को ध्यान में रखकर यहाँ पर सूत्र के (सूत के अर्थ में) पाँच प्रकार-भेद बताये गये हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Elaboration—In aphorism 51 of this book ten synonyms of *sutra* (scripture) have been listed; first two in this list being *suya* and *sutta*. The Sanskrit transcription of *suya* is *shrut* and that of *sutta* is *sutra*. Besides scripture and aphorism, *sutra* also means yarn or fiber. In view of the usefulness of a broader range of meanings in mental development the five kinds of yarns have been included here.

४१. से किं तं अंडयं ?

अंडयं हंसगब्भादि। से तं अंडयं।

४१. (प्रश्न) अंडज किसे कहते हैं ?

(उत्तर) हंसगर्भादि से बने सूत्र को अंडज कहा जाता है।

41. (Question) What is *andayam* or *andaj* (of egg origin) ?

(Answer) Yarn made of fiber produced by *hamsagarbh* (cocoon) is called *andaj*.

४२. से किं तं बोंडयं ?

बोंडयं फलिहमादि से तं बोंडयं।

४२. (प्रश्न) बोंडज किसे कहते हैं ?

(उत्तर) बोंडज–कपास या रुई (अथवा अन्य वनस्पति के फल) से बनाये गये सूत्र को बोंडज कहा जाता है।

42 (Question) What is *bondayam* or *bondaj* (of fruit origin) ?

(Answer) Yarn made of fiber produced by fruit of the cotton plant (and other plants) is called *bondaj*.

४३. से किं तं कीडयं ?

कीडयं पंचविहं पण्णत्तं। तं जहा–(१) पट्टे, (२) मलए, (३) अंसुए, (४) चीणंसुए, (५) किमिरागे। से तं कीडयं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४३. (प्रश्न) कीटज सूत्र क्या है?

(उत्तर) कीटज सूत्र पाँच प्रकार का है–(१) पट्ट सूत्र, (२) मलय सूत्र, (३) अंशुक सूत्र, (४) चीनांशुक सूत्र, और (५) कृमिराग सूत्र। यह कीटज सूत्र का वर्णन है।

43. (Question) What is *kidayam* or *kitaj* (of insect origin)?

(Answer) *Kitaj* yarn (of insect origin) is of five kinds—(1) *patte* (*patta* yarn), (2) *malaye* (*malay* yarn), (3) *anshue* (*anshuk* yarn), (4) *chinanshue* (*chinanshuk* yarn), and (5) *kimirage* (*krimirag* yarn). This is the description of yarn of insect origin.

४४. से किं तं वालयं ?

वालयं पंचविहं पण्णत्तं। तं जहा–(१) उण्णिए, (२) उट्टिए, (३) मियलोमिए, (४) कुतवे, (५) किट्टिसे। से तं वालयं।

४४. (प्रश्न) वालज सूत्र क्या है?

(उत्तर) वालज सूत्र पाँच प्रकार का है–(१) और्णिक, (२) औष्ट्रिक, (३) मृगलोमिक (मृगरोमज), (४) कौतव (चूहे के रोमों का), (५) किट्टिस (मिश्रित बालों से बना)।

44. (Question) What is *valayam* (of hair or fur origin)?

(Answer) *Valayam* yarn is of five kinds—(1) *unniye* (*aurnik* yarn), (2) *uttiye* (*aushtrik* yarn), (3) *miyalomiye* (*mrigalomik* yarn), (4) *kutave* (*kautav* yarn), and (5) *kittise* (*kittis* yarn). This is the description of yarn of hair or fur origin.

४५. से किं तं वक्कयं ?

वक्कयं सणमाई। से तं वक्कयं।

से तं जाणगसरीर भवियसरीर वतिरित्तं दव्वसुयं। से तं नोआगमतो दव्वसुयं।

से तं दव्वसुयं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४५. (प्रश्न) वल्कज सूत्र किसे कहते हैं ?

(उत्तर) सन आदि से निर्मित सूत्र को वल्कज कहा जाता है।

इस प्रकार यह ज्ञायक शरीर-भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य श्रुत का वर्णन पूर्ण हुआ और इसके साथ ही नो-आगमतः द्रव्य श्रुत एवं द्रव्य श्रुत का निरूपण समाप्त हुआ।

45. (Question) What is *vakkayam* or *valkaj* (of bark origin) ?

(Answer) Yarn made of fiber produced by *san* (hession) or bark of other trees is called *valkaj*.

This concludes the description of *jnayak sharir-bhavya sharir vyatirikta dravya shrut* (physical *shrut* other than the body of the knower and the body of the potential knower). This also concludes the description of *No-Agamatah dravya shrut* (physical *shrut* without scriptural knowledge) as well as *dravya-shrut* (physical *shrut*).

विवेचन–अंडज आदि की व्याख्या–अंडज के रूप में हंसगर्भ का उल्लेख किया गया है। हंस का प्रचलित अर्थ पक्षी विशेष है किन्तु यहाँ इसका अर्थ पतंगा है। ये चतुरिन्द्रिय जाति के जीव हैं, जिसे कोशा भी कहते हैं। गर्भ शब्द भी यहाँ थैली के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। पतंगे के अण्डे से एक कीट (लट) जन्म लेती है। यह लट अपने मुँह से लार निकालती है जो हवा के संपर्क में आते ही तंतु बन जाती है। इस तंतु से यह लट अपने चारों ओर एक थैली बनाकर उसी में बंद हो जाती है। अतः इस तंतु अथवा सूत्र का नाम अंडज है और यह रेशम होता है। *(अनुयोगद्वार चूर्णि, पृ. ८६, मुनि जम्बूविजय जी)*

बोंड अर्थात् कपास का फल या कोश और उस कपास से बने सूत को बोंडज कहते हैं।

कीट चतुरिन्द्रिय जीव होते हैं। कुछ कीटों की लार से उत्पन्न सूत्र को कीटज कहते हैं यह भी रेशम होता है। पट्ट आदि पाँचों भेद कीटजन्य होने से कीटज कहे जाते हैं।

पट्टसूत्र की उत्पत्ति के विषय में ऐसा माना जाता है कि जंगल में सघन लताच्छादित स्थानों में माँस-पुंज रखकर उसकी आजू-बाजू कुछ अन्तर में ऊँची-नीची अनेक कीलें गाड़ दी जाती हैं। माँस के लोभी कीट-पतंगे माँस-पुंजों पर मँडराते हैं और कीलों के आसपास घूमकर अपनी लार को छोड़ते हैं। उस लार को एकत्रित करके जो सूत बनता है, उसे पट्टसूत्र कहते हैं। *(अनुयोगद्वार चूर्णि, पृ. ८७, मुनि जम्बूविजय जी)*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मलय देश में बने कीटज सूत्र को मलय कहते हैं तथा चीन देश से बाहर कीटों की लार से बना सूत्र अंशुक और चीन देश में बना सूत्र चीनांशुक कहलाता है।

कृमिरागसूत्र का सामान्य अर्थ है कूमचिया रंग का सूत्र। वृत्तिकार के अनुसार इस विषय में ऐसा सुना जाता है कि कुछ क्षेत्र-विशेषों में मनुष्य का रक्त बर्तन में भरकर उसमें रासायनिक पदार्थ मिलाकर उसके मुख को छिद्रों वाले ढक्कन से ढँक देते हैं। उसमें बहुत से लाल रंग के कृमि-कीड़े उत्पन्न हो जाते हैं। वे कृमि छिद्रों से निकलकर बाहर आसपास के प्रदेश में उड़ते हुए अपनी लार छोड़ते हैं। इस लार को इक्ट्ठा करके जो सूत बनाया जाता है, वह कृमिराग सूत्र कहलाता है। लाल रंग के कृमियों से उत्पन्न होने के कारण इस सूत का रंग भी लाल होता है। यह भी रेशम होता है।

रोमों-बालों से बने सूत को 'वालज' कहते हैं, यह ऊन होता है। भेड़ के रोमों-बालों से जो सूत बनता है वह और्णिक, ऊँट के रोमों से बना सूत औष्ट्रिक, मृग के रोमों से बना सूत मृगलोमिक तथा चूहे के रोमों से बना सूत कौतव कहलाता है। इन और्णिक आदि सूत्रों को बनाते समय इधर-उधर बिखरे बालों का नाम किट्टिस है। इनसे निर्मित अथवा और्णिक आदि सूत को दुहरा-तिहरा करके बनाया गया सूत अथवा घोड़ों आदि के बालों से बना सूत किट्टिस कहलाता है। *(सचित्र आचारांग, भाग २, पृ. ३११ में पाँच प्रकार के वस्त्रों का वर्णन)*

Elaboration—Details of *andaj* and other terms—*Andaj* has been described as *hamsagarbh*. The popular meaning of *hamsa* is swan but here it means moth. These are four sensed beings and are also called *kosha*. *Garbh* generally means womb but here it means cocoon. The egg of a moth gives birth to a worm, which produces saliva that turns into fiber when it comes in contact with air. The worm weaves a cocoon around itself with this fiber. Therefore yarn made of this fiber is called *andaj* or of egg origin and is included in silk. (*Anuyogadvar Churni* by Jambuvijaya ji, p. 86)

Bonda means the fruit of cotton plant. The fiber produced by this fruit is called *bondaj* or of fruit origin. Yarn made of this and other such fibers are included in cotton.

Kita (insects) are four-sensed beings. Some of these produce saliva that turns into fiber. Yarn made of this fiber is called *kitaj* or of insect origin and is also included in silk. The said five kinds

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

of yarns are of insect origin and thus included in the *kitaj* category.

About the *patta sutra* it is said that selecting a dense area in a forest a lump of meat is placed. Around this some large and small pegs are struck in the ground. Attracted by the meat some species of moths hover around and release saliva. This saliva is caught in the pegs in the form of fiber. The yarn made out of these fibers is called *patta sutra*. (*Anuyogadvar Churni* by Jambuvijaya ji, p. 87)

The yarn of insect origin (silk) produced in *Malaya* is called *malay sutra* and that produced in China is called *chinanshuk*.

Krimirag sutra is generally red coloured silk yarn. According to the commentator (*Vritti*) it is believed that in some areas a pot filled with human blood and some chemical additives is covered with a perforated cover. In a few days a lot of red insects are produced and they come out of the holes. While flying around these insects salivate. This fiber-turned-saliva is collected and spun into yarn. This is called *krimirag sutra*. The colour of this yarn is permanent red. This is also included in silk.

Yarns made of animal hair or fur are called *valaj* or of hair origin and are included in wool. Those produced from sheep are called *Aurnik*. Those produced from camel are called *aushtrik*, those produced from deer are called *mrigalomik*, and those produced from rat (Rodentia) are called *kautava*. Loose fibers scattered during processing are also collected and mixed with other fibers to spin yarn, this and the one made of horse-hair is called *kittis*. Also, yarns made of different fibers are entwined to make thicker yarn, this is also called *kittis*. (refer to *Illustrated Acharanga Sutra*, p. 311 for five types of cloth.)

(४) भाव श्रुत

४६. से किं तं भावसुयं ?

भावसुयं दुविहं पन्नत्तं। तं जहा—(१) आगमओ य, (२) नोआगमओ य।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४६. (प्रश्न) भाव श्रुत क्या है?

(उत्तर) भाव श्रुत दो प्रकार का कहा है-(१) आगमतः भाव श्रुत, और (२) नो-आगमतः भाव श्रुत।

(4) BHAAVA SHRUT

46. (Question) What is *bhaava shrut* (*shrut* as essence or perfect *shrut*)?

(Answer) *Bhaava shrut* (perfect *shrut*) is of two types—(1) *Agamatah bhaava shrut* (perfect *shrut* in context of *Agam* or in context of knowledge), and (2) *No-Agamatah bhaava shrut* (perfect *shrut* not in context of *Agam* or only in context of action).

(१) आगमतः भावश्रुत

४७. से किं तं आगमओ भावसुयं ?

आगमओ भावसुयं जाणए उवउत्ते। से तं आगमओ भावसुयं।

४७. (प्रश्न) आगमतः भाव श्रुत क्या है?

(उत्तर) जो श्रुत (पद) को जानता है और उसमें उपयोग सहित है, वह आगमतः भाव श्रुत है। यह आगमतः भाव श्रुत का वर्णन है।

(1) AGAMATAH BHAAVA SHRUT

47. (Question) What is *Agamatah bhaava shrut* (perfect *shrut* with scriptural knowledge)?

(Answer) One who knows the *Shrut (Sutra)* and is sincerely involved with it is called *Agamatah bhaava shrut* (perfect *shrut* with scriptural knowledge).

(२) नो-आगमतः भाव श्रुत

४८. से किं तं नोआगमतो भावसुयं ?

नोआगमतो भावसुयं दुविहं पन्नत्तं। तं जहा-(१) लोइयं, (२) लोउत्तरियं च।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४८. (प्रश्न) नोआगम की अपेक्षा भाव श्रुत क्या है ?

(उत्तर) नो-आगमतः भाव श्रुत दो प्रकार का है। जैसे-(१) लौकिक, और (२) लोकोत्तरिक।

(2) NO-AGAMATAH BHAAVA SHRUT

48. (Question) What is *No-Agamatah bhaava shrut* (perfect *shrut* without scriptural knowledge) ?

(Answer) *No-Agamatah bhaava shrut* (perfect *shrut* without scriptural knowledge) is of two types—(1) *Laukik,* and (2) *Lokottarik.*

(१) लौकिक भाव श्रुत

४९. से किं तं लोइयं भावसुयं ?

लोइयं भावसुयं जं इमं अण्णाणिएहिं मिच्छदिट्ठीहिं सच्छंदबुद्धि-मइविगप्पियं। तं जहा—भारहं रामायणं भीमासुरुक्कं कोडिल्लयं घोडमुहं सगडभद्दिआओ कप्पासियं नागसुहुमं कणगसत्तरी वइसेसियं बुद्धवयणं वेसियं काविलं लोयाययं सट्ठितंतं माढरं पुराणं वागरणं नाडगादी, अहवा बावत्तरिकलाओ चत्तारि य वेदा संगोवंगा। से तं लोइयं भावसुयं।

४९. (प्रश्न) लौकिक भाव श्रुत क्या है ?

(उत्तर) जो अज्ञानी (अल्पज्ञानी) मिथ्यादृष्टियों द्वारा अपनी स्वच्छन्द बुद्धि और मति से रचित श्रुत लौकिक भाव श्रुत है। जैसे-महाभारत, रामायण, भीमासुरोक्त, कौटिल्य (अर्थशास्त्र), घोटकमुख, शटकभद्रिका, कार्पासिक, नागसूक्ष्म, कनकसप्तति, वैशेषिकशास्त्र, बौद्धशास्त्र, कामशास्त्र, कपिलशास्त्र, लोकायतशास्त्र, षष्ठितंत्र, माढरशास्त्र, पुराण, व्याकरण, नाटक आदि अथवा बहत्तर कलाएँ और अंग-उपांग सहित चार वेद ये सब लौकिक नो-आगमतः भाव श्रुत हैं।

(1) LAUKIK BHAAVA SHRUT

49. (Question) What is *laukik bhaava shrut* (mundane perfect *shrut*) ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(Answer) The scriptures written by the ignorant and heretics with their willful mind and perspective are called *laukik bhaava shrut* (mundane perfect *shrut*). This includes—*Mahabharat, Ramayan, Bhimasurokta, Kautilya (Arthashastra), Ghotakmukh, Shatakbhadrika, Karpasik, Nagasukshma, Kanak-saptati,* Vaisheshik scriptures, Buddhist scriptures, *Kama-shastra,* Kapil scriptures, Lokayat scriptures, *Shashtitantra,* Mathar scriptures, hagiographies, grammar, plays, etc. as also the seventy two *kalas* (subjects including various arts, crafts and skills) and the four *Vedas* with their *Angas* and *Upangas* (auxiliary literature of the *Vedas*). This concludes the description of *laukik No-Agamatah bhaava shrut* (mundane perfect *shrut* without scriptural knowledge).

विवेचन—उक्त सूत्र में लौकिक नो-आगमतः भाव श्रुत का स्वरूप बतलाया है कि सर्वज्ञोक्त प्रवचन से विपरीत अभिप्राय वाली बुद्धि और मति द्वारा विरचित सभी शास्त्र लौकिक भाव श्रुत हैं। *(इसका विशेष वर्णन सचित्र नन्दीसूत्र, पृ. ३५३ पर देखें।)*

Elaboration—This aphorism describes *laukik bhaava shrut* (mundane perfect *shrut)* as all the scriptures having views contradictory to the sermons of omniscients, and written by heretics with their willful mind and perspective. (refer to *Illustrated Nandi Sutra,* p. 353 for more details.)

(२) लोकोत्तरिक भाव श्रुत

५०. से किं तं लोगोत्तरियं भावसुयं ?

लोगोत्तरियं भावसुयं जं इमं अरहंतेहि भगवंतेहिं उप्पन्ननाण-दंसणधरेहिं तीत-पडुप्पन्न-मणागतजाणएहिं सव्वन्नूहिं सव्वदरिसीहिं तेलोक्कवहिय-महिय-पूइएहिं अप्पडिहयवरनाण-दंसणधरेहिं पणीतं दुवालसंगं गणिपिडगं। तं जहा—(१) आयारो, (२) सूयगडो, (३) ठाणं, (४) समवाओ, (५) वियाहपण्णत्ती, (६) नायाधम्मकहाओ, (७) उवासगदसाओ, (८) अंतगडदसाओ, (९) अणुत्तरोववाइयदसाओ,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(१०) पण्हावागरणाइं, (११) विवागसुयं, (१२) दिट्ठिवाओ य। से तं लोगोत्तरियं भावसुयं। से तं नोआगमतो भावसुयं। से तं भावसुयं।

५०. (प्रश्न) लोकोत्तरिक भाव श्रुत क्या है?

(उत्तर) केवलज्ञान और केवलदर्शन को धारण करने वाले, भूत-भविष्यत् और वर्तमानकालिक पदार्थों को जानने वाले, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, त्रिलोकवर्ती जीवों द्वारा अवलोकित, महित-पूजित, अप्रतिहत श्रेष्ठ ज्ञान-दर्शन के धारक अरिहंत भगवन्तों द्वारा प्रणीत–(१) आचारांग, (२) सूत्रकृतांग, (३) स्थानांग, (४) समवायांग, (५) व्याख्याप्रज्ञप्ति, (६) ज्ञाताधर्मकथा, (७) उपासकदशांग, (८) अन्तकृद्दशांग, (९) अनुत्तरौपपातिकदशांग, (१०) प्रश्नव्याकरण, (११) विपाक श्रुत, (१२) दृष्टिवाद रूप द्वादशांग गणिपिटक लोकोत्तरिक भाव श्रुत हैं।

(2) LOKOTTARIK BHAAVA SHRUT

50. (Question) What is *lokottarik bhaava shrut* (spiritual perfect *shrut*)?

50. (Answer) This *lokottarik bhaava shrut* (spiritual perfect *shrut*) is the canon made available to us in the form of *Dvadashanga Ganipitak* (the twelve part canon compiled by *Ganadharas*) and expounded by those who are *Arhantas* (the venerated ones); *Bhagavantas* (the divinely magnificent ones); who have acquired ultimate knowledge and ultimate perception; who know all things in past, present and future; who are all knowing and all seeing; who are beheld, extolled and worshipped in the three worlds; and who possess uninterrupted excellent knowledge and perception. This *Ganipitak* includes—(1) *Acharanga,* (2) *Sutrakritanga,* (3) *Sthananga,* (4) *Samavayanga,* (5) *Vyakhyaprajnapti,* (6) *Jnatadharmakatha,* (7) *Upasakadashanga,* (8) *Antakrid-dashanga,* (9) *Anuttaraupapatik-dashanga,* (10) *Prashnavyakarana,* (11) *Vipak shrut,* (12) *Drishtivad.*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५१. तस्स णं इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणावंजणा नामधेज्जा भवंति। तं जहा–

सुय सुत्त गंथ सिद्धंत सासणे आणवयण उवदेसे।
पण्णवण आगमे य एगट्ठा पज्जवा सुत्ते॥ ४ ॥

से तं सुयं।

५१. उदात्तादि अनेक घोषों–स्वरों तथा ककारादि अनेक व्यंजनों से युक्त उस श्रुत के एकार्थवाचक (पर्यायवाची) नाम इस प्रकार हैं–

(१) श्रुत, (२) सूत्र, (३) ग्रन्थ, (४) सिद्धान्त, (५) शासन, (६) आज्ञा, (७) वचन, (८) उपदेश, (९) प्रज्ञापना, तथा (१०) आगम। ये सभी श्रुत के एकार्थक पर्याय हैं।

इस प्रकार श्रुत की वक्तव्यता समाप्त हुई।

SYNONYMS OF SHRUT

51. Some synonyms, having a variety of vowels and consonants, of this *shrut* are as follows—

(1) *Shrut,* (2) *Sutra,* (3) *Granth,* (4) *Siddhant,* (5) *Shasan,* (6) *Ajna,* (7) *Vachan,* (8) *Upadesh,* (9) *Prajnapana,* and (10) *Agam.*

This concludes the description of *shrut.*

विवेचन–यहाँ श्रुत के पर्यायवाची दस नाम बताये हैं, जिनमें शब्दभेद होने पर भी अर्थभेद नहीं है–

१. गुरु के मुख से निकले वचन सुने जाने के कारण यह श्रुत है।

२. अर्थों की सूचना मिलने के कारण इसका नाम सूत्र है।

३. तीर्थंकर रूप कल्पवृक्ष के वचन रूप पुष्पों का गुंथन होने से इनका नाम ग्रन्थ है।

४. प्रमाणसिद्ध अर्थ को प्रकट करने वाला होने से यह सिद्धान्त है।

५. मिथ्यात्वादि से दूर रहने की शिक्षा देने के कारण अथवा मिथ्यात्वी को शासित, संयमित करने वाला होने से यह शासन है।

६. मुक्ति के लिए आज्ञा देने वाला होने से इसे आज्ञा कहते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७. वाणी द्वारा प्रकट किये जाने से यह **वचन** है।

८. उपादेय में प्रवृत्ति और हेय से निवृत्ति की शिक्षा देने वाला होने से इसे **उपदेश** कहते हैं।

९. जीवादिक पदार्थों के यथार्थ स्वरूप का प्ररूपण करने वाला होने से यह **प्रज्ञापना** है।

१०. सुधर्मा स्वामी-परम्परा से आने अथवा आप्त वचन रूप होने से यह **आगम** है।

Elaboration—Ten synonyms of the word *shrut* have been mentioned here. Although they are different words they have the same meaning—

(1) As it is the utterance directly listened from the *guru* it is called *shrut* (that which is listened).

(2) As it is pregnant with meaning it is called *sutra* (aphorism, or the thread linking seeker and preceptor).

(3) As it contains the flower-like words of the wish-fulfilling tree that is the *Tirthankar,* in strung and entwined form it is called *granth* (that which is strung and entwined).

(4) As it exposes the authenticated meaning it is called *siddhant* (principle or that which has been authenticated).

(5) As it edifies about avoiding heretical doctrines, or governs and disciplines the heretic it is called *shasan* (that which governs or disciplines).

(6) As it orders to seek liberation it is called *ajna* (order).

(7) As it is conveyed through speech it is called *vachan* (speech).

(8) As it advises to accept good and reject bad it is called *upadesh* (preaching).

(9) As it establishes the true form of things it is called *prajnapana* (validation).

(10) As it comes from Sudharma Swami, the genuine source, it is called *agam* (the word of the *Tirthankar;* the canon).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्कन्ध प्रकरण
THE DISCUSSION ON SKANDH

निक्षेप दृष्टि से स्कन्ध निरूपण

५२. से किं तं खंधे ?

खंधे चउव्विहे पण्णत्ते। तं जहा–(१) नामखंधे, (२) ठवणाखंधे, (३) दव्वखंधे, (४) भावखंधे।

५२. (प्रश्न) स्कन्ध क्या हैं ?

(उत्तर) स्कन्ध के चार प्रकार हैं। जैसे–(१) नाम स्कन्ध, (२) स्थापना स्कन्ध, (३) द्रव्य स्कन्ध, तथा (४) भाव स्कन्ध।

ATTRIBUTION OF SKANDH

52. (Question) What is *skandh* ?

(Answer) *Skandh* is of four types—(1) *Naam Skandh,* (2) *Sthapana Skandh,* (3) *Dravya Skandh,* and (4) *Bhaava Skandh.*

विवेचन–खंधं (स्कन्ध) का अर्थ है पुद्गलप्रचय–पुद्गलों का पिण्ड। समूह–समुदाय, कंधा, वृक्ष का धड़ (जहाँ से शाखायें निकलती हैं) के लिए भी स्कन्ध शब्द का प्रयोग होता है *(पाइअ सद्द महण्णओ)*। यहाँ पर स्कन्ध शब्द अध्ययनों के समूह के अर्थ में प्रयुक्त है।

Elaboration—*Skandh* means a lump or cluster of material particles. The term is also used for a herd or a group, shoulder, trunk of a tree (from where branches stem out). (*Paia-sadda-mahannao*) Here *skandh* conveys the meaning—"a group of chapters".

(१) नाम स्कन्ध

५३. से किं तं नामखंधे ?

नामखंधे जस्स णं जीवस्स वा अजीवस्स वा जाव खंधे त्ति णामं कज्जति। से तं णामखंधे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५३. (प्रश्न) नाम स्कन्ध क्या है?

(उत्तर) जिस किसी जीव या अजीव का यावत् स्कन्ध यह नाम रखा जाता है, उसे नाम स्कन्ध कहते हैं।

(1) NAAM SKANDH

53. (Question) What is *naam skandh* (*skandh* as name)?

(Answer) To assign *skandh* as a name to a living being, a non-living thing, (etc.) is called *naam skandh* or *skandh* as name. (refer to aphorism 10 for more details.)

(२) स्थापना स्कन्ध

५४. से किं तं ठवणाखंधे ?

ठवणाखंधे जण्णं कट्ठकम्मे वा जाव खंधे इ ठवणा ठविज्जति। से तं ठवणाखंधे।

५४. (प्रश्न) स्थापना स्कन्ध क्या है?

(उत्तर) काष्ठादि में 'यह स्कन्ध है' इस प्रकार का जो आरोप किया जाता है, वह स्थापना स्कन्ध है।

(2) STHAPANA SKANDH

54. (Question) What is *sthapana skandh*? (What is this *skandh* as notional installation)?

(Answer) The notional installation or illustration or imagination of *skandh* in or through (things or medias like—) wood work, (etc.) realistically or unrealistically is called *sthapana skandh (skandh* as notional installation). (refer to aphorism 11 for more details.)

५५. णाम-ठवणाणं को पतिविसेसो ?

नामं आवकहियं, ठवणा इत्तरिया वा होज्जा आवकहिया वा।

५५. (प्रश्न) नाम और स्थापना में क्या अन्तर है?

(उत्तर) नाम यावत्कथिक (वस्तु का अस्तित्व रहने तक) होता है परन्तु स्थापना इत्वरिक-स्वल्पकालिक और यावत्कथिक दोनों प्रकार की होती है। (नाम-स्थापना आवश्यक की तरह समझें सूत्र १३-१४ के अनुसार)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

55. (Question) What is the difference between *naam* and *sthapana* (name and notional installation) ?

(Answer) Name is life-long whereas *sthapana* can be temporary as well as life-long both. (refer to aphorism 12 for more details.)

(३) द्रव्य स्कन्ध

५६. से किं तं दव्वखंधे ?

दव्वखंधे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा–(१) आगमतो य, (२) नोआगमतो य ।

५६. (प्रश्न) द्रव्य स्कन्ध क्या है ?

(उत्तर) द्रव्य स्कन्ध दो प्रकार का है। यथा–(१) आगमतः द्रव्य स्कन्ध, और (२) नो-आगमतः द्रव्य स्कन्ध।

(3) DRAVYA SKANDH

56. (Question) What is *dravya skandh* (physical aspect of *skandh*) ?

(Answer) *Dravya skandh* (physical aspect of *skandh*) is of two kinds—(1) *Agamatah dravya skandh* (physical aspect of *skandh* in context of *Agam*), and (2) *No-Agamatah dravya skandh* (physical aspect of *skandh* not in context of *Agam*).

(१) आगमतः द्रव्य स्कन्ध

५७. (१) से किं तं आगमओ दव्वखंधे ?

आगमओ दव्वखंधे जस्स णं खंधे इ पयं सिक्खियं ठियं जियं मियं जाव णेगमस्स एगे अणुवउत्ते आगमओ एगे दव्वखंधे, दो अणुवउत्ता आगमओ दो दव्वखंधा, तिण्णि अणुवउत्ता आगमओ तिण्णि दव्वखंधाइं, एवं जावइया अणुवउत्ता तावइयाइं ताइं दव्वखंधाइं।

५७. (प्रश्न) (१) आगमतः द्रव्य स्कन्ध क्या है ?

(उत्तर) (१) जिसने स्कन्ध पद सीख लिया है, स्थित किया है, जित, मित किया है यावत् (शेष सूत्र १४ के अनुसार) उसे आगमतः द्रव्य स्कन्ध कहते हैं। नैगम नय की

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अपेक्षा एक अनुपयुक्त आत्मा आगम से एक द्रव्य स्कन्ध है, दो अनुपयुक्त आत्मायें दो, तीन अनुपयुक्त आत्मायें तीन आगमतः द्रव्य स्कन्ध हैं, इस प्रकार जितनी भी अनुपयुक्त आत्माएँ हैं, उतने ही आगमतः द्रव्य स्कन्ध जानना चाहिए।

(1) AGAMATAH DRAVYA SKANDH

57. (Question) What is *Agamatah dravya skandh* (physical *skandh* with scriptural knowledge) ?

(Answer) (1) Physical *skandh* in context of *Agam* is like this—(For instance) a person (an ascetic) has studied properly (*shikshit*); retained in mind (*chitt*); understood and absorbed (*jit*); made assessment in terms of number of verses, words, syllables, etc. (*mit*); (and so on as in aphorism 14). This is called *Agamatah dravya skandh* (physical *skandh* with scriptural knowledge). According to the *Naigam naya* (co-ordinated viewpoint that includes ordinary and special both) one non-contemplative soul is one *Agamatah dravya skandh* (physical *skandh* with scriptural knowledge). Two non-contemplative souls are two physical *skandhs* with scriptural knowledge. Three non-contemplative souls are three physical *skandhs* with scriptural knowledge. In the same way as many non-contemplative souls are, there are that many *Agamatah dravya skandhs* (physical *skandhs* with scriptural knowledge).

(२) एवमेव ववहारस्स वि।

(२) (नैगम नय की तरह) व्यवहार नय भी आगमतः द्रव्य स्कन्ध के भेद स्वीकार करता है।

(2) Same is true for *Vyavahar naya* (particularized viewpoint). (The style of stating is same for both co-ordinated and particularized viewpoints).

(३) संगहस्स एगो वा अणेगा वा अणुवउत्तो वा अणुवउत्ता वा दव्वखंधे वा दव्वखंधाणि वा से एगे दव्वखंधे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(३) सामान्य मात्र को ग्रहण करने वाला संग्रह नय "सभी को एक ही आगमतःद्रव्य स्कन्ध मानता है। वह एक अनुपयुक्त आत्मा एक द्रव्य स्कन्ध और अनेक अनुपयुक्त आत्मायें अनेक आगमतः द्रव्य स्कन्ध" नैगम व्यवहार की इस मान्यता को स्वीकार नहीं करता।

(3) According to *Samgraha naya* (generalized viewpoint) all non-contemplative souls fall into just one category of physical *skandh* with scriptural knowledge. It does not accept the *Naigam* concept that one non-contemplative soul is one *Agamatah dravya skandh* (physical *skandh* with scriptural knowledge) and many non-contemplative souls are many physical *skandhs* with scriptural knowledge.

(४) उज्जुसुयस्स एगो अणुवउत्तो आगमओ एगे दव्वखंधे, पुहत्तं णेच्छति।

(४) ऋजुसूत्र नय से एक अनुपयुक्त आत्मा एक आगमतः द्रव्य स्कन्ध है। वह भेदों को स्वीकार नहीं करता है।

(4) According to *Rijusutra naya* (precisionistic viewpoint; viewpoint related to specific point or period of time) one non-contemplative soul is one *Agamatah dravya skandh* (physical *skandh* with scriptural knowledge). This viewpoint has no scope for variations or differences.

(५) तिण्हं सद्दणयाणं जाणए अणुवउत्ते अवत्थू। कम्हा ? जइ जाणए कहं अणुवउत्ते भवति ?

से तं आगमओ दव्वखंधे।

(५) तीनों शब्द नय ज्ञायक यदि अनुपयुक्त हो तो उसे अवस्तु–असत् मानते हैं। क्योंकि जो ज्ञायक है वह अनुपयुक्त नहीं होता है।

यह आगमतः द्रव्य स्कन्ध का स्वरूप है।

(5) According to the three *Shabda nayas* (*Shabda naya, Samabhirudha naya* and *Evambhuta naya*) or verbal viewpoints (verbal viewpoint, conventional viewpoint and etymological viewpoint) if a knower is devoid of faculty of contemplation he is unreal. This is because without the

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

faculty of contemplation he cannot be a knower. Thus if he is non-contemplative he is not a knower.

This concludes the description of *Agamatah dravya skandh* (physical *skandh* with scriptural knowledge).

(२) नो-आगमतः द्रव्य स्कन्ध

५८. से किं तं णोआगमतो दव्वखंधे ?

णोआगमतो दव्वखंधे तिविहे पण्णत्ते। तं जहा–(१) जाणगसरीरदव्वखंधे, (२) भवियसरीरदव्वखंधे, (३) जाणगसरीर-भवियसरीरवइरित्ते दव्वखंधे।

५८. (प्रश्न) नो-आगमतः द्रव्य स्कन्ध क्या है?

(उत्तर) नो-आगमतः द्रव्य स्कन्ध तीन प्रकार का है। यथा–(१) ज्ञायक शरीर द्रव्य स्कन्ध, (२) भव्य शरीर द्रव्य स्कन्ध, और (३) ज्ञायक शरीर-भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य स्कन्ध।

(2) NO-AGAMATAH DRAVYA SKANDH

58. (Question) What is *No-Agamatah dravya skandh* (physical *skandh* without scriptural knowledge)?

(Answer) *No-Agamatah dravya skandh* (physical *skandh* without scriptural knowledge) is of three types—(1) *Jnayak sharir dravya skandh,* (2) *Bhavya sharir dravya skandh,* and (3) *Jnayak sharir-bhavya sharir vyatirikta dravya skandh.*

(१) ज्ञायक शरीर द्रव्य स्कन्ध

५९. से किं तं जाणगसरीरदव्वखंधे ?

जाणगसरीरदव्वखंधे खंधे इ पयत्थाहिगारजाणगस्स जाव खंधे इ पयं आघवियं पण्णवियं परूवियं जाव से तं जाणगसरीरदव्वखंधे।

५९. (प्रश्न) ज्ञायक शरीर द्रव्य स्कन्ध क्या है?

(उत्तर) इस स्कन्ध पद के अर्थाधिकार को जानने वाले यावत् जिसने स्कन्ध पद का (गुरुगम से) अध्ययन किया था, प्रतिपादन किया था, प्ररूपित किया था, आदि पूर्ववत् समझना चाहिए। यह ज्ञायक शरीर द्रव्य स्कन्ध है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(1) JNAYAK SHARIR DRAVYA SKANDH

59. (Question) What is *jnayak sharir dravya skandh* (physical *skandh* as body of the knower) ?

(Answer) *Jnayak sharir dravya skandh* (physical *skandh* as body of the knower) is explained thus—It is such a body of the knower of the purview of the meaning of *skandh,* which is dead (and so on up to 'from the *guru*'); reciting and explaining it to disciples, confirming it by demonstration, giving its special lessons to weak students, and affirming it with the help of logic and multiple perspectives (*naya*). (refer to aphorism 17 for details.)

This concludes the description of *jnayak sharir dravya skandh* (physical *skandh* as body of the knower).

(२) भव्य शरीर द्रव्य स्कन्ध

६०. से किं तं भवियसरीरदव्वखंधे ?

भवियसरीरदव्वखंधे जे जीवे जोणिजम्मणनिक्खंते जाव खंधे इ पयं सेयकाले सिक्खिस्सइ।

जहा को दिट्ठंतो ?

अयं महुकुंभे भविस्सइ, अयं घयकुंभे भविस्सति।

से तं भवियसरीरदव्वखंधे।

६०. (प्रश्न) भव्य शरीर द्रव्य स्कन्ध क्या है ?

(उत्तर) समय परिपक्व होने पर यथाकाल कोई योनि स्थान से बाहर निकला और वह यावत् भविष्य में 'स्कन्ध' इस पद के अर्थ को सीखेगा (किन्तु अभी नहीं सीख रहा है), उस जीव का शरीर भव्य शरीर द्रव्य स्कन्ध है।

(शिष्य) इसका दृष्टान्त ?

(आचार्य) दृष्टान्त इस प्रकार है (वर्तमान में मधु या घी नहीं भरा है किन्तु भविष्य में भरा जायेगा ऐसे घड़े के लिए कहना) यह मधुकुंभ है, यह घृतकुंभ है।

यह भव्य शरीर द्रव्य स्कन्ध का स्वरूप है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(2) BHAVYA SHARIR DRAVYA SKANDH

60. (Question) What is *bhavya sharir dravya skandh* (physical *skandh* as body of the potential knower) ?

(Answer) On maturity a being comes out of the womb or is born and it has the potential to learn the *Skandh (Sutra)*, as preached by the Jina, but it is not learning at present. As long as it is not learning this being is called *bhavya sharir dravya skandh* (physical *skandh* as body of the potential knower).

(Question asked by a disciple) Is there some analogy to confirm this ?

(Answer by the *guru*) Yes, for example to say that this is a pot of honey or a pot of butter (for a pot that will be filled with honey or butter, although at present it contains neither honey nor butter).

This concludes the description of *bhavya sharir dravya skandh* (physical *skandh* as body of the potential knower).

(३) ज्ञायक शरीर-भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य स्कन्ध

६१. से किं तं जाणगसरीर-भवियसरीरवइरित्ते दव्वखंधे ?

जाणगसरीर-भवियसरीरवइरित्ते दव्वखंधे तिविहे पण्णत्ते। तं जहा–(१) सचित्ते, (२) अचित्ते, (३) मीसए।

६१. (प्रश्न) ज्ञायक शरीर-भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य स्कन्ध क्या है ?

(उत्तर) ज्ञायक शरीर-भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य स्कन्ध के तीन प्रकार हैं। जैसे–(१) सचित्त, (२) अचित्त, और (३) मिश्र।

JNAYAK SHARIR-BHAVYA SHARIR VYATIRIKTA DRAVYA-SKANDH

61. (Question) What is this *jnayak sharir-bhavya sharir vyatirikta dravya-skandh* (physical-*skandh* other than the body of the knower and the body of the potential knower) ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(Answer) *Jnayak sharir-bhavya sharir vyatirikta dravya skandh* (physical *skandh* other than the body of the knower and the body of the potential knower) is of three kinds—(1) *Sachitta,* (2) *Achitta,* and (3) *Mishra.*

(१) सचित्त द्रव्य स्कन्ध

६२. से किं तं सचित्तदव्वखंधे ?

सचित्तदव्वखंधे अणेगविहे पण्णत्ते। तं जहा–हयखंधे गयखंधे किन्नरखंधे किंपुरिसखंधे महोरगखंधे उसभखंधे। से तं सचित्तदव्वखंधे।

६२. (प्रश्न) सचित्त द्रव्य स्कन्ध क्या है ?

(उत्तर) सचित्त द्रव्य स्कन्ध के अनेक प्रकार हैं। जैसे–हय (अश्व) स्कन्ध, गज (हाथी) स्कन्ध, किन्नर स्कन्ध, किंपुरुष स्कन्ध, महोरग स्कन्ध, वृषभ (बैल) स्कन्ध। इस प्रकार यह सचित्त द्रव्य स्कन्ध का स्वरूप है।

(1) SACHITTA DRAVYA SKANDH

62. (Question) What is *sachitta dravya skandh* (living physical *skandh*)?

(Answer) *Sachitta dravya skandh* (living physical *skandh*) are of many types, such as—*skandh* (herd) of horses, *skandh* (herd) of elephants, *skandh* (group) of *kinnars, skandh* (group) of *kimpurush, skandh* (group) of *mahorags,* (these three are *vyantar dev* or interstitial gods), *skandh* (herd) of bulls.

This concludes the description of *sachitta dravya skandh* (living physical *skandh*).

विवेचन—इस सूत्र में आये किन्नर, किंपुरुष और महोरग–ये तीनों व्यन्तर जाति के देव हैं। प्रज्ञापनासूत्र, पद २७ में आठ प्रकार के व्यन्तर जाति के देवों का वर्णन है। ये देव चंचल प्रकृति वाले, क्रीड़ा व कुतूहलप्रिय होते हैं। सुन्दर वस्त्र, आभूषण पहनना, फूलों की सुगन्धित मालाएँ धारण करना और मन इच्छित विविध रूप बनाना इनकी रुचि के विषय हैं। स्थानांगसूत्र के अनुसार किन्नर–असुरराज चमरेन्द्र की रथ सेना का अधिकारी है तथा किंपुरुष बलि वैराचनेन्द्र का रथ सेनाधिकारी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Elaboration—*Kinnar, Kimpurush* and *Mahorag* are *vyantar* gods or interstitial gods. Description of eight types of *vyantar* gods is available in Prajnapana Sutra. These gods are frivolous (*chanchal*), playful and curious in nature. They love to wear beautiful dresses, ornaments and garlands of fragrant flowers. They are also fond of acquiring a variety of forms and appearances. According to Sthananga Sutra *Kinnar* gods are commanders in the chariot division of *Asuraraj Chamarendra*, and *Kimpurush* gods in that of *Bali Vairochanendra*.

(२) अचित्त द्रव्य स्कन्ध

६३. से किं तं अचित्तदव्वखंधे ?

अचित्तदव्वखंधे अणेगविहे पण्णत्ते। तं जहा—दुपएसिए खंधे तिपएसिए खंधे जाव दसपएसिए खंधे संखेज्जपएसिए खंधे असंखेज्जपएसिए खंधे अणंतपएसिए खंधे।

से तं अचित्तदव्वखंधे।

६३. (प्रश्न) अचित्त द्रव्य स्कन्ध क्या है ?

(उत्तर) अचित्त द्रव्य स्कन्ध अनेक प्रकार का है। जैसे–द्विप्रदेशिक स्कन्ध, त्रिप्रदेशिक स्कन्ध यावत् दस प्रदेशिक स्कन्ध, संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध, असंख्यात प्रदेशिक स्कन्ध, अनन्त प्रदेशिक स्कन्ध।

यह अचित्त द्रव्य स्कन्ध का स्वरूप है।

(2) ACHITTA DRAVYA SKANDH

63. (Question) What is *achitta dravya skandh* (non-living physical *skandh*) ?

(Answer) *Achitta dravya skandh* (non-living physical *skandh*) are of many types, such as—*skandh* with two space-points (*pradesh*), *skandh* with three space-points, (and so on), *skandh* with ten space-points, *skandh* with countable space-points, *skandh* with uncountable space-points and *skandh* with infinite space-points.

This concludes the description of *achitta dravya skandh* (non-living physical *skandh*).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्र परिचय ५

Illustration No. 5

द्रव्य स्कन्ध के तीन भेद

(१) सचित्त द्रव्य स्कन्ध–सजीव पदार्थों का समूह जैसे–हाथी, घोड़े, किन्नर, किंपुरुष, महोरग आदि का समूह (स्कन्ध)

परिचय–किन्नर आदि तीनों व्यन्तर निकाय के आठ देवों में से हैं। इन्हें यक्ष भी कहते हैं। किन्नर–यह असुरराज चमरेन्द्र की रथ सेना का अधिकारी है। किंपुरुष–वैरोचन बलीन्द्र की सेना का अधिकारी अश्व शरीर व नर मुख वाला है। तथा महोरग महाकाय वाला, नाग के शरीर व मानव आकृति वाला व्यन्तर देव है। किन्नरों का अशोक, किंपुरुष का–चंपक तथा महोरगों का नाग–वृक्ष, चैत्य वृक्ष हैं, ये वृक्ष इन्हें सर्वाधिक प्रिय हैं।

(२) अचित्त द्रव्य स्कन्ध–दो प्रदेशी, पंच प्रदेशी से लेकर असंख्य प्रदेशी तथा अनन्त प्रदेशी स्कन्ध तक सभी अचित्त द्रव्य स्कन्ध है।

(३) मिश्र द्रव्य स्कन्ध–जिसमें हाथी, घोड़े, सैनिक आदि सचेतन तथा तलवार, धनुष आदि अचेतन दोनों का मिश्रण हो, जैसे सेना या सैनिक।

–सूत्र ६२ से ६४

THREE TYPES OF DRAVYA-SKANDH (PHYSICAL-AGGREGATE)

(1) Sachitt dravya-skandh (living physical-skandh)—*Skandh* (aggregate or herd or group) of horses, elephants, *Kinnars, skandhs* of *Kimpurush, Mahorags,* etc.

Details—*Kinnar,* etc. are among the eight species of *vyantar* devas (interstitial gods). They are also called *yaksha. Kinnar*—they are commanders in the chariot fleet in the army of Chamarendra, the king of *asuras. Kimpurush*—they have body of a horse with human face and are officers in the army of Vairochan Balindra. *Mahorag—Mahorag* is a *vyantar* god with giant serpent's body and human face. Ashoka, Champak, and Naag trees are the temple-trees of *Kinnar, Kimpurush,* and *Mahorag* gods respectively as they like these most.

(2) Achitt dravya-skandh (non-living physical-skandh)—*skandh* with two space-points (*pradesh*), *skandh* with five space-points, (and so on) up to *skandh* with uncountable space-points, and *skandh* with infinite space-points are all included in this.

(3) Mishra dravya-skandh (mixed physical-skandh)—A mixture of living things like elephants, horses, soldiers, (etc.) and non-living things like sword, bow, (etc.). For example an army or a soldier.

—*Sutra : 62-64*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवेचन–दो प्रदेशी स्कन्ध से लेकर अनन्त प्रदेशी स्कन्ध तक जो और जितने भी पुद्‌गल स्कन्ध हैं वे सब अचित्त द्रव्य स्कन्ध हैं। सबसे अल्प परिमाण वाले पुद्‌गलास्तिकाय का नाम प्रदेश–परमाणु है। दो आदि अनेक परमाणुओं के मेल से बनने वाले स्कन्धों का मूल परमाणु है। परमाणु स्कन्धों का उत्पादक है इसलिए उसे अस्तिकाय कहा है।

Elaboration—Any aggregate or mass of matter starting with a combination of two ultimate particles (*pradesh* or space-point here means ultimate particle) to a heap of infinite ultimate particles are called non-living physical *skandh*. The name of the smallest particle of matter is *pradesh—paramanu* (ultimate particle). Two or more ultimate particles are the constituents of *skandhs* or mass of matter. Therefore it is called *astikaya* (conglamorative ontological category according to Jain philosophy).

(३) मिश्र द्रव्य स्कन्ध

६४. से किं तं मीसदव्वखंधे ?

मीसदव्वखंधे अणेगविहे पण्णत्ते। तं जहा–सेणाए अग्गिमखंधे सेणाए मज्झिमखंधे सेणाए पच्छिमखंधे।

से तं मीसदव्वखंधे।

६४. (प्रश्न) मिश्र द्रव्य स्कन्ध क्या है ?

(उत्तर) मिश्र द्रव्य स्कन्ध अनेक प्रकार का कहा गया है। यथा–सेना का अग्रिम स्कन्ध, सेना का मध्य स्कन्ध, सेना का अन्तिम स्कन्ध।

यह मिश्र द्रव्य स्कन्ध का स्वरूप है।

(3) MISHRA DRAVYA SKANDH

64. (Question) What is *mishra dravya skandh* (mixed physical *skandh*) ?

(Answer) *Mishra dravya skandh* (mixed physical *skandh*) are of many types, such as—advance *skandh* (group) of an army, middle *skandh* (group) of an army and rear *skandh* (group) of an army.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

This concludes the description of *mishra dravya skandh* (mixed physical *skandh*).

विवेचन–सचेतन तथा अचेतन इन दोनों का मिश्रण (संयोग) रूप अवस्था सेना है। हाथी, घोड़े, मनुष्य आदि सचेतन तथा तलवार, धनुष, कवच, भाला आदि अचेतन वस्तुओं के समुदाय का नाम सेना है। इसीलिए इसे मिश्र द्रव्य स्कन्ध कहा है।

Elaboration—Army is a mixture or combination of living and non-living. Elephants, horses, soldiers, etc. are the living constituents and sword, bow, shield, lance, etc. are the non-living constituents. A combination of these two is an army. That is why it is called mixed physical *skandh*.

प्रकारान्तर से स्कन्ध के अन्य भेद

६५. अहवा जाणगसरीर-भवियसरीरवतिरित्ते दव्वखंधे तिविहे पण्णत्ते। तं जहा–(१) कसिणखंधे, (२) अकसिणखंधे, (३) अणेगदवियखंधे।

६५. अथवा ज्ञायक शरीर-भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य स्कन्ध के प्रकारान्तर से तीन प्रकार कहे गये हैं। जैसे–(१) कृत्स्न स्कन्ध (पूर्ण स्कन्ध), (२) अकृत्स्न स्कन्ध (अपूर्ण स्कन्ध), और (३) अनेक द्रव्य स्कन्ध।

ALTERNATIVE CLASSIFICATION

65. Also, *jnayak sharir-bhavya sharir vyatirikta dravya skandh* (physical *skandh* other than the body of the knower and the body of the potential knower) is alternatively of three types—(1) *Kritsna skandh,* (2) *Akritsna skandh,* and (3) *Aneka dravya skandh.*

कृत्स्न स्कन्ध का स्वरूप

६६. से किं तं कसिणखंधे ?

कसिणखंधे से चेव हयक्खंधे गयक्खंधे जाव उसभखंधे। से तं कसिणखंधे।

६६. (प्रश्न) कृत्स्न स्कन्ध क्या है ?

(उत्तर) हय स्कन्ध, गज स्कन्ध यावत् वृषभ स्कन्ध जो पूर्व में कहे, वही कृत्स्न स्कन्ध हैं। यही कृत्स्न स्कन्ध का स्वरूप है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

KRITSNA SKANDH

66. (Question) What is *kritsna skandh* (complete *skandh*)?

(Answer) The aforesaid *skandh* of horses, *skandh* of elephants (and so on up to *skandh* of bulls) are called *kritsna skandh* (complete *skandh*).

This concludes the description of *kritsna skandh* (complete *skandh*).

अकृत्स्न स्कन्ध का स्वरूप

६७. से किं तं अकसिणखंधे ?

अकसिणखंधे से चेव दुपएसियादी खंधे जाव अणंतपदेसिए खंधे।

से तं अकसिणखंधे।

६७. (प्रश्न) अकृत्स्न स्कन्ध क्या है?

(उत्तर) अकृत्स्न स्कन्ध पूर्व में कहे गये द्वि-प्रदेशिक स्कन्ध आदि यावत् अनन्त प्रदेशिक स्कन्ध हैं।

इस प्रकार अकृत्स्न स्कन्ध का स्वरूप जानना चाहिए।

AKRITSNA SKANDH

67. (Question) What is *akritsna skandh* (incomplete *skandh*)?

(Answer) The aforesaid mentioned *skandh* with two space-points (*pradesh*) (and so on up to *skandh* with infinite space-points) are called *akritsna skandh* (incomplete *skandh*).

This concludes the description of *akritsna skandh* (incomplete *skandh*).

विवेचन—अकृत्स्न यानि अपरिपूर्ण। जिस स्कन्ध से अन्य कोई दूसरा बड़ा स्कन्ध होता है, वह अपरिपूर्ण होने के कारण अकृत्स्न स्कन्ध कहलाता है। द्वि-प्रदेशिक (दो परमाणु वाला) आदि स्कन्ध अपूर्ण हैं और इनमें अपरिपूर्णता इस प्रकार है कि द्वि-प्रदेशिक स्कन्ध एक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परमाणु बढ़ाने से आकार बढ़ाये जा सकने की संभावना के कारण अपरिपूर्ण त्रि-प्रदेशिक स्कन्ध से न्यून होने के कारण अपरिपूर्ण है। इसी तरह उत्तरोत्तर की अपेक्षा पूर्व-पूर्व का स्कन्ध अकृत्स्न स्कन्ध जानना चाहिए।

Elaboration—*Akritsna* means incomplete. A *skandh* (aggregate) that is smaller than some other *skandh* (aggregate) is comparatively incomplete and thus it is called *akritsna skandh*. Aggregates with two or more *paramanus* (ultimate particles) are incomplete because one with two ultimate particles is smaller (has the scope of becoming larger by adding more ultimate particles, thus incomplete) than that with three ultimate particles and so on. Thus, in this progression every earlier *skandh* should be considered *akritsna* or incomplete as compared to any later *skandh*.

This concludes the description of *akritsna skandh* (incomplete *skandh*).

अनेक द्रव्य स्कन्ध का स्वरूप

६८. से किं तं अणेगदवियखंधे ?

अणेगदवियखंधे तस्सेव देसे अवचिते तस्सेव देसे उवचिए। से तं अणेगदवियखंधे।

से तं जाणगसरीर-भवियसरीरवतिरित्ते दव्वखंधे। से तं नोआगमतो दव्वखंधे। से तं दव्वखंधे।

६८. (प्रश्न) अनेक द्रव्य स्कन्ध क्या है ?

(उत्तर) एक देश अपचित (रहित) तथा एक देश उपचित (व्याप्त) भाग मिलकर उनका जो समुदाय बनता है, वह अनेक द्रव्य स्कन्ध है।

इस प्रकार से ज्ञायक शरीर-भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य स्कन्ध का निरूपण समाप्त हुआ। नो-आगमतः द्रव्य स्कन्ध का और साथ ही द्रव्य स्कन्ध का वर्णन भी पूर्ण हुआ।

ANEKA DRAVYA SKANDH

68. (Question) What is *aneka dravya skandh* (*skandh* of many entities) ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(Answer) An aggregate of one *apachit* (devoid of life) component and one *upachit* (endowed with life) component is called *aneka dravya skandh* (*skandh* of many entities).

This concludes the description of *jnayak sharir-bhavya sharir vyatirikta dravya skandh* (physical *skandh* other than the body of the knower and the body of the potential knower). This also concludes the description of *No-Agamatah dravya skandh* (physical *skandh* without scriptural knowledge) as well as *dravya skandh* (physical *skandh*).

विवेचन-एक देश अपचित भाग अर्थात् जीव प्रदेशों से रहित (निर्जीव) नख, केशादि रूप भाग एवं एक देश उपचित-जीव प्रदेशों से व्याप्त पीठ, उदर आदि भागों के संयोग से एक विशिष्ट आकार वाला जो देह रूप समुदाय बनता है, वह अनेक द्रव्य स्कन्ध है। जैसे-हय स्कन्ध, गज स्कन्ध आदि।

Elaboration—A specific aggregate in shape of a body constituted of some components with space-points devoid of life (such as nails, hair, etc.) and some components with space-points endowed with life (such as back stomach, etc.) is *aneka dravya skandh* (*skandh* of many entities). For example a horse, an elephant, etc.

(४) भाव स्कन्ध

६९. से किं तं भावखंधे ?

भावखंधे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा-(१) आगमतो य, (२) नोआगमतो य।

६९. (प्रश्न) भाव स्कन्ध क्या है ?

(उत्तर) भाव स्कन्ध दो प्रकार का गया है। वह इस तरह-(१) आगमतः भाव स्कन्ध, (२) नो-आगमतः भाव स्कन्ध।

(4) BHAAVA SKANDH

69. (Question) What is *bhaava skandh* (*skandh* as essence or perfect *skandh*)?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(Answer) *Bhaava skandh* (perfect *skandh*) is of two types—(1) *Agamatah bhaava skandh* (perfect *skandh* in context of *Agam*), and (2) *No-Agamatah bhaava skandh* (perfect *skandh* not in context of *Agam*).

(१) आगमतः भाव स्कन्ध

७०. से किं तं आगमतो भावखंधे ?

आगमतो भावखंधे जाणए उवउत्ते। से तं आगमतो भावखंधे।

७०. (प्रश्न) आगमतः भाव स्कन्ध क्या है ?

(उत्तर) जो स्कन्ध इस पद के अर्थ को जानता है और उपयोगयुक्त है, वह आगमतः भाव स्कन्ध है।

(1) AGAMATAH BHAAVA SKANDH

70. (Question) What is *Agamatah bhaava skandh* (perfect *skandh* with scriptural knowledge) ?

(Answer) One who knows the meaning of the word *skandh* (lump or aggregate) and is sincerely involved with it is called *Agamatah bhaava skandh* (perfect *skandh* with scriptural knowledge).

(२) नोआगमतः भाव स्कन्ध

७१. से किं तं नोआगमओ भावखंधे ?

नोआगमओ भावखंधे एएसिं चेव सामाइयमाइयाणं छण्हं अज्झयणाणं समुदय-समिइ-समागमेणं निप्पन्ने आवस्सगयसुयक्खंधे भावखंधे त्ति लब्भइ।

से तं नोआगमतो भावखंधे। से तं भावखंधे।

७१. (प्रश्न) नो-आगमतः भाव स्कन्ध क्या है ?

(उत्तर) सामायिक आदि इन्हीं छः अध्ययनों के समुदय के मिलने से निष्पन्न आवश्यक श्रुत स्कन्ध नो-आगमतः भाव स्कन्ध कहलाता है।

इस प्रकार से नो-आगमतः भाव स्कन्ध तथा भाव स्कन्ध की वक्तव्यता जानना चाहिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(2) NO-AGAMATAH BHAAVA SKANDH

71. (Question) What is *No-Agamatah bhaava skandh* (perfect *skandh* without scriptural knowledge) ?

(Answer) *No-Agamatah bhaava skandh* (perfect *skandh* without scriptural knowledge) is *Avashyak shrut skandh* (the book of this name) made up of the aggregate of six chapters including *Samayik.*

This concludes the description of *No-Agamatah bhaava skandh* (perfect *skandh* without scriptural knowledge). This also concludes the description of *bhaava skandh* (perfect *skandh*).

विवेचन—इस सूत्र में समुदय (समूह), समिति (अव्यवहित मिलन) तथा समागम (परस्पर सम्बद्ध होना) इन तीनों शब्दों से यहाँ सामायिक आदि छहों आवश्यकों की एकात्मकता बताई है।

Elaboration—This aphorism reveals the oneness of the six obligatory duties (*avashyak*) including *Samayik* by using the three terms *samudaya, samiti* and *samagam. Samudaya* means collection or aggregate. *Samiti* means unrestricted union. *Samagam* means joined together or interwoven.

स्कन्ध के पर्यायवाची नाम

७२. तस्स णं इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणावंजणा नामधेज्जा भवंति। तं जहा—

गण काय निकाय खंध वग्ग रासी पुंजे य पिंड नियरे ये।
संघाय आकुल समूह भावखंधस्स पज्जाया॥५॥

से तं खंधे।

७२. उस भाव स्कन्ध के विविध घोषों एवं व्यंजनों वाले एकार्थक (पर्यायवाची) नाम इस प्रकार हैं—

(गाथार्थ) (१) गण, (२) काय, (३) निकाय, (४) स्कन्ध, (५) वर्ग, (६) राशि, (७) पुँज, (८) पिण्ड, (९) निकर, (१०) संघात, (११) आकुल, और (१२) समूह—ये सभी भाव स्कन्ध के पर्याय हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

SYNONYMS OF SKANDH

72. Some synonyms, having a variety of vowels and consonants, of this *skandh* are as follows—

(1) *Gana,* (2) *Kaya,* (3) *Nikaya,* (4) *Skandh,* (5) *Varg,* (6) *Rashi,* (7) *Punj,* (8) *Pind,* (9) *Nikar,* (10) *Samghat,* (11) *Akul,* and (12) *Samuh.*

विवेचन—पर्यायवाची शब्दों की व्याख्या इस प्रकार है–

(१) **गण**—अनेक इकाइयों के संगठित रूप को 'गण' कहते हैं।

(२) **काय**—एक साथ घनीभूत अनेक समान इकाइयों के लिए 'काय' शब्द का प्रयोग किया जाता है, जैसे—पृथ्वीकाय।

(३) **निकाय**—'निकाय' शब्द का प्रयोग पृथक्-पृथक् समूहों के संयुक्त समूह के लिए किया जाता है, जैसे—षड्जीव निकाय।

(४) **स्कन्ध**—अनेक परमाणु निर्मित समूह 'स्कन्ध' कहा जाता है, जैसे—त्रिप्रदेशी स्कन्ध।

(५) **वर्ग**—समान जाति वाले समूह के लिए 'वर्ग' शब्द का व्यवहार होता है, जैसे—गोवर्ग।

(६) **राशि**—ढेर के लिए 'राशि' शब्द का प्रयोग होता है, जैसे—धनराशि।

(७) **पुंज**—बिखरने वाली या विकीर्णधर्मी वस्तुओं के एकत्र समूह के लिए 'पुँज' शब्द का प्रयोग होता है, जैसे—प्रकाश पुँज।

(८) **पिण्ड**—'पिण्ड' शब्द का प्रयोग पृथक् बिखरने वाली वस्तुओं के अपेक्षाकृत स्थायी एकत्र रूप के अर्थ में होता है, जैसे—गुड़ का पिण्ड।

(९) **निकर**—'निकर' शब्द का अर्थ है एक पात्र में डाली हुई वस्तुओं का समूह।

(१०) **संघात**—दूरी कम करते हुए एकत्र होने के अर्थ में 'संघात' शब्द का प्रयोग होता है, जैसे—तीर्थ स्थानों पर एकत्र जन संघात।

(११) **आकुल**—संकीर्ण स्थान पर बहुत भीड़ इकट्ठी होने के अर्थ में 'आकुल' शब्द का प्रयोग होता है, जैसे—जनाकुल राजमार्ग।

(१२) **समूह**—समुदाय के अर्थ में 'समूह' शब्द का प्रयोग होता है, जैसे—जनसमुदाय।

Elaboration—(1) *Gana* means an organized group of many units, such as a clan or a group of ascetics.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(2) *Kaya* means numerous units coalesced in the form of a body, such as *prithvikaya* or earth-bodied.

(3) *Nikaya* means a group formed by bringing together many groups, such as *shadjiva nikaya* or six life-forms.

(4) *Skandh* means a cluster of many particles, such as a cluster of three ultimate particles.

(5) *Varg* means a group of same species, such as a herd of cows.

(6) *Rashi* means a heap of many things, such as a heap of money.

(7) *Punj* means a mass of things with tendency to scatter or diffuse, such as a mass of light.

(8) *Pind* means a comparatively stable lump of things with tendency to scatter or fall apart, such as a lump of sugar.

(9) *Nikar* means numerous things collected in a vessel.

(10) *Samghat* means coming together to form a group, such as a group of pilgrims.

(11) *Akul* means crowding together in a confined area, such as a crowded highway.

(12) *Samuh* a is a general term for group or herd or mass, such as a mass of people.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आवश्यक अर्थाधिकार प्रकरण
THE DISCUSSION ON PURVIEW OF AVASHYAK

अर्थाधिकार प्ररूपणा

७३. आवस्सगस्स णं इमे अत्थाहिगारा भवंति। तं जहा–

(१) सावज्जजोगविरती, (२) उक्कित्तणं, (३) गुणवओ य पडिवत्ती।

(४) खलियस्स निंदणा, (५) वणतिगिच्छे, (६) गुणधारणा चेव॥६॥

७३. आवश्यक के अर्थाधिकारों के नाम इस प्रकार हैं–

(गाथार्थ) (१) सावद्ययोग विरति, (२) उत्कीर्तन, (३) गुणवत् प्रतिपत्ति, (४) स्खलित निन्दा, (५) व्रण चिकित्सा, और (६) गुण धारणा।

PURVIEW OF AVASHYAK

73. The purview of *Avashyak* (*Sutra*) includes the following themes—

(1) *Savadyayog virati,* (2) *Utkirtan,* (3) *Gunavat Pratipatti,* (4) *Skhalit ninda,* (5) *Vrana chikitsa,* and (6) *Guna dharana.*

७४. आवस्सगस्स एसो पिंडत्थो वण्णितो समासेणं।

एत्तो एक्केक्कं पुण अज्झयणं कित्तइस्सामि॥७॥

तं जहा–(१) सामाइयं, (२) चउवीसत्थओ, (३) वंदणं, (४) पडिक्कमणं, (५) काउस्सग्गो, (६) पच्चक्खाणं।

७४. इस प्रकार से आवश्यक के समुदायार्थ का संक्षेप में कथन किया है। अब एक-एक अध्ययन का वर्णन करूँगा।

(१) सामायिक, (२) चतुर्विंशतिस्तव, (३) वंदना, (४) प्रतिक्रमण, (५) कायोत्सर्ग, और (६) प्रत्याख्यान।

74. I have already discussed *Avashyak (Sutra)* as an aggregate in brief. Now I will take up each individual chapter, which are listed here—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(1) Samayik, (2) Chaturvimshatistav, (3) Vandana, (4) Pratikraman, (5) Kayotsarg, and vi. Pratyakhyan.

विवेचन–आवश्यक का अर्थाधिकार से मतलब है आवश्यक का प्रतिपाद्य विषय। सूत्र ७४ में आवश्यक के छह अध्ययनों के नाम बताये हैं और सूत्र ७३ में उनके प्रतिपाद्य विषय का कथन है। इस प्रकार दोनों सूत्र परस्पर सम्बद्ध हैं। पहले आवश्यक के प्रतिपाद्य का कथन किया जाता है–

(१) **सावद्ययोग विरति**–आवश्यक का प्रथम अध्ययन है सामायिक। इस सामायिक अध्ययन का विषय हैं–सावद्य योगों से विरति। हिंसा, असत्य आदि पापकारी प्रवृत्तियाँ सावद्ययोग हैं, इन प्रवृत्तियों से निवृत्त होना सावद्ययोग विरति है। एक प्रकार से प्रथम सामायिक आवश्यक का यही उद्देश्य है, यही उसका प्रतिपाद्य है।

(२) **उत्कीर्तन**–स्वयं सर्व सावद्ययोगों से विरति करने वाले तथा विरति रूप धर्म का उपदेश देने वाले तीर्थंकर आदि सद्‌गुणी पुरुषों के गुणों का कीर्तन (कथन) करना उत्कीर्तन है। दूसरा अध्ययन है, **चतुर्विंशतिस्तव**। इसमें चौबीस तीर्थंकरों के गुणों का कीर्तन है। इससे सम्यक्त्व रूप दर्शन की विशुद्धि होती है तथा ज्ञानावरणीय आदि कर्मों का क्षय होता है।

(३) **गुणवत् प्रतिपत्ति**–'गुण' से अभिप्राय है पाँच महाव्रत रूप, मूलगुण तथा क्षमा आदि उत्तरगुणों को धारण करने वाले गुणी पुरुषों की प्रतिपत्ति–बहुमान–वंदना। **वन्दना** तीसरे वन्दना आवश्यक का विषय है। आवश्यक निर्युक्ति (११२८) के अनुसार दीक्षा और आयु में ज्येष्ठ पुरुषों का यथायोग्य बहुमान करना गुणवत् प्रतिपत्ति है।

(४) **स्खलित निन्दा**–आवश्यक के चतुर्थ अध्ययन **प्रतिक्रमण** में स्खलित अर्थात् दोषों की निन्दा की जाती है। अरिहंत देव द्वारा प्ररूपित साधना के नियमों व मर्यादाओं का अतिक्रमण करना स्खलना है। अतिक्रमण से वापस लौटना प्रतिक्रमण है। प्रतिक्रमण मुख्यतः चार विषयों का किया जाता है–

(१) निषिद्ध कार्य करना, (२) विहित कार्य न करना, (३) मोक्ष के साधनों में अश्रद्धा करना, तथा (४) विपरीत प्ररूपणा करना।

(५) **व्रण चिकित्सा**–पाँचवें कायोत्सर्ग नामक अध्ययन का मुख्य विषय है व्रण चिकित्सा। शरीर में घाव हो जाने पर मलहम ऑपरेशन आदि से उसकी चिकित्सा करके शरीर को रोगमुक्त रखा जाता है। उसी प्रकार संयम में दोष लगने पर उसकी शुद्धि हेतु कायोत्सर्ग किया जाता है। आचार्यों ने उपमा द्वारा बताया है–चारित्र पुरुष शरीर रूप है। चारित्र का नाश करने वाली क्रियाएँ उभरे व्रण के समान हैं, दस प्रकार के प्रायश्चित्त, शरीर व्युत्सर्ग (ध्यान) १२ अनुप्रेक्षा-भावना आदि के द्वारा उन घावों की चिकित्सा करना व्रण चिकित्सा है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(६) गुण धारणा—छठे प्रत्याख्यान आवश्यक का विषय है गुणों को धारण करना। अहिंसा, सत्य आदि मूलगुण तथा दस प्रकार के प्रत्याख्यान रूप उत्तरगुणों को जीवन में धारण कर निरतिचार संयम पालने का संकल्प गुण धारणा है।

प्रत्याख्यान अनागत अर्थात् भविष्य का होता है। विगत की भूलों का प्रतिक्रमण किया जाता है तथा भविष्य के लिए गुणों को धारण करना प्रत्याख्यान का विषय है। *(इनका विस्तृत विवेचन आत्मज्ञान पीयूषवर्षिणी टीका, भाग १; पृ. ३७७-४०० देखें।)*

Elaboration—The meaning of the term *arthadhikara* is purview or theme. In aphorism 74 are listed the titles of the six chapters in *Avashyak (Sutra)* and in aphorism 73 are listed their themes or the topics discussed. Thus both aphorisms are related. The themes are discussed first—

(1) *Savadyayog virati* (abstinence from sinful activities)—The first chapter of *Avashyak (Sutra)* is *Samayik*. The topic discussed in this chapter is abstinence from sinful or vile activities. Violence, falsity and other sinful attitudes are included in this. To dissociate from all these is abstinence from vile activities. In a way this is the purpose of *samayik,* the first obligatory duty and, therefore, the theme of this chapter.

(2) *Utkirtan* (eulogize)—To recite, chant and eulogize the virtues of *Tirthankars* and other sagacious persons who abstain from sinful activities as well as preach such religion. The second chapter is *Chaturvimshatistava*. This contains praise of twenty four *Tirthankars* in the form of panegyrics, etc. This helps purify perception leading to righteousness and destruction of the *Jnanavaraniya karma* (knowledge obscuring *karma*) and other *karmas.*

(3) *Gunavat Pratipatti* (homage to venerable ones)—*Guna* means virtues and here it specifically means the five great vows including *ahimsa* and auxiliary virtues like forgiveness. *Pratipatti* means to pay homage. As such, the phrase means to pay homage to the venerable ones endowed with the said virtues. This is the theme of the third chapter, *Vandana*. According to *Avashyak Nirykti* (1128) to offer due respect and veneration to individuals senior in age and initiation is called *Gunavat Pratipatti* (homage to venerable ones).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आवश्यक के छह अधिकार

SIX FACETS OF AVASHYAK

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

चित्र परिचय ६

Illustration No. 6

आवश्यक के छह अधिकार

आवश्यक के छह अर्थाधिकार इस प्रकार हैं– (आराधना की मुद्राएँ चित्र में देखें)

(१) **सामायिक**–स्थिर आसन से बैठकर हिंसा, राग-द्वेष आदि सावद्य व्यापार का त्याग करना।

(२) **चतुर्विंशतिस्तव**–स्थिरता व एकाग्रता पूर्वक खड़ा होकर चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति उत्कीर्तना करना।

(३) **वन्दना**–गुणों में श्रेष्ठ अरिहंत देव तथा गुरु आदि को भक्ति पूर्वक वन्दना करना दोनों घुटने टेककर, दो हाथ, तथा मस्तक यों पंचांग नमाकर वन्दना की जाती है।

(४) **प्रतिक्रमण**–सामायिक ग्रहण के पश्चात् साधना काल में प्रमाद आदि वश हुई स्खलना रूप दोषों की शुद्धि करके पुनः संयम में स्थिर होना। यह खड़े होकर या स्थिर आसन से बैठकर किया जाता है।

(५) **कायोत्सर्ग**–शरीर एवं मन की चंचलता तथा आसक्ति का त्याग कर ध्यान में स्थिर होना। बैठकर या खड़े-खड़े कायोत्सर्ग किया जाता है।

(६) **प्रत्याख्यान**–गुरुजनों के समक्ष तथा आत्म-साक्षि पूर्वक मूल गुण एवं उत्तर गुणों की वृद्धि करते हुए भविष्य के लिए व्रतबद्ध होना

–सूत्र ७४

THE SIX THEMES OF AVASHYAK

The six themes of *Avashyak* are as follows (refer to the illustration for the postures)—

(1) Samayik—To sit firmly in a meditative posture and resolve to practice equanimity by abstaining from violence, attachment-aversion and other sinful activities.

(2) Chaturvimshatistava—To stand firmly and with all concentration recite panegyrics of twenty four *Tirthankars*. This helps purify perception and is also called *Utkirtana* (eulogizing).

(3) Vandana—To pay homage with all devotion to the venerable ones, including *Tirthankars*, endowed with all virtues. This is done by bowing five parts of the body (placing knees on the ground, joining palms and touching forehead to ground).

(4) Pratikraman—To undo the faults committed due to ignorance and stupor during the practice of *Samayik* by a critical review and regain the level of concentration. This is done both in standing as well as sitting postures.

(5) Kayotsarga—To abandon fondness for the body, dissociate one's mind from it and be firm in meditation. This can be done in sitting as well as standing posture.

(6) Pratyakhyan—To take a vow for future observance, in presence of seniors and keeping one's soul as witness, aimed at enhancing basic and auxiliary virtues.

—Sutra : 74

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(4) *Skhalit ninda* (criticizing faults)—*Skhalit* means fallen and here it means cause of falling or faults and failures. *Ninda* means criticism or censure. In the fourth chapter, *Pratikraman*, faults and failings are criticized and censured. Faults and failures mean transgressions (*atikraman*) of codes and disciplines propounded by *Tirthankars*. The process of undoing is through critical review (*pratikraman*). On the spiritual path *pratikraman* (critical review) is done with respect to four actions—

(i) To indulge in censured or proscribed activities.

(ii) To avoid prescribed or pious activities.

(iii) To disbelieve and show disrespect for means of liberation.

(iv) To propagate dissenting or heretic views.

(5) *Vrana chikitsa* (healing wounds)—The central theme of the fifth chapter, *Kayotsarg*, is *vran* (wound or sore) *chikitsa* (to heal). When the body is wounded, efforts are made to treat it with the help of surgery or medicine or other such means. In the same way *kayotsarg* (practice of dissociating mind from the body) is done to purge and absolve oneself from the faults and failings in observing ascetic discipline. This has been stated by some *acharyas* metaphorically—'Consider ascetic conduct to be a human body. Sinful activities and transgressions are like wounds on this body. To heal this body with the help of ten types of atonements, meditation and dissociation of mind from body (*kayotsarg*), and twelve types of sublime contemplation is called *vrana chikitsa* (healing wounds).

(6) *Guna dharana* (acquiring virtues)—The theme of the sixth chapter, *Pratyakhyan*, is to acquire virtues. The resolve to acquire the basic virtues like *ahimsa* and other great-vows along with the auxiliary virtues like the ten *pratyakhyans* (practice of specific preparatory codes that help acquire virtues) and practice ascetic discipline without any transgressions is called *guna dharana* (acquiring virtues).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Pratyakhyan (acquiring virtues) is aimed at future. *Pratikraman* (critical review) is meant for the failures in the past whereas *pratyakhyan* is meant for acquisition of virtues for the future. (refer to the *Tika of Anuyogadvar Sutra* by Shri Jnana Muni, pp. 377-400 for more details.)

अनुयोगद्वार–नामनिर्देश

७५. तत्थ पढमज्झयणं सामाइयं। तस्स णं इमे चत्तारि अणुओगद्दारा भवंति। तं जहा–(१) उवक्कमे, (२) णिक्खेवे, (३) अणुगमे, (४) णए।

७५. इन (छह अध्ययनों) में से प्रथम सामायिक अध्ययन के यह चार अनुयोग द्वार हैं–(१) उपक्रम, (२) निक्षेप, (३) अनुगम, और (४) नय।

ANUYOGADVAR

75. First of these chapters is *Samayik* and it has following four *anuyogadvars* (approaches of disquisition)—(1) *Upakram,* (2) *nikshep*, (3) *anugam,* and (4) *naya.*

विवेचन–"**एक्केक्कं पुण अज्झयणं कित्तइस्सामि**" के निर्देशानुसार सूत्रकार ने सर्वप्रथम सामायिक सम्बन्धी विचारणा प्रारम्भ की है।

सामायिक की निर्युक्ति–"समस्य आयः–समायः प्रयोजनमस्येति सामायिकम्।"–सर्वभूतों में आत्मवत् दृष्टि से सम्पन्न राग-द्वेषरहित आत्मा के (समभाव रूप) परिणाम को सम और इस सम की आय-प्राप्ति या ज्ञानादि गुणोत्कर्ष के साथ लाभ को समाय कहते हैं। यह समाय ही जिसका प्रयोजन है, उनका नाम सामायिक है। अर्थात् समभाव-प्राप्ति की साधना।

पहले बताया जा चुका है कि अध्ययन के अर्थ का कथन करने की विधि का नाम अनुयोग है। अथवा सूत्र के साथ अर्थ का अनुकूल अर्थ स्थापित करना अनुयोग है। जिस प्रकार नगर में प्रवेश करने के चार द्वार होने से नगर में जाना-आना सरल होता है उसी प्रकार शास्त्ररूपी नगर में चार द्वारों से प्रवेश करने पर शास्त्र का रहस्य समझने में सरलता होती है। चार द्वार हैं–उपक्रम, निक्षेप, अनुगम और नय।

उपक्रम–शास्त्र की व्याख्या करने का पहला द्वार है उपक्रम। जिससे श्रोता और पाठक को शास्त्र का प्रारम्भिक परिचय प्राप्त होता है, अर्थात् शास्त्र का गम्भीर विषय जिससे अपने समीप आ जाता है उस प्रयत्न को 'उपक्रम' कहा जाता है। इसका समानार्थक शब्द है

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्र परिचय ७	Illustration No. 7

उपक्रम और अनुगम

अनुयोग को समझने के चार द्वार हैं, उपक्रम, निक्षेप, अनुगम और नय।

उपक्रम

जैसे किसी ने अंधकार पूर्ण स्थान पर रखी हुई वस्तु को देखने के लिए दीपक का प्रकाश किया तो सभी वस्तुएँ दीखने लग गईं। उसी प्रकार शास्त्र का भाव या रहस्य समझने के लिए पहले उसका प्रारम्भिक परिचय पाना उपक्रम कहा गया है।

अनुगम

जैसे मंजिल की ओर कोई जा रहा है, उसकी छायाकृति को देखकर अथवा नदी की बालू रेत पर मँड़े चरण चिन्हों का अनुगमन करके दूसरा व्यक्ति लक्ष्य स्थल तक पहुँचा जाता है, उसी प्रकार सूत्र रूप पदों के आधार पर प्रसंग के अनुरूप उसके विस्तृत गम्भीर भाव को उद्घाटित करना–अनुगम है।

–सूत्र ७५

UPAKRAM AND ANUGAM

To understand *anuyoga* (disquisition) there are four *dvaras* (doors or approaches)—*upakram, nikshep, anugam,* and *naya.*

Upakram (introduction)

As things lying in dark become visible by lighting a lamp, likewise the theme or essence of a scripture is revealed by introduction.

Anugam (interpretation)

By following the shadow or foot-prints in sand of a person proceeding towards a goal, another person can also reach the goal. In the same way by deriving suitable meaning from aphorisms according to the theme or context it is possible to interpret the profound and detailed meaning. This process is called *anugam.*

—Sutra : 75

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उपोद्‌घात। इसकी उपयोगिता का कथन करते हुए जिनभद्र गणि कहते हैं–"जैसे अँधेरे में रखी हुई वस्तु दीपक जलाने से साफ दिखाई देती है, उसी प्रकार शास्त्र में निहित भाव 'उपक्रम' या उपोद्‌घात द्वारा अभिव्यक्त हो जाता है। *(आचार्य महाप्रज्ञ, पृ. ७१)*

निक्षेप–शास्त्र की व्याख्या करने का यह दूसरा द्वार है। शब्द में अर्थ का निक्षेप करके हम उससे अपने कथनीय भाव को व्यक्त कर सकते हैं। इसकी व्याख्या सूत्र ७ के विवेचन में की जा चुकी है।

अनुगम–शास्त्र की व्याख्या करने का यह तीसरा द्वार है। सूत्र के अनुकूल अर्थ का कथन करना अनुगम है। निक्षेप से किये हुए भेदों में से प्रकरण या प्रसंग के अनुसार अर्थ की उद्‌भावना करना अनुगम है। चूर्णिकार के अनुसार **सुत्तं अणु तस्स अणुरूव गमणत्तातो अणुगमो**– 'सूत्र' को अणु कहा है। उसके अनुकूल उचित अर्थ का गमन करना–ग्रहण करना अनुगम है।

नय–सूत्र की व्याख्या करने का चौथा द्वार है 'नय'। वस्तु अनन्त धर्मात्मक होती है, परन्तु उसके अनन्त धर्मों का एक साथ कथन नहीं किया जा सकता। उसमें रहे अन्य धर्मों का निषेध नहीं करते हुए एक धर्म का सापेक्ष कथन करना नय है। इसकी व्याख्या आगे की जायेगी।

Elaboration—Following the statement that 'Now I will take up each individual chapter.' the author first of all starts the discussion about *Samayik,* the first chapter.

Meaning of *samayik*—The attitude of equanimity present in a soul devoid of attachment and aversion and endowed with a perception of sameness of all elements with the self is called *sam* (equality). The acquisition (*aaya*) of this attitude of equality (*sam*) through enhancing virtues like knowledge is called *samaya.* The instrument or means of this acquisition is called *samayik.* Thus *samayik* means the practice of acquiring the attitude of equality or equanimity.

As already stated, to systematically analyze and elaborate the words and text or to fit (*yoga*) the right meaning at right place is called *anuyoga* (disquisition). It is easy to go in and come out of a city that has four gates (*dvars*). In the same way it is easy to grasp the meaning of a city-like complex scripture if we enter it through four gates (*dvar* or approach). These four *dvars* (approaches) are *upakram, nikshep, anugam* and *naya.*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Upakram (introduction)—The first approach is *upakram* or introduction. That which provides preliminary information or an overview of a scripture to audience or reader is called *upakram* (introduction). In other words, the effort to bring the profound and complex content of a scripture within the reach of a reader is called introduction or preface. Stressing its importance Jinbhadra Gani states—As things lying in dark become visible by lighting a lamp, likewise the theme or essence of a scripture is revealed by introduction. (commentary by Acharya Mahaprajna, p. 71)

Nikshep (attribution)—The second approach is nikshep, which means to attribute meanings to words to facilitate expressing ideas. (for details see aphorism 7)

Anugam (interpretation)—The third approach is *anugam*. To correctly interpret an aphorism or a text is called *anugam*. To select proper terms or meanings from the variety of interpretations made through attribution in accordance with the theme or context is called *anugam* (interpretation). According to the commentator (*Churni*) *Sutra* or aphorism is called *'anu'*; to derive a suitable meaning is called *gaman*. Thus to interpret correctly means *anugam*.

Naya—The third approach is *naya*. Everything in this universe is multifaceted. All its attributes cannot be expressed at once. To express one of its attributes in relative terms without negating all the other attributes is called *naya* (aspect or viewpoint). This will be discussed in details in due course.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उपक्रम प्रकरण
THE DISCUSSION ON UPAKRAM

उपक्रम के भेद

७६. से किं तं उवक्कमे ?

उवक्कमे छव्विहे पण्णत्ते। तं जहा-(१) नामोवक्कमे, (२) ठवणोवक्कमे, (३) दव्वोवक्कमे, (४) खेत्तोवक्कमे, (५) कालोवक्कमे, (६) भावोवक्कमे।

७६. (प्रश्न) उपक्रम क्या है ?

(उत्तर) उपक्रम के छह भेद हैं। वे इस प्रकार हैं-(१) नाम उपक्रम, (२) स्थापना उपक्रम, (३) द्रव्य उपक्रम, (४) क्षेत्र उपक्रम, (५) काल उपक्रम, और (६) भाव उपक्रम।

TYPES OF UPAKRAM

76. (Question) What is *upakram* ?

(Answer) *Upakram* (introduction) is of six types—(1) *Naam upakram,* (2) *Sthapana upakram,* (3) *Dravya upakram,* (4) *Kshetra upakram,* (5) *Kaal upakram,* and (6) *Bhaava upakram.*

(१) नाम और (२) स्थापना उपक्रम

७७. नाम-ठवणाओ गयाओ।

७७. नाम उपक्रम और स्थापना उपक्रम का स्वरूप नाम आवश्यक एवं स्थापना आवश्यक के समान जानना चाहिए।

(1) NAAM AND (2) STHAPANA UPAKRAM

77. *Naam* and *sthapana upakram* should be taken to be same as *naam avashyak* and *sthapana avashyak.*

विवेचन-किसी चेतन या अचेतन पदार्थ आदि का 'उपक्रम' ऐसा नाम रख लेना नाम उपक्रम है और किसी पदार्थ में उपक्रम का आरोप करना, उपक्रम रूप से उसे मान लेना स्थापना उपक्रम कहलाता है। (नाम स्थापना की व्याख्या सूत्र १२ के अनुसार समझना चाहिए।)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Elaboration—To assign *upakram* as a name to a living being, a non-living thing, (etc.) is called *naam upakram* or *upakram* as name. The notional installation or illustration or imagination of *upakram* in or through a thing is called *sthapana upakram* (*upakram* as notional installation). (refer to aphorisms 10-12 for details.)

(३) द्रव्य उपक्रम

७८. से किं तं दव्वोवक्कमे ?

दव्वोवक्कमे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा–(१) आगमओ य, (२) नोआगमओ य। जाव जाणगसरीर-भवियसरीरवतिरित्ते दव्वोवक्कमे तिविहे पण्णत्ते। तं जहा– (१) सचित्ते, (२) अचित्ते, (३) मीसए।

७८. (प्रश्न) द्रव्य उपक्रम क्या है ?

(उत्तर) द्रव्य उपक्रम दो प्रकार का है–(१) आगमतः द्रव्य उपक्रम, (२) नो-आगमतः द्रव्य उपक्रम इत्यादि पूर्ववत् जानना चाहिए यावत् ज्ञायक शरीर-भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य उपक्रम के तीन प्रकार हैं। वे इस तरह हैं–(१) सचित्त द्रव्य उपक्रम, (२) अचित्त द्रव्य उपक्रम, (३) मिश्र द्रव्य उपक्रम।

(3) DRAVYA UPAKRAM

78. (Question) What is *dravya upakram* (physical aspect of *upakram*)?

(Answer) *Dravya upakram* (physical aspect of *upakram* or introduction) is of two kinds—*Agamatah dravya upakram* (physical aspect of *upakram* in context of *Agam*) and *No-Agamatah dravya upakram* (physical aspect of *upakram* not in context of *Agam* or only in context of action). From this point up to *jnayak sharir-bhavya sharir vyatirikta dravya upakram* (physical *upakram* other than the body of the knower and the body of the potential knower) should be considered same as mentioned earlier. However, *jnayak sharir-bhavya sharir vyatirikta dravya upakram* (physical *upakram* other than the body of the knower and the body of the potential knower) is of three

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

types—(1) *Sachitt dravya upakram,* (2) *Achitta dravya upakram,* and (3) *Mishra dravya upakram.*

विवेचन–द्रव्य उपक्रम की व्याख्या इस प्रकार समझना चाहिए–

भूतकालीन अथवा भविष्यत्कालीन उपक्रम की पर्याय को वर्तमान में उपक्रम रूप से कहना द्रव्य उपक्रम है। इसके भी द्रव्य आवश्यक के भेदों की तरह आगम और नो-आगम को आश्रित करके दो भेद हैं। उनमें से उपक्रम के अर्थ में उपयोग शून्य ज्ञाता की अपेक्षा द्रव्य उपक्रम है और नोआगम को आश्रित करके ज्ञायक शरीर, भव्य शरीर तथा दोनों से व्यतिरिक्त, ये तीन भेद होते हैं। उनमें उपक्रम के अनुपयुक्त ज्ञाता का निर्जीव शरीर नो-आगमतः ज्ञायक शरीर द्रव्य उपक्रम तथा जिस प्राप्त शरीर से जीव आगे उपक्रम के अर्थ को सीखेगा वह भव्य शरीर द्रव्य उपक्रम है और इन दोनों से व्यतिरिक्त नो-आगम द्रव्य उपक्रम का सूत्र में इस प्रकार से संकेत किया है–

जिस उपक्रम का विषय सचित्त द्रव्य है, अचित्त द्रव्य है और सचित्त-अचित्त दोनों प्रकार का द्रव्य है, उसे अनुक्रम से सचित्त द्रव्य उपक्रम, अचित्त द्रव्य उपक्रम और उभय-व्यतिरिक्त मिश्र द्रव्य उपक्रम जानना चाहिए। इनकी विशेषता के साथ स्पष्टीकरण आगे सूत्रों में किया जा रहा है–

Elaboration—*Dravya upakram* (physical introduction) is explained as follows—

To call the past and future variant of *upakram* as *upakram* even at the present time is *dravya upakram* (physical introduction). Like *dravya avashyak* this also has two classes in context of *Agam* (physical aspect in context of *Agam*) and *No-Agam* (physical aspect not in context of *Agam*). Of these *dravya upakram* is in context of the knower uninvolved in the meaning of *upakram.* In context of *No-Agam* there are three classifications *jnayak sharir, bhavya sharir,* and other than these two. The lifeless body of an uninvolved knower is *No-Agam jnayak sharir dravya upakram* (physical *upakram* as the body of the knower not in context of *Agam*). The existing body with which he will learn the meaning of *upakram* is *bhavya sharir dravya upakram* (physical *upakram* as the body of the potential knower not in context of *Agam*). The *No-Agam dravya upakram* other then these two has been defined as follows—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

The kinds of *upakram* that deal with *sachitt dravya, achitta dravya* and *mishra dravya* are called *sachitt dravya upakram, achitta dravya upakram* and *mishra dravya upakram* (other than the said two) respectively. These will be elaborated in the following aphorisms—

(१) सचित्त द्रव्य उपक्रम

७९. से किं तं सचित्तदव्वोवक्कमे ?

सचित्तदव्वोवक्कमे तिविहे पण्णत्ते। तं जहा—(१) दुपयाणं, (२) चउप्पयाणं, (३) अपयाणं। एक्केक्के दुविहे—(१) परिकम्मे य (२) वत्थुविणासे य।

७९. (प्रश्न) सचित्त द्रव्य उपक्रम क्या है ?

(उत्तर) सचित्त द्रव्य उपक्रम तीन प्रकार का है। यथा—(१) **द्विपद**—दो पैर वाले मनुष्यादि द्रव्यों का उपक्रम, (२) **चतुष्पद**—चार पैर वाले पशु आदि का उपक्रम, (३) **अपद**—बिना पैर वाले वृक्षादि द्रव्यों का उपक्रम। इनमें से प्रत्येक उपक्रम दो-दो प्रकार के हैं—(१) परिकर्म द्रव्य उपक्रम, (२) वस्तुविनाश द्रव्य उपक्रम।

(1) SACHITT DRAVYA UPAKRAM

79. (Question) What is this *sachitt dravya upakram* (physical *upakram* pertaining to the living) ?

(Answer) *Sachitt dravya-upakram* (physical *upakram* pertaining to the living) is of three types—(1) *dvipad* or pertaining to bipads, (2) *chatushpad* or pertaining to quadrupads, and (3) *apad* or pertaining to those without feet. Each of these have two sub-categories—(1) *parikarma dravya upakram* (nourishment oriented) and (2) *vastuvinash dravya upakram* (destruction oriented).

विवेचन—यहाँ उपक्रम का प्रयोग प्रारम्भ करने के अर्थ में किया गया है। इस सूत्र में उपक्रम की प्रक्रिया दो तरह से बताई है—परिकर्म रूप और वस्तुविनाश रूप। मनुष्य, पशु व वृक्ष आदि को घी, दूध, चारा से पुष्ट करना, जल-खाद आदि से संवर्द्धन करना परिकर्म है तथा हानिकारक तत्त्वों व शस्त्र आदि से उनको नष्ट करना वस्तुविनाश द्रव्य उपक्रम है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Elaboration—In this context *upakram* conveys the sense of 'to begin a work'. This aphorism explains the process of *upakram* (commencing the act of) in two ways—as *parikarma* (nourishment) and as *vastuvinash* (destruction). To start nourishing human beings, animals and plants by providing butter and milk, animal-feed, and water and manure respectively is called *parikarma dravya upakram.* To start destroying them with the help of weapons, etc. is *vastuvinash dravya upakram.*

८०. से किं तं दुपए उवक्कमे ?

दुपए उवक्कमे दुपयाणं नडाणं नट्टाणं जल्लाणं मल्लाणं मुट्ठियाणं वेलंबगाणं कहगाणं पवगाणं लासगाणं आइक्खगाणं लंखाणं मंखाणं तूणइल्लाणं तुंबवीणियाणं कायाणं मागहाणं। से ते दुपए उवक्कमे।

८०. (प्रश्न) द्विपद उपक्रम क्या है ?

(उत्तर) नाट्यकार (नाटक करने वाले), नट (रस्से पर खेल करने वाले), नर्तकों (नृत्य करने वाले), मल्लों (पहलवानों), मौष्टिकों (मुट्ठी से प्रहार करने वालों, पंजा लड़ाने वालों), वेलंबकों (विदूषकों, बहुरूपियों), कथकों (कथा-कहानी कहने वालों), प्लवकों (छलाँग लगाने वालों, तैरने वालों), लासकों (हास्योत्पादक क्रियाएँ करने वालों), भांडों (आख्यायकों, शुभाशुभ बताने वालों, भविष्यवक्ता), लंखों (बाँस आदि पर चढ़कर खेल दिखाने वालों), मंखों (चित्रपट दिखाने वाले भिक्षुओं), तूणिकों (तंतुवाद्य-वादकों), तुंबवीणकों (तुम्बे की वीणा-वादकों), कावडियाओं तथा मागधों (मंगल-पाठकों) आदि दो पैर वालों का (परिकर्म और विनाश करने के लिए) उपक्रम–द्विपद द्रव्य उपक्रम है।

80. (Question) What is *dvipad upakram* (*upakram* pertaining to bipads) ?

(Answer) The *upakram* related to bipads (men) like *nat* (actors), *nrityak* (dancers), *jalla* (rope-dancers), *malla* (wrestlers), *maushtik* (boxers and arm-wrestlers), *velambak* (clowns and disguise artists), *kathak* (story tellers), *plavak* (divers, swimmers, artists of show jumping), *lasak* (dance-drama artists, eulogizers), *akhyayak* (fortune-tellers), *lankha* (acrobats, specially those who use a pole), *mankha*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(mendicants seeking alms by displaying pictures), *tunika* (beggars playing one-stringed musical instrument), *tumbavink* (musicians playing sitar-like stringed instruments), *kabadik* (those who carry luggage in slings tied at both ends of a pole), and *magadh* (bards) is called *dvipad upakram* (*upakram* pertaining to bipads).

विवेचन–आचार्य श्री आत्माराम जी म. ने इसकी व्याख्या की है–वस्तु के मूलगुणों का प्रकाश करना परिकर्म द्रव्य उपक्रम है, यदि मूलगुण का नाश किया जाये तो उसे विनाश द्रव्य उपक्रम कहते हैं।

Elaboration—This includes both as *parikarma* (nourishment) and as *vastuvinash* (destruction). Acharya Shri Atmaram ji M. has defined these two as—to expose or enhance the fundamental properties of a thing is *parikarma dravya upakram* and to conceal or destroy the same is *vastuvinash dravya upakram.*

८१. से किं तं चउप्पए उवक्कमे ?

चउप्पए उवक्कमे चउप्पयाणं आसाणं हत्थीणं इच्चाइ। से तं चउप्पए उवक्कमे।

८१. (प्रश्न) चतुष्पद उपक्रम क्या है ?

(उत्तर) चार पैर वाले अश्व, हाथी आदि पशुओं के उपक्रम को चतुष्पद उपक्रम कहते हैं।

81. (Question) What is *chatushpad upakram* (*upakram* pertaining to quadrupads) ?

(Answer) The *upakram* related to quadrupads like horse, elephant, and other such animals is called *chatushpad upakram* (*upakram* pertaining to quadrupads).

विवेचन–उनको प्रशिक्षित करना, तेल आदि मालिश से पुष्ट बनाना तथा प्रहार आदि से विनष्ट करने का उपक्रम इसी में समझना चाहिए।

Elaboration—This includes training them, making them strong by providing nourishment as well as injuring and destroying them.

८२. से किं तं अपए उवक्कमे ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

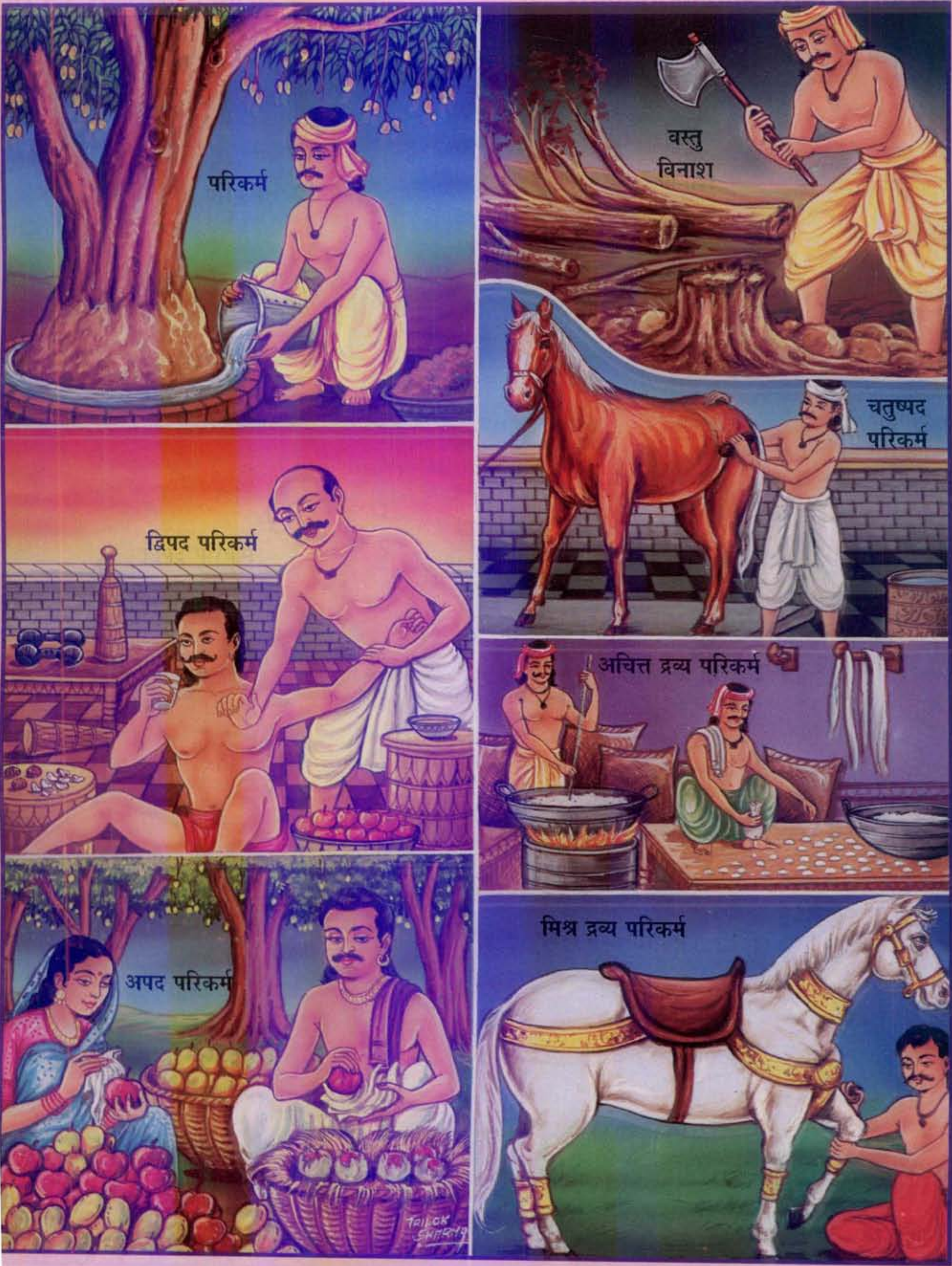

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्र परिचय ८

Illustration No. 8

परिकर्म और वस्तु विनाश

सचित्त द्रव्य उपक्रम के तीन भेदों के दो रूप हैं-(१) परिकर्म, और (२) वस्तु विनाश। जैसे-वृक्ष को खाद पानी देकर सुन्दर और सुदृढ़ बनाने का प्रयास **परिकर्म** है और उसका समूल उच्छेद कर देना, **वस्तु-विनाश** है।

(१) **द्विपद परिकर्म**-दो पैर वाले (मनुष्यों को) जैसे-पहलवान को खिला-पिलाकर, तेल, मालिश करके शरीर को पुष्ट करना।

(२) **चतुष्पद परिकर्म**, जैसे-घोड़ा इत्यादि पशुओं को घास, दाना आदि खिलाना मालिश करना।

(३) **अपद परिकर्म**, जैसे-आम आदि फलों को साफ करके उनके कागज में लपेट कर पुआल आदि में सुरक्षित रखना।

(४). **अचित्त द्रव्य परिकर्म**-अचित्त द्रव्य को अधिक गुणकारी बनाना जैसे गुड़ या शक्कर से मिश्री पतासे बनाना।

(५) **मिश्र द्रव्य परिकर्म**-जैसे-आभूषण पहने हुए घोड़े के पाँवों या पीठ पर मालिश करना।

-सूत्र ७९ से ८४

PARIKARMA AND VASTU-VINASH

The three types of *sachitt dravya-upakram* have two sub-categories *each—parikarma* (nourishment) and *vastu-vinash* (destruction). For example to nourish a tree by providing manure and water is *parikarma*. To pull it out from roots is *vastu-vinash*.

(1) Dvipad-parikram—To make a bipad (man), like a wrestler, strong by giving him nourishing food and oil-massage.

(2) Chatushpad-parikram—To give fodder and grains, and to massage quadrupeds like horse.

(3) Apad-parikram—To clean, wrap in paper, and place in hay fruits like mango.

(4) Achitt dravya parikarm—To improve qualities of a material thing, for example to make crystals or condiments from sugar or jaggery.

(5) Mishra dravya parikarm—To massage the legs or back of a horse adorned with ornaments.

—Sutra : 79-84

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अपए उवक्कमे अंबाणं अंबाडगाणं इच्चाइ। से तं अपए उवक्कमे। से तं सचित्तदव्वोवक्कमे।

८२. (प्रश्न) अपद द्रव्य उपक्रम क्या है ?

(उत्तर) आम, आम्रातक आदि बिना पैर वालों से सम्बन्धित उपक्रम को अपद उपक्रम कहते हैं।

यह अपद उपक्रम का वर्णन हुआ। यह सचित्त द्रव्य उपक्रम का वर्णन हुआ। (इसके भी पूर्वोक्त दो भेद समझ लेने चाहिए।)

82. (Question) What is *apad upakram* (*upakram* pertaining to those without feet) ?

(Answer) The *upakram* related to those without feet like mango, *amla* (Emblica officinalis), and other such plants is called *apad upakram* (*upakram* pertaining to those without feet).

This includes the two sub-categories of nourishing and destroying.

This concludes the description of apad upakram (upakram pertaining to those without feet). This also concludes the description of Sachit dravya upakram (physical upakram related to the living).

(२) अचित्त द्रव्य उपक्रम

८३. से किं तं अचित्त दव्वोवक्कमे ?

अचित्त दव्वोक्कमे खंडाईणं गुडादीणं मत्स्यंडीणं। से तं अचित्तदव्वोवक्कमे।

८३. (प्रश्न) अचित्त द्रव्य उपक्रम क्या है ?

(उत्तर) खाँड़ (शक्कर), गुड़, मिश्री अथवा राब आदि पदार्थों से सम्बन्धित उपक्रम को अचित्त द्रव्य उपक्रम कहते हैं।

(2) ACHITTA DRAVYA UPAKRAM

83. (Question) What is *achitta dravya upakram* (physical *upakram* pertaining to the non-living) ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(Answer) The *upakram* related to sugar, jaggery, *mishri* (large crystals of sugar), *raab* (molasses) and other such non-living things is called *achitta dravya upakram* (physical *upakram* pertaining to the non-living).

विवेचन–अचित्त द्रव्य उपक्रम के भी उपाय विशेष से मधुरता की वृद्धि करने और इनके विनाश करने रूप पूर्वोक्त दो भेद समझने चाहिये।

Elaboration—This includes the two sub-categories of nourishing and destroying.

(३) मिश्र द्रव्य उपक्रम

८४. से किं तं मीसए दव्वोवक्के।

मीसए दव्वोवक्कमे से चेव थासग-आयंसगाइमंडिते आसादी। से तं मीसए दव्वोवक्कमे।

से तं जाणयसरीर-भवियसरीरवइरित्ते दव्वोवक्कमे। से तं नोआगमओ दव्वोवक्कम्मे। से तं दव्वोवक्कमे।

८४. (प्रश्न) मिश्र द्रव्य उपक्रम क्या है ?

(उत्तर) बुद्‌बुद के आकार वाले आभूषण और गले के आभूषण आदि से विभूषित अश्व आदि के परिकर्म को मिश्र द्रव्य उपक्रम कहते हैं। (इसके भी पूर्वोक्त दो भेद समझने चाहिये।)

इस प्रकार से ज्ञायक शरीर-भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य उपक्रम का स्वरूप जानना चाहिए और इसके साथ ही नो-आगमतः द्रव्य उपक्रम एवं द्रव्य उपक्रम की वक्तव्यता पूर्ण हुई।

(3) MISHRA DRAVYA UPAKRAM

84. (Question) What is *mishra dravya upakram* (mixed physical *upakram*)?

(Answer) The *upakram* related to animals like horses (living) embellished with drop shaped and other ornaments (non-living) is called *mishra dravya upakram* (mixed physical *upakram*). (This includes the two sub-categories of nourishing and destroying as well as enhancing and reducing.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

This concludes the description of *mishra dravya upakram* (mixed physical *upakram*). This concludes the description of *jnayak sharir-bhavya sharir vyatirikta dravya upakram* (physical *upakram* other than the body of the knower and the body of the potential knower). This concludes the description of *No-Agamatah dravya upakram* (physical aspect of *upakram* not in context of *Agam*) and *dravya upakram* (physical aspect of *upakram*).

(४) क्षेत्र उपक्रम

८५. से किं तं खेत्तोवक्कमे ?

खेत्तोवक्कमे जण्णं हल-कुलियादीहिं खेत्ताइं उवक्कामिज्जंति। से तं खेत्तोवक्कमे।

८५. (प्रश्न) क्षेत्र उपक्रम क्या है ?

(उत्तर) हल, कुलिक आदि के द्वारा क्षेत्र को उपक्रान्त करना क्षेत्र उपक्रम है।

(4) KSHETRA-UPAKRAM

85. (Question) What is *kshetra upakram* (area *upakram*)?

(Answer) The *upakram* related to changes in a farm-land with the help of plough, *kulik* (a stick-like wooden implement) and other such implements is called *kshetra upakram* (area *upakram*).

विवेचन—यहाँ क्षेत्र उपक्रम का स्वरूप बतलाया है अतः क्षेत्र शब्द से गेहूँ आदि अन्न उत्पन्न करने वाले स्थान–खेत को ग्रहण किया है। अतएव हल और कुलिक–खेत में से तृणादि को हटाने के काम में आने वाला एक प्रकार का हल (देशी भाषा में इसे 'बखर' कहते हैं।) से जोतकर खेत को बीजोत्पादन योग्य बनाना परिकर्म विषयक क्षेत्र उपक्रम है और उसी क्षेत्र को हाथी आदि बाँधकर बीजोत्पादन के अयोग्य (बंजर) बना देना विनाश–विषयक क्षेत्र उपक्रम है। क्योंकि हाथी के मल मूत्र से तथा उसके भार से दब जाने के कारण खेत की बीजोत्पादन शक्ति का नाश हो जाता है।

Elaboration—Here the area related *upakram* is defined. Area is taken to be an agricultural land or farm. Thus to start making the land suitable for farming by using plough and a stick-like

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

wooden implement (for removing weeds) is called area related *upakram* in context of improvement (*parikarm*). The excreta of an elephant and compression of the soil by its weight makes the soil infertile. Thus to start making a farm land unsuitable for farming by tethering elephant or other animals there, is area related *upakram* in context of spoiling (*vastuvinash*).

(५) काल उपक्रम

८६. से किं तं कालोवक्कमे ?

कालोवक्कमे जं णं नालियादीहिं कालस्सोवक्कमणं कीरति। से तं कालोवक्कमे।

८६. (प्रश्न) काल उपक्रम क्या है ?

(उत्तर) नालिका आदि के द्वारा जो काल का यथावत् ज्ञान होता है, वह काल उपक्रम है।

(5) KAAL-UPAKRAM

86. (Question) What is *kaal upakram* (time *upakram*) ?

(Answer) The *upakram* related to understanding the changes in time with the help of *nalika* (tube-shaped-clock) and other such instruments is called *kaal-upakram* (time *upakram*).

विवेचन–नालिका (ताँबे का बना पेंदे में एक छिद्र सहित पात्र-विशेष, जलघड़ी, रेतघड़ी आदि) अथवा कील आदि की छाया द्वारा काल का जो यथार्थ परिज्ञान किया जाता है वह परिकर्मरूप तथा नक्षत्रों आदि की चाल से जो कालविनाश होता है वह वस्तुविनाश रूप काल उपक्रम है; यहाँ इसमें ज्योतिष के अनुसार बुरा समय भी सम्मिलित है।

Elaboration—*Nalika* is a tube-shaped copper vessel with a measured hole. When filled with water or sand it gets empty within a specific time thereby providing a means of measuring time. Other such instruments are sand clock, sun-dial, etc. Knowing of exact time with the help of such instruments is *kaal upakram* (time *upakram*) in context of *parikarm* (enhancement; here it means correctness or exactness). Knowing of variations (shortening, etc.) in standard time scale by studying the movement of planets is *kaal upakram* (time *upakram*) in context

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

of *vastuvinash* (destruction or shortening); this also includes the unfavourable times in astrological terms.

(६) भाव उपक्रम

८७. से किं तं भावोवक्कमे ?

भावोवक्कमे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा–(१) आगमतो य, (२) नोआगमतो य।

८७. (प्रश्न) भाव उपक्रम क्या है ?

(उत्तर) भाव उपक्रम के दो प्रकार हैं। वे इस तरह हैं–(१) आगमतः भाव उपक्रम, (२) नो-आगमतः भाव उपक्रम।

(6) BHAAVA-UPAKRAM

87. (Question) What is *bhaava upakram* (*upakram* as essence or perfect *upakram*) ?

(Answer) *Bhaava upakram* (perfect *upakram*) is of two types—(1) *Agamatah bhaava upakram* (perfect *upakram* in context of *Agam*), and (2) *No-Agamatah bhaava upakram* (perfect *upakram* not in context of *Agam*).

(१) आगमतः भाव उपक्रम

८८. से किं आगमओ भावोवक्कमे ?

आगमओ भावोवक्कमे जाणए उवउत्ते। से तं आगमओ भावोवक्कमे।

८८. (प्रश्न) आगमतः भाव उपक्रम क्या है ?

(उत्तर) उपक्रम (साधन) के अर्थ को जानता हो साथ ही जो उसके उपयोग से भी युक्त हो, वह आगमतः भाव उपक्रम है।

(1) AGAMATAH BHAAVA UPAKRAM

88. (Question) What is *Agamatah bhaava upakram* (perfect *upakram* with scriptural knowledge) ?

(Answer) One who knows the meaning of the word *upakram* (means) and is sincerely involved with it is called *Agamatah bhaava upakram* (perfect *upakram* with scriptural knowledge).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८९. से किं नोआगमतो भावोवक्कमे ?

नोआगमतो भावोवक्कमे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा–(१) पसत्थे य, (२) अपसत्थे य।

८९. (प्रश्न) नो-आगमतः भाव उपक्रम क्या है ?

(उत्तर) नो-आगमतः भाव उपक्रम (दूसरों के भावों को जानने का साधन) दो प्रकार का है। यथा–(१) प्रशस्त, और (२) अप्रशस्त।

(2) NO-AGAMATAH BHAAVA UPAKRAM

89. (Question) What is *No-Agamatah bhaava upakram* (perfect *upakram* without scriptural knowledge) ?

(Answer) *No-Agamatah bhaava upakram* (perfect *upakram* without scriptural knowledge; here *bhaava upakram* conveys 'the means or effort of knowing the thoughts and intentions of others') is of two types—(1) *Prashast* (righteous), and (2) *Aprashast* (unrighteous).

९०. से किं तं अपसत्थे भावोवक्कमे ?

अपसत्थे भावोवक्कमे डोडिणि-गणियाऽमच्चाईणं। से तं अपसत्थे भावोवक्कमे।

९०. (प्रश्न) अप्रशस्त भाव उपक्रम क्या है ?

(उत्तर) जैसे डोडिणी ब्राह्मणी, गणिका और अमात्यादि का अन्य के भावों को जानने रूप जो उपक्रम है वह अप्रशस्त भाव उपक्रम है ?

90. (Question) What is *aprashast bhaava upakram* (unrighteous means of knowing thoughts of others) ?

(Answer) The means employed by Dodini Brahmani, courtesan, minister, etc. (this refers to characters in some stories stated hereafter) to know the thoughts or intentions of others falls in the category of *aprashast bhaava upakram* (unrighteous means of knowing thoughts of others).

विवेचन–अप्रशस्त भाव उपक्रम को समझने के लिए डोडिणी ब्राह्मणी आदि के तीन उदाहरण दिये गये हैं, जिनका विस्तृत रूप टीकाओं में इस प्रकार मिलता है–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

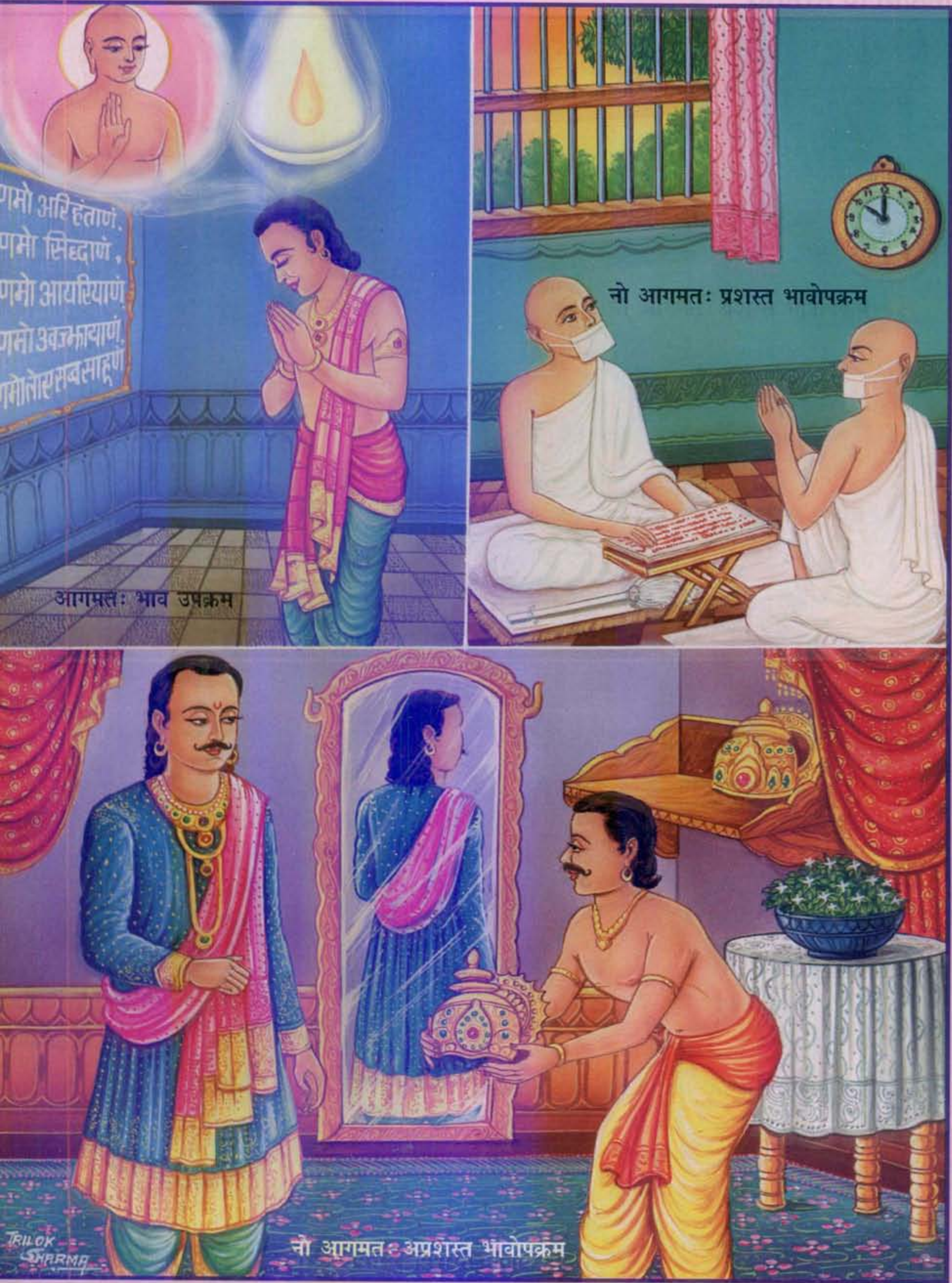

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

चित्र परिचय ९

Illustration No. 9

भाव उपक्रम

(१) आगमतः भाव उपक्रम

जो जिस वस्तु को जानता है, वह उसके अर्थ में उपयुक्त (संलग्न) रहे, यह भावोपक्रम है। जैसे कोई आवश्यक का या **'णमो अरिहंताणं'** पद का अर्थ जानता है और वह उसी अर्थ में लीन हुआ अरिहंत सिद्ध भगवान का ध्यान करता हुआ उनको वन्दना करता है–यह आगमतः भावोपक्रम है।

(२) नो आगमतः प्रशस्त भावोपक्रम

गुरुजनों के संकेत को समझकर शिष्य गुरु के पास शास्त्र अध्ययन करता है तो यह नो आगमतः प्रशस्त भावोपक्रम है। जैसे–गुरु यदि घड़ी की तरफ देखें तो शिष्य समझ जाता है शास्त्र स्वाध्याय का समय हो गया है। वह शास्त्र पढ़ने आ जाता है।

(३) नो आगमतः अप्रशस्त भावोपक्रम

किसी के आँखों, हाथों आदि के इशारों से उसके भावों, विचारों को जान लेना। जैसे–राजा सभा में जाने को तैयार होकर राज मुकुट की तरफ देखता है। तब सेवक मुकुट लेकर हाजिर हो जाता है।

–सूत्र ८८ से ९०

BHAVA UPAKRAM

(1) Agamatah-bhaava-upakram

One who knows the meaning of a particular thing and is sincerely involved with it. For example—some one who knows the meaning of *Avashyak* or the phrase *Namo Arihantanam* and offers homage to *Arihant Siddha Bhagavan* sincerely meditating about his virtues is called *Agamatah-bhaava-upakram.*

(2) No-Agamatah-Prashast-bhaava-upakram

While studying from a teacher the disciple who understands his gestures and acts accordingly is called *No-Agamatah-Prashast-bhaava-upakram.* For example when the teacher looks at the clock the student understands that it is time to study. He comes to study scriptures.

(3) No-Agamatah-Aprashast-bhaava-upakram

To understand the mind of a person through his gestures with eyes or hands. For example—The king, ready to go to the assembly, glances at his crown. The attendant at once brings the crown.

—Sutra : 88-90

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(१) डोडिणी ब्राह्मणी

किसी ग्राम में डोडिणी नाम की ब्राह्मणी रहती थी। उसकी तीन पुत्रियाँ थीं। उनका विवाह करने के समय माँ के मन में विचार हुआ कि 'जमाइयों के स्वभाव को जानकर मुझे अपनी पुत्रियों को वैसी शिक्षा-सीख देनी चाहिए, जिससे उसी के अनुरूप व्यवहार कर वे अपने जीवन को सुखी बना सकें।'

ऐसा विचार कर उसने अपनी तीनों पुत्रियों को बुलाकर सलाह दी-"सुहागरात के समय जब तुम्हारे पति सोने के लिए शयन-कक्ष में आयें तब तुम कोई न कोई कल्पित दोष लगाकर उनके मस्तक पर लात मारना। तब वह जो कुछ तुमसे कहें वह दूसरे दिन आकर मुझे बता देना।"

पुत्रियों ने माता की बात मान ली और रात्रि के समय अपने-अपने शयन-कक्ष में बैठकर पति की प्रतीक्षा करने लगीं।

जब ज्येष्ठ पुत्री का पति शयन-कक्ष में आया, तब उसने कल्पित दोष लगाकर उसके मस्तक पर एक लात मारी। लात लगते ही पति ने उसका पैर पकड़कर कहा-"प्रिये ! पत्थर से भी कठोर मेरे सिर पर तुमने जो केतकी पुष्प के समान कोमल पग पारा, उससे तुम्हारा चरण दुखने लगा होगा।" इस प्रकार कहकर वह उसके पैर को सहलाने लगा।

दूसरे दिन बड़ी पुत्री ने आकर रात वाली घटना माँ को सुनाई। सुनकर ब्राह्मणी बहुत हर्षित हुई। जमाई के इस बर्ताव से वह उसके स्वभाव को समझ गई और पुत्री से बोली-"तू अपने घर में जो करना चाहेगी, कर सकेगी। क्योंकि तेरे पति के व्यवहार से लगता है कि वह तेरी आज्ञा के अधीन रहेगा।"

दूसरी पुत्री ने भी माता की सलाह के अनुरूप अपने पति के मस्तक पर लात मारी। तब उसका पति थोड़ा रुष्ट हुआ और उसने अपने रोष को मात्र शब्दों द्वारा प्रकट किया-"मेरे साथ तूने जो व्यवहार किया वह कुल-वधुओं के योग्य नहीं है। तुझे ऐसा नहीं करना चाहिए।" ऐसा कहकर वह शान्त हो गया।

प्रातः दूसरी पुत्री ने भी सब प्रसंग माता को कह सुनाया। माता ने संतुष्ट होकर उससे कहा-"बेटी ! तू भी अपने घर में इच्छानुरूप प्रवृत्ति कर सकेगी। तेरे पति का स्वभाव ऐसा है कि वह चाहे जितना रुष्ट हो, लेकिन क्षण मात्र में शान्त-तुष्ट हो जायेगा।"

तीसरी पुत्री ने भी किसी दोष के बहाने अपने पति के मस्तक पर लात मारी। इससे पति के क्रोध का पार नहीं रहा और डाँटकर बोला-"अरी दुष्टा ! कुल-कन्या के अयोग्य यह व्यवहार मेरे साथ क्यों किया?" फिर मार-पीटकर उसे घर से बाहर निकाल दिया। तब रोती-कलपती माँ के पास आई और सब घटना कह सुनाई।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुत्री की बात से ब्राह्मणी को उसके पति के स्वभाव का पता लग गया और उसी समय वह उसके पास आई। मीठे-मीठे बोलों से जमाई के क्रोध को शान्त करके बोली–"जमाईराज ! हमारे कुल की यह रीति है कि किसी शाप के दुष्प्रभाव से मुक्त होने के लिए सुहागरात में प्रथम समागम के समय पति के मस्तक पर चरण-प्रहार किया जाता है, इसी कारण मेरी पुत्री ने आपके साथ ऐसा व्यवहार किया है, किन्तु दुर्भावना या दुष्टता से यह सब नहीं किया है। इसलिए आप शान्त हों और इस बर्ताव के लिए उसे क्षमा करें।"

सासू की बात से उसका गुस्सा शान्त हुआ।

उसके बाद ब्राह्मणी ने तीसरी पुत्री को सलाह दी–"बेटी ! तेरा पति दुराराध्य है, इसलिए उसकी आज्ञा का बराबर पालन करना और सावधानीपूर्वक देवता की तरह उसकी सेवा करना।"

(२) विलासवती गणिका की कथा

किसी नगर में विलासवती नाम की एक गणिका रहती थी। वह चौंसठ कलाओं में निपुण थी। उसने अपने यहाँ आने वाले पुरुषों की रुचि तथा अभिप्राय जानने के लिए अपने रति-भवन में दीवारों पर भिन्न-भिन्न प्रकार की रति-क्रियाएँ करते विविध जाति के पुरुषों के चित्र लगवाये थे। जो पुरुष वहाँ आता वह उसे अपने जाति स्वभाव के अनुसार चित्र के निरीक्षण में तन्मय होकर देखता। उसे देखकर गणिका उसकी रुचि, जाति, स्वभाव आदि को समझ जाती थी और उसी के अनुरूप उस पुरुष के साथ बर्ताव कर उसका आदर-सत्कार करके प्रसन्न कर देती थी। परिणामस्वरूप उसके यहाँ आने वाले व्यक्ति प्रसन्न होकर इनाम में खूब द्रव्य देकर जाते।

(३) सुशील अमात्य की कथा

किसी नगर में भद्रबाहु नाम का राजा राज्य करता था। उसके अमात्य का नाम सुशील था। वह दूसरों के मनोभावों को जानने में निपुण था।

एक दिन अश्व-क्रीड़ा करने के लिए अमात्य सहित राजा नगर के बाहर गया। चलते-चलते रास्ते के किनारे बंजर भूमि में घोड़े ने लघु-शंका (पेशाब) कर दी। वह मूत्र वहाँ जैसा का तैसा भरा रहा, सूखा नहीं। अश्व-क्रीड़ा करने के बाद राजा पुनः उसी रास्ते से वापस लौटा। तब भी मूत्र को पहले जैसा भरा देखकर राजा के मन में विचार आया–'यदि यहाँ तालाब बनवाया जाये तो वह हमेशा जल से भरा रहेगा। यह भूमि बहुत कठोर है।'

इस प्रकार का विचार करता-करता राजा बहुत देर तक उस भूमि-भाग की ओर ताकता रहा और उसके बाद अपने महल में लौट आया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्र परिचय १०

Illustration No. 10

अप्रशस्त भावोपक्रम

व्यवहार, संकेत, चेहरे के भाव आदि से दूसरे के भावों/विचारों को समझना भावोपक्रम है। जिस भावोपक्रम में सांसारिक वृत्तियाँ प्रधान हों वह **अप्रशस्त भावोपक्रम है**। उदाहरण के रूप में–

(१) एक ब्राह्मण कन्या ने माता की सलाह से विवाह की प्रथम रात्रि में पति के सिर पर लात मारी। स्नेह, अनुराग वश पति उसके पाँव सहलाने लगता है कि कहीं तुम्हारे कोमल पाँवों को चोट तो नहीं लगी? इससे पत्नी ने पति की मनोवृत्ति समझ ली–"यह सदा ही पत्नी का आज्ञाधीन रहेगा।"

(२) दूसरी कन्या ने भी पति के सिर पर लात मारी, तब पति ने कुछ रुष्ट होकर कहा–'ऐसा व्यवहार उचित नहीं है।' इससे समझा कि पति के साथ व्यवहार में थोड़ी-सी सावधानी बरतनी चाहिए।

(३) तीसरी कन्या ने भी पति के सिर पर लात मारी, तब पति ने क्रोध करके उसे डाँटते हुए लाठी से पीटा, चोटी पकड़कर धक्के मारकर घर से निकाल दिया। इससे यह निष्कर्ष निकला कि पति का स्वभाव बहुत कठोर है। उसको सदा प्रसन्न रखने का प्रयास करना चाहिए।

–सूत्र ९०

APRASHAST-BHAAVA-UPAKRAM

To understand the feelings and thoughts of a person through his behaviour, gestures, and expressions on the face is *bhaava-upakram.* When worldly attitudes are given importance it is called *Aprashast-bhaava-upakram.* Examples—

(1) At the advise of her mother a Brahmin girl kicks at the head of her husband on the honeymoon night. Out of love and affection the husband caresses her foot saying that her delicate foot might have been hurt. This reveals his disposition that he will always be a hen-pecked husband.

(2) The second daughter also kicked her husband. He got a little angry and said, "This does not behove you." This revealed that she will have to be a little careful in dealings with her husband.

(3) Third daughter also kicked her husband. The husband lost his temper, beat her with a stick, caught her with her hair and threw her out of the house. This revealed that the husband was unsparing and he should always be kept in good humour.

—Sutra : 90

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चतुर अमात्य राजा के मनोगत भावों को बराबर समझ रहा था। उसने राजा से पूछे बिना ही उस स्थान पर एक विशाल तालाब बनवाया और उसके किनारे षड् ऋतुओं के फल-फूल वाले वृक्ष लगवा दिये।

इसके बाद किसी समय पुनः राजा अमात्य सहित उसी रास्ते पर घूमने निकला। वृक्ष-समूह से सुशोभित जलाशय को देखकर राजा ने अमात्य से पूछा–"यह रमणीक जलाशय किसने बनवाया है ?"

अमात्य ने उत्तर दिया–"महाराज ! आपने ही तो बनवाया है।"

अमात्य का उत्तर सुनकर राजा को आश्चर्य हुआ। वह बोला–"सचमुच ही यह जलाशय मैंने बनवाया है ? जलाशय बनवाने का कोई आदेश मैंने दिया हो, याद नहीं है।"

अमात्य ने पूर्व समय की घटना की याद दिलाते हुए बताया–"महाराज ! इस स्थान पर बहुत समय तक मूत्र को बिना सूखा देखकर आपने यहाँ जलाशय बनवाने का विचार किया था। आपके मनोभावों को जानकर मैंने यह जलाशय बनवा दिया है।"

अपने अमात्य की दूसरे के मनोभावों को परखने की प्रतिभा देखकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ और उसकी प्रशंसा करने लगा। *(–मलधारी हेमचन्द्र वृत्ति, पृ. १२५-१२६ मु. जं.)*

Elaboration—The stories related to the characters referred to in the aphorism as mentioned in commentaries are as follows :

(1) DODINI BRAHMANI

In a village lived a *Brahmani* named Dodini. She had three daughters. At the time of their marriage the mother thought that 'she should somehow know about the nature of the three sons-in-law and accordingly educate or advise her daughters to enable them to make their married life happy by making the required adjustments in their behaviour.'

With these thoughts she called her three daughters and said—"On the first night when your husband enters the bed-room you should kick him on his head on pretext of some imaginary mistake by him. Next morning come to me and inform about the reaction."

The daughters agreed and on the said night they all waited for their husbands in their bed-rooms.

When the eldest daughter's husband entered the bed-room, she made an imaginary accusation and kicked him on the head.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

On getting hit, the husband held her foot and said—"Darling ! Your soft foot, as delicate as the *ketaki* (screwpine) flower, has struck my hard head. It must have hurt you." With these words he affectionately massaged her foot.

Next morning the elder daughter came and narrated what happened last night. Dodini was very much pleased. She could understand the nature of her son-in-law with this reaction. She said to her daughter—"You will be the master of your household. The behaviour of your husband indicates that he will always be under your command."

As advised by her mother the second daughter also kicked her husband. He was stunned but he expressed his anger only in words—"Your behaviour is not becoming ladies of cultured families. You should refrain from doing so." And he ended the matter there.

Next morning the second daughter also narrated what happened last night. Dodini was very much satisfied. She said to her daughter—"You will also do as you like in your household. Your husband's nature is such that no matter how angry he gets at you, he will soon forgive and forget everything and do as your please."

The third daughter also kicked her husband. He got flared up and shouted—"O wicked woman ! Why this disgraceful behaviour ?" He then beat her up and threw her out of the house. Wailing and weeping she came to her mother and told her everything.

Dodini understood the nature of her son-in-law. She at once came to the son-in-law, pacified him with her sweet soothing words and added—"Son ! This is a tradition in our family that to remove the ill effect of some past curse the husband is kicked on the head on the first night immediately before consummation. That was the reason for my daughter's behaviour. She did not do it with some ill intent or wickedness. Please calm down and forgive her for what she did."

This pacified the son-in-law.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Later Dodini told her third daughter—"Daughter ! Your husband is hard to please. Therefore you should always do as he says and treat him like a god taking due care.

(2) COURTESAN VILASAVATI

In a city lived a courtesan named Vilasavati. She was accomplished in sixty four arts. In order to assess the taste and expectations of her visitors she had decorated her entertainment hall with erotic paintings of characters of various races and from various places in different erotic postures. She observed the reaction of her visitor when his full attention was drawn to a painting suited to his individual liking and racial preference. With this she could accurately assess the nature, likings and even the background of the visitor. After that she adjusted her behaviour accordingly and pleased the visitor with her favours. As a result her customers went pleased and satisfied and paying her ample rewards.

(3) MINISTER SUSHIL

In a city ruled a king named Bhadrabahu. The name of his minister was Sushil. He was expert in reading thoughts of others.

One day, accompanied by the minister, the king went out of town for horse riding. After covering some distance the horse urinated at a bare spot on the ground. The pool of urine remained as it was because the hard earth did not absorb it. On his way back when the king looked at the spot he still found the pool of urine. This gave the king an idea—'If a large pond is made here it will always be filled with water. This land is hard and compact.'

With these thoughts the king continued to look at that portion of land for quite some time before returning to the palace.

All the time the clever minister was aware of what went on in the king's mind. Without seeking permission from the king he got a large pond constructed at that spot and filled the space around with all-season flowering and fruit bearing trees and plants.

Much later, once again the king and the minister went for an outing on the same path. Seeing the beautiful pond surrounded

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

by attractive greenery the king asked the minister—"Who got this beautiful pond made ?"

The minister replied—"Sire ! You only got it made."

The answer surprised the king. He asked—"Indeed, was it me who got this made ? I don't remember giving any such order."

The minister made the king recall the past incident and added—"Sire ! Seeing the urine pool not disappear for some time you thought of making a pond here. Reading your thoughts I got this pond constructed."

The king was pleased with his minister's ability of reading thoughts of other people. He praised and rewarded him. (*Vritti* by Maladhari Hemchandra, pp. 125-126)

९१. से किं तं पसत्थे भावोवक्कमे ?

पसत्थे भावोवक्कमे गुरुमाईणं।

से तं पसत्थे भावोवक्कमे। से तं नोआगमतो भावोवक्कमे। से तं भावोवक्कमे।

९१. (प्रश्न) प्रशस्त भाव उपक्रम क्या है।

(उत्तर) गुरु आदि के अभिप्राय को सम्यक् प्रकार से जानने का प्रयत्न प्रशस्त नो-आगमतः भाव उपक्रम है।

91. (Question) What is *prashast bhaava upakram* (righteous means of knowing thoughts of others) ?

(Answer) The means employed (effort made) to know the thoughts or intentions of the *guru* etc. is (falls in the category of) *prashast bhaava upakram* (righteous means of knowing thoughts of others).

This concludes the description of *prashast bhaava upakram* (righteous means of knowing thoughts of others). This also concludes the description of *No-Agamatah bhaava upakram* (the means or effort of knowing the thoughts and intentions of others without scriptural knowledge) and *bhaava upakram* (*upakram* as essence or perfect upakram).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवेचन–इस सूत्र में भावोपक्रम के सम्बन्ध में बताया है। प्रसंगानुसार भाव के अनेक अर्थ होते हैं, जैसे–स्वभाव, सत्ता, अभिप्राय, विचार आदि। यहाँ 'भाव' उपक्रम का अर्थ है, किसी का अभिप्राय जानने के लिए किया गया प्रयत्न, उपाय या मनोगत भावों को पहचान कर उसके व्यवहार को समझने की चतुरता, कला। यह एक प्रकार का मनोविज्ञान है।

पिछले सूत्रों की तरह यहाँ भी भावोपक्रम के आगमतः तथा नो आगमतः दो भेद बताये हैं। नो-आगमतः भावोपक्रम के भी दो भेद हैं–(१) अप्रशस्त भावोपक्रम, तथा (२) प्रशस्त भावोपक्रम।

अप्रशस्त का अर्थ है–जिसका उद्देश्य लौकिक हो, स्वार्थपूर्ण हो वह अप्रशस्त तथा आत्म-कल्याण के प्रयोजन से किया गया प्रशस्त है। अप्रशस्त भावोपक्रम को समझाने के लिए शास्त्रकार ने तीन दृष्टान्त दिये हैं।

प्रशस्त भावोपक्रम को समझाने के लिए सूत्रकार ने गुरुजनों के इंगित–संकेत–चेष्टा–मुख मुद्रा आदि से उनका मनोभाव समझकर वैसा अनुकूल व्यवहार करने का उदाहरण दिया है।

Elaboration—This aphorism discusses *bhaava-upakram.* With reference to different contexts the word *'bhaava'* has many meanings, such as nature, state, existence, intention, thought, etc. Here *bhaava-upakram* means the attempt or effort made to know the intention of some person or the ability or capacity to understand behaviour by reading a person's thoughts. It is like understanding human psychology.

Like the preceding aphorism here also two broad classifications have been made of *bhaava-upakram, Agamatah* and *No-Agamtah.* Further, there are two categories of *No-Agamatah-bhaava-upakram* (the means or effort of knowing the thoughts and intentions of others without scriptural knowledge)—*Prashast-bhaava-upakram* (righteous means of knowing thoughts of others) and *Aprashast-bhaava-upakram* (unrighteous means of knowing thoughts of others)

Aprashast means that which is done with mundane or selfish motives. *Prashast* means that which is done with the motive of spiritual uplift. As already mentioned, the author has given three examples to explain *aprashast-bhaava-upakram* (unrighteous means of knowing thoughts of others).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

The example given to explain *prashast-bhaava-upakram* (righteous means of knowing thoughts of others) is that of moulding one's behaviour according to the desires of the seniors after understanding their intentions by studying their actions, words, gestures, and expressions.

उपक्रम के छह प्रकार

९२. अहवा उवक्कमे छव्विहे पण्णत्ते। तं जहा–(१) आणुपुव्वी, (२) नामं, (३) पमाणं, (४) वत्तव्वया, (५) अत्थाहिगारे, (६) समोयारे।

९२. अथवा उपक्रम के छह प्रकार हैं। यथा–(१) आनुपूर्वी, (२) नाम, (३) प्रमाण, (४) वक्तव्यता, (५) अर्थाधिकार, और (६) समवतार।

SIX KINDS OF UPAKRAM

92. Also, *upakram* (introduction) is (alternatively) of six types—(1) *Anupurvi* (sequence/sequential configuration), (2) *Nama* (name), (3) *Pramana* (validity), (4) *Vaktavyata* (explication), (5) *Arthadhikar* (giving synopsis), and (6) *Samavatar* (assimilation).

विवेचन–उपक्रम के छह प्रकार पहले भी बताये जा चुके हैं, उनमें से छठे भावोपक्रम के प्रसंग में प्रशस्त भावोपक्रम में गुरुजनों आदि का अभिप्राय जानना एक प्रकार बताया है। आचार्य जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण का कथन है–गुरु भावोपक्रम के पश्चात अब शास्त्रीय भावोपक्रम बताते हुए यहाँ पुनः छह भावोपक्रम का वर्णन किया है। जो आगे क्रमशः किया जा रहा है। इन छह की संक्षिप्त परिभाषाएँ इस प्रकार हैं–

(१) **आनुपूर्वी**–एक के बाद एक क्रमशः होना। परिपाटी या अनुक्रम से किसी चीज की स्थापना करना आनुपूर्वी है। ध्यान देने की बात है कि एक या दो वस्तु में आनुपूर्वी का क्रम नहीं हो सकता। कम से कम तीन वस्तु या तीन का समूह हो तभी आनुपूर्वी होती है।

(२) **नाम**–जीव या पुद्‌गल को उनकी पहचान के लिए कोई संज्ञा देना नाम है।

(३) **प्रमाण**–सत्य तक पहुँचने का साधन।

(४) **वक्तव्यता**–अध्ययन में आये हुए प्रत्येक अवयव का यथासंभव नियत अर्थ कहना।

(५) **अर्थाधिकार**–अध्ययन में निरूपित विषय का वर्णन करना।

(६) **समवतार**–एक वस्तु का दूसरी वस्तु में अन्तर्भाव अथवा समावेश करना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Elaboration—Six categories of *upakram* (introduction) have already been discussed. In the sixth category, *bhaava-upakram*, one of the sub-category is to understand the intentions of seniors. Acharya Jinabhadragani Kshamashraman states that after discussing 'understanding the thoughts of the teacher' the understanding of the thoughts contained in scriptures has been discussed here and that has six categories. All these will be discussed hereafter. The brief definition of these six categories are—

(1) **Anupurvi**—To put in a sequence. To place things in a progression or sequence is called *anupurvi*. The things so placed are also called *anupurvi* (sequential configuration). It should be noted that a sequence cannot be made of one or two things. Sequence can be made only when there are at least three things or groups.

(2) **Nama**—to assign a noun to a living or material thing for its identity is called *nama* or name.

(3) **Pramana**—the means of arriving at truth is called *pramana* or validity.

(4) **Vaktavyata**—to express as far as possible the right meaning of every component of a text is called *vaktavyata* or explication.

(5) **Arthadhikar**—to describe the theme or the subject of a specific part of the text or a chapter is called *arthadhikar* or giving synopsis.

(6) **Samavatar**—to include or assimilate one thing within another is called *samavatar* or assimilation.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आनुपूर्वी प्रकरण
THE DISCUSSION ON ANUPURVI

आनुपूर्वी के दस भेद

९३. से किं तं आणुपुव्वी ?

आणुपुव्वी दसविहा पण्णत्ता। तं जहा–(१) नामाणुपुव्वी, (२) ठवणाणुपुव्वी, (३) दव्वाणुपुव्वी, (४) खेत्ताणुपुव्वी, (५) कालाणुपुव्वी, (६) उक्कित्तणाणुपुव्वी, (७) गणणाणुपुव्वी, (८) संठाणाणुपुव्वी, (९) सामायारियाणुपुव्वी, (१०) भावाणुपुव्वी।

९३. (प्रश्न) आनुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) आनुपूर्वी दस प्रकार की है। जैसे–(१) नामानुपूर्वी, (२) स्थापनानुपूर्वी, (३) द्रव्यानुपूर्वी, (४) क्षेत्रानुपूर्वी, (५) कालानुपूर्वी, (६) उत्कीर्तनानुपूर्वी, (७) गणनानुपूर्वी, (८) संस्थानानुपूर्वी, (९) समाचार्यनुपूर्वी, और (१०) भावानुपूर्वी।

TEN KINDS OF ANUPURVI

93. (Question) What is this *anupurvi* (sequence) ?

(Answer) *Anupurvi* (sequence) is of ten types—(1) *namanupurvi,* (2) *sthapananupurvi,* (3) *dravyanupurvi,* (4) *kshetranupurvi,* (5) *kaalanupurvi,* (6) *utkirtananupurvi,* (7) *ganananupurvi,* (8) *samsthananupurvi,* (9) *samacharyanupurvi,* and (10) *bhaavanupurvi.*

नाम–स्थापना आनुपूर्वी

९४. से किं तं नामाणुपुव्वी ?

नाम-ठवणाओ तहेव।

९४. (प्रश्न) नाम आनुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) नाम और स्थापना आनुपूर्वी का स्वरूप नाम और स्थापना आवश्यक जैसा जानना चाहिए। (सूत्र १० से १२ देखें)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

NAMA AND STHAPANA-ANUPURVI

94. (Question) What is this *nama-anupurvi* (sequence as name)?

(Answer) *Nama-anupurvi* (sequence as name) and *sthapana-anupurvi* (sequence as notional installation) should be read same as *nama* and *sthapana avashyak* (replacing *avashyak* with *anupurvi*). (aphorisms 10-12)

द्रव्यानुपूर्वी का स्वरूप

९५. दव्वाणुपुव्वी जाव से किं तं जाणगसरीर–भवियसरीरवइरित्ता दव्वाणुपुव्वी ?

जाणगसरीर–भवियसरीरवइरित्ता दव्वाणुपुव्वी दुविहा पण्णत्ता। तं जहा– (१) उवणिहिया य, (२) अणोवणिहिया य।

९५. द्रव्यानुपूर्वी का स्वरूप भी ज्ञायकशरीर-भव्यशरीरव्यतिरिक्त द्रव्यानुपूर्वी के पहले तक के सभी भेद द्रव्यावश्यक के समान जानना चाहिए। (सूत्र १७ से १९ के अनुसार जाने)

(प्रश्न) ज्ञायकशरीर-भव्यशरीरव्यतिरिक्त द्रव्यानुपूर्वी का क्या स्वरूप है?

(उत्तर) ज्ञायकशरीर-भव्यशरीरव्यतिरिक्त द्रव्यानुपूर्वी दो प्रकार की है। यथा– (१) औपनिधिकी द्रव्यानुपूर्वी, और (२) अनौपनिधिकी द्रव्यानुपूर्वी।

DRVAYANUPURVI

95. *Dravya-anupurvi* (physical aspect of *anupurvi* or sequence) should be read same as *dravya avashyak* up to *Jnayak sharir-bhavya sharir vyatirikta dravya-avayshayak* (replacing *avashyak* with *anupurvi*). (aphorisms 17-19)

(Question) What is this *Jnayak sharir-bhavya sharir vyatirikta dravya-anupurvi* (physical-anupurvi other than the body of the knower and the body of the potential knower)?

(Answer) *Jnayak sharir-bhavya sharir vyatirikta dravya-anupurvi* (physical-anupurvi other than the body of the knower and the body of the potential knower) is of two types—(1) *Aupanidhiki dravya-anupurvi* (orderly physical

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

sequence) and (2) *Anaupanidhiki dravya-anupurvi* (disorderly physical sequence).

९६. तत्थ णं जा सा उवणिहिया सा ठप्पा।

९६. इनमें से औपनिधिकी द्रव्यानुपूर्वी स्थाप्य है।

96. Out of these *Aupanidhiki dravya-anupurvi* (orderly physical sequence) is worth installation only (worth a mention only).

विवेचन–प्रस्तुत सूत्र में द्रव्यानुपूर्वी के दो विकल्पों का निरूपण है–औपनिधिक द्रव्यानुपूर्वी और अनौपनिधिकी द्रव्यानुपुर्वी।

इस सूत्र में औपनिधिकी को व्यवहार योग्य नहीं बताकर अनौपनिधिकी द्रव्यानुपूर्वी के पाँच भेदों का वर्णन किया है।

औपनिधिकी का अर्थ–'उप' का अर्थ है 'समीप' तथा 'निधि' का अर्थ है रखना अर्थात् सम्बन्धित वस्तु को परस्पर क्रमपूर्वक समीप रखते जाना। किसी विवक्षित अर्थ की पूर्वानुपूर्वी आदि के क्रम से स्थापना करना। इसका मुख्य प्रयोजन द्रव्य की क्रम व्यवस्था समझाना है। जैसे आवश्यक आदि के छह अध्ययनों को पूर्वानुपुर्वी क्रम से स्थापित करना औपनिधिकी आनुपूर्वी है। इसका विषय बहुत सीमित है। इसलिए इसे 'गौण' या 'स्थाप्य' मानकर पहले अनौपनिधिकी द्रव्यानुपूर्वी का वर्णन किया जा रहा है। जब द्रव्यानुपूर्वी का नैगम नय के आधार पर विस्तार करके विषय को समझाना हो तब अनौपनिधि की द्रव्यानुपूर्वी का उपयोग होता है। इसमें पदार्थ की स्थापना क्रमानुसार नहीं होती।

Elaboration—This aphorism provides two alternatives of *dravya-anupurvi* (physical sequence)—(1) *Aupanidhiki dravya-anupurvi* (orderly physical sequence) and (2) *Anaupanidhiki dravya-anupurvi* (disorderly physical sequence). In the following aphorisms, after stating *aupanidhiki dravya-anupurvi* (orderly physical sequence) to be of little use, five types of *anaupanidhiki dravya-anupurvi* (disorderly physical sequence) have been described.

Meaning of aupanidhiki—'*up*' (pronounced as 'oop' in 'oops') means near and '*nidhi*' means to place. Thus *aupanidhik* means arranging related things one after another in proximity in a sequence. To put the desired meaning in an orderly sequence. Its basic purpose is to understand the sequential arrangement of *dravya* (substances). For

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

example to place or establish the six chapters of *Avashyak Sutra* in their desired or proper sequence is *aupanidhiki dravya-anupurvi* (orderly physical sequence). As its scope is very limited it is taken to be of little significance and thus worth a mention only. The author proceeds to describe *anaupanidhiki dravya-anupurvi* (disorderly physical sequence) which is useful when a thing or subject is analyzed by elaborating *dravya-anupurvi* (physical sequence) on the basis of *naigam naya* (coordinated viewpoint). Here the things are not arranged in an orderly sequence.

९७. तत्थ णं जा सा अणोवणिहिया सा दुविहा पन्नत्ता। तं जहा– (१) णेगम–ववहाराणं, (२) संगहस्स य।

९७. अनौपनिधिकी द्रव्यानुपूर्वी के दो प्रकार हैं–(१) नैगम–व्यवहारनयसंमत, और (२) संग्रहनयसंमत।

97. And *anaupanidhiki dravya-anupurvi* (disorderly physical sequence) is of two types—(1) *Naigam-vyavahar naya sammat* (conforming to coordinated and particularized viewpoints) and (2) *Samgrahanaya sammat* (conforming to generalized viewpoint).

विवेचन–अनौपनिधिकी द्रव्यानुपूर्वी दो प्रकार की है–एक नैगम और व्यवहारनय को लेकर चलने वाली, दूसरी संग्रहनय को लेकर चलने वाली। जैन दर्शन में सात नयों का कथन है। (१) नैगम, (२) संग्रह, (३) व्यवहार, (४) ऋजुसूत्र, (५) शब्द, (६) समभिरूढ़, तथा (७) एवंभूत। जब हम द्रव्य के सामान्य अंगों को ग्रहण करके उनका सामान्य रूप में कथन करना चाहते हैं तब वह दृष्टिकोण 'द्रव्यार्थिकनय' सापेक्ष होता है। जब द्रव्य के किसी एक अंश विशेष का कथन सूक्ष्म रूप से करना होता है तब वही दृष्टि 'पर्यायार्थिक नय' कहलाती है। सातों नय मूलतः इन दोनों में समा जाते हैं। नैगम, संग्रह और व्यवहार ये द्रव्यार्थिक नय हैं, शेष चार पर्यायार्थिक नय हैं, जो वस्तु के एक अंश–पर्याय को ही ग्रहण करते हैं।

द्रव्यार्थिक नय के भी दो भेद हैं–विशुद्ध तथा अविशुद्ध। नैगम और व्यवहार नय–ये दोनों वस्तु के स्वरूप का अधिकाधिक विस्तार पूर्वक निरूपण करते हैं–अतः अविशुद्ध नय हैं। संग्रहनय–अनन्त द्रव्यों में एकता स्वीकार करके संक्षेप में विवेचन करता है अतः यह शुद्ध नय है। यह द्रव्य में पूर्वापर विभाग नहीं मानता। इस प्रकार अनौपनिधिकी आनुपूर्वी के दो भेद हो जाते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Elaboration—*Anaupanidhiki dravya-anupurvi* (disorderly physical sequence) is of two types. One that proceeds according to the coordinated and particularized viewpoints (*Naigam-vyavahar naya sammat*) and the other according to the generalized viewpoint (*Samgrahanaya sammat*). There is a mention of seven *nayas* (viewpoints) in Jain philosophy—(1) *Naigama naya* (coordinated viewpoint), (2) *Samgraha naya* (generalized viewpoint), (3) *Vyavahara naya* (particularized viewpoint), (4) *Rijusutra naya* (precisionistic viewpoint or that related to specific point or period of time), (5) *Shabda naya* (verbal viewpoint or that related to language and grammar), (6) *Samabhirudha naya* (conventional viewpoint or that related to conventional meaning and ignoring etymological meaning), (7) *Evambhuta naya* (etymological viewpoint or that related to words used in original derivative sense and significance). When we take up common constituents of a substance and want to give just a generalized description then that statement is in context of *dravyarthik naya* (existent material aspect). When only a specific part of a substance is to be precisely described the statement is in context of *paryayarthik naya* (transformational aspects). All the said seven nayas (viewpoints) are included in these two. *Naigama naya* (coordinated viewpoint), *Samgraha naya* (generalized viewpoint), and *Vyavahara naya* (particularized viewpoint) are included in *dravyarthik naya* (existent material aspect). The remaining four are included in *paryayarthik naya* (transformational aspects) because they deal only with components.

Dravyarthik naya (existent material aspect) is also of two kinds—*vishuddha* (pure) and *avishuddha* (impure). *Naigam* and *vyavahar naya* (coordinated and particularized viewpoints) both describe things in great details therefore they are called impure or imprecise viewpoints. *Samgrahanaya* (generalized viewpoint) describes things observing uniformity in infinite things therefore it is called pure or precise viewpoint. It does not consider preceding and following modalities in substances. Thus there are two types of *anaupanidhiki dravya-anupurvi* (disorderly physical sequence).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(२) अनौपनिधिकी द्रव्यानुपूर्वी के भेद

९८. से किं तं णेगम-ववहाराणं अणोवणिहिया दव्वाणुपुव्वी ?

णेगम-ववहाराणं अणोवणिहिया दव्वाणुपुव्वी पंचविहा पण्णत्ता। तं जहा- (१) अट्ठपयपरूवणया, (२) भंगसमुक्कित्तणया, (३) भंगोवदंसणया, (४) समोयारे, (५) अणुगमे।

९८. (प्रश्न) नैगमनय और व्यवहारनय द्वारा मान्य अनौपनिधिकी द्रव्यानुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) नैगम और व्यवहारनयसंमत द्रव्यानुपूर्वीक के पाँच प्रकार हैं। जैसे- (१) अर्थपदप्ररूपणा, (२) भंगसमुत्कीर्तनता, ३) भंगोपदर्शनता, (४) समवतार, और (५) अनुगम।

(2) TYPES OF ANAUPANIDHIKI DRAVYA-ANUPURVI

98. (Question) What is this *Naigam-vyavahar naya sammat anaupanidhiki dravya-anupurvi* (disorderly physical sequence conforming to coordinated and particularized viewpoints) ?

(Answer) *Naigam-vyavahar naya sammat anaupanidhiki dravya-anupurvi* (disorderly physical sequence conforming to coordinated and particularized viewpoints) is of five types—(1) *Arth-padaprarupana* (semantics), (2) *Bhang-samutkirtanata* (enumeration of divisions or *bhangs*), (3) *Bhangopadarshanata* (explication of divisions or *bhangs*), (4) *Samavatara* (compatible assimilation), and (5) *Anugam* (systematic elaboration).

विवेचन-नैगम-व्यवहारनयसम्मत अनौपनिधिकी द्रव्यानुपूर्वी का जिन पाँच प्रकारों द्वारा विचार किया जाना है, उनके लक्षण इस प्रकार हैं-

(१) **अर्थपदप्ररूपणा**-सर्वप्रथम संज्ञा और संज्ञी के सम्बन्ध मात्र का कथन करना अर्थपदप्ररूपणा है।

(२) **भंगसमुत्कीर्तनता**-आनुपूर्वी आदि के पदों से निष्पन्न हुए पृथक्-पृथक् भंगों-विकल्पों या भेद प्रभेद आदि भंगों का संक्षेप रूप में कथन करना भंगसमुत्कीर्तनता है।

(३) **भंगोपदर्शनता**-संक्षेप में कहे गये उन्हीं भंगों में से प्रत्येक भंग का अपने अभिधेय रूप त्र्यणुकादि अर्थ के साथ उपदर्शन-कथन करना। अर्थात् भंगसमुत्कीर्तन में तो मात्र

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भंगविषयक सूत्र का ही उच्चारण होता है और भंगोपदर्शनमें वही सूत्र अपने विषयभूत अर्थ के साथ कहा जाता है। पहले में भंगों का निर्देश तथा इसमें द्रव्य के साथ भंगों की योजना की जाती है। यही दोनों में अन्तर है।

(४) **समवतार**–आनुपूर्वी आदि द्रव्यों का स्वस्थान (अपनी जाति) और परस्थान (दूसरी जाति) में अन्तर्भाव–समावेश होने के विचारों के प्रकार का नाम समवतार है।

(५) **अनुगम**–आनुपूर्वी आदि द्रव्यों का सत्पदप्ररूपणा आदि अनुयोगद्वारों से, द्रव्य, क्षेत्र आदि कोणों से व्याख्या करना अनुगम है।

Elaboration—The five methods used to propound *Naigam-vyavahar naya sammat anaupanidhiki dravya-anupurvi* (disorderly physical sequence conforming to coordinated and particularized viewpoints) are defined as follows—

(1) Arth-padaprarupana—To enunciate the relationship between word and meaning is called *arth-padaprarupana* (semantics).

(2) Bhang-samutkirtanata—Enumeration in brief of various divisions or *bhangs* (alternatives, types, categories, etc.) evolved from steps or components of a sequence (*anupurvi*) is called *bhang-samutkirtanata* (enumeration of divisions or *bhangs*).

(3) Bhangopadarshanata—To explicate each of the enumerated divisions or *bhangs* using the predicable form such as triad or aggregate of three *paramanus* (ultimate-particles) is called *bhangopadarshanata* (explication of divisions or *bhangs*). In *Bhang-samutkirtanata* (enumeration of divisions or *bhangs*) only the aphorism containing nomenclature of divisions or *bhangs* is stated but in *bhangopadarshanata* the same aphorism is stated with its meaning and definition of the subject. The first has the nomenclature of divisions or *bhangs* whereas the second has the substance systematically accommodated with the divisions or *bhangs*. This is the basic difference between the two.

(4) Samavatara—The kind of contemplation required for compatible assimilation of substances (sequential or otherwise) with those of the same or different categories is called *samavatara* (compatible assimilation).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(5) Anugam—The systematic elaboration of substances (sequential or otherwise) with the help of *anuyogadvars* (doors or methods of disquisition) and in context of parameters like matter, area, etc. is called *anugam* (systematic elaboration).

नैगम–व्यवहारनयसंमत अर्थपदप्ररूपणा

९९. से किं तं णेगम–ववहाराणं अट्ठपयपरूवणया ?

णेगम–ववहाराणं अट्ठपयपरूवणया तिपएसिए आणुपुव्वी, चउपएसिए आणुपुव्वी जाव दसपएसिए आणुव्वी, संखेज्जपदेसिए आणुपुव्वी, असंखेज्जपदेसिए आणुपुव्वी, अणंतपएसिए आणुपुव्वी।

परमाणुपोग्गले अणाणुपुव्वी।

दुपएसिए अवत्तव्वए

तिपएसिया आणुपुव्वीओ जाव अणंतपएसिया आणुपुव्वीओ।

परमाणुपोग्गला अणाणुपुव्वीओ।

दुपएसिया अवत्तव्वगाइं। से तं णेगम–ववहाराणं अट्ठपयपरूवणया।

९९. (प्रश्न) नैगम–व्यवहारनयसंमत अर्थपद की प्ररूपणा क्या है ?

(उत्तर) तीन प्रदेश वाला त्र्यणुकस्कन्ध आनुपूर्वी है। इसी प्रकार चतुष्प्रदेशिक आनुपूर्वी यावत् दसप्रदेशिक, संख्यातप्रदेशिक, असंख्यातप्रदेशिक और अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध आनुपूर्वी है। किन्तु परमाणु पुद्गल अनानुपूर्वी रूप है। द्विप्रदेशिक स्कन्ध अवक्तव्य है। अनेक त्रिप्रदेशिक स्कन्ध यावत् अनेक अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध आनुपूर्वियाँ–अनेक आनुपूर्वी रूप हैं। अनेक पृथक्–पृथक् पुद्गल परमाणु अनेक अनानुपूर्वी रूप हैं। अनेक द्विप्रदेशिक स्कन्ध अनेक अवक्तव्य हैं। यह नैगम और व्यवहारनयसंमत अर्थपदप्ररूपणा का स्वरूप जानना चाहिए है।

NAIGAM-VYAVAHAR NAYA SAMMAT ARTH-PADPRARUPANA

99. (Question) What is this *Naigam-vyavahar naya sammat arth-padaprarupana* (semantics conforming to coordinated and particularized viewpoints) ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(Answer) An aggregate (*skandh*) of three space-points or ultimate-particles (*paramanus*) is a sequential configuration (*anupurvi*). In the same way aggregates (*skandhs*) of four space-points or ultimate-particles (*paramanus*), (and so on...), ten space-points or ultimate-particles (*paramanus*), countable, uncountable, and infinite space-points or ultimate-particles (*paramanus*), are all sequential configurations (*anupurvis*). But a single ultimate-particle of matter (*paramanu pudgala*) is non-sequential (*ananupurvi*). An aggregate (*skandh*) of two space-points or ultimate-particles (*paramanus*) is inexpressible (*avaktavya*). Numerous aggregates (*skandhs*) of three space-points or ultimate-particles (*paramanus*), (and so on up to) infinite space-points or ultimate-particles (*paramanus*), are numerous sequential configurations (*anupurvis*). Numerous separate ultimate-particle of matter (*paramanu pudgala*) are numerous non-sequential configurations (*ananupurvis*). Numerous aggregates (*skandhs*) of two space-points or ultimate-particles (*paramanus*) are numerous inexpressible configurations (*avaktavyas*).

This concludes the description of *Naigam-vyavahar naya sammat arth-padaprarupana* (semantics conforming to coordinated and particularized viewpoints).

विवेचन-सूत्र में नैगम और व्यवहारनयसंमत अर्थपदप्ररूपणा की व्याख्या की है। त्र्यणुक स्कन्ध आदि जो अर्थ हैं-वे पदार्थ हैं, उनको अपना विषय बनाने वाले आनुपूर्वी आदि जो पद हैं, वे अर्थपद कहे जाते हैं, उनके विषय की प्ररूपणा अर्थ पद-प्ररूपणा है।

यहाँ यह समझना चाहिए कि क्रम व्यवस्था या परिपाटी को आनुपूर्वी कहते हैं और परिपाटी रूप आनुपूर्वी वहीं होती है जहाँ आदि, मध्य और अन्त रूप गणना का व्यवस्थित क्रम बनता है। यह आदि, मध्य और अन्त त्रिप्रदेशिक स्कन्ध से लेकर अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध एवं स्कन्धों में होते हैं। इसलिए इनमें प्रत्येक स्कन्ध आनुपूर्वी रूप होता है।

परमाणु अनानुपूर्वी रूप है-एक परमाणु अथवा पृथक्-पृथक् स्वतंत्र सत्ता वाले अनेक परमाणुओं में आदि, मध्य और अन्तरूप क्रम रचना नहीं होने से वे अनानुपूर्वी हैं। इसमें पूर्वानुपूर्वी और पश्चानुपूर्वी दोनों ही नहीं होती।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्विप्रदेशिक स्कन्ध की अवक्तव्यता—यद्यपि द्विप्रदेशिक स्कन्ध में दो परमाणु संश्लिष्ट रहते हैं, इसलिए यहाँ एक, एक के बाद दूसरा, इस प्रकार क्रमबद्धता-आनुपूर्वी है। किन्तु मध्य के अभाव में आदि और अन्त का कोई आधार नहीं बनता। अतः सम्पूर्ण गणनानुक्रम नहीं बन पाने के कारण द्विप्रदेशिक स्कन्ध में गणनानुक्रमात्मक आनुपूर्वी रूप से कथन किया जाना अशक्य है और द्विप्रदेशी स्कन्ध में परस्पर की अपेक्षा पूर्व-पश्चाद्भाव होने से पुद्गल परमाणु की तरह अनानुपूर्वी रूप से भी उसे नहीं कह सकते हैं। इस प्रकार आनुपूर्वी और अनानुपूर्वी दोनों रूप से कहा जाना शक्य नहीं होने से यह द्विप्रदेशिक स्कन्ध अवक्तव्य है।

बहुवचनान्त पदों का निर्देश क्यों?—त्रिप्रदेशिक स्कन्ध आनुपूर्वी है इत्यादि एक वचनान्त से संज्ञा-संज्ञी सम्बन्ध का कथन सिद्ध हो जाने पर भी आनुपूर्वी आदि द्रव्यों का हर एक भेद अनन्त व्यक्ति रूप है तथा नैगम एवं व्यवहारनय का ऐसा सिद्धान्त है, इस बात को प्रदर्शित करने के लिए बहुवचनान्त प्रयोग किया है। अर्थात् त्रिप्रदेशिक एकद्रव्यरूप एक ही आनुपूर्वी नहीं किन्तु त्रिप्रदेशिकद्रव्य अनन्त हैं, अतः उतनी ही अनन्त आनुपूर्वियों की सत्ता उनमें है।

क्रमविन्यास का कारण—यहाँ एक प्रश्न उठता है-सूत्रकार ने एक परमाणु से निष्पन्न अनानुपूर्वी द्रव्य, दो परमाणु के मिलन से निष्पन्न अवक्तव्य द्रव्य और फिर तीन परमाणुओं के संश्लेष से निष्पन्न आनुपूर्वी द्रव्य, इस प्रकार द्रव्य की वृद्धिरूप पूर्वानुपूर्वी क्रम का तथा इसी प्रकार तीन परमाणु से निष्पन्न आनुपूर्वी, दो परमाणु से निष्पन्न अवक्तव्य और एक परमाणु से निष्पन्न अनानुपूर्वी रूप पश्चानुपूर्वी का उल्लंघन करके पहले आनुपूर्वी द्रव्य का, उसके बाद अनानुपूर्वी द्रव्य का और सबसे अन्त में अवक्तव्य द्रव्य का निर्देश क्यों किया है? वृत्तिकार ने इसका कारण यह बताया है कि आनुपूर्वी द्रव्यों की अपेक्षा अनानुपूर्वी द्रव्य अल्प हैं और अनानुपूर्वी द्रव्यों की अपेक्षा अवक्तव्य द्रव्य और भी अल्प हैं। इस प्रकार से द्रव्य की अल्पता-न्यूनता का निर्देश करने के लिए सूत्र में यह क्रमविन्यास किया गया है।

Elaboration—This aphorism defines *Naigam-vyavahar naya sammat arth-padaprarupana* (semantics conforming to coordinated and particularized viewpoints). The terms like '*anupurvi* (sequence)' are words and the terms like 'aggregates (*skandhs*) of three ultimate-particles' are material concepts or meaning. To enunciate the relationship between these two (word and meaning) is called *arth-padaprarupana* (semantics).

Here it should be noted that a sequence or sequential configuration is called *anupurvi*. A sequence is possible only where there is a scope of a systematic arrangement having a beginning, middle, and an end. Such arrangement is possible only in aggregates (*skandhs*) having three or more (up to

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

infinite) ultimate-particles or space-points. Thus each of such aggregates (*skandhs*) is sequential (*anupurvi*).

Paramanu is non-sequential—One single ultimate-particle or many freely existing ultimate-particles with independent existence do not have an orderly arrangement with a beginning, middle, and end. Thus they are non-sequential (*ananupurvi*). They also have no scope of ascending or descending sequences.

Inexpressibility of an aggregate (skandh) of two—In an aggregate (*skandh*) of two *paramanus* (ultimate-particles) there is a semblance of sequence of one after the other. But in absence of a middle there is no basis for the first and the last. In absence of the possibility of making a perfect sequential arrangement it is not possible to enunciate an aggregate (*skandh*) of two as a countable progressive sequence (*anupurvi*). Also, as a preceding and following relationship between the two components exists in an aggregate (*skandh*) of two it can also not be expressed as a non-sequence like a single ultimate-particle (*paramanu*). Thus an aggregate (*skandh*) of two can neither be expressed as an *anupurvi* (sequence) nor as an *ananupurvi* (non-sequence). Therefore it is said to be inexpressible.

Why the plurality ?—An aggregate (*skandh*) of three or a triad is a sequence (*anupurvi*). Even this singular statement validates the word and meaning relationship. But the plural expression has been employed in order to convey that every category of sequential configuration of substances has infinite individual forms and they also conform to the conditions of *naigam-vyavahar naya* (coordinated and particularized viewpoints). This means that all triads are not in just one type of sequential configuration. There are infinite different triads and thus there is an existence of infinite sequential configurations in them.

The order of arrangement—A question arises here—The author has not arranged the three categories according to the increasing order of *paramanus* (ultimate-particles), viz. first of all non-sequential substances having a single *paramanu* (ultimate-particle), then inexpressible substances having two *paramanus* (ultimate-particles), and lastly sequential substances

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

having three or more *paramanus* (ultimate-particles). Also he has not used the reverse or the decreasing order viz. first of all sequential substances having three or more *paramanus* (ultimate-particles), then inexpressible substances having two *paramanus* (ultimate-particles), and lastly non-sequential substances having a single *paramanu* (ultimate-particle). Instead, why he has first mentioned sequential substances then non-sequential substances and lastly the inexpressible substances? The commentator (*Vritti*) explains that as compared to the sequential substances the non sequential substances are less in number and the inexpressible substances are even lesser. Thus the order followed here is based on the existing quantum of substances of each category in the universe.

१००. एयाए णं णेगम-ववहाराणं अट्ठपयपरूवणयाए किं पओयणं ?

एयाए णं णेगम-ववहाराणं अट्ठपयपरूवणयाए भंगसमुक्कित्तणया कीरइ।

१००. (प्रश्न) नैगम और व्यवहारनयसंमत अर्थपदप्ररूपणा रूप आनुपूर्वी से क्या प्रयोजन सिद्ध होता है?

(उत्तर) इस नैगम और व्यवहारनयसंमत अर्थपदप्ररूपणा द्वारा भंगसुमुत्कीर्तना की जाती है अर्थात् भंगों का कथन किया जाता है।

100. (Question) What is the purpose of this anupurvi (sequence) in the form of naigam-vyavahar naya sammat arth-padaprarupana (semantics conforming to coordinated and particularized viewpoints)?

(Answer) This *anupurvi* (sequence) in the form of *Naigam-vyavahar naya sammat arth-padaprarupana* (semantics conforming to coordinated and particularized viewpoints) is used to derive and state *bhang-samutkirtanata* (enumeration of divisions or *bhangs*).

नैगम-व्यवहारनयसंमत भंगसमुत्कीर्तनता

१०१. से किं तं णेगम-ववहाराणं भंगसमुक्कित्तणया ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१. णेगम–ववहाराणं भंगसमुक्कित्तणया, (१) अत्थि आणुपुव्वी, (२) अत्थि अणाणुपुव्वी, (३) अत्थि अवत्तव्वए, (४) अत्थि आणुपुव्वीओ, (५) अत्थि अणाणुपुव्वीओ, (६) अत्थि अवत्तव्वयाइं।

(१) अहवा अत्थि आणुपुव्वी य अणाणुपुव्वी य, (२) अहवा अत्थि आणुपुव्वी य, अणाणुपुव्वीओ य (३) अहवा अत्थि आणुपुव्वीओ य अणाणुपुव्वी य, (४) अहवा अत्थि आणुपुव्वीओ य अणाणुपुव्वीओ य (१०)

(१) अहवा अत्थि आणुपुव्वी य अवत्तव्वए य, (२) अहवा अत्थि आणुपुव्वी य अवत्तव्वयाइं च, (३) अहवा अत्थि आणुपुव्वीओ य अवत्तव्वए य, (४) अहवा अत्थि आणुपुव्वीओ य अवत्तव्वयाइं च। (१४)

(१) अहवा अत्थि अणाणुपुव्वी य अवत्तव्वए य, (२) अहवा अत्थि अणाणुपुव्वी य अवत्तव्वए य, (३) अहवा अत्थि अणाणुपुव्वीओ य अवत्तव्वए य, (४) अहवा अत्थि अणाणुपुव्वीओ य अवत्तव्वयाइं च। (१८)

(१) अहवा अत्थि आणुपुव्वी य अणाणुपुव्वी य अवत्तव्वए य, (२) अहवा अत्थि आणुपुव्वी य अणाणुपुव्वी य अवत्तव्वयाइं च, (३) अहवा अत्थि आणुपुव्वी य आणुपुव्वीओ य अवत्तव्वए य, (४) अहवा अत्थि आणुपुव्वी य अणाणुपुव्वीओ य अवत्तव्वयाइं च, (५) अहवा अत्थि आणुपुव्वीओ य अणाणुपुव्वी य अवत्तव्वए य, (६) अहवा अत्थि आणुपुव्वीओ य अणाणुपुव्वी य अवत्तव्वयाइं च, (२४)

(७) अहवा अत्थि आणुपुव्वीओय अणाणुपुव्वीओ य अवत्तव्वए य, (८) अहवा अत्थि आणुपुव्वीओ य अणाणुपुव्वीओ य अवत्तव्वयाइं, (८) (२६) एए अट्ठ भंगा। एवं सव्वे वि छव्वीसं भंगा २६। से तं नेगम–ववहाराणं भंगसमुक्कित्तणया।

१०१. (प्रश्न) नैगम और व्यवहारनयसंमत भंगसमुत्कीर्तन क्या है ?

(उत्तर) नैगम और व्यवहारनयसम्मत भंगसमुत्कीर्तन का स्वरूप इस प्रकार है–

(१) आनुपूर्वी है, (२) अनानुपूर्वी है, (३) अवक्तव्य है, (४) आनुपूर्वियाँ हैं, (५) अनानुपूर्वियाँ हैं, (६) अवक्तव्यक हैं। (कुल ६ भंग)

(१) आनुपूर्वी है और अनानुपूर्वी है, (२) आनुपूर्वी है और अनानुपूर्वियाँ हैं, (३) आनुपूर्वियाँ है और अनानुपूर्वी है, (४) आनुपूर्वियाँ और अनानुपूर्वियाँ हैं। (४) (कुल दस भंग।)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अथवा–(१) आनुपूर्वी है और अवक्तव्यक है, (२) आनुपूर्वी है और अवक्तव्यक हैं, (३) आनुपूर्वियाँ है और अवक्तव्य है, (४) अथवा आनुपूर्वियाँ और अवक्तव्यक (अनेक) हैं। (४) (कुल १४ भंग।)

अथवा–(१) अनानुपूर्वी है और अवक्तव्य हैं, (२) अनानुपूर्वी है और अवक्तव्य हैं, (३) अनानुपूर्वियाँ अवक्तव्य हैं, (४) अनानुपूर्वियाँ और अनेक अवक्तव्यक हैं। (८) (कुल १८ भंग।)

अथवा–(१) आनुपूर्वी है अनानुपूर्वी है और अवक्तव्य है, (२) आनुपूर्वी है, अनानुपूर्वी है और अवक्तव्यक हैं, (३) आनुपूर्वी है, अनानुपूर्वियाँ है और अवक्तव्य है, (४) आनुपूर्वी है, अनानुपूर्वियाँ है और अवक्तव्यक हैं, (५) आनुपूर्वियाँ है, अनानुपूर्वी है और अवक्तव्य है, (६) आनुपूर्वियां है, अनानुपूर्वी है और अवक्तव्यक हैं, (७) आनुपूर्वियाँ है, अनानुपूर्वियाँ है और अवक्तव्य है, (८) आनुपूर्वियाँ, अनानुपूर्वियाँ और अनेक अवक्तव्यक हैं। (८)। इस प्रकार यह आठ भंग हैं तथा

ये सब मिलकर छब्बीस भंग होते हैं। यह नैगम–व्यवहारनयसम्मतभंगसमुत्कीर्तनता का स्वरूप है।

NAIGAM-VYAVAHAR NAYA SAMMAT BHANG-SAMUTKIRTANATA

101. (Question) What is this *naigam-vyavahar naya sammat bhang-samutkirtanata* (enumeration of divisions or *bhangs* conforming to coordinated and particularized viewpoints) ?

(Answer) *Naigam-vyavahar naya sammat bhang-samutkirtanata* (enumeration of divisions or *bhangs* conforming to coordinated and particularized viewpoints) is as follows—

a. (1) There is an *anupurvi* (sequence), (2) There is an *ananupurvi* (non-sequence), (3) There is an *avaktavya* (inexpressible), (4) There are many *anupurvis* (sequences), (5) There are many *ananupurvis* (non-sequences), (6) There are many *avaktavyas* (inexpressibles). (6) (a total of 6 divisions or *bhangs*)

b. (1) There is an *anupurvi* (sequence) and an *ananupurvi* (non-sequence), (2) There is an *anupurvi*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(sequence) and many *ananupurvis* (non-sequences), (iii) There are many *anupurvis* (sequences) and an *ananupurvi* (non-sequence), (iv) There are many *anupurvis* (sequences) and many *ananupurvis* (non-sequences). (4) (a total of 10 divisions or *bhangs*)

c. (1) There is an *anupurvi* (sequence) and an *avaktavya* (inexpressible), (2) There is an *anupurvi* (sequence) and many *avaktavyas* (inexpressibles), (3) There are many *anupurvis* (sequences) and an *avaktavya* (inexpressible), (4) There are many *anupurvis* (sequences) and many *avaktavyas* (inexpressibles). (4) (a total of 14 divisions or *bhangs*)

(1) There is an *ananupurvi* (non-sequence) and an *avaktavya* (inexpressible), (2) There is an *ananupurvi* (non-sequence) and many *avaktavyas* (inexpressibles), (3) There are many *ananupurvis* (non-sequences) and an *avaktavya* (inexpressible), (4) There are many *ananupurvis* (non-sequences) and many *avaktavyas* (inexpressibles). (4) (a total of 18 divisions or *bhangs*)

(1) There is an *anupurvi* (sequence), *ananupurvi* (non-sequence), and an *avaktavya* (inexpressible), (2) There is an *anupurvi* (sequence), *ananupurvi* (non-sequence), and many *avaktavyas* (inexpressibles), (3) There is an *anupurvi* (sequence), many *ananupurvis* (non-sequences) and an *avaktavya* (inexpressible), (4) There is an *anupurvi* (sequence), many *ananupurvis* (non-sequences) and many *avaktavyas* (inexpressibles), (5) There are many *anupurvis* (sequences), an *ananupurvi* (non-sequence) and an *avaktavya* (inexpressible), (6) There are many *anupurvis* (sequences), an *ananupurvi* (non-sequence) and many *avaktavyas* (inexpressibles), (7) There are many *anupurvis* (sequences), many *ananupurvis* (non-sequences) and an *avaktavya* (inexpressible), (8) There are many *anupurvis* (sequences), many *ananupurvis* (non-sequences) and many

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

avaktavyas (inexpressibles). (8) (a total of 26 divisions or *bhangs*). Thus the last group has eight divisions or *bhangs* and 26 divisions or *bhangs* in all. This concludes the description of *naigam-vyavahar naya sammat bhang-samutkirtanata* (enumeration of divisions or *bhangs* conforming to coordinated and particularized viewpoints)

विवेचन–सूत्र में नैगम–व्यवहारनयसम्मत छब्बीस भंगों का समुत्कीर्तन (कथन) किया है। जो परस्पर संयोग और असंयोग की अपेक्षा से बनते हैं। इन छब्बीस भंगों के मूल आधार आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवक्तव्य यह तीन पदार्थ हैं। इनके असंयोग पक्ष में एकवचनान्त तीन और बहुवचनान्त तीन इस प्रकार असंयोगी छह भंग होते हैं।

संयोगपक्ष में इन तीन पदों के द्विकसंयोगी भंग तीन चतुर्भंगी रूप होने से कुल बारह हैं। इन एक–एक भंग में दो–दो का संयोग होने पर एकवचन और बहुवचन को लेकर चार–चार भंग होते हैं। इसलिए तीन चतुर्भंगी और उनके कुल बारह भंग हो जाते हैं।

त्रिकसंयोग में एकवचन और बहुवचन को लेकर आठ भंग बनते हैं। इस प्रकार छह, बारह और आठ भंगों को मिलाने से कुल छब्बीस भंग हो जाते हैं। सुगमता से बोध के लिए स्थापना यंत्र देखें–

Elaboration—The aphorism enumerates 26 divisions or *bhangs* conforming to *naigam-vyavahar naya* (coordinated and particularized viewpoints). These are derived with mutual combination and separation. The basis of these twenty six divisions or *bhangs* are three categories—*anupurvi* (sequence), *ananupurvi* (non-sequence), and *avaktavya* (inexpressible). Separately taken there are six divisions or *bhangs*, three singular and three plural.

Taken in combinations of two, there are three sets of four divisions or *bhangs* making a total of twelve. In each of these sets combinations of a singular and a plural of each of the three categories make four divisions or *bhangs* each, making three sets of four divisions or *bhangs* totaling to twelve divisions or *bhangs*.

Taken in combination of three with singular and plural of each category there are eight divisions or *bhangs*. Thus adding together six, twelve, and eight divisions or *bhangs* make a total of twenty six divisions or *bhangs*. For clarity these have been arranged into a table :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छब्बीस भंगों का स्थापना यंत्र

असंयोगी भंग ६

१. आनुपूर्वी	(१)	ooo	४. आनुपूर्वियाँ	(३)	ooo	ooo	ooo
२. अनानुपूर्वी	(१)	o	५. अनानुपूर्वियाँ	(३)	o	o	o
३. अवक्तव्य	(१)	oo	६. अवक्तव्यक	(३)	oo	oo	oo

द्विक संयोगी भंग १२

१. आनुपूर्वी	(१)	ooo			अननानुपूर्वी	(१)	o		
२. आनुपूर्वी	(१)	ooo			अनानुपूर्वियां	(३)	o	o	o
३. आनुपूर्वियां	(३)	ooo	ooo	ooo	अनानुपूर्वी	(१)	o		
४. आनुपूर्वियां	(३)	ooo	ooo	ooo	अनानुपूर्वियां	(३)	o	o	o
५. आनुपूर्वी	(१)	ooo			अवक्तव्य	(३)	oo		
६. आनुपूर्वी	(१)	ooo			अवक्तव्यक	(३)	oo	oo	oo
७. आनुपूर्वियां	(३)	ooo	ooo	ooo	अवक्तव्य	(१)	oo		
८. आनुपूर्वियां	(३)	ooo	ooo	ooo	अवक्तव्यक	(३)	oo	oo	oo
९. अनानुपूर्वी	(१)	o			अवक्तव्य	(१)	oo		
१०. अनानुपूर्वी	(१)	o			अवक्तव्यक	(३)	oo	oo	oo
११. अनानुपूर्वियां	(३)	o	o	o	अवक्तव्य	(१)	oo		
१२. अनानुपूर्वियां	(३)	o	o	o	अवक्तव्यक	(३)	oo	oo	oo

त्रिक संयोगी भंग ८

१. आनु.	(१)		ooo		अना.	(१)		o		अव.	(१)		oo	
२. आनु.	(१)		ooo		अना.	(१)		o		अव.	(३)	oo	oo	oo
३. आनु.	(१)		ooo		अना.	(३)	o	o	o	अव.	(१)		oo	
४. आनु.	(१)		ooo		अना.	(३)	o	o	o	अव.	(३)	oo	oo	oo
५. आनु.	(३)	ooo	ooo	ooo	अना.	(१)		o		अव.	(१)		oo	
६. आनु.	(३)	ooo	ooo	ooo	अना.	(१)		o		अव.	(३)	oo	oo	oo
७. आनु.	(३)	ooo	ooo	ooo	अना.	(३)	o	o	o	अव.	(१)		oo	
८. आनु.	(३)	ooo	ooo	ooo	अना.	(३)	o	o	o	अव.	(३)	oo	oo	oo

नोट–कोष्टक में (१) का अर्थ है एक वचनान्त (३) का अर्थ है बहुवचनान्त

इन भंगों का समुत्कीर्तन–वर्णन इसलिए किया जाता है कि असंयोगी छह और संयोगज बीस भंगों में से वक्ता जिस भंग से द्रव्य की विवक्षा करना चाहता है, वह उस भंग से विवक्षित द्रव्य को कहे। इसी कारण यहाँ नैगम और व्यवहारनयसंमत समस्त भंगों का कथन करने के लिए इन भंगों को यन्त्र में स्थापित किया है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

TABLE OF 26 DIVISIONS OR BHANGS

Taken separately—6 divisions or bhangs

1. AP	(1)	ooo	4. APs	(3)	ooo	ooo	ooo
2. AA	(1)	o	5. AAs	(3)	o	o	o
3. AV	(1)	oo	6. AVs	(3)	oo	oo	oo

Taken in combinations of two—12 divisions or bhangs

1. AP	(1)	ooo			AA	(1)	o		
2. AP	(1)	ooo			AAs	(3)	o	o	o
3. APs	(3)	ooo	ooo	ooo	AA	(1)	o		
4. APs	(3)	ooo	ooo	ooo	AAs	(3)	o	o	o
5. AP	(1)	ooo			AV	(3)	oo		
6. AP	(1)	ooo			AVs	(3)	oo	oo	oo
7. APs	(3)	ooo	ooo	ooo	AV	(1)	oo		
8. APs	(3)	ooo	ooo	ooo	AVs	(3)	oo	oo	oo
9. AA	(1)	o			AV	(1)	oo		
10. AA	(1)	o			AVs	(3)	oo	oo	oo
11. AAs	(3)	o	o	o	AV	(1)	oo		
12. AAs	(3)	o	o	o	AVs	(3)	oo	oo	oo

Taken in combination of three—8 divisions or bhangs

1. AP	(1)		ooo		AA	(1)		o		AV	(1)		oo	
2. AP	(1)		ooo		AA	(1)		o		AVs	(3)	oo	oo	oo
3. AP	(1)		ooo		AAs	(3)	o	o	o	AV	(1)		oo	
4. AP	(1)		ooo		AAs	(3)	o	o	o	AVs	(3)	oo	oo	oo
5. APs	(3)	ooo	ooo	ooo	AA	(1)		o		AV	(1)		oo	
6. APs	(3)	ooo	ooo	ooo	AA	(1)		o		AVs	(3)	oo	oo	oo
7. APs	(3)	ooo	ooo	ooo	AAs	(3)	o	o	o	AV	(1)		oo	
8. APs	(3)	ooo	ooo	ooo	AAs	(3)	o	o	o	AVs	(3)	oo	oo	oo

AP = ANUPURVI. **AA** = ANANUPURVI. **AV** = AVAKTAVYA

These divisions or *bhangs* have been enumerated to facilitate the speaker to select the specific division (*bhang*) out of the six taken separately and twenty taken in combination, in context of which he wants to describe a substance. That is why all the divisions conforming to *Naigam-vyavahar naya* (coordinated and particularized viewpoints) have been tabulated.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०२. एयाए णं णेगम-ववहाराणं भंगसमुक्कित्तणयाए किं पओयणं ?

एयाए णं णेगम-ववहाराणं भंगसमुक्कित्तणयाए भंगोवदंसणया कीरइ।

१०२. (प्रश्न) इस नैगम और व्यवहारनयसम्मत भंगसमुत्कीर्तनता का क्या प्रयोजन है?

(उत्तर) नैगम व्यवहारनयसम्मत भंगसमुत्कीर्तनता से भंगोपदर्शन-भंगों का कथन किया जाता है।

102. (Question) What is the purpose of this *naigam-vyavahar naya sammat bhang-samutkirtanata* (enumeration of divisions or *bhangs* conforming to coordinated and particularized viewpoints) ?

(Answer) This *naigam-vyavahar naya sammat bhang-samutkirtanata* (enumeration of divisions or *bhangs* conforming to coordinated and particularized viewpoints) is used to derive and state *Bhangopadarshanata* (explication of divisions or *bhangs*).

विवेचन-सूत्र में भंग समुत्कीर्तन का प्रयोजन बताया है। यद्यपि भंगसमुत्कीर्तन और भंगोपदर्शन का आशय स्थूल दृष्टि से एक जैसा प्रतीत होता है, लेकिन जहाँ शब्द भेद होता है वहाँ अर्थभेद भी होता है। जैसे-भंगसमुत्कीर्तन में तो भंगों का नाम और उनके विकल्प कितने भंग होते हैं, यह बतलाया है और भंगोपदर्शन में उनका त्र्यणुक स्कन्ध आदि वाच्यार्थ कहा जाता है। इसलिए भंगसमुत्कीर्तनता का फल है भंगोपदर्शनता।

Elaboration—This aphorism states the purpose of *bhang-samutkirtanata* (enumeration of divisions or *bhangs*). Broadly looking the purpose of enumeration of divisions or *bhangs* and explication of divisions or *bhangs* appears to be same but where there is a variation of words there is also a variation of meaning. In enumeration of divisions or *bhangs* only the nomenclature and possible combinations are mentioned but in explication of divisions or *bhangs* their intent of meaning, such as triad-aggregate of ultimate-particles, etc., is stated. Thus *bhangopadarshanata* (explication of divisions or *bhangs*) is the

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

consequence of *bhang-samutkirtanata* (enumeration of divisions or *bhangs*).

नैगम–व्यवहारनयसम्मत भंगोपदर्शनता

१०३. से किं तं णेगम–ववहाराणं भंगोवदंसणया ?

णेगम–ववहाराणं भंगोवदंसणया (१) तिपदेसिए आणुपुव्वी, (२) परमाणुपोग्गले अणाणुपुव्वी, (३) दुपदेसिए अवत्तव्वए, (४) तिपदेसिया आणुपुव्वीओ, (५) परमाणुपोग्गला अणाणुपुव्वीओ, (६) दुपदेसिया अवत्तव्वयाइं।

अहवा (१) तिपदेसिए य परमाणुपोग्गले य आणुपुव्वी अणाणुपुव्वी य, (२) अहवा तिपदेसिए य परमाणुपोग्गला य आणुपुव्वी य अणाणुपुव्वीओ य, (३) अहवा तिपदेसिया य परमाणुपोग्गले य आणुपुव्वीओ य अणाणुपुव्वी य, (४) अहवा तिपदेसिया य परमाणु पोग्गला य आणुपुव्वीओ य अणाणुपुव्वीओ य (१०)

अहवा (१) तिपदेसिए दुपदेसिए य आणुपुव्वी य अवत्तव्वए य, (२) अहवा तिपदेसिए य दुपदेसिया य आणुपुव्वी या अवत्तव्वयाइं च, (३) अहवा तिपदेसिया य दुपदेसिए य आणुपुव्वीओ य अवत्तव्वए य, (४) अहवा तिपदेसिया य दुपदेसिया य आणुपुव्वीओ य अवत्तव्वयाइं च (१४)

अहवा (१) परमाणुपोग्गले य दुपदेसिए य अणाणुपुव्वी य अवत्तव्वए य, (२) अहवा परमाणुपोग्गले य दुपदेसिया य अणाणुपुव्वी य अवत्तव्वयाइं च, (३) अहवा परमाणुपोग्गला या दुपदेसिए य अणाणुपुव्वीओ य अवत्तव्वए य, (४) अहवा परमाणुपोग्गला य दुपदेसिया य अणाणुपुव्वीओ य अवत्तव्वयाइं च। (१८)

अहवा (१) तिपदेसिए य परमाणुपोग्गले य दुपदेसिए य आणुपुव्वी य अणाणुपुव्वी य अवत्तव्वए य, (२) तिपदेसिए य परमाणुपोग्गले य दुपदेसिया य आणुपुव्वी य अणाणुपुव्वी य अवत्तव्वयाइं च, (३) अहवा तिपदेसिए य परमाणुपोग्गला। दुपदेसिए य आणुपुव्वी य अणाणुपुव्वीओ य अवत्तव्वए य, (४) अहवा तिपएसिए य परमाणुपोग्गला य दुपदेसिया य आणुपुव्वी य अणाणुपुव्वीयो य अवत्तव्वयाइं च (२२)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहवा (५) तिपदेसिया य परमाणुपोग्गले य दुपदेसिए य आणुपुव्वीओ य अणाणुपुव्वी य अवत्तव्वए य, (६) अहवा तिपदेसिया य परमाणुपोग्गले य दुपदेसिया य आणुपुव्वीओ य अणाणुपुव्वी य अवत्तव्वयाइं च, (७) अहवा तिपदेसिया य परमाणुपोग्गला य दुपदेसिए य आणुव्वीओ य अणाणुपुव्वीओ य अवत्तव्वए य, (८) अहवा तिपदेसिया य परमाणुपोग्गला य दुपदेसिया या आणुपुव्वीओ य अणाणुपुव्वीओ य अवत्तव्वयाइं च ८। (२६) से तं नेगम--ववहाराणं भंगोदंसणया।

१०३. (प्रश्न) नैगम और व्यवहारनयसंमत भंगोपदर्शनता क्या है?

(उत्तर) नैगम-व्यवहारनयसंमत भंगोपदर्शनता इस प्रकार है-

(१) त्रिप्रदेशिक आनुपूर्वी, (२) परमाणुपुद्गल अनानुपूर्वी, (३) द्विप्रदेशिक अवक्तव्य, (४) त्रिप्रदेशिक आनुपूर्वियाँ, (५) परमाणुपुद्गल अनानुपूर्वियाँ हैं, (६) द्विप्रदेशिक अवक्तव्यक। (इस प्रकार असंयोगी छह भंगों का कथन है) अथवा-

(१) त्रिप्रदेशिक है, परमाणुपुद्गल है आनुपूर्वी है और अनानुपूर्वी है, (७) (२) त्रिप्रदेशिक है, अनेक परमाणुपुद्गल- है, आनुपूर्वी है और अनानुपूर्वियाँ है, (८), (३) अनेक त्रिप्रदेशिक है परमाणुपुद्गल है आनुपूर्वियाँ और अनानुपूर्वियाँ हैं, (९) (४) त्रिप्रदेशिक है, अनेक परमाणुपुद्गल हैं आनुपूर्वियां और अनानुपूर्वियाँ हैं (१०)। अथवा-

(१) त्रिप्रदेशिक द्विप्रदेशिक है आनुपूर्वी और अवक्तव्य रूप हैं, (११) (२) त्रिप्रदेशिक है अनेक द्विप्रदेशिक है आनुपूर्वी और अवक्तव्य रूप हैं (१२), (३) त्रिप्रदेशिक और और द्विप्रदेशिक आनुपूर्वी अवक्तव्य रूप हैं (१३), (४) त्रिप्रदेशिक और द्विप्रदेशिक आनुपूर्वियों और अवक्तव्यकों रूप हैं। (१४) अथवा-

(१) परमाणुपुद्गल और द्विप्रदेशिक है, अनानुपूर्वी अवक्तव्यक रूप हैं (१५), (२) परमाणुपुद्गल और द्विप्रदेशिक अनानुपूर्वी अवक्तव्यकों रूप हैं (१६), (३) अनेक परमाणुपुद्गल और द्विप्रदेशिक है, अनानुपूर्वी और अवक्तव्य रूप (१७) (४) परमाणुपुद्गल और द्विप्रदेशिक अनानुपूर्वियों और अवक्तव्यकों रूप हैं (१८)। अथवा-

(१) त्रिप्रदेशिक है, परमाणुपुद्गल है और द्विप्रदेशिक आनुपूर्वी-अनानुपूर्वी अवक्तव्यक रूप है (१९), (२) त्रिप्रदेशिक परमाणुपुद्गल है द्विप्रदेशिक है, आनुपूर्वी,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनानुपूर्वी और अवक्तव्यकों रूप है (२०) (३) त्रिप्रदेशिक अनेक परमाणुपुद्गल द्विप्रदेशिक आनुपूर्वी, अनानुपूर्वियों और अवक्तव्यक रूप हैं (२१), (४) त्रिप्रदेशिक परमाणुपुद्गल और द्विप्रदेशिक आनुपूर्वी, अनानुपूर्वियों और अवक्तव्यकों रूप हैं (२२), (५) अनेक त्रिप्रदेशिक है, परमाणुपुद्गल है और द्विप्रदेशिक आनुपूर्वियों, अनानुपूर्वी और अवक्तव्यक रूप हैं (२३), (६) अनेक त्रिप्रदेशिक है, परमाणुपुद्गल है और अनेक द्विप्रदेशिक आनुपूर्वियों, अनानुपूर्वी और अवक्तव्यकों रूप हैं (२४), (७) अनेक त्रिप्रदेशिक है, परमाणुपुद्गल और द्विप्रदेशिक आनुपूर्वियों, अनानुपूर्वियों और अवक्तव्यक रूप है, (२५). अनेक त्रिप्रदेशिक है, अनेक परमाणुपुद्गल हैं और अनेक द्विप्रदेशिक अनुपूर्वियों-अनानुपूर्वियों-अवक्तव्यकों रूप हैं (२६)।

यह नैगम-व्यवहारनयसंमत भंगोपदर्शनता का स्वरूप है।

NAIGAM-VYAVAHAR NAYA SAMMAT BHANGOPADARSHANATA

103. (Question) What is this *naigam-vyavahar naya sammat bhangopadarshanata* (explication of divisions or *bhangs* conforming to coordinated and particularized viewpoints)?

(Answer) *Naigam-vyavahar naya sammat bhangopadarshanata* (explication of divisions or *bhangs* conforming to coordinated and particularized viewpoints) is as follows—

(1) There is a triad (of three space-points or three ultimate-particles) *anupurvi* (sequence), (2) There is a single particle (*paramanu-pudgala* or ultimate-particle of matter) *ananupurvi* (non-sequence), (3) There is a biunial-aggregate (aggregate of two space-points or ultimate-particles) *avaktavya* (inexpressible), (4) There are many triad *anupurvis* (sequences), (5) There are many single particle *ananupurvis* (non-sequences), (6) There are many biunial-aggregate *avaktavyas* (inexpressibles). (6) (a total of 6 divisions or *bhangs*)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

a. (1) There is a triad *anupurvi* (sequence) and a single particle *ananupurvi* (non-sequence), (2) There is a triad *anupurvi* (sequence) and many single particle *ananupurvis* (non-sequences), (3) There are many triad *anupurvis* (sequences) and a single particle *ananupurvi* (non-sequence), (4) There are many triad *anupurvis* (sequences) and many single particle *ananupurvis* (non-sequences). (4) (a total of 10 divisions or *bhangs*)

b. (1) There is a triad *anupurvi* (sequence) and a biunial-aggregate *avaktavya* (inexpressible), (2) There is a triad *anupurvi* (sequence) and many biunial-aggregate *avaktavyas* (inexpressibles), (3) There are many triad *anupurvis* (sequences) and a biunial-aggregate *avaktavya* (inexpressible), (4) There are many triad *anupurvis* (sequences) and many biunial-aggregate *avaktavyas* (inexpressibles). (4) (a total of 14 divisions or *bhangs*)

c. (1) There is a single particle *ananupurvi* (non-sequence) and a biunial-aggregate *avaktavya* (inexpressible), (2) There is a single particle *ananupurvi* (non-sequence) and many biunial-aggregate *avaktavyas* (inexpressibles), (3) There are many single particle *ananupurvis* (non-sequences) and a biunial-aggregate *avaktavya* (inexpressible), (4) There are many single particle *ananupurvis* (non-sequences) and many biunial-aggregate *avaktavyas* (inexpressibles). (4) (a total of 18 divisions or *bhangs*)

d. (1) There is a triad *anupurvi* (sequence), single particle *ananupurvi* (non-sequence), and a biunial-aggregate *avaktavya* (inexpressible), (2) There is a triad *anupurvi* (sequence), single particle *ananupurvi* (non-sequence), and many biunial-aggregate *avaktavyas* (inexpressibles), (3) There is a triad *anupurvi* (sequence), many single

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

particle *ananupurvis* (non-sequences) and a biunial-aggregate *avaktavya* (inexpressible), (4) There is a triad *anupurvi* (sequence), many single particle *ananupurvis* (non-sequences) and many biunial-aggregate *avaktavyas* (inexpressibles), (5) There are many triad *anupurvis* (sequences), a single particle *ananupurvi* (non-sequence) and a biunial-aggregate *avaktavya* (inexpressible), (6) There are many triad *anupurvis* (sequences), a single particle *ananupurvi* (non-sequence) and many biunial-aggregate *avaktavyas* (inexpressibles), (7) There are many triad *anupurvis* (sequences), many single particle *ananupurvis* (non-sequences) and a biunial-aggregate *avaktavya* (inexpressible), (8) There are many triad *anupurvis* (sequences), many single particle *ananupurvis* (non-sequences) and many biunial-aggregate *avaktavyas* (inexpressibles). (8) (a total of 26 divisions or *bhangs*). This concludes the description of *Naigam-vyavahar naya sammat bhangopadarshanata* (explication of divisions or *bhangs* conforming to coordinated and particularized viewpoints).

विवेचन–सूत्र १०१ में भंगसमुत्कीर्तन के द्वारा २६ भंगों का जो संक्षेप रूप में संकेत किया था, उसी का यहाँ विस्तार से स्पष्ट किया है कि किस भंग के द्वारा किसके लिए संकेत किया है। त्रिप्रदेशी (ஃ) आनुपूर्वी का, परमाणुपुद्गल (०) अनानुपूर्वी का और द्विप्रदेशी (००) अवक्तव्य शब्द का सूचक है।

Elaboration—In aphorism 101 the process of enumeration of division or *bhang* was used to indicate in brief about the 26 divisions or *bhangs*. Here the same has been expanded further to include the theme of each division or *bhang*. Triad of three space-points or three ultimate-particles ஃ is covered by *anupurvi*, single particle (o) or *paramanu-pudgala* (ultimate-particle of matter) is covered by *ananupurvi*, and biunial-aggregate of two ultimate-particles (oo) or two space-points is covered by *avaktavya*.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०४. (१) से किं तं समोयारे ?

समोयारे णेगम–ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं कहिं समोयरंति ? किं आणुपुव्वीदव्वेहिं समोयरंति ? अणाणुपुव्वीदव्वेहिं समोयरंति ? अवत्तव्वयदव्वेहिं समोयरंति ?

णेगम–ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं आणुपुव्वीदव्वेहिं समोयरंति, णो अणाणुपुव्वीदव्वेहिं समोयरंति नो अवत्तव्वयदव्वेहिं समोयरंति।

१०४. (प्रश्न १) समवतार का क्या अर्थ है ?

नैगम और व्यवहारनयसम्मत आनुपूर्वीद्रव्य कहाँ समवतरित (समाविष्ट) होते हैं ? क्या आनुपूर्वीद्रव्यों में समवतरित होते हैं, अनानुपूर्वीद्रव्यों में अथवा अवक्तव्यकद्रव्यों में समवतरित होते हैं ?

(उत्तर) नैगम और व्यवहारनयसम्मत आनुपूर्वी द्रव्य आनुपूर्वीद्रव्यों में समवतरित होते हैं, किन्तु अनानुपूर्वीद्रव्यों में या अवक्तव्यद्रव्यों में समवतरित नहीं होते हैं।

SAMAVATARA : ANUPURVI DRAVYA

104. (Question 1) What is this *samavatara* (compatible assimilation) ?

Where can there be a compatible assimilation (*samavatara*) of *naigam-vyavahar naya sammat anupurvi dravya* (sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) ? Can they have compatible assimilation (*samavatara*) with sequential substances (*anupurvi dravya*) or non-sequential substances (*ananupurvi dravya*) or inexpressible substances (*avaktavya dravya*) ?

(Answer) *Naigam-vyavahar naya sammat anupurvi dravya* (sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) can have compatible assimilation (*samavatara*) with sequential substances (*anupurvi dravya*) only and not with non-sequential

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

substances (*Ananupurvi dravya*) or inexpressible substances (*Avaktavya Dravya*).

अनानुपूर्वी द्रव्य

(२) णेगम–ववहाराणं अणाणुपुव्वीदव्वाइं कहिं समोयरंति ? किं आणुपुव्वीदव्वेहिं समोयरंति ? अणाणुपुव्वीदव्वेहिं समोयरंति? अवत्तव्वयदव्वेहिं समोयरंति ?

णेगम–ववहाराणं अणाणुपुव्वीदव्वाइं णो आणुपुव्वीदव्वेहिं समोयरंति, अणाणुपुव्वीदव्वेहिं समोयरंति, णो अवत्तव्वयदव्वेहिं समोयरंति।

१०४. (प्रश्न २) नैगम और व्यवहारनयसम्मत अनानुपूर्वीद्रव्य कहाँ समवतरित होते हैं? क्या आनुपूर्वी द्रव्यों में समवतरित होते हैं? अनानुपूर्वीद्रव्यों में या अवक्तव्यकद्रव्यों में समवतरित होते हैं?

(उत्तर) नैगम और व्यवहारनय सम्मत अनानुपूर्वीद्रव्य आनुपूर्वीद्रव्यों में समवतरित नहीं होते, अनानुपूर्वीद्रव्यों में समवतरित होते हैं। अवक्तव्यकद्रव्यों में समवतरित नहीं होते हैं।

ANANUPURVI DRAVYA

(Question 2) Where can there be a compatible assimilation (*samavatara*) of *naigam-vyavahar naya sammat ananupurvi dravya* (non-sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) ? Can they have compatible assimilation (*samavatara*) with sequential (*anupurvi*) substances or non-sequential (*ananupurvi*) substances or inexpressible substances (*avaktavya*) ?

(Answer) *Naigam-vyavahar naya sammat ananupurvi dravya* (non-sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) can have compatible assimilation (*samavatara*) not with sequential substances, not with inexpressible substances, but only with non-sequential substances.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(३) णेगम-ववहाराणं अवत्तव्वयदव्वाइं कहिं समोयरंति ? किं आणुपुव्वीदव्वेहिं समोयरंति ? अणाणुपुव्वीदव्वेहिं समोयरंति ? अवत्तव्वयदव्वेहिं समोयरंति ?

णेगम-ववहाराणं अवत्तव्वयदव्वाइं णो आणुपुव्वीदव्वेहिं समोयरंति, णो अणाणुपुव्वीदव्वेहिं समोयरंति, अवत्तव्वयदव्वेहिं समोयरंति। से तं समोयारे।

१०४. (प्रश्न ३) नैगम और व्यवहारनयसम्मत अवक्तव्यद्रव्य कहाँ समवतरित होते हैं? क्या आनुपूर्वीद्रव्यों में अथवा अनानुपूर्वीद्रव्यों में या अवक्तव्यकद्रव्यों में समवतरित होते हैं?

(उत्तर) नैगम व्यवहारनयसम्मत अवक्तव्यकद्रव्य आनुपूर्वीद्रव्यों में और अनानुपूर्वीद्रव्यों में समवतरित नहीं होते हैं किन्तु अवक्तव्यकद्रव्यों में समवतरित होते हैं। यह समवतार है।

AVAKTAVYA DRAVYA

(Question 3) Where can there be a compatible assimilation (*samavatara*) of *naigam-vyavahar naya sammat avaktavya dravya* (inexpressible substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) ? Can they have compatible assimilation (*samavatara*) with sequential substances or non-sequential substances or inexpressible substances ?

(Answer) *Naigam-vyavahar naya sammat avaktavya dravya* (inexpressible substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) can have compatible assimilation (*samavatara*) not with sequential substances, not with non-sequential substances, but only with inexpressible substances.

This concludes the description of *samavatara* (compatible assimilation).

विवेचन-कौन द्रव्य किसमें समवतरित होता है इसका स्पष्टीकरण प्रस्तुत सूत्र में है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समवतार का तात्पर्य है समावेश अर्थात् आनुपूर्वी आदि द्रव्यों का बिना किसी विरोध के किसी जाति में रहना। द्रव्यों का समवतार जात्यन्तर में नहीं होता। कार्य में कारण का उपचार करके 'आनुपूर्वी' आदि द्रव्यों का अन्तर्भाव स्वस्थान में होता है। आनुपूर्वीद्रव्य–त्रिप्रदेशिक आदि स्कन्ध–आनुपूर्वी में, अनानुपूर्वी द्रव्य–परमाणुपुद्गल–अनानुपूर्वीद्रव्य में और अवक्तव्यद्रव्य–द्विप्रदेशिक स्कन्ध–अवक्तव्यद्रव्य में अविरोध रूप से–अपनी जाति में बिना विरोध के रहते हैं। आनुपूर्वीद्रव्यों का समवतार पर–जाति में होना द्रव्य स्वभाव के विरुद्ध है।

Elaboration—This aphorism explains which substance can have compatible assimilation with which other substance.

Samavatar means compatible assimilation of specific type of substances with other substances. In other words, to stay in a class of substances without any contradictions or differences. This assimilation does not take place in substances of different classes. According to the cause and effect consideration *anupurvi* and other substances can have assimilation only with substances of their own class. Sequential substances have compatible assimilation (*samavatara*) without any contradictions or differences only with sequential substances, non-sequential substances only with non-sequential substances, and inexpressible substances only with inexpressible substances. Any compatible assimilation of substances of different class is against the intrinsic nature of substances.

नवविध–अनुगम प्ररूपणा

१०५. से किं तं अणुगमे ?

अणुगमे णवविहे पण्णत्ते। तं जहा–

(१) संतपयपरूवणया (२) दव्वपमाणं च, (३) खेत्त, (४) फुसणा य,।

(५) कालो य, (६) अंतरं, (७) भाग, (८) भाव, (९) अप्पाबहुं चेव॥८॥

१०५. **(प्रश्न)** अनुगम क्या है?

(उत्तर) अनुगम नौ प्रकार का है, जैसे–(१) सत्पदप्ररूपणा, (२) द्रव्यप्रमाण, (३) क्षेत्र, (४) स्पर्शना, (५) काल, (६) अन्तर, (७) भाग, (८) भाव और (९) अल्पबहुत्व।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ANUGAM : NINE KINDS

105. (Question) What is this *anugam* (systematic elaboration)?

(Answer) *Anugam* (systematic elaboration) is of nine kinds—(1) *satpad-prarupana,* (2) *dravya-pramana,* (3) *kshetra,* (4) *sparshana,* (5) *kaal,* (6) *antar,* (7) *bhaag,* (8) *bhaava,* and (9) *alpa-bahutva.*

विवेचन–वस्तु को जानने के लिए उसके जिन पक्षों को जानना जरूरी है उसका नाम है अनुगम। अनुगम द्वारा सूत्र के अनुकूल अर्थ की व्याख्या की जा सकती है। अनुगम के यहाँ नौ भेद या नो द्वार बताये हैं–

(१) **सतूपद प्ररूपणा**–द्रव्य के अस्तित्व और नास्तित्व का विचार करना। जैसे आनुपूर्वी आदि द्रव्य सत् पदार्थ के वाचक हैं, असत् पदार्थ के वाचक नहीं। इस प्रकार का निरूपण करना सतूपद प्ररूपणा है। (सूत्र १०६)

(२) **द्रव्य प्रमाण**–विवक्षित पदार्थ की संख्या का निरूपण करना। (सूत्र १०७)

(३) **क्षेत्र**–कथित द्रव्यों के आधारभूत क्षेत्र का विचार करना। (सूत्र १०८)

(४) **स्पर्शना**–कथित द्रव्यों द्वारा स्पर्शित क्षेत्र की पर्यालोचना करना। (सूत्र १०९)

क्षेत्र और स्पर्शना में अन्तर–क्षेत्र में केवल आधारभूत क्षेत्र का विचार होता है, जबकि स्पर्शना में आधारभूत क्षेत्र के चारों तरफ के तथा ऊपर-नीचे के अवगाहित-स्पर्शित क्षेत्र का भी विचार होता है। स्पष्टता के लिए सूत्र १०९ का विवेचन देखें।

(५) **काल**–द्रव्यों की स्थिति की मर्यादा का निरूपण करना।

(६) **अन्तर**–विरह काल। किसी पदार्थ के अपनी पर्याय का परित्याग करने के बाद पुनः उसी पर्याय की प्राप्ति के बीच का समय, अन्तर या विरह काल कहलाता है।

(७) **भाग**–विवक्षित द्रव्य दूसरे द्रव्यों के कितने भाग में रहता है। इसका विचार करना।

(८) **भाव**–आनुपूर्वी आदि द्रव्य किस भाव में है, अथवा उनमें औदयिक, औपशमिक आदि कितने भाव होते हैं, इसका निरूपण।

(९) **अल्प-बहुत्व**–आनुपूर्वी आदि द्रव्यों की न्यूनाधिकता का विचार करना। द्रव्यार्थ, प्रदेशार्थ तथा उभयार्थ (दोनों) की अपेक्षा से उनकी अल्पता-बहुलता का विचार विमर्श करना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Elaboration—The process of studying the required parameters in order to understand a thing is called *anugam*. With the help of this systematic study (*anugam*) the proper meaning of an aphorism can be explained. Here nine kinds of *anugam* are listed—

(1) Satpad-prarupana—to contemplate over the existence and non-existence of the thing represented by the word under consideration. For example substances like *anupurvi* include only things that exist and not those that do not exist. Such exposition of words is called *Satpad-prarupana* (exposition of words for existent things). (aphorism 106)

(2) Dravya-pramana—to study the numerical measure of things under consideration is called *Dravya-pramana* (numerical measure). (aphorism 107)

(3) Kshetra—to study the base area where the thing under consideration is located is called *kshetra* (area of location). (aphorism 108)

(4) Sparshana—to study area in contact with the thing under consideration is called *sparshana* (area of contact). (aphorism 109)

Difference between *kshetra* and *sparshana*—*kshetra* indicates the base area where a thing stands or is located whereas *sparshana* indicates the area of tactile contact in all directions in space occupied by a thing. (refer to elaboration of aphorism 109 for more details).

(5) Kaal—to determine the period of existence of the thing under consideration is called *kaal* (duration of existence or life-span).

(6) Antar—to determine the intervening period between termination of the present form and once again regaining the same form (intervening period).

(7) Bhaag—to determine the proportion of spatial occupancy is called *bhaag* (spatial proportion).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(8) Bhaava—to determine the state of the thing under consideration is called *bhaava* (state).

(9) Alpa-bahutva—to determine the comparative quantum in degree (less or more) of the thing under consideration in terms of mass as well as volume is called *alpa-bahutva* (quantum in degree).

(१) सत्पद प्ररूपणा द्वार

१०६. (१) नेगम–ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं किं अत्थि णत्थि ?

णियमा अत्थि।

१०६. (प्रश्न १) नैगम और व्यवहारनय की अपेक्षा आनुपूर्वी द्रव्य हैं अथवा नहीं ?

(उत्तर) नियम से–अवश्य हैं।

(1) SATPAD-PRARUPANA-DVAR

106. (Question 1) Do the *naigam-vyavahar naya sammat anupurvi dravya* (sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) exist or not ?

(Answer) -Indeed, as a rule they exist.

(२) नेगम–ववहाराणं अणाणुपुव्वीदव्वाइं किं अत्थि णत्थि ?

णियमा अत्थि।

१०६. (प्रश्न २) नैगम और व्यवहारनयसम्मत अनानुपूर्वी द्रव्य हैं अथवा नहीं ?

(उत्तर) अवश्य हैं।

106. (Question 2) *Do the naigam-vyavahar naya sammat ananupurvi dravya* (non-sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) exist or not ?

(Answer) -Indeed, as a rule they exist.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(३) नेगम–ववहाराणं अवत्तव्वगदव्वाइं किं अत्थि णत्थि ?

नियमा अत्थि।

१०६. (प्रश्न ३) नैगम और व्यवहारनयसम्मत अवक्तव्यक द्रव्य हैं या नहीं ?

(उत्तर) अवश्य हैं।

106. (Question 3) Do the *naigam-vyavahar naya sammat avaktavya dravya* (inexpressible substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) exist or not ?

(Answer) -Indeed, as a rule they exist.

(२) द्रव्य प्रमाण द्वार

१०७. (१) नेगम–ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं किं संखेज्जाइं असंखेज्जाइं अणंताइं ?

नो संखेज्जाइं नो असंखेज्जाइं; अणंताइं।

(२) एवं दोण्णि वि।

(२) इसी प्रकार शेष दोनों (अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्य) भी अनन्त हैं।

१०७. (प्रश्न १) नैगम–व्यवहारनय की अपेक्षा आनुपूर्वी द्रव्य क्या संख्यात हैं, असंख्यात हैं, अथवा अनन्त हैं ?

(उत्तर) वे संख्यात नहीं, असंख्यात भी नहीं, किन्तु अनन्त हैं।

(2) DRAVYA-PRAMANA-DVAR

107. (Question 1) According to the *naigam-vyavahar naya* (coordinated and particularized viewpoints) are the *anupurvi dravya* (sequential substances) numerable, innumerable, or infinite (numerically) ?

(Answer) They are neither numerable nor innumerable but are infinite (numerically).

107. (2) Same is true for the remaining two, *i.e.* according to the *naigam-vyavahar naya* (coordinated and

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

particularized viewpoints) both *ananupurvi dravya* (non-sequential substances) and *avaktavya dravya* (inexpressible substances) are infinite (numerically).

विवेचन–सूत्र में अनुगम के दूसरे भेद का हार्द स्पष्ट किया है कि आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्य अनन्त हैं और इनके अनन्त होने का कारण यह है कि ये प्रत्येक आकाश के एक-एक प्रदेश में अनन्त-अनन्त ही पाये जाते हैं।

आनुपूर्वी आदि द्रव्य अनन्त होते हैं, ये अनन्त द्रव्य असंख्य प्रदेशात्मक लोकाकाश में कैसे समा सकते हैं? यह प्रश्न खड़ा होता है, जिसके समाधान में कहा गया है-पुद्‌गल की परिणति अत्यन्त सूक्ष्म है, तथा आकाश में अवगाहन की क्षमता असीम है। जैसे एक दीपक की प्रभा से व्याप्त एक घर के आकाश प्रदेशों में दूसरे अनेक दीपकों की प्रभा का समावेश हो जाता है, उसी प्रकार आनुपूर्वी आदि अनन्त द्रव्यों का असंख्यात प्रदेशी लोकाकाश में समावेश सम्भव है। (मल. हेम. वृ. पृ. १४९)

Elaboration—This aphorism explains the theme of the second category of *anugam* by informing that *anupurvi* (sequential), *ananupurvi* (non-sequential) and *avaktavya* (inexpressible) substances are infinite. The reason for their being infinite numerically is that in every space-point they are found in infinite number.

A question arises here—*Anupurvi,* etc. substances are infinite, how then can they exist in the *lokakasha* (occupied space), which is made up only of innumerable space-points ? Answering this it is stated that material particles are infinitely minute and the capacity of space to provide occupancy is unlimited. For example in a house filled with the light from one lamp, every space-point has the capacity to provide occupancy to the light from numerous other lamps. In the same way it is possible for the infinite *anupurvi,* etc. substances to exist in the *lokakasha* (occupied space) having innumerable space-points. (*Vritti* by Maladhari Hemachandra p. 149)

(३) क्षेत्र द्वार

१०८. (१) णेगम-ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं लोगस्स कतिभागे होज्जा ? किं संखेज्जइभागे होज्जा ? असंखेज्जइभागे होज्जा ? संखेज्जेसु भागेसु होज्जा ? असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा ? सव्वलोए होज्जा ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगदव्वं पडुच्च लोगस्स संखेज्जइभागे वा होज्जा, असंखेज्जइभागे वा होज्जा, संखेज्जेसु भागेसु वा होज्जा, असंखेज्जेसु भागेसु वा होज्जा, सव्वलोए वा होज्जा। नाणादव्वाइं पडुच्च नियमा सव्वलोए होज्जा।

१०८. (प्रश्न १) नैगम और व्यवहारनयसम्मत आनुपूर्वी द्रव्य (क्षेत्र के) कितने भाग में अवगाढ (स्थित) हैं। (१) क्या लोक के संख्यातवें भाग में हैं? (२) असंख्यातवें भाग में है? (३) क्या संख्यात भागों में हैं? (४) असंख्यात भागों में हैं। (५) अथवा समस्त लोक में हैं?

(उत्तर) किसी एक आनुपूर्वीद्रव्य की अपेक्षा कोई लोक के संख्यातवें भाग में रहता है, कोई लोक के असंख्यातवें भाग में रहता है तथा कोई लोक के संख्यात भागों में रहता है और कोई असंख्यात भागों में रहता है और कोई एक द्रव्य समूचे लोक में रहता है। किन्तु अनेक द्रव्यों की अपेक्षा तो वे नियमतः समस्त लोक में अवगाढ हैं।

(3) KSHETRA-DVAR

108. (Question 1) In what area or section of the universe (occupied space) do the *naigam-vyavahar naya sammat anupurvi dravya* (sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) exist. Are they in its numerable fraction ? Are they in its innumerable (infinitesimal) fraction ? Are they in its numerable sections ? Are they in its innumerable sections ? or Are they in the whole universe ?

(Answer) With respect to a single *anupurvi* (sequential) substance, some exist in numerable fractions of the universe, some in its innumerable (infinitesimal) fractions, some in its numerable sections, some in its innumerable sections and some in the whole universe. But with respect to many substances, as a rule, they occupy the whole universe.

(२) नेगम-ववहाराणं अणाणुपुव्वीदव्वाइं किं लोगस्स संखेज्जइभागे होज्जा ? असंखेज्जइभागे होज्जा ? संखेज्जेसु भागेसु होज्जा ? असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा ? सव्वलोए वा होज्जा ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगदव्वं पडुच्च नो संखेज्जइभागे होज्जा, असंखेज्जइभागे होज्जा नो संखेज्जेसु भागेसु होज्जा, नो असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा, नो सव्वलोए होज्जा। णाणादव्वाइं पडुच्च नियमा सव्वलोए होज्जा।

१०८. (प्रश्न २) नैगम और व्यवहारनयसम्मत अनानुपूर्वीद्रव्य क्या लोक के संख्यातवें भाग में हैं? असंख्यातवें भाग में हैं? संख्यात भागों में हैं या असंख्यात भागों में हैं अथवा समूचे लोक में हैं?

(उत्तर) एक अनानुपूर्वीद्रव्य (परमाणु) की अपेक्षा वह लोक के संख्यातवें भाग में नहीं है, असंख्यातवें भाग में है। संख्यात भागों में नहीं, असंख्यात भागों में नहीं और समूचे लोक में नहीं है। अनेक अनानुपूर्वीद्रव्यों की अपेक्षा नियमतः सर्वलोक में अवगाढ़ है।

108. (Question 2) Do the *naigam-vyavahar naya sammat ananupurvi dravya* (non-sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) exist in numerable fraction of the universe (occupied space), in its innumerable (infinitesimal) fraction, in its numerable sections, in its innumerable sections, or in the whole universe?

(Answer) With respect to a single *ananupurvi* (non-sequential) substance (a *paramanu*), it does not exist in a numerable fraction of the universe but exists in its innumerable (infinitesimal) fraction. It also does not exist in its numerable sections, innumerable sections or the whole universe. But with respect to many *ananupurvi* substances, as a rule, they occupy the whole universe.

(३) एवं अवत्तव्वगदव्वाणि वि।

१०८. (३) इसी प्रकार अवक्तव्यद्रव्य के विषय में भी जानना चाहिए।

108. (3) The same is true for *avaktavya* (inexpressible) substances.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवेचन–सूत्र १०८ में आनुपूर्वी आदि द्रव्यों के क्षेत्र विषयक पाँच प्रश्नों के उत्तर दिये हैं।

यह पूर्व में बताया जा चुका है कि कम से कम त्रिप्रदेशी स्कन्ध आनुपूर्वीद्रव्य है तथा द्विप्रदेशी स्कन्ध अवक्तव्य और परमाणु अनानुपूर्वी द्रव्य हैं। त्र्यणुक आदि का व्यवहार पुद्‌गलद्रव्य में ही होता है। अतएव पुद्‌गलद्रव्य का आधार यद्यपि सामान्य रूप से तो लोकाकाश क्षेत्र नियत है। परन्तु विशेष रूप से भिन्न-भिन्न पुद्‌गलद्रव्यों के आधार क्षेत्र के परिमाण में अन्तर होता है। आधारभूत क्षेत्र के प्रदेशों की संख्या आधेयभूत पुद्‌गलद्रव्य के परमाणुओं की संख्या से न्यून या उसके बराबर हो सकती है, अधिक नहीं। इसलिए एक परमाणु रूप अनानुपूर्वीद्रव्य आकाश के एक ही प्रदेश में रहता है परन्तु द्विप्रदेशी एक प्रदेश में भी रह सकता है और दो प्रदेशों में भी। इसी प्रकार उत्तरोत्तर संख्या बढ़ते-बढ़ते त्रिप्रदेशी, चतुष्प्रदेशी यावत् संख्यातप्रदेशी स्कन्ध एक प्रदेश, दो प्रदेश, तीन प्रदेश यावत् संख्यात प्रदेशरूप क्षेत्र में ठहर सकते हैं। संख्यातप्रदेशी द्रव्य की स्थिति के लिए असंख्यात प्रदेश वाले क्षेत्र की आवश्यकता नहीं रहती है। इसी प्रकार असंख्यातप्रदेशी स्कन्ध एक प्रदेश से लेकर अधिक से अधिक अपने बराबर के असंख्यात संख्या वाले प्रदेश क्षेत्र में ठहर सकता है। किन्तु अनन्तप्रदेशी और अनन्तानन्तप्रदेशी स्कन्ध के विषय में यह जानना चाहिए कि वह एक प्रदेश, दो प्रदेश इत्यादि क्रम से बढ़ते-बढ़ते संख्यात प्रदेश और असंख्यात प्रदेश वाले क्षेत्र में ठहर सकते हैं। उनकी अवस्थिति के लिए अनन्त प्रदेशात्मक क्षेत्र की जरूरत नहीं है। पुद्‌गलद्रव्य का सबसे बड़ा स्कन्ध, जिसे अचित्त महास्कन्ध कहते हैं और जो अनन्तानन्त अणुओं का बना होता है, वह भी असंख्यातप्रदेशी लोकाकाश में ही ठहर जाता है। लोकाकाश के प्रदेश असंख्यात ही हैं और उससे बाहर पुद्‌गल की अवगाहना सम्भव नहीं है।

उपर्युक्त समग्र कथन आनुपूर्वी आदि एक-एक द्रव्य की अपेक्षा से समझना चाहिए। किन्तु अनेक की अपेक्षा इन समस्त द्रव्यों का अवगाहन समस्त लोकाकाश में है।

अनन्तानन्त पुद्‌गल परमाणुओं से निष्पन्न अचित्त महास्कन्धरूप आनुपूर्वीद्रव्य के एक समय में समस्त लोक में अवगाढ़ रहने को केवलीसमुद्‌घात के चतुर्थ समयवर्ती आत्मप्रदेशों के सर्वलोक में व्याप्त होने के उदाहरण से समझना चाहिए। जो इस प्रकार है–

अचित्त महास्कन्ध एक समय में सकल लोकव्यापी कैसे होता है। इस विषय में टीकाकार मलधारी हेमचन्द्र प्रज्ञापना सूत्र का सन्दर्भ देते हुए लिखते हैं–अचित्त महा स्कन्ध सम्पूर्ण लोक व्यापी, स्वाभाविक परिणमन वाला होता है। वह तिरछे लोक के असंख्य योजन विस्तृत अनियत काल (आठ समय) की स्थिति वाला वृत्त ऊँचे नीचे लोक में चौदह रज्जु परिमाण (एकरज्जु, वह दूरी है जो कोई देव छह माह तक २,०५७,१५२ योजन प्रति सेकेन्ड की गति से निरन्तर चलकर तय करता है) सूक्ष्म पुद्‌गलों के परिणाम से परिणत होता है। प्रथम समय में उसकी आकृति दण्डाकार, द्वितीय समय में कपाटाकार, तृतीय समय में मंथनी के आकार

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तथा चौथे समय में वह सम्पूर्ण लोक में व्याप्त हो जाता है। पुनः पाँचवें समय में प्रतिलोम संहरण होने लगता है, छठे में मंथनी की, सातवें में कपाट की आकृति का तथा आठवें समय में दण्ड का संहरण होने के पश्चात् वह विनष्ट हो जाता है। (मल. हेम. वृत्ति. पृ. १५१-५२ केवलि समुद्घात का चित्र देखें)

Elaboration—In aphorism 108 five questions regarding the area occupied by *anupurvi* and other substances have been answered.

It has already been explained that an aggregate (*skandh*) of minimum three ultimate-particles forms an *anupurvi* (sequential) substance, an aggregate (*skandh*) of two is *avaktavya* (inexpressible), and a single *paramanu* (ultimate-particle) is *ananupurvi* (non-sequential). The concept of triad and other aggregates (*skandhs*) of ultimate-particles is applicable only to matter. Thus in general terms the whole occupied space (universe) is the area of existence of matter. But in specific terms there are variations in the extant of space occupied by different types of matter. The number of sectional units of space occupied by matter can be less than or equal to the number of occupying ultimate-particles but never more. Therefore, one ultimate-particle occupies only one space-point but an aggregate (*skandh*) of two ultimate-particles can occupy one space-point as well as two space-points. Extending this numerical series, aggregates (*skandhs*) of three, four, and countable numbers can occupy three, four, and countable numbers of space-points. Innumerable space-points are not required for the existence of numerable ultimate-particles. In the same way an aggregate (*skandh*) of innumerable *paramanus* (ultimate-particles) can exist in an area measuring from one space-point to a maximum of innumerable space-points equal to its own size. However, regarding the aggregates (*skandhs*) of infinite and infinite-times-infinite ultimate-particles it should be understood that they can exist in an area of one space-point to numerable and innumerable space-points. It is not necessary to have an area of infinite space-points for their existence. The largest aggregate (*skandh*) of matter is called *achitt-*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

चित्र परिचय ११

Illustration No. 11

केवलि समुद्घात

केवलज्ञानी के जब नाम, गोत्र और वेदनीय कर्म अधिक व आयुष्य कर्म अल्प रहता है, तब उनको सम करने के लिए आत्म-प्रदेशों को फैलाकर समुद्घात करते हैं। पहले समय में वे आत्म-प्रदेशों को शरीर प्रमाण चौड़ाई में सम्पूर्ण लोक व्यापी दण्डाकृति बनाते हैं। दूसरे समय में आत्म-प्रदेशों को चारों दिशाओं में फैलाकर कपाट की आकृति बनाते हैं। तीसरे समय में उन प्रदेशों को मथानी (दही मथनी) के आकार में फैलाते हैं और चौथे समय में मथानी के बीच में रहे खाली स्थान को भरकर सम्पूर्ण लोक को आत्म-प्रदेशों से व्याप्त कर देते हैं। पाँचवें से आठवें समय विपरीत क्रम से उन आत्म-प्रदेशों का संकोचन करते हैं। आठवें समय में सभी आत्म-प्रदेश शरीर में समा जाते हैं।

-सूत्र १०८

(विशेष वर्णन वृत्ति पत्र १५१, तथा प्रज्ञापना सूत्र पद ३६)

KEVALI SAMUDGHAT

When the *Naam, Gotra,* and *Vedaniya karmas* of an omniscient are comparatively more than the remaing *Ayushya karma* he activates the process of *Kevali samudghat* in order to equalize them. During the first *samaya* he expands the space-points of his soul in stick-shape having the width of his body and covering the whole expanse of universe in length. During the second *samaya* he expands it in all directions in door-shape. During the third *samaya* he expands it in the shape of a churning-stick. During the fourth *samaya* he fills up all the empty space and envelopes the whole *lokakasha* with the space-points of his soul. During the fifth to seventh *samayas* he starts shrinking in reverse order. During the eighth all the space-points retract into his body. (for more details see *Vritti* leaf 151 and *Prajnapana Sutra,* verse 36)

—Sutra : 108

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

mahaskandh and it is made up of infinite-times-infinite atoms. Even this can exist in the *lokakasha* that has only innumerable space-points. The *lokakasha* has only uncountable number of space-points and beyond it matter cannot exist.

The aforesaid statement refers to single *anupurvi* or other type of substance. However, with respect to numerous substances, all these substances are spread over the whole occupied space (*lokakasha*).

The phenomenon of *achitt-mahaskandh,* the largest *anupurvi* substance that is an aggregate (*skandh*) of infinite-times-infinite atoms occupying the whole *lokakasha* (occupied space) for one *samaya* (the smallest unit of time) can be understood with the example of the *atmapradeshas* (soul-space-points) enveloping the whole occupied space (*lokakasha*) during the fourth stage of *Kevalisamudghat* (the process through which an omniscient destroys the residual *karma* particles). It is as follows—

How the *achitt-mahaskandh* envelopes the whole occupied space has been explained by Maladhari Hemachandra, the commentator (*Tika*), giving reference of the *Prajnapana Sutra*—The natural activity of the *achitt-mahaskandh* is to occupy the whole *lokakasha*. This is done by transformation for indefinite period (eight *samaya*) into a huge spheroid with a transverse expanse of innumerable number of *yojans* (one *yojan* being approx eight miles) occupying the transverse space and axial expanse of fourteen *rajju* (a linear unit defined as the distance covered by a god flying non-stop for six months at a speed of 2, 057, 152 *yojans* per second) occupying the vertical space. During the first *samaya* it is stick shaped (cylindrical), in the second it is door shaped (cubical), in the third it is churning-stick shaped, and in the fourth samaya it envelopes the whole lokakasha. After this it starts shrinking in reverse order, *i.e.* in the fifth *samaya* it takes the churning stick shape, in sixth the door shape, in seventh the stick shape and in the eighth the stick shape vanishes and it is destroyed. (*Vritti* by Maladhari Hemachandra p. 151-52)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(४) स्पर्शना द्वार

१०९. (१) णेगम-ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं लोगस्स किं संखेज्जइभागं फुसंति ? असंखेज्जइभागं फुसंति ? संखेज्जेभागे फुसंति ? असंखेज्जे भागे फुसंति ? सव्वलोयं फुसंति ?

एगदव्वं पडुच्च लोगस्स संखेज्जइभागं वा फुसंति, असंखेज्जइभागं वा फुसंति, संखेज्जे वा भागे फुसंति, असंखेज्जे वा भागे फुसंति, सव्वलोगं वा फुसंति। णाणादव्वाइं पडुच्च नियमा सव्वलोगं फुसंति।

१०९. (प्रश्न १) नैगम और व्यवहारनयसम्मत आनुपूर्वीद्रव्य क्या लोक के संख्यातवें भाग का स्पर्श करते हैं ? असंख्यातवें भाग का स्पर्श करते हैं ? संख्यात भागों का स्पर्श करते हैं ? अथवा असंख्यात भागों का स्पर्श करते हैं ? अथवा समस्त लोक का स्पर्श करते हैं ?

(उत्तर) एक द्रव्य की अपेक्षा आनुपूर्वीद्रव्य लोक के संख्यातवें भाग का स्पर्श करता है, असंख्यातवें भाग का स्पर्श करता है, संख्यात भागों का स्पर्श करता है, असंख्यात भागों का स्पर्श करता है अथवा सर्वलोक का स्पर्श करता है, किन्तु अनेक (आनुपूर्वी) द्रव्यों की अपेक्षा तो नियमतः सर्वलोक का स्पर्श करते हैं।

(4) SPARSHANA-DVAR

109. (Question 1) Do the *naigam-vyavahar naya sammat anupurvi dravya* (sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) have spatial contact with numerable fraction of the universe (occupied space), with innumerable (infinitesimal) fraction, with numerable sections, with innumerable sections, or with the whole universe ?

(Answer) With respect to a single *anupurvi* (sequential) substance, some have spatial contact with numerable fractions of the universe, some with innumerable (infinitesimal) fraction, some with numerable sections, some with innumerable sections and some with the whole

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

universe. But with respect to many substances, as a rule, they have spatial contact with the whole universe.

(२) णेगम-ववहाराणं अणाणुपुव्वीदव्वाणं पुच्छा। एगं दव्वं पडुच्च नो संखेज्जइभागे फुसंति; असंखेज्जइभागं फुसंति, नो संखेज्जे भागे फुसंति, नो असंखेज्जे भागे फुसंति, नो सव्वलोगं फुसंति, नाणादव्वाइं पडुच्च नियमा सव्वलोगं फुसंति।

१०९. (प्रश्न २) नैगम और व्यवहारनय की अपेक्षा अनानुपूर्वी द्रव्य क्या लोक के संख्यातवें भागे का स्पर्श करते हैं? इत्यादि पाँचों प्रश्न है।

(उत्तर) एक-एक अनानुपूर्वी द्रव्य की अपेक्षा लोक के संख्यातवें भाग का स्पर्श नहीं करते हैं किन्तु असंख्यातवें भाग का स्पर्श करते हैं, संख्यात भागों का, असंख्यात भागों का या सर्वलोक का स्पर्श नहीं करते हैं किन्तु अनेक अनानुपूर्वी द्रव्यों की अपेक्षा तो नियमतः सर्वलोक का स्पर्श करते हैं।

109. (Question 2) Do the *naigam-vyavahar naya sammat ananupurvi dravya* (non-sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) have spatial contact with numerable fraction of the universe (occupied space), with innumerable (infinitesimal) fraction, with numerable sections, with innumerable sections, or with the whole universe?

(Answer) With respect to a single *ananupurvi* (non sequential) substance (a *paramanu*), it does not have spatial contact with a numerable fraction of the universe but has contact with its innumerable (infinitesimal) fraction. It also does not have spatial contact with its numerable sections, innumerable sections or the whole universe. But with respect to many *ananupurvi* substances, as a rule, they have spatial contact with the whole universe.

(३) एवं अवत्तव्वगदव्वाणि वि भाणियव्वाणि।

१०९. (३) अवक्तव्य द्रव्यों की स्पर्शना भी इसी प्रकार समझना चाहिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

109. (3) The same is true for *avaktavya* (inexpressible) substances.

विवेचन-सूत्र में आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्यों की एकवचन और बहुवचन की अपेक्षा स्पर्शना का विचार किया है। क्षेत्र और स्पर्शना में यह मुख्य अन्तर है कि जैसे परमाणुद्रव्य की जो अवगाहना एक आकाश प्रदेश में होती है, वह क्षेत्र है तथा परमाणु के द्वारा अपने आधारभूत एक आकाशप्रदेश के अतिरिक्त चारों ओर तथा ऊपर-नीचे के प्रदेशों के छूने को स्पर्शना कहते हैं। परमाणु (एक प्रदेशी) की र्स्पशना आकाश के सात प्रदेशों की इस प्रकार होती है-चारों दिशाओं के चार प्रदेश, ऊपर-नीचे के दो प्रदेश एवं एक वह प्रदेश जहाँ स्वयं वह स्थित हैं। इस प्रकार अनानुपूर्वी द्रव्य की सात प्रदेशों की स्पर्शना होती है।

Elaboration—This aphorism discusses the spatial contact of the said three classes of substances in their singularity and plurality. The basic difference between *kshetra* and *sparsh* is that the space occupied by a substance is *kshetra* and the area in terms of space-points in all directions with which it is in spatial contact during this occupation is called *sparsh*. A *paramanu* (ultimate-particle) occupying one space-point is in spatial contact with seven space-points—four in four transverse directions, one above, one below, and the one which it occupies.

(५) काल द्वार

११०. (१) णेगम-ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं कालओ केवचिरं होंति ?

एगं दव्वं पडुच्च जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं, णाणादव्वाइं पडुच्च णियमा सव्वद्धा।

११०. (प्रश्न १) नैगम और व्यवहारनयसम्मत आनुपूर्वीद्रव्य काल की अपेक्षा कितने काल तक (आनुपूर्वीद्रव्य रूप में) रहते हैं ?

(उत्तर) एक द्रव्य की अपेक्षा वे जघन्यतः एक समय और उत्कृष्ट असंख्यातकाल तक उसी स्वरूप में रहता है और अनेक आनुपूर्वीद्रव्यों की अपेक्षा नियमतः सार्वकालिक होते हैं।

(5) KAAL-DVAR

110. (Question 1) In context of time, for what duration do the *naigam-vyavahar naya sammat anupurvi dravya*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) exist ?

(Answer) With respect to a single *anupurvi* (sequential) substance they exist in the same form for a minimum of one *samaya* and maximum of immeasurable time. With respect to many *anupurvi* (sequential) substances as a rule they exist always.

(२) एवं दोन्नि वि।

(२) इसी प्रकार अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्यों की जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति भी जानना चाहिए।

110. (2) Same is true for the remaining two (*ananupurvi* and *avaktavya* substances).

विवेचन-सूत्र में आनुपूर्वी आदि द्रव्यों का एक और अनेक की अपेक्षा से उन्हीं आनुपूर्वी आदि द्रव्यों के रूप में रहने के काल-(समय) का कथन किया है।

आनुपूर्वीद्रव्य का आनुपूर्वीद्रव्य के रूप में रहने का जघन्य एक समय और उत्कृष्ट असंख्यात काल बताया है। इसका कारण है-परमाणुद्वय आदि में दूसरे परमाणुओं के मिलने पर एक नया आनुपूर्वीद्रव्य उत्पन्न हो जाता है और एक समय के बाद ही उसमें से एक आदि परमाणु के वियुक्त हो जाने पर वह आनुपूर्वीद्रव्य उस रूप से विनष्ट हो जाता है। इस अपेक्षा आनुपूर्वीद्रव्य का आनुपूर्वी के रूप में रहने का काल जघन्य एक समय होता है और जब वही एक आनुपूर्वीद्रव्य असंख्यात काल तक उसी आनुपूर्वीद्रव्य के रूप में रहकर एक आदि परमाणु से वियुक्त होता है तब उसकी अवस्थिति का उत्कृष्ट असंख्यात काल कहा गया है।

अनेक आनुपूर्वीद्रव्यों की अपेक्षा तो इन आनुपूर्वीद्रव्यों की स्थिति नियमतः सार्वकालिक है। क्योंकि ऐसा कोई काल नहीं कि जिसमें ये आनुपूर्वीद्रव्य न हों।

किसी भी एक आनुपूर्वीद्रव्यका आनुपूर्वी रूप में रहने का काल अनन्त नहीं है। क्योंकि पुद्गल संयोग की उत्कृष्ट स्थिति असंख्यात काल की ही होती है। कोई भी स्कन्ध असंख्य काल के पश्चात् वर्तमान रूप में नहीं रहता वह या तो वियुक्त हो जाता है या अन्यान्य परमाणुओं अथवा स्कन्धों से संयुक्त हो जाता है। *(विस्तार के लिए देखें श्री ज्ञान मुनि जी कृत हिन्दी टीका पृ. ५१४-१५)*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्यों का भी एक और अनेक की अपेक्षा उत्कृष्ट और जघन्य स्थिति काल आनुपूर्वीद्रव्यवत् जानना चाहिए।

Elaboration—This aphorism states the duration of existence of *anupurvi* (sequential) and other substances in the same state in their singularity and plurality.

For *anupurvi* (sequential) substances to remain as *anupurvi* (sequential) substances this period is said to be a minimum of one *samaya* and maximum of immeasurable time. The reason for this is that when one or more *paramanus* (ultimate-particles) get fused with an aggregate (*skandh*) of two *paramanus* (ultimate-particles) a new *anupurvi* (sequential) substance is created. When this process is repeated once more just after the lapse of one *samaya* the newly formed *anupurvi* (sequential) substance is once again transformed. Thus the duration of its existence in the same form is just one *samaya* which is minimum. However, when this *anupurvi* (sequential) substance undergoes such process of fusion only after a lapse of immeasurable time, the duration of its existence in the same form is immeasurable time which is maximum.

With respect to many *anupurvi* (sequential) substances the duration of existence in the same state is, as a rule, for all times. This is because there is no time when these anupurvi (sequential) substances become extinct.

The duration of existence of no *anupurvi* (sequential) substance in the same form is infinite. This is because the maximum duration of a material bond is immeasurable time and not infinity. An aggregate (*skandh*) does not remain in the same state after the lapse of immeasurable time, it either disintegrates or gets integrated with other *paramanus* (ultimate-particles) or aggregates (*skandhs*). (for more details refer to the *Tika* of *Anuyogadvara* Sutra by Shri Jnana Muni, p. 514-515)

The same holds true for the remaining two *(ananupurvi* and *avaktavaya* substances) in their singularity and plurality.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(६) अन्तर प्ररूपणा द्वार

१११. (१) णेगम-ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाणमंतरं कालओ केवचिरं होइ ?

एगं दव्वं पडुच्च जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं अणंतं कालं, नाणादव्वाइं पडुच्च णत्थि अंतरं।

१११. (प्रश्न १) नैगम और व्यवहारनयसम्मत आनुपूर्वीद्रव्यों में कालकृत अन्तर-विरहकाल कितना होता है ?

(उत्तर) एक द्रव्य की अपेक्षा जघन्य एक समय और उत्कृष्ट अनन्त काल का अन्तर होता है, किन्तु अनेक द्रव्यों की अपेक्षा उनमें अन्तर या विरहकाल नहीं होता।

(6) ANTAR-DVAR

111. (Question 1) In context of time, what is the *antar* (intervening period between losing the present form and regaining it) in case of *naigam-vyavahar naya sammat anupurvi dravya* (sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) ?

(Answer) With respect to a single *anupurvi* (sequential) substance this period is a minimum of one *samaya* and maximum of infinite time. However with respect to many *anupurvi* (sequential) substances this *antar* does not exist.

(२) णेगम-ववहाराणं अणाणुपुव्वीदव्वाणं अंतरं कालओ केवचिरं होइ ?

एगं दव्वं पडुच्च जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं, नाणादव्वाइं पडुच्च णत्थि अंतरं।

१११. (प्रश्न २) नैगम और व्यवहारनयसम्मत अनानुपूर्वीद्रव्यों में काल की अपेक्षा अन्तर कितना होता है ?

(उत्तर) एक द्रव्य की अपेक्षा जघन्य एक समय का अन्तरकाल और उत्कृष्ट असंख्यात काल का अन्तर होता है तथा अनेक अनानुपूर्वीद्रव्यों की अपेक्षा अन्तर नहीं होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

111. (Question 2) In context of time what is the *antar* (intervening period between losing the present form and regaining it) in case of *naigam-vyavahar naya sammat ananupurvi dravya* (non-sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) ?

(Answer) With respect to a single *ananupurvi* (non-sequential) substance this period is a minimum of one *samaya* and maximum of immeasurable time. However with respect to many *ananupurvi* (non-sequential) substances the intervening period does not exist.

(३) णेगम–ववहाराणं अवत्तव्वगदव्वाणं अंतरं कालओ केवचिरं होइ ?

एगं दव्वं पडुच्च जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं अणंतं कालं, नाणादव्वाइं पडुच्च णत्थि अंतरं।

१११. (प्रश्न ३) नैगम और व्यवहारनयसम्मत अवक्तव्य द्रव्यों में काल की अपेक्षा अन्तर कितना है ?

(उत्तर) एक अवक्तव्यद्रव्य की अपेक्षा जघन्य एक समय और उत्कृष्ट अनन्त काल का अन्तर होता है, किन्तु अनेक द्रव्यों की अपेक्षा अन्तर नहीं है।

111. (Question 3) In context of time, what is the *antar* (intervening period between losing the present form and regaining it) in case of *naigam-vyavahar naya sammat avaktavya dravya* (inexpressible substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) ?

(Answer) With respect to a single *avaktavya* (inexpressible) substance this period is a minimum of one *samaya* and maximum of infinite time. However with respect to many *avaktavya* (inexpressible) substances the intervening period does not exist.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवेचन—अन्तर काल का अर्थ है, एक परमाणु के दूसरे परमाणु रूप में परिणत होने के बीच का समय। जैसे एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध त्रिप्रदेशी स्कन्ध के रूप को छोड़कर द्विप्रदेशी स्कन्ध तथा एक परमाणु के रूप में चला जाता है अथवा तीन परमाणु के रूप में चला जाता है। फिर वे तीनों परमाणु मिलकर त्रिप्रदेशी स्कन्ध के रूप में आते हैं, उनके बीच का समय अन्तर कहलाता है।

जैसे आनुपूर्वी द्रव्यों—त्रिप्रदेशी स्कन्धों से एक परमाणु बिछुड़ गया, एक समय वह स्कन्ध से अलग रहा, वापस उसी स्कन्ध में आ मिला—इस अपेक्षा से आनुपूर्वी द्रव्य का अन्तर काल जघन्यतः एक समय का होता है। आनुपूर्वी द्रव्य का उत्कृष्ट अन्तर काल अनन्तकाल है। जैसे एक त्रिप्रदेशी यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध है, उसके परमाणु बिखर गये। वे कभी परमाणु बने रहे, कभी स्कन्ध के साथ मिल गये इस प्रकार अनेक रूपों में परिवर्तित होते रहे। अनन्त काल के पश्चात् किसी प्रयोग (प्रयत्न) अथवा स्वभाव (सहज ही) से पुनः अपने मूल रूप में आ गये। इस अपेक्षा से उत्कृष्ट अन्तर काल अनन्तकाल कहा है। अवक्तव्य द्रव्य के लिए भी यही नियम लागू होता है।

अनानुपूर्वी द्रव्य का जघन्य अन्तर काल एक समय है। आनुपूर्वी द्रव्य का उत्कृष्ट अन्तर काल असंख्यातकाल है, इसका कारण यह है, एक परमाणु किसी अन्य परमाणु अथवा त्रिप्रदेशी आदि स्कन्धों के साथ असंख्य काल तक ही रह सकता है। उसके बाद फिर बिछुड़ जाता है। जैसा कि भगवती सूत्र (५/६९) में कहा है–'परमाणु परमाणु रूप में उत्कृष्टतः असंख्यकालतक ही रहता है, उसके पश्चात् उसका रूपान्तर अनिवार्य रूप में होता है। द्विप्रदेशी स्कन्ध से अनन्त प्रदेशी स्कन्ध तक भी यही नियम लागू होता है। (अनु. महाप्रज्ञ. पृ. १०३)

Elaboration—*Antar* or *virah-kaal* means the intervening period between termination of the present form and again regaining the same form. For example a triad or an aggregate (*skandh*) of three *paramanus* (ultimate-particles) disintegrates into an aggregate (*skandh*) of two and a free *paramanu* (ultimate-particle) or three free *paramanus* (ultimate-particles). These components, after a lapse of time, combine again to form a triad. This intervening period is called *antar*.

A triad loses one *paramanu* (ultimate-particle). This *paramanu* (ultimate-particle) remains free for just one *samaya*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

and rejoins the remaining two to reform the triad. This is the example of the minimum intervening period. Aggregates (*skandhs*) of three to infinite *paramanus* (ultimate-particles) get disintegrated. For a long time they continue to integrate and disintegrate to form a variety of aggregates (*skandhs*). After the lapse of an infinite period they combine together to regain the original form either through some effort or naturally. This is the example of the maximum intervening period. The same holds true for inexpressible substances.

In case of the non-sequential substances although the minimum intervening period is same, the maximum is immeasurable time. The reason for this is that a free *paramanu* (ultimate-particle) can remain bonded with another *paramanu* (ultimate-particle) or triad (and other sequential aggregates) only for immeasurable period. After that the bond is broken. Bhagavati sutra (5/69) confirms this—'A free *paramanu* (ultimate-particle) can remain free only for a maximum period of immeasurable time after which it necessarily undergoes a transformation.' This rule is applicable to aggregates (*skandhs*) of two to infinite *paramanus* (ultimate-particles). (*Anuyogadvara* by Acharya Mahaprajna p. 103)

(७) भागप्ररूपणा द्वार

११२. (१) णेगम–ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं सेसदव्वाणं कइभागे होज्जा ? किं संखेज्जइभागे होज्जा ? असंखेज्जइभागे होज्जा ? संखेज्जेसु भागेसु होज्जा ? असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा ?

नो संखेज्जइभागे होज्जा, नो असंखेज्जइभागे होज्जा, नो संखेज्जेसु भागेसु होज्जा नियमा असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा।

११२. (प्रश्न १) नैगम और व्यवहारनयसम्मत आनुपूर्वीद्रव्य शेष द्रव्यों के कितने वें भाग में होते हैं? क्या संख्यातवें भाग में हैं? असंख्यातवें भाग में अथवा संख्येय भागों या असंख्येय भागों में हैं?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(उत्तर) आनुपूर्वीद्रव्य शेष द्रव्यों के संख्यातवें भाग में, असंख्यातवें भाग में अथवा संख्येय भागों में नहीं होते, किन्तु वे नियमतः असंख्येय भागों में होते हैं।

(7) BHAAG-DVAR

112. (Question 1) In what spatial proportion of other substances do the *naigam-vyavahar naya sammat anupurvi dravya* (sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) exist. Is it numerable fractions ? Is it innumerable (infinitesimal) fractions ? Is it numerable sections ? Or is it innumerable sections ?

(Answer) The *anupurvi* (sequential) substance do not exist in numerable fractions or innumerable (infinitesimal) fractions or numerable sections but only in innumerable sections.

(२) णेगम–ववहाराणं अणाणुपुव्वीदव्वाइं सेसदव्वाणं कइभागे होज्जा ? किं संखेज्जइभागे होज्जा ? असंखेज्जइभागे होज्जा ? संखेज्जेसु भागेसु होज्जा ? असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा ?

नो संखेज्जइभागे होज्जा असंखेज्जइभागे होज्जा। नो संखेज्जेसु भागेसु होज्जा नो असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा।

११२. (प्रश्न २) नैगम और व्यवहारनयसम्मत अनानुपूर्वीद्रव्य शेष द्रव्यों के कितनेवें भाग में होते हैं ? क्या संख्यातवें भाग में होते हैं ? असंख्यातवें भाग में होते हैं ? संख्येय भागों में होते हैं ? असंख्येय भागों में होते हैं ?

(उत्तर) अनानुपूर्वीद्रव्य शेष द्रव्यों के संख्यातवें भाग में नहीं होते किन्तु असंख्यातवें भाग में होते हैं। वे संख्येय भागों अथवा असंख्येय भागों रूप नहीं होते हैं।

112. (Question 2) In what spatial proportion of other substances do the *naigam-vyavahar naya sammat ananupurvi dravya* (non-sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) exist. Is it numerable fractions ? Is it innumerable (infinitesimal) fractions ? Is it numerable sections ? Or is it innumerable sections ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(Answer) The *ananupurvi* (non-sequential) substance do not exist in numerable fractions but only in innumerable (infinitesimal) fractions and also not in numerable sections or innumerable sections.

(३) एवं अवत्तव्वगदव्वाणि वि।

(३) अवक्तव्य द्रव्यों सम्बन्धी कथन भी उपर्युक्त अनुसार असंख्यात भाग समझना चाहिए।

112. (3) The same holds true for *avaktavya* (inexpressible) substances, *i.e.* they exist in innumerable fractions.

विवेचन—आनुपूर्वीद्रव्य, अनानुपूर्वी द्रव्य तथा अवक्तव्य द्रव्य की अपेक्षा असंख्यात भागों में अधिक है।

शेष द्रव्यों की अपेक्षा समस्त आनुपूर्वीद्रव्य अधिक होने का कारण यह है कि अनानुपूर्वी द्रव्य परमाणु रूप है, परमाणु एक प्रदेश का ही अवगाहन करता है। और अवक्तव्यद्रव्य द्व्यणुक रूप है। द्विप्रदेशी स्कन्ध एक प्रदेश का भी अवगाहन कर सकता है, इसलिए ये दोनों लोक के असंख्यातवें भाग में स्थित रहते हैं। आनुपूर्वीद्रव्य त्र्यणुक आदि स्कन्ध से लेकर अनन्ताणुकस्कन्ध पर्यन्त हैं। इसीलिए ये शेष द्रव्यों की अपेक्षा असंख्यात भागों में अधिक हैं।

Elaboration—The *anupurvi* (sequential) substances occupy more innumerable units of space as compared to the *ananupurvi* (non-sequential) and *avaktavya* (inexpressible) substances. The reason for this abundance of *anupurvi* (sequential) substances as compared to the others is that *ananupurvi* (non-sequential) substances are in the form of free *paramanus* (ultimate-particles) and one *paramanu* (ultimate-particle) occupies just one space-point. The *avaktavya* (inexpressible) substances are in the form of aggregates (*skandhs*) of two *paramanus* (ultimate-particles) and they occupy just one or two space-point. Thus all together they occupy numerable portion of *lokakasha*. On the other hand the *anupurvi* (sequential) substances are in the form of triads to aggregates (*skandhs*) of infinite *paramanus*. Therefore they occupy more innumerable units of space as compared to other substances.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(८) भाव प्ररूपणा द्वार

११३. (१) णेगम-ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं कयरम्मि भावे होज्जा ? किं उदइए भावे होज्जा ? उवसमिए भावे होज्जा ? खाइए भावे होज्जा ? खाओवसमिए भावे होज्जा ? पारिणामिए भावे होज्जा ? सन्निवाइए भावे होज्जा ?

णियमा साइपारिणामिए भावे होज्जा।

११३. (प्रश्न १) नैगम और व्यवहारनयसम्मत आनुपूर्वीद्रव्य किस भाव में होते हैं? क्या औदयिक भाव में होते हैं? अथवा औपशमिक भाव में, क्षायिक भाव में, क्षायोपशमिक भाव में, पारिणामिक भाव में अथवा सान्निपातिक भाव में होते हैं?

(उत्तर) वे नियमतः सादि पारिणामिक भाव में होते हैं।

(8) BHAAVA-DVAR

113. (Question 1) In what state do the *naigam-vyavahar naya sammat anupurvi dravya* (sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) exist. Are they in *audayik-bhaava* (culminated state) ? Are they in *aupashamik-bhaava* (pacified state) ? Are they in *kshayik-bhaava* (extinct state) ? Are they in *kshayopashamik-bhaava* (state of extinction-cum-pacification) ? (these four states are in context of *karma* particles) Are they in *parinamik-bhaava* (transformed state) ? Or are they in *sannipatik-bhaava* (mixed state) ?

(Answer) As a rule they exist in parinamik-bhaava (transformative state).

(२) अणाणुपुव्वीदव्वाणि अवत्तव्वयदव्वाणि य एवं चेव भाणियव्वाणि।

(२) अनानुपूर्वीद्रव्यों और अवक्तव्यद्रव्यों के लिए भी इसी प्रकार कहना चाहिए। अर्थात् वे भी सादिपारिणामिक भाव में हैं।

(2) The same holds true for *ananupurvi* (non-sequential), and *avaktavya* (inexpressible) substances, *i.e.*, they too exist in *parinamik-bhaava* (transformed state).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवेचन-विभिन्न रूपों में होने वाले द्रव्य के परिणमन-परिवर्तन को परिणाम कहते हैं और यह परिणाम ही पारिणामिक भाव है।

यह पारिणामिकभाव दो प्रकार का है सादि और अनादि। धर्मास्तिकाय आदि अरूपी द्रव्य अनादि पारिणामिक है, और वह परिणमन उनका स्वभाव से ही उस रूप में अनादिकाल से होता चला आ रहा है तथा अनन्तकाल तक होता रहेगा। रूपी पुद्गलद्रव्यों में जो परिणमन होता है, वह सादि-पारिणामिक है। जैसे पर्वत, बादल, इन्द्र-धनुष आदि। क्योंकि पुद्गलों का जो विशिष्ट रूप में परिणमन होता है वह उत्कृष्ट रूप से भी असंख्यातकाल तक ही स्थायी रहता है। इसलिए समस्त आनुपूर्वीद्रव्य सादिपारिणामिक भाव वाले हैं।

इसी प्रकार अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्यों में भी सादिपारिणामिक भाव जानना चाहिए।

Elaboration—The transformation of a substance in different forms is called *parinam,* and it is this *parinam* that is called *parinamik-bhaava* or state arrived at due to transformation. This transformed (or transformative) state is of two kinds—*sadi* (with a beginning) and *anadi* (without a beginning). *Dharmastikaya* and other formless entities are *anadi parinamik* (their process of transformation is without a beginning). They are in a state of continued innate transformation and will remain so always. In the material substances having a form, the process of transformation has a beginning; some examples being mountains, clouds, rainbow, etc. The reason is that any specific form arrived at by transformation can remain stable only for a certain period, the maximum period of stability being uncountable time. Therefore all *anupurvi* (sequential) substances are *sadi-parinamik* (transformative with a beginning). The same holds true for *ananupurvi* (non-sequential) and *avaktavya* (inexpressible) substances.

(९) अल्प-बहुत्व द्वार

११४. (१) एएसि णं भंते ! णेगम-ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाणं अणाणुपुव्वीदव्वाणं अवत्तव्वयदव्वाण य दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठ-पएसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोयमा ! सव्वत्थोवाइं णेगम-ववहाराणं अवत्तव्वयदव्वाइं दव्वट्ठयाए, अणाणुपुव्वीदव्वाइं दव्वट्ठयाए विसेसाहियाइं, आणुपुव्वीदव्वाइं दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणाइं।

११४. (प्रश्न १) भंते ! नैगम और व्यवहारनयसम्मत इन आनुपूर्वीद्रव्यों, अनानुपूर्वीद्रव्यों और अवक्तव्यद्रव्यों में से द्रव्य, प्रदेश और द्रव्यप्रदेश की अपेक्षा कौन द्रव्य किन द्रव्यों की अपेक्षा अल्प, अधिक, तुल्य अथवा विशेषाधिक हैं ?

(उत्तर) गौतम ! नैगम और व्यवहारनयसम्मत अवक्तव्यद्रव्य द्रव्य की अपेक्षा सबसे कम(स्तोक) हैं, अनानुपूर्वीद्रव्य, द्रव्य की अपेक्षा अवक्तव्यद्रव्योंसे विशेषाधिक हैं और आनुपूर्वीद्रव्य द्रव्य की अपेक्षा अनानुपूर्वी द्रव्यों से असंख्यातगुणे हैं।

(9) ALPABAHUTVA-DVAR

114. (Questio 1) Bhante! In terms of substance (mass), space-points (volume), and substance-cum-space-points (mass-cum-volume) which of these *naigam-vyavahar naya sammat anupurvi, ananupurvi,* and *avaktavya dravya* (sequential, non-sequential, and inexpressible substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) are comparatively less than, more than, equal to, or much more than others (in the universe) ?

(Answer) Gautam! In terms of *dravya* (substance), *naigam-vyavahar naya sammat avaktavya dravya* (inexpressible substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) are least in the universe; in terms of substance *ananupurvi* (non-sequential) substances are much more than *avaktavya* (inexpressible) substances; and in terms of substance *anupurvi* (sequential) substances are uncountable times more than *ananupurvi* (non-sequential) substances.

(२) पएसट्ठयाए णेगम-ववहाराणं सव्वत्थोवाइं अणाणुपुव्वीदव्वाइं अपएसट्ठयाए, अवत्तव्वयदव्वाइं पयसट्ठयाए विसेसाहियाइं, आणुपुव्वीदव्वाइं पएसट्ठयाए अणंतगुणाइं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(२) प्रदेश की अपेक्षा नैगम और व्यवहारनयसम्मत अनानुपूर्वीद्रव्य अप्रदेशी होने से सबसे कम हैं, अवक्तव्यद्रव्य प्रदेशों की अपेक्षा अनानुपूर्वी द्रव्यों से विशेषाधिक और आनुपूर्वीद्रव्य अवक्तव्य द्रव्यों से अनन्तगुणे हैं।

(2) In terms of *pradesh* (space-points), as they are *apradeshi* (devoid of space-points), *naigam-vyavahar naya sammat ananupurvi dravya* (non-sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) are least in the universe; in terms of space-points *avaktavya dravya* (inexpressible substances) are much more than *ananupurvi* (non-sequential) substances; and in terms of space-points *anupurvi* (sequential) substances are infinite times more than *avaktavya* (inexpressible) substances.

(३) दव्वट्ठ–पएसट्ठयाए सव्वत्थोवाइं णेगम–ववहाराणं अवत्तव्वगदव्वाइं दव्वट्ठयाए, अणाणुपुव्वीदव्वाइं दव्वट्ठयाए अपएसट्ठयाए विसेसाहियाइं, अवत्तव्वगदव्वाइं पयएसट्ठयाए विसेसाहियाइं, आणुपुव्वीदव्वाइं दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणाइं, ताइं चेव पएसट्ठयाए अणंतगुणाइं। से तं अणुगमे। से तं णेगम–ववहाराणं अणोवणिहिया दव्वाणुपुव्वी।

(३) द्रव्य और प्रदेश की अपेक्षा नैगम और व्यवहारनयसम्मत अवक्तव्यद्रव्य–द्रव्य की अपेक्षा सबसे अल्प हैं। द्रव्य और अप्रदेशार्थता की अपेक्षा अनानुपूर्वीद्रव्य विशेषाधिक हैं, प्रदेश की अपेक्षा अवक्तव्यद्रव्य विशेषाधिक है, आनुपूर्वीद्रव्य द्रव्य की अपेक्षा असंख्यातगुण और वही प्रदेश की अपेक्षा अनन्तगुण हैं।

इस प्रकार से अनुगम का वर्णन पूर्ण हुआ। नैगम और व्यवहारनयसम्मत अनौपनिधिकी द्रव्यानुपूर्वी की वक्तव्यता पूर्ण हुई।

(3) In terms of *dravya* and *pradesh* (substance-cum-space-points), *naigam-vyavahar naya sammat avaktavya dravya* (inexpressible substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) are least in the universe in context of substance. *Ananupurvi* (non-sequential) substances are much more (than *avaktavya* substances) in

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

context of substance and absence of space-points; *avaktavya* (inexpressible) substances are much more (than *ananupurvi* substances) in context of space-points. *Anupurvi* (sequential) substances are uncountable times more (than *avaktavya* substances) in context of substance and infinite times more (than *avaktavya* substances) in context of space-points.

This concludes the description of *anugam*. This also concludes the description of *naigam-vyavahar naya sammat dravyanupurvi* (sequence of substances conforming to coordinated and particularized viewpoints).

विवेचन–सूत्रकार ने नैगम और व्यवहारनयसम्मत आनुपूर्वी आदि द्रव्यों का द्रव्य, प्रदेश और उभय की अपेक्षा अल्पबहुत्व बतलाया है। स्पष्टीकरण इस प्रकार है–

द्रव्यार्थ का मतलब है–एक-एक आनुपूर्वी आदि द्रव्यों की गणना करना।

द्रव्यार्थ से अवक्तव्यद्रव्य सर्वस्तोक–सबसे अल्प है, क्योंकि द्विप्रदेशी स्कन्धों के संघात और भेद के निमित्त कम मिलते हैं। अनानुपूर्वीद्रव्य उनसे विशेषाधिक है, क्योंकि परमाणु बहुतर द्रव्यों की उत्पत्ति में निमित्त बनते हैं और उनसे आनुपूर्वीद्रव्य असंख्यातगुण है, क्योंकि त्रिप्रदेशी आदि द्रव्य प्रचुरता में मिलते हैं, तथा वस्तु स्वभाव भी वही है। दूसरी बात यह है कि अनानुपूर्वी द्रव्य–परमाणु में एक ही और अवक्तव्यद्रव्य में द्विप्रदेशीस्कन्ध रूप एक स्थान ही लभ्य है, परन्तु आनुपूर्वीद्रव्य में त्र्यणुकस्कन्ध से लगाकर एकोत्तर वृद्धि में–एक-एक प्रदेश की उत्तरोत्तरवृद्धि होने से अनन्ताणुक स्कन्ध पर्यन्त अनन्त स्थान हैं। इसीलिए आनुपूर्वीद्रव्य, अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्यों की अपेक्षा असंख्यातगुणे बताये हैं।

प्रदेशों की अपेक्षा अनानुपूर्वीद्रव्य को सबसे कम बताने का कारण यह है कि यदि परमाणु रूप इन अनानुपूर्वी द्रव्यों में भी द्वितीय आदि प्रदेश मान लिए जायें तो प्रदेशार्थता से भी अनानुपूर्वीद्रव्यों की अवक्तव्यद्रव्यों से अधिकता मानी जा सकती है, परन्तु परमाणु पुद्गल का सूक्ष्मतम अविभाज्य अंग होने के कारण अपनी स्वतन्त्र सत्ता की स्थिति में अप्रदेशी है और यहाँ प्रदेशार्थता की अपेक्षा अल्पबहुत्व का कथन किया है। अतः अनानुपूर्वीद्रव्य सर्वस्तोक हैं।

Elaboration—The author has stated the quantum of *naigam-vyavahar naya sammat anupurvi* (sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) and

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

other substances in the universe with respect to substance (mass), *pradesh* (space-points or volume) and both combined. *Dravyarth* or with respect to substance means by taking into account each *anupurvi* (sequential) and other substances. With respect to substance the *avaktavya* (inexpressible) substances are minimum. This is because the chances of integration and disintegration of aggregates of two *paramanus* (ultimate-particles) are minimal. As compared to these *ananupurvi* (non-sequential) substances are much more because the chances of integration of free *paramanus* (ultimate-particles) to form substances are much more. As compared to these two, *anupurvi* (sequential) substances are uncountable times more because aggregates of three *paramanus* (ultimate-particles) or triads are available in abundance, moreover it is the most stable state of substances in nature. Also, an *ananupurvi* (non-sequential) substance or a *paramanu* (ultimate-particle) and *avaktavya* (inexpressible) substance require just one space-point to exist whereas *anupurvi* (sequential) substances from an aggregate of three to infinite *paramanus* (ultimate-particles) require infinite space-points to exist. That is why the *anupurvi* (sequential) substances are said to be uncountable times more as compared to the *ananupurvi* (non-sequential) and *avaktavya* (inexpressible) substances.

With respect to pradesh (space-points) the *ananupurvi* (non-sequential) substances are said to be minimum. If the *ananupurvi* (non-sequential) substances could be accepted as having two or more space-points it could be believed that they are more as compared to *avaktavya* (inexpressible) substances. But being the smallest indivisible particle of matter a *paramanu* (ultimate-particle) in its free existence is devoid of space-points (not counting the space-point it occupies) and therefore with respect to space-points the *ananupurvi* (non-sequential) substances are minimum.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्रव्यों का अल्प-बहुत्व स्थापना यंत्र

कल्पना करें चार द्रव्य हैं–

एकप्रदेशी (*) द्विप्रदेशी (**) त्रिप्रदेशी (***) चतुष्प्रदेशी (****)

(अ) अनानुपूर्वी (एक प्रदेशी परमाणु) द्रव्य–उपर्युक्त द्रव्यों के भेद से द्रव्यानुपूर्वी के अनानुपूर्वी द्रव्य दस बनेंगे–

* ** *** ****

(१) * (१) * (१) * (१) * (१) * (१) * (१) * (१) * (१) * (१) *

= (१०)—अधिकतम दस सम्भाव्यताएँ

(ब) अवक्तव्य (द्विप्रदेशी) द्रव्य–इन्हीं द्रव्यों को यदि संघात और भेद से स्थापित किया जाये तो अवक्तव्य द्रव्य पाँच बनेंगे

* ** *** ****

(१+१)** (१+१)** (१+१)** (१+१)** (१+१)**

= (१०)—अधिकतम पाँच सम्भाव्यताएँ

(स) आनुपूर्वी (त्रिप्रदेशी स्कन्ध आदि) द्रव्य–इन्हीं द्रव्यों के विविध प्रकार के संघात और भेदों से आनुपूर्वी द्रव्य चौदह बनेंगे–

* ** *** ****

(i) (१)+(१+१) * ** (१+१)+(१) ** * (१+१+१)+(१) *** *

= (१०)—३ सम्भाव्यताएँ

(ii) (१+१)+(१+१) ** ** (१+१)+(१+१)+(१+१) ** ** **

= (१०)—२ सम्भाव्यताएँ

(iii) (१+१+१)+(१+१) *** ** (१+१)+(१)+(१+१) ** * **

= (१०)—२ सम्भाव्यताएँ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(iv) (१+१+१)+(१+१+१) ***   ***   (१)+(१+१+१) *   ***

= (१०)—२ सम्भाव्यताएँ

(v) (१+१+१+१)+(१+१+१) ****   ***   (१+१+१) ***

= (१०)—२ सम्भाव्यताएँ

(vi) (१+१+१+१)+(१+१)+(१+१+१+१) ****   **   ****

= (१०)—१ सम्भाव्यता

(vii) (१+१+१+१+१)+(१)+(१+१+१+१) *****   *   ****

= (१०)—१ सम्भाव्यता

(viii) (१+१+१+१+१)+(१+१+१+१+१) *****   *****

= (१०)—१ सम्भाव्यता

अल्पबहुत्व–अवक्तव्य द्रव्य सबसे अल्प है। क्योंकि द्विप्रदेशी स्कन्धों को संघात और भेद के निमित्त कम मिलते हैं।

अनानुपूर्वी द्रव्य इनकी अपेक्षा अधिक है, क्योंकि परमाणु बहुत से द्रव्यों की उत्पत्ति में निमित्त बनते हैं।

आनुपूर्वी द्रव्य इनसे असंख्य गुणा अधिक होते हैं, क्योंकि तीन प्रदेश से यावत अनन्त प्रदेशी तक सब आनुपूर्वी द्रव्य हैं। इन्हें संघात और भेद के निमित्त सबसे अधिक मिलते हैं।

आनुपूर्वीद्रव्यों के विषय में द्रव्य और प्रदेशार्थता की अपेक्षा जो पृथक्-पृथक् निर्देश किया है, वही उन दोनों के लिए भी समझ लेना चाहिए कि द्रव्यार्थता की अपेक्षा असंख्यात गुणे और प्रदेशार्थता की अपेक्षा अनन्तगुण हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

COMPARATIVE CHART OF QUANTUM OF SUBSTANCES

TAKE FOUR SUBSTANCES FOR EXAMPLE

Aggregates of one (*), two (**), three (***), and four (****) *pradesh* (space-points) or *paramanu* (ultimate-particle).

(a) *Ananupurvi* (non-sequential) substances : the aforesaid four substances on disintegration could form a maximum of 10 configurations of *ananupurvi* (non-sequential) substances or *paramanus* (ultimate-particles) as follows :

*   **   ***   ****

(1) *   (1) * (1) *   (1) * (1) * (1) *   (1) * (1) * (1) * (1) *

= (10)—maximum ten probabilities

(b) *Avaktavya* (inexpressible) substances : the same four substances on disintegration and reintegration have possibilities of forming only five *avaktavya* (inexpressible) substances or aggregates of two *paramanus* (ultimate-particles) :

*   **   ***   ****

(1+1)**   (1+1)**   (1+1)**   (1+1)**   (1+1)**

= (10)—maximum five probabilities

(c) *Anupurvi* (sequential) substances : the same four substances on disintegration and reintegration have possibilities of forming 14 *anupurvi* (sequential) substances or aggregates of three or more *paramanus* (ultimate-particles)

*   **   ***   ****

(i) (1)+(1+1) * **   (1+1)+(1) ** *   (1+1+1)+(1) *** *

= (10)—3 probabilities

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(ii) (1+1)+(1+1) ** ** (1+1)+(1+1)+(1+1) ** ** **
= (10)—2 probabilities

(iii) (1+1+1)+(1+1) *** ** (1+1)+(1)+(1+1) ** * **
= (10)—2 probabilities

(iv) (1+1+1)+(1+1+1) *** *** (1)+(1+1+1) * ***
= (10)—2 probabilities

(v) (1+1+1+1)+(1+1+1) **** *** (1+1+1) ***
= (10)—2 probabilities

(vi) (1+1+1+1)+(1+1)+(1+1+1+1) **** ** ****
= (10)—1 probability

(vii) (1+1+1+1+1)+(1)+(1+1+1+1) ***** * ****
= (10)—1 probability

(viii) (1+1+1+1+1)+(1+1+1+1+1) ***** *****
= (10)—1 probability. All these combined make 14 probabilities.

Quantum (less or more)—*Avaktavya* (inexpressible) substances are minimum because there are lesser probabilities of integration and disintegration.

Ananupurvi (non-sequential) substances are more than these because free *paramanus* (ultimate-particles) are sources of numerous substances.

Anupurvi (sequential) substances are uncountable times more than these both because aggregates of three to infinite *paramanus* (ultimate-particles) all are included in *anupurvi* (sequential) substances. There are maximum probabilities of their integration and disintegration.

The details separately mentioned for *anupurvi* (sequential) substances in context of substance and space-points should also be taken likewise for joint context (substance-cum-space-points), *i. e.*, with respect to substance they are uncountable times more and with respect to space-points they are infinite times more.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संग्रहनयसम्मत अनौपनिधिकी द्रव्यानुपूर्वी प्ररूपणा

११५. से किं तं संगहस्स अणोवणिहिया दव्वाणुपुव्वी ?

संगहस्स अणोवणिहिया दव्वाणुपुव्वी पंचविहा पण्णत्ता। तं जहा— (१) अट्ठपयपरूवणया, (२) भंगसमुक्कित्तणया, (३) भंगोवदंसणया, (४) समोयारे, (५) अणुगमे।

११५. (प्रश्न) संग्रहनयसम्मत अनौपनिधिकी द्रव्यानुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) संग्रहनयसम्मत अनौपनिधिकी द्रव्यानुपूर्वी पाँच प्रकार की है। जैसे— (१) अर्थपदप्ररूपणता, (२) भंगसमुकीर्तनता, (३) भंगोपदर्शनता, (४) समवतार, (५) अनुगम।

SAMGRAHA NAYA SAMMAT ANAUPANIDHIKI DRAVYA-ANUPURVI

115. (Question) What is this *samgraha naya sammat anaupanidhiki dravya-anupurvi* (disorderly physical sequence conforming to generalized viewpoint) ?

(Answer) *Samgraha naya sammat anaupanidhiki dravya-anupurvi* (disorderly physical sequence conforming to generalized viewpoint) is of five types—(1) *Arth-padaprarupana* (semantics), (2) *Bhang-samutkirtanata* (enumeration of divisions or *bhangs*), (3) *Bhangopadarshanata* (explication of divisions or *bhangs*), (4) *Samavatara* (compatible assimilation), and (5) *Anugam* (systematic elaboration).

संग्रहनयसम्मत अर्थपदप्ररूपणता

११६. से किं संगहस्स अट्ठपयपरूवणया ?

संगहस्स अट्ठपयपरूवणया तिपएसिया आणुपुव्वी, चउप्पएसिया आणुपुव्वी जाव दसपएसिया आणुपुव्वी, संखिज्जपएसिया आणुपुव्वी असंखिज्जपएसिया आणुपुव्वी, अणंतपदेसिया आणुपुव्वी। परमाणुपोग्गला अणाणुपुव्वी, दुपदेसिया अवत्तव्वए। से तं संगहस्स। से तं संगहस्स अट्ठपयपरूवणया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११६. (प्रश्न) संग्रहनयसम्मत अर्थपदरूप्रपणता क्या है ?

(उत्तर) संग्रहनयसम्मत अर्थपदप्ररूपणता का स्वरूप इस प्रकार है–त्रिप्रदेशिक स्कन्ध आनुपूर्वी है, चतुष्प्रदेशी स्कन्ध आनुपूर्वी है यावत् दसप्रदेशिक स्कन्ध आनुपूर्वी है, संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध आनुपूर्वी है, असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध आनुपूर्वी है, अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध आनुपूर्वी है। परमाणुपुद्गल अनानुपूर्वी हैं और द्विप्रदेशिक स्कन्ध अवक्तव्यक है।

संग्रहनयसम्मत अर्थपदप्ररूपणता का यह स्वरूप है।

SAMGRAHA NAYA SAMMAT ARTH-PADAPRARUPANA

116. (Question) What is this *samgraha naya sammat arth-padaprarupana* (semantics conforming to generalized viewpoint) ?

(Answer) *Samgraha naya sammat arth-padaprarupana* (semantics conforming to generalized viewpoint) is as follows—An aggregate (*skandh*) of three space-points or ultimate-particles (*paramanus*) is a sequential configuration (*anupurvi*). In the same way aggregates (*skandhs*) of four space-points or ultimate-particles (*paramanus*), (and so on...), ten space-points or ultimate-particles (*paramanus*), countable, uncountable, and infinite space-points or ultimate-particles (*paramanus*), are all sequential configurations (*anupurvis*). But a single ultimate-particle of matter (*paramanu pudgala*) is non-sequential (*ananupurvi*) and an aggregate (*skandh*) of two space-points or ultimate-particles (*paramanus*) is inexpressible (*avaktavya*).

This concludes the description of *Samgraha naya sammat arth-padaprarupana* (semantics conforming to generalized viewpoint).

विवेचन–संग्रहनय की दृष्टि से इस अर्थपदप्ररूणता में और पूर्व की नैगम–व्यवहारनयसम्मत अर्थपदप्ररूपणा में यह अन्तर है कि नैगम–व्यवहारनय की अपेक्षा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक त्रिप्रदेशिक स्कन्ध एक आनुपूर्वीद्रव्य है और अनेक त्रिप्रदेशिक स्कन्ध अनेक आनुपूर्वीद्रव्य हैं। इस प्रकार एकत्व और अनेकत्व दोनों का निर्देश किया है। यह कथन अनन्तप्रदेशी स्कन्ध पर्यन्त जानना चाहिए। नैगम और व्यवहारनय द्रव्य को अनेक भेद युक्त मानता है, जबकि संग्रहनय सामान्य को स्वीकार करता है। इसलिए नैगम और व्यवहारनय सम्मत अनौपनिधिकी द्रव्यानुपुर्वी के २६ भंग होते हैं। संग्रहनय की व्याख्या में व्यक्ति का बहुवचन नहीं होता इसलिए उसके भंगों में केवल एकवचनान्त सात भंग ही बनते हैं। (देखें सूत्र ११८ में)

Elaboration—The difference between this definition of *Samgraha naya sammat arth-padaprarupana* (semantics conforming to generalized viewpoint) and that of the aforesaid *Naigam-vyavahar naya sammat arth-padaprarupana* (semantics conforming to coordinated and particularized viewpoints) is that according to the *Naigam-vyavahar naya* (coordinated and particularized viewpoints) one aggregate of three *paramanus* (ultimate-particles) is one *anupurvi* (sequential) substance and many such triads are many *anupurvi* (sequential) substances. Thus singularity and plurality both have been included. This is true for all substances including an aggregate of infinite *paramanus* (ultimate-particles). *Naigam-vyavahar naya* deals with substance in its many different types of descriptions whereas *Samgraha naya* deals with generalized description. Therefore *Naigam-vyavahara naya sammat dravyanupurvi* (substance-sequence conforming to coordinated and particularized viewpoints) has 26 *bhangs* (divisions). In elaborations according to *Samgraha naya* (generalized viewpoint) there is no plural therefore it has only seven divisions consisting of singulars. (see aphorism 118)

११७. एयाए णं संगहस्स अट्ठपयपरूवणयाए किं पओयणं ?

एयाए णं संगहस्स अट्ठपयपरूवणयाए संगहस्स भंगसमुक्कित्तणया कीरइ।

११७. (प्रश्न) संग्रहनयसम्मत इस अर्थपदप्ररूपणता का क्या प्रयोजन है ?

(उत्तर) संग्रहनयसम्मत इस अर्थपदप्ररूपणता द्वारा संग्रहनयसम्मत भंगसमुत्कीर्तनता (भंगों के निर्देश) की जाती है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

117. (Question) What is the purpose of this *samgraha naya sammat arth-padaprarupana* (semantics conforming to generalized viewpoint) ?

(Answer) This *samgraha naya sammat arth-padaprarupana* (semantics conforming to generalized viewpoint) is used to derive and state *Samgraha naya sammat bhang-samutkirtanata* (enumeration of divisions or bhangs conforming to generalized viewpoint).

संग्रहनयसम्मत भंगसमुत्कीर्तना

११८. से किं तं संगहस्स भंगसमुक्कित्तणया ?

संगहस्स भंगसमुक्कित्तणया-(१) अत्थि आणुपुव्वी, (२) अत्थि अणाणुपुव्वी, (३) अत्थि अवत्तव्वए अहवा, (४) अत्थि आणुपुव्वी य अणाणुपुव्वी य अहवा, (५) अत्थि आणुपुव्वी य अवत्तव्वए य अहवा, (६) अत्थि अणाणुपुव्वी य अवत्तव्वए य अहवा, (७) अत्थि आणुपुव्वी य अणाणुपुव्वी य अवत्तव्वए य। एवं एए सत्त भंगा। से तं संगहस्स भंगसमुक्कित्तणया।

११८. (प्रश्न) संग्रहनयसम्मत भंगसमुत्कीर्तनता क्या है ?

(उत्तर) संग्रहनयसम्मत भंगसमुत्कीर्तनता का स्वरूप इस प्रकार है-

(१) आनुपूर्वी है, (२) अनानुपूर्वी है, (३) अवक्तव्यक है। अथवा (४) आनुपूर्वी और अनानुपूर्वी है, (५) आनुपूर्वी और अवक्तव्यक है, (६) अनानुपूर्वी और अवक्तव्यक है। अथवा (७) आनुपूर्वी-अनानुपूर्वी-अवक्तव्यक है।

इस प्रकार ये सात भंग होते हैं। यह संग्रहनयसम्मत भंगसमुत्कीर्तनता का स्वरूप है।

SAMGRAHA NAYA SAMMAT BHANG-SAMUTKIRTANATA

118. (Question) What is this *samgraha naya sammat bhang-samutkirtanata* (enumeration of divisions or *bhangs* conforming to generalized viewpoint) ?

(Answer) *Samgraha naya sammat bhang-samutkirtanata* (enumeration of divisions or *bhangs* conforming to generalized viewpoint) is as follows—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(1) There is an *anupurvi* (sequence), (2) There is an *ananupurvi* (non-sequence), (3) There is an *avaktavya* (inexpressible), (4) There is an *anupurvi* (sequence) and an *ananupurvi* (non-sequence), (5) There is an *anupurvi* (sequence) and an *avaktavya* (inexpressible), (6) There is an *ananupurvi* (non-sequence) and an *avaktavya* (inexpressible), and (7) There is an *anupurvi* (sequence), *ananupurvi* (non-sequence), and an *avaktavya* (inexpressible). Thus there are seven divisions or *bhangs*.

This concludes the description of *samgraha naya sammat bhang-samutkirtanata* (enumeration of divisions or *bhangs* conforming to generalized viewpoint)

११९. एयाए णं संगहस्स भंगसमुक्कित्तणयाए किं पओयणं ?

एयाए णं संगहस्स भंगसमुक्कित्तणयाए संगहस्स भंगोवदंसणया कज्जति।

११९. (प्रश्न) इस संग्रहनयसम्मत भंगसमुत्कीर्तनता का क्या प्रयोजन है ?

(उत्तर) इस संग्रहनसम्मत भंगसमुत्कीर्तनता के द्वारा भंगोपदर्शन किया जाता है।

119. (Question) What is the purpose of this *samgraha naya sammat bhang-samutkirtanata* (enumeration of divisions or bhangs conforming to generalized viewpoint) ?

(Answer) This *samgraha naya sammat bhang-samutkirtanata* (enumeration of divisions or *bhangs* conforming to generalized viewpoint) is used to derive and state *Bhangopadarshanata* (explication of divisions or *bhangs*).

संग्रहनयसम्मत भंगोपदर्शनता

१२०. से किं तं संगहस्स भंगोवदंसणया ?

भंगोवदंसणया, (१) तिपएसिया आणुपुव्वी, (२) परमाणुपोग्गला अणाणुपुव्वी, (३) दुपएसिया अवत्तव्वए; अहवा, (४) तिपएसिया य परमाणुपोग्गला य आणुपुव्वी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

य अणाणुपुव्वी य अहवा, (५) तिपएसिया य दुपएसिया य आणुपुव्वी अवत्तव्वए य अहवा, (६) परमाणुपोग्गला य दुपएसिया य अणाणुपुव्वी य अवत्तव्वए य अहवा, (७) अहवा तिपएसिया य परमाणुपोग्गला य दुपएसिया य आणुपुव्वी य अणाणुपुव्वी य अवत्तव्वए य।

से तं संगहस्स भंगोवदंसणया।

१२०. (प्रश्न) संग्रहनयसम्मत भंगोपदर्शनता क्या है?

(उत्तर) संग्रहनयसम्मत भंगोपदर्शनता इस प्रकार है-(१) त्रिप्रदेशिक स्कन्ध आनुपूर्वी है, (२) परमाणुपुद्गल अनानुपूर्वी है, और (३) द्विप्रदेशिक स्कन्ध अवक्तव्यक हैं, अथवा (४) त्रिप्रदेशिक स्कन्ध आनुपूर्वी और परमाणुपुद्गल अनानुपूर्वी है, अथवा (५) त्रिप्रदेशिक आनुपूर्वी और द्विप्रदेशिक स्कन्ध अवक्तव्यक है, अथवा (६) परमाणु पुद्गल आनुपूर्वी और द्विप्रदेशिक स्कन्ध, अवक्तव्यक कहे जाते हैं, अथवा (७) त्रिप्रदेशिक स्कन्ध, परमाणुपुद्गल, और द्विप्रदेशिक स्कन्ध क्रमशः आनुपूर्वी-अनानुपूर्वी और अवक्तव्यक कहे जाते हैं। (इस प्रकार संग्रहनयसम्मत भंगोपदर्शनता के सात विकल्प हुए)

यह संग्रहनय सम्मत भंगोपदर्शनता का स्वरूप है।

SAMGRAHA NAYA SAMMAT BHANGOPADARSHANATA

120. (Question) What is this *samgraha naya sammat bhangopadarshanata* (explication of divisions or bhangs conforming to generalized viewpoint)?

(Answer) *Samgraha naya sammat bhangopadarshanata* (explication of divisions or *bhangs* conforming to generalized viewpoint) is as follows—

(1) There is a triad (of three space-points or three ultimate-particles) *anupurvi* (sequence), (2) There is a single particle (*paramanu-pudgala* or ultimate-particle of matter) *ananupurvi* (non-sequence), (3) There is a biunial-aggregate (aggregate of two space-points or ultimate-particles) *avaktavya* (inexpressible), (4) There is a triad *anupurvi*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(sequence) and a single particle *ananupurvi* (non-sequence), (5) There is a triad *anupurvi* (sequence) and a biunial-aggregate *avaktavya* (inexpressible), (6) There is a single particle *ananupurvi* (non-sequence) and a biunial-aggregate *avaktavya* (inexpressible), and (7) There is a triad *anupurvi* (sequence), single particle *ananupurvi* (non-sequence), and a biunial-aggregate *avaktavya* (inexpressible). Thus there are seven alternatives or divisions of *Samgraha naya sammat bhangopadarshanata* (explication of divisions or *bhangs* conforming to generalized viewpoint).

This concludes the description of *Samgraha naya sammat bhangopadarshanata* (explication of divisions or bhangs conforming to generalized viewpoint).

समवतार प्ररूपणा

१२१. से किं तं समोयारे ? समोयारे संगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइं कहिं समोयरंति ? किं आणुपुव्वीदव्वेहिं समोयरंति ? अणाणुपुव्वीदव्वेहिं समोयरंति ? अवत्तव्वगदव्वेहिं समोयरंति ?

संगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइं आणुपुव्वीदव्वेहिं समोयरंति, नो अणाणुपुव्वीदव्वेहिं समोयरंति, नो अवत्तव्वगदव्वेहिं समोयरंति। एवं दोण्णि वि सट्ठाणे सट्ठाणे समोयरंति। से तं समोयारे।

१२१. (प्रश्न) समवतार क्या है ? क्या संग्रहनयसम्मत आनुपूर्वीद्रव्य आनुपूर्वीद्रव्यों में समाविष्ट होते हैं ? अथवा अनानुपूर्वीद्रव्यों में समाविष्ट होते हैं ? या अवक्तव्यकद्रव्यों में समाविष्ट होते हैं ?

(उत्तर) संग्रहनयसम्मत आनुपूर्वीद्रव्य आनुपूर्वीद्रव्यों में (स्व जाति द्रव्यों में ही) समवतरित होते हैं, अनानुपूर्वी और अवक्तव्यक द्रव्यों में नहीं। इसी प्रकार दोनों भी–अनानुपूर्वीद्रव्य और अवक्तव्यकद्रव्य भी अपने-अपने स्थान (–स्वजाति) में ही समवतरित होते हैं।

यह समवतार का स्वरूप है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

121. (Question) What is this *samavatara* (compatible assimilation) ?

Can there be a compatible assimilation (*samavatara*) of *samgraha naya sammat anupurvi dravya* (sequential substances conforming to generalized viewpoint) with sequential substances or non-sequential substances or inexpressible substances ?

(Answer) *Samgraha naya sammat anupurvi dravya* (sequential substances conforming to generalized viewpoint) can have compatible assimilation (*samavatara*) with sequential substances (of the same kind) only and not with non-sequential substances or inexpressible substances. The same is true for *ananupurvi* (non-sequential) and *avaktavya* (inexpressible) substances (*i.e.*, each one assimilates only with substances of its own kind).

This concludes the description of samavatara (compatible assimilation).

संग्रहनयसम्मत अनुगम के आठ प्रकार

१२२. से किं तं अणुगमे ?

अणुगमे अट्ठविहे पन्नत्ते। तं जहा–

(१) संतपयपरूवणया, (२) दव्वपमाणं, (३) च खेत्त, (४) फुसणा, य।

(५) कालो, (६) य अंतरं, (७) भाव, (८) भाग, (९) अप्पाबहुं नत्थि।

१२२. (प्रश्न) संग्रहनयसम्मत अनुगम क्या है ?

(उत्तर) संग्रहनयसम्मत अनुगम आठ प्रकार का है। जैसे–(१) सत्पदप्ररूपणा, (२) द्रव्यप्रमाण, (३) क्षेत्र, (४) स्पर्शना, (५) काल, (६) अन्तर, (७) भाग, और (८) भाव (संग्रहनय सामान्यग्राही है, सामान्य में सदा एकरूपता होती है, अतः) इसमें अल्प–बहुत्व नहीं होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

SAMGRAHA NAYA SAMMAT ANUGAM : EIGHT KINDS

122. (Question) What is this *anugam* (systematic elaboration)?

(Answer) *Anugam* (systematic elaboration) is of eight kinds—(1) *satpadprarupana,* (2) *dravyapramana,* (3) *kshetra,* (4) *sparshana,* (5) *kaal,* (6) *antar,* (7) *bhaag,* and (8) *bhaava.* (*Samgraha naya* deals with general attributes and they are uniform everywhere thus-) they do not have the *alpabahutva* kind.

(१) सत्पदप्ररूपणा का अर्थ

१२३. संगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइं किं अत्थि णत्थि ?

नियमा अत्थि। एवं दोण्णि वि।

१२३. (प्रश्न) संग्रहनयसम्मत आनुपूर्वीद्रव्य हैं अथवा नहीं हैं?

(उत्तर) नियमतः (–निश्चित रूप से विद्यमान है, अस्तित्त्व में) हैं। इसी प्रकार दोनों (अनानुपूर्वी और अवक्तव्यक) द्रव्यों के लिए भी समझना चाहिए।

(1) SATPADPRARUPANA-DVAR

123. (Question) Do the *samgraha naya sammat anupurvi dravya* (sequential substances conforming to generalized viewpoint) exist or not?

(Answer) Indeed, as a rule they exist. The same also holds good in case of *ananupurvi* (non-sequential) and *avaktavya* (inexpressible) substances.

(२) द्रव्यप्रमाणप्ररूपणा

१२४. संगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइं किं संखेज्जाइं असंखेज्जाइं अणंताइं ?

नो संखेज्जाइं नो असंखेज्जाइं नो अणंताइं, नियमा एगो रासी। एवं दोण्णि वि।

१२४. (प्रश्न) संग्रहनयसम्मत आनुपूर्वीद्रव्य संख्यात हैं, असंख्यात हैं या अनन्त हैं?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(उत्तर) संग्रहनयसम्मत आनुपूर्वीद्रव्य संख्यात नहीं हैं, असंख्यात नहीं हैं और अनन्त भी नहीं हैं, परन्तु नियमतः एक राशि रूप हैं। इसी प्रकार दोनों-(अनानुपूर्वी और अवक्तव्यक) द्रव्यों के लिए भी जानना चाहिए।

(2) DRAVYAPRAMANA-DVAR

124. (Question) According to the *samgraha naya* (generalized viewpoint) are the *anupurvi dravya* (sequential substances) countable, uncountable, or infinite (numerically)?

(Answer) *Samgraha naya sammat anupurvi dravya* (sequential substances conforming to generalized viewpoint) are neither countable nor uncountable or infinite, in fact they fall in just one heap or group). The same also holds good in case of *ananupurvi* (non-sequential) and *avaktavya* (inexpressible) substances.

विवेचन-द्रव्य-प्रमाणप्ररूपणा में आनुपूर्वी आदि पदों द्वारा कहे गये द्रव्यों की संख्या का निर्धारण होता है। संग्रहनय सामान्य को विषय करने वाला होने से उसके मत से संख्यात आदि भेद सम्भव नहीं हैं। किन्तु एक-एक राशि ही है। इसी बात का संकेत करने के लिए सूत्र में पद दिया है-**नियमा एगो रासी** जिसका अर्थ यह है कि आनुपूर्वीद्रव्य अनेक होने पर भी उनमें आनुपूर्वी भाव में परिणमन होने पर एक आनुपूर्वी बन जाती है।

Elaboration—In *dravyapraman* or quantitive analysis the numerical quantity of *ananupurvi* (non-sequential) and other type of substances is decided. As *samgraha naya* (generalized viewpoint) deals with generalities it is not possible to have categories like countable, (etc.). The substances just fall in general groups. To indicate this the aphorism uses the phrase—*niyama ego rasi*—which means that although *anupurvi* (sequential) (etc.) substances are numerous, when they are categorized as *anupurvi* (sequential) they just form a single *anupurvi* (sequence).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(३) क्षेत्रप्ररूपणा

१२५. संगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइं लोगस्स कतिभागे होज्जा ? किं संखेज्जतिभागे होज्जा ? असंखेज्जतिभागे होज्जा ? संखेज्जेसु भागेसु होज्जा ? असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा ? सव्वलोए होज्जा?

नो संखेज्जतिभागे होज्जा, नो असंखेज्जतिभागे होज्जा, नो संखेज्जेसु भागेसु होज्जा, नो असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा, नियमा सव्वलोए होज्जा? एवं दोण्णि वि।

१२५. **(प्रश्न)** संग्रहनयसम्मत आनुपूर्वीद्रव्य लोक के कितने भाग में हैं? क्या संख्यात भाग में हैं? असंख्यात भाग में हैं? संख्यात भागों में हैं? असंख्यात भागों में हैं? अथवा सर्वलोक में हैं?

(उत्तर) समस्त आनुपूर्वीद्रव्य लोक के संख्यात भाग, असंख्यात भाग, संख्यात भागों या असंख्यात भागों में नहीं हैं किन्तु नियमतः सर्वलोक में हैं।

इसी प्रकार का कथन दोनों (अनानुपूर्वी और अवक्तव्यक) द्रव्यों के लिए भी समझना चाहिए।

(3) KSHETRA-DVAR

125. (Question) In what area or section of the universe (occupied space) do the *samgraha naya sammat anupurvi dravya* (sequential substances conforming to generalized viewpoint) exist. Are they in its countable fraction ? Are they in its uncountable (infinitesimal) fraction ? Are they in its countable sections ? Are they in its uncountable sections ? or are they in the whole universe ?

(Answer) With respect to all *anupurvi* (sequential) substance, they exist not just in countable fractions, uncountable fractions, countable sections, or uncountable sections of the universe but as a rule, they exist in the whole universe.

The same holds good for the other two type of substances (*ananupurvi* or non-sequential and *avaktavya* or inexpressible).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(४) स्पर्शना प्ररूपणा

१२६. संगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइं लोगस्स किं संखेज्जतिभागं फुसंति ? असंखेज्जतिभागं फुसंति ? संखेज्जे भागे फुसंति ? असंखेज्जे भागे फुसंति ? सव्वलोगं फुसंति ?

नो संखेज्जतिभागं फुसंति, नो असंखेज्जतिभागं फुसंति, नो संखेज्जे भागे फुसंति, नो असंखेज्जे भागे फुसंति, नियमा सव्वलोगं फुसंति। एवं दोन्नि वि।

१२६. (प्रश्न) संग्रहनयसम्मत आनुपूर्वीद्रव्य क्या लोक के संख्यात भाग का, असंख्यात भाग का, संख्यात भागों या असंख्यात भागों या सर्वलोक का स्पर्श करते हैं ?

(उत्तर) आनुपूर्वीद्रव्य लोक के संख्यात भाग का स्पर्श नहीं करते हैं, असंख्यात भाग का स्पर्श नहीं करते हैं, संख्यात भागों और असंख्यात भागों का भी स्पर्श नहीं करते हैं, किन्तु नियम से सर्वलोक का स्पर्श करते हैं।

इसी प्रकार का कथन अनानुपूर्वी और अवक्तव्यक रूप दोनों द्रव्यों के लिए भी समझना चाहिए।

(4) SPARSHANA-DVAR

126. (Question) Do the *samgraha naya sammat anupurvi dravya* (sequential substances conforming to generalized viewpoint) have spatial contact with countable fraction of the universe (occupied space), with uncountable fraction, with countable sections, with uncountable sections, or with the whole universe ?

(Answer) With respect to all *anupurvi* (sequential) substances, they have spatial contact not just with countable fractions, uncountable (infinitesimal) fraction, countable sections, or uncountable sections of the universe but with the whole universe.

The same holds good for the other two type of substances (*ananupurvi* or non-sequential and *avaktavya* or inexpressible).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(५–६) काल और अन्तर की प्ररूपणा

१२७. संगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइं कालओ केवचिरं होंति ?

सव्वद्धा। एवं दोण्णि वि।

१२७. (प्रश्न) संग्रहनयसम्मत आनुपूर्वीद्रव्य काल की अपेक्षा कितने काल तक (आनुपूर्वी रूप में) रहते हैं ?

(उत्तर) आनुपूर्वीद्रव्य आनुपूर्वी रूप में सर्वकाल रहते हैं। इसी प्रकार का कथन शेष दोनों द्रव्यों के लिए भी समझना चाहिए।

(5-6) KAAL-DVAR AND ANTAR-DVAR

127. (Question) In context of time for what duration do the *samgraha naya sammat anupurvi dravya* (sequential substances conforming to generalized viewpoint) exist (in their sequential form) ?

(Answer) They exist in the same form always. The same holds good for the other two type of substances (*ananupurvi* or non-sequential and *avaktavya* or inexpressible).

१२८. संगहस्स आणुपुव्वीदव्वाणं कालओ केवचिरं अंतरं होति ?

नत्थि अंतरं। एवं दोण्णि वि।

१२८. (प्रश्न) संग्रहनयसम्मत आनुपूर्वीद्रव्यों में काल की अपेक्षा कितना अन्तर–विरहकाल रहता है ?

(उत्तर) आनुपूर्वीद्रव्यों में काल की अपेक्षा अन्तर नहीं होता है। इसी प्रकार शेष दोनों द्रव्यों के लिए समझना चाहिए।

128. (Question) In context of time what is the *antar* (intervening period between loosing the present form and regaining it) in case of *samgraha naya sammat anupurvi dravya* (sequential substances conforming to generalized viewpoint) ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(Answer) In case of *anupurvi* (sequential) substances this *antar* (gap) does not exist. The same holds good for the other two type of substances (*ananupurvi* or non-sequential and *avaktavya* or inexpressible).

(७) भागप्ररूपणा

१२९. संगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइं सेसदव्वाणं कइभागे होज्जा ? किं संखेज्जइभागे होज्जा ? असंखेज्जइभागे होज्जा ? संखेज्जेसु भागेसु होज्जा ? असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा ?

नो संखेज्जइभागे होज्जा नो असंखेज्जइभागे होज्जा। णो संखेज्जेसु भागेसु होज्जा णो असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा। नियमा तिभागे होज्जा। एवं दोण्णि वि।

१२९. (प्रश्न) संग्रहनयसम्मत आनुपूर्वीद्रव्य शेष द्रव्यों के कितनेवें भाग प्रमाण होते हैं ? क्या संख्यात भाग प्रमाण होते हैं या असंख्यात भाग प्रमाण होते हैं ? संख्यात भागों प्रमाण अथवा असंख्यात भागों प्रमाण होते हैं ?

(उत्तर) संग्रहनयसम्मत आनुपूर्वीद्रव्य शेष द्रव्यों के संख्यात भाग, असंख्यात भाग, संख्यात भागों या असंख्यात भागों प्रमाण नहीं हैं, किन्तु नियमतः तीसरे भाग प्रमाण होते हैं।

इसी प्रकार दोनों (अनानुपूर्वी और अवक्तव्यक) द्रव्यों के विषय में भी समझना चाहिए।

(7) BHAAG-DVAR

129. (Question) In what spatial proportion of other substances are the *samgraha naya sammat anupurvi dravya* (sequential substances conforming to generalized viewpoint). Is it countable fractions ? Is it uncountable fractions ? Is it countable sections ? Or is it uncountable sections ?

(Answer) The *anupurvi* (sequential) substances exist not in countable fractions or uncountable (infinitesimal) fractions or countable sections or in uncountable sections

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

but in one third part as a rule. The same holds good for the other two type of substances (*ananupurvi* or non-sequential and *avaktavya* or inexpressible).

विवेचन–उक्त सूत्र का आशय यह है कि संग्रहनयमान्य समस्त आनुपूर्वी आदि द्रव्य शेष अनानुपूर्वी और अवक्तव्यक द्रव्यों के एक तिहाई भाग में होते हैं। आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवक्तव्यक द्रव्यों को मिलाकर जो राशि बनती है, उस राशि के तीन भाग करने पर जो तृतीय भाग आये उतनी राशि प्रमाण आनुपूर्वीद्रव्य हैं। द्रव्यों की संख्या में विषमता होने पर भी तीनों की राशियाँ एक समान ही होती है। इसे समझने के लिए चूर्णिकार ने एक उदाहरण दिया है। जैसे एक राजा के तीन पुत्र थे। तीनों ने राजा से घोड़े की माँग की। राजा ने पहले पुत्र को एक घोड़ा दिया। जिसका मूल्य छह हजार रुपये थे। दूसरे को दो घोड़े दिये, उनका मूल्य तीन-तीन हजार था और तीसरे को बारह घोड़े दिये जिनका मूल्य पाँच-पाँच सौ रुपये थे। संख्या की दृष्टि से विषम होने पर भी प्रत्येक राजकुमार के घोड़े समग्र पूँजी के एक तिहाई भाग में आते हैं।

चूर्णिकार ने प्रश्न किया है कि पहले अवक्तव्यकसे अनानुपूर्वी विशेषाधिक और उससे आनुपूर्वी असंख्य गुना कैसे कहा? समाधान दिया है कि वह नैगम-व्यवहारनय की दृष्टि से कहा है, यहाँ संग्रहनय की दृष्टि से कथन है। (अनु. चू. हारि. वृ. पृ. १७०)

इसी प्रकार अनानुपूर्वी और अवक्तव्यक द्रव्यों के लिए जानना कि वे भी तीसरे-तीसरे भाग प्रमाण हैं।

Elaboration—This aphorism implies that all the *anupurvi* (sequential) substances occupy one third of the total space occupied by all substances including *ananupurvi* (non-sequential) and *avaktavya* (inexpressible) substances. In other words if a heap is made of all existing *anupurvi* (sequential), *ananupurvi* (non-sequential), and *avaktavya* (inexpressible) substances and then it is divided into three equal parts the total *anupurvi* (sequential) substances would be equal to one of the three heaps. Even if there is a variation in the number of substances in a heap the size of the heaps remains same. The commentator (*Churni*) has given an example to this phenomenon. A king had three sons. All the sons demanded horses from the king. To the first son the king gave just one horse costing 6000 rupees. To the second son he gave two horses costing 3000 rupees each. To the third he gave

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

twelve horses costing 500 rupees each. Thus although there was a variation in the number of horses, cost vise each son got one third of the total value of all horses.

The commentator (*Churni*) has raised a question that if this was so why earlier it was stated that the quantity of *ananupurvi* (non-sequential) substances is much more than *avaktavya* (inexpressible) substances and that of *anupurvi* (sequential) substances is uncountable times more than *ananupurvi* (non-sequential) substances ? The answer provided is that the earlier statement was in context of the *naigam-vyavahar naya* (coordinated and particularized viewpoints) and the present statement is in context of the *samgraha naya* (generalized viewpoint). (*Anuyogadvara Churni* by Haribhadra Suri p. 170)

The same holds good for the other two type of substances (*ananupurvi* or non-sequential and *avaktavya* or inexpressible).

(८) भावप्ररूपणा

१३०. संगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइं कयरम्मि भावे होज्जा ?

नियमा सादिपारिणामिए भावे होज्जा। एवं दोण्णि वि। अप्पाबहुं नत्थि। से तं अणुगमे। से तं संगहस्स अणोवणिहिया दव्वाणुपुव्वी। से तं अणोवणिहिया दव्वाणुपुव्वी।

१३०. (प्रश्न) संग्रहनयसंमत आनुपूर्वीद्रव्य किस भाव में होते हैं ?

(उत्तर) आनुपूर्वीद्रव्य नियम से सादिपारिणामिक भाव में होते हैं।

यही कथन शेष दोनों (अनानुपूर्वी और अवक्तव्यक) द्रव्यों के लिए भी समझना चाहिए।

राशिगत द्रव्यों में अल्पबहुत्व नहीं होता है। यह अनुगम का वर्णन है। यह संग्रहनय सम्मत अनौपनिधिक द्रव्यानुपूर्वी का वर्णन है।

(8) BHAAVA-DVAR

130. (Question) In what state do the *samgraha naya sammat anupurvi dravya* (sequential substances conforming to generalized viewpoint) exist ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(Answer) As a rule the *samgraha naya sammat anupurvi dravya* (sequential substances conforming to generalized viewpoint) exist in *sadi parinamik* (transformative with a beginning) state.

The same holds good for the other two type of substances (*ananupurvi* or non-sequential and *avaktavya* or inexpressible). In the cumulative evaluation of substances there is an absence of comparative difference (less or more or *alpabahutva*).

This concludes the description of *anugam* (systematic elaboration). This also concludes the description of *Samgraha naya sammat anaupanidhiki dravya-anupurvi* (disorderly physical sequence conforming to generalized viewpoint) and *anaupanidhiki dravya-anupurvi* (disorderly physical sequence).

औपनिधिकी द्रव्यानुपूर्वीनिरूपण

१३१. से किं तं ओवणिहिया दव्वाणुपुव्वी ?

ओवणिहिया दव्वाणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता। तं जहा-(१) पुव्वाणुपुव्वी, (२) पच्छाणुपुव्वी, (३) अणाणुपुव्वी य।

१३१. (प्रश्न) औपनिधिकी द्रव्यानुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) औपनिधिकी द्रव्यानुपूर्वी के तीन प्रकार हैं, यथा-(१) पूर्वानुपूर्वी, (२) पश्चानुपूर्वी, और (३) अनानुपूर्वी।

AUPANIDHIKI DRAVYA-ANUPURVI

131. (Question) What is this *Aupanidhiki dravya-anupurvi* (orderly physical sequence) ?

(Answer) This *Aupanidhiki dravya-anupurvi* (orderly physical sequence) is of three types—(1) *Purvanupurvi,* (2) *Pashchanupurvi,* and (3) *Ananupurvi.*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवेचन–सूत्र में औपनिधिकी द्रव्यानुपूर्वी के तीन भेद बताये हैं। उपनिधि का अर्थ किसी एक वस्तु को स्थापित करके उसके समीप पूर्वानुपूर्वी आदि के क्रम से अन्य वस्तुओं को स्थापित करना है। उपनिधि का भाव औपनिधिकी है। यह औपनिधिकी द्रव्यानुपूर्वी तीन प्रकार की है।

Elaboration—The aphorism states three categories of *Aupanidhiki dravya-anupurvi* (orderly physical sequence). *Upanidhi* means to place a thing at a point and then proceed to place other things adjacent to it in an orderly arrangement like *purvanupurvi,* (etc.). The adjective form of *upanidhi* is *aupanidhiki.* The *Aupanidhiki dravya-anupurvi* (orderly physical sequence) discussed here is of three types.

पूर्वानुपूर्वी का स्वरूप

१३२. से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?

पुव्वाणुपुव्वी–(१) धम्मत्थिकाए, (२) अधम्मत्थिकाए, (३) आगासत्थिकाए, (४) जीवत्थिकाए, (५) पोग्गलत्थिकाए, (६) अद्धासमए। से तं पुव्वाणुपुव्वी।

१३२. (प्रश्न) पूर्वानुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) पूर्वानुपूर्वी का स्वरूप इस प्रकार है–(१) धर्मास्तिकाय, (२) अधर्मास्तिकाय, (३) आकाशास्तिकाय, (४) जीवास्तिकाय, (५) पुद्‌गलास्तिकाय, (६) अद्धाकाल। इस प्रकार अनुक्रम से निक्षेप करना पूर्वानुपूर्वी हैं।

PURVANUPURVI

132. (Question) What is this *Purvanupurvi* ?

(Answer) *Purvanupurvi* is like this—(1) *Dharmastikaya* (motion entity), 2) *Adharmastikaya* (rest entity), (3) *Akashastikaya* (space entity), (4) *Jivastikaya* (life entity), (5) *Pudgalastikaya* (matter entity), (6) *Addhakala* (time). Things arranged in such ascending sequential order is called *purvanupurvi* (ascending sequence).

This concludes the description of *purvanupurvi* (*ascending sequence*).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पश्चानुपूर्वी का स्वरूप

१३३. से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?

पच्छाणुपुव्वी–(६) अद्धासमए, (५) पोग्गलत्थिकाए, (४) जीवत्थिकाए, (३) आगासत्थिकाए, (२) अधम्मत्थिकाए, (१) धम्मत्थिकाए। से तं पच्छाणुपुव्वी।

१३३. (प्रश्न) पश्चानुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) पश्चानुपूर्वी का स्वरूप इस प्रकार है कि (६) अद्धासमय, (५) पुद्‌गलास्तिकाय, (४) जीवास्तिकाय, (३) आकाशास्तिकाय, (२) अधर्मास्तिकाय, और (१) धर्मास्तिकाय। इस प्रकार विलोम–विपरीत क्रम से स्थापना करना पश्चानुपूर्वी है।

PASHCHANUPURVI

133. (Question) What is this *Pashchanupurvi* ?

(Answer) *Pashchanupurvi* is like this—(6) *Addhakala* (time), (5) *Pudgalastikaya* (matter entity), (4) *Jivastikaya* (life entity), (3) *Akashastikaya* (space entity), (2) *Adharmastikaya* (rest entity), (1) *Dharmastikaya* (motion entity). Things arranged in such descending sequential order is called *pashchanupurvi* (descending sequence).

This concludes the description of *pashchanupurvi* (descending sequence).

अनानुपूर्वी

१३४. से किं अणाणुपुव्वी ?

अणाणुपुव्वी एयाए चेव एगादियाए एगुत्तरियाए छगच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णब्भासो दुरूवूणो। से तं अणाणुपुव्वी।

१३४. (प्रश्न) अनानुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) एक से प्रारम्भ कर एक–एक की वृद्धि करने पर छह पर्यन्त स्थापित श्रेणी के अंकों में परस्पर गुणाकार करने से जो राशि आये, उसमें से आदि (पूर्वानुपूर्वी) और अंत (पश्चानुपूर्वी) के दो रूपों (भंगों) को कम करने पर अनानुपूर्वी बनती है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(यह संख्या यह बताती है कि उन ६ संख्याओं को विभिन्न स्वतन्त्र क्रम में सजाने पर कितनी अनानुपूर्वियाँ बनने की संभावना है)

ANANUPURVI

134. (Question) What is this *Ananupurvi* ?

(Answer) Place six numbers starting from one and progressively adding one. Multiply all the six numbers of this arithmetic progression and subtract 2 (depicting the ascending and descending sequences) from the result. This final result is called *ananupurvi* (random sequence). (This number is the total number of sequences that can be made in random order. In other words this is the sum total of all permutations and combinations of the random sequences that can be made with the given set of numbers).

This concludes the description of *ananupurvi* (random sequence).

विवेचन–अनानुपूर्वी का अर्थ है, जिसमें न तो अनुलोम क्रम–पूर्वानुपूर्वी हो, और न ही विलोम क्रम–पश्चानुपूर्वी हो। इन दोनों से भिन्न क्रम–स्थापना अनानुपूर्वी है। अनानुपूर्वी को समझने के लिए उदाहरण दिया है–सबसे पहले एक का अंक रखकर क्रमशः एक–एक की वृद्धि करते हुए छह संख्या तक लिखें। जैसे–१–२–३–४–५–६। फिर इनमें परस्पर गुणा करें, १ × २ × ३ × ४ × ५ × ६ = ७२०। गुणाकार की राशि से एक आदि भंग पूर्वानुपूर्वी का तथा एक अन्तिम भंग पश्चानुपूर्वी का घटा देवें, अर्थात् उक्त ७२० की राशि में से १ + १ = २ घटा देने पर ७१८ जो संख्या बनी है, इसे अनानुपूर्वी का उदाहरण समझें। आचार्य महाप्रज्ञ जी ने इसके लिए ३० कोष्टक बनाकर विस्तार पूर्वक समझाया है। (देखें, अनु.महाप्रज्ञ पृ. १०७ से ११३)

Elaboration—*Ananupurvi* (random sequence) is that in which the numbers are neither in ascending order nor in descending order. Arranging numbers in an order other than these two sequences is *Ananupurvi* (random sequence). In order to explain *ananupurvi* (random sequence) the example of six numbers is given. First of all place six numbers starting from one and progressively adding one. You will get a sequence—1-2-3-4-5-6.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Now multiply all the six numbers of this arithmetic progression $1 \times 2 \times 3 \times 4 \times 5 \times 6$ and you will get 720 as the result. The next step is to subtract 2 (depicting one ascending and one descending sequence) from the result—720 − 2 = 718. This final result is called *ananupurvi* or the random sequence. This number is the total number of sequences that can be made out of these six numbers placed in random order. In the *Anuyogadvara* commentary by Acharya Mahaprajna 30 tables have been given presenting all these 718 random sequences (page 107 to 113).

औपनिधिकी द्रव्यानुपूर्वी का दूसरा प्रकार

१३५. अहवा ओवणिहिया दव्वाणुपुव्वी तिविहा पन्नत्ता। तं जहा– (१) पुव्वाणुपुव्वी, (२) पच्छाणुपुव्वी, (३) अणाणुपुव्वी।

१३५. अथवा औपनिधिकी द्रव्यानुपूर्वी तीन प्रकार की है। यथा–(१) पूर्वानुपूर्वी, (२) पश्चानुपूर्वी, और (३) अनानुपूर्वी।

ANOTHER AUPANIDHIKI DRAVYA-ANUPURVI

135. Also, this *Aupanidhiki dravya-anupurvi* (orderly physical sequence) is of three types—(1) *Purvanupurvi,* (2) *Pashchanupurvi,* and (3) *Ananupurvi.*

विवेचन–पिछले सूत्र में धर्मास्तिकाय आदि षड्द्रव्यों की पूर्वानुपूर्वी आदि का कथन किया है। अब उसी को पुद्गलास्तिकाय पर घटित करने के लिए पुनः औपनिधिकी द्रव्यानुपूर्वी के तीन भेदों का यहाँ उल्लेख है।

Elaboration—In the preceding aphorism three categories of *aupanidhiki dravya-anupurvi* (orderly physical sequence) have been discussed with reference to the six fundamental entities including *Dharmastikaya* (motion entity). Now all the three classifications of the same are discussed in context of *Pudgalastikaya* (matter entity).

पूर्वानुपूर्वी का स्वरूप

१३६. से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुव्वाणुपुव्वी परमाणुपोग्गले दुपएसिए तिपएसिए जाव दसपएसिए जाव संखिज्जपएसिए असंखिज्जपएसिए अणंतपएसिए। से तं पुव्वाणुपुव्वी।

१३६. (प्रश्न) पूर्वानुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) पूर्वानुपुर्वी इस प्रकार है–परमाणु पुद्‌गल, द्विप्रदेशिक स्कन्ध, त्रिप्रदेशिक स्कन्ध, यावत् दशप्रदेशिक स्कन्ध, संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध, असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध, अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध रूप क्रमात्मक आनुपूर्वी को पूर्वानुपूर्वी कहते हैं।

PURVANUPURVI

136. (Question) What is this *Purvanupurvi* ?

(Answer) *Purvanupurvi* is like this—(1) *Paramanu Pudgal* (ultimate-particle of matter), (2) An aggregate of two ultimate-particles (*paramanus*), (3) An aggregate (*skandh*) of three ultimate-particles (*paramanus*), (and so on...), (10) An aggregate (*skandh*) of ten ultimate-particles (*paramanus*), (x) An aggregate (*skandh*) of countable ultimate-particles (*paramanus*), (y) An aggregate (*skandh*) of uncountable ultimate-particles (*paramanus*), and (z) An aggregate (*skandh*) of infinite ultimate-particles (*paramanus*). The arrangement of aggregates of matter particles placed in such ascending sequential order is called *purvanupurvi* (ascending sequence).

This concludes the description of *purvanupurvi* (ascending sequence).

पश्चानुपूर्वी का स्वरूप

१३७. से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?

पच्छाणुपुव्वी अणंतपएसिए असंखिज्जपएसिए संखिज्जपएसिए जाव दसपएसिए जाव तिपएसिए दुपएसिए परमाणुपोग्गले। से तं पच्छाणुपुव्वी।

१३७. (प्रश्न) पश्चानुपूर्वी क्या है ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(उत्तर) पश्चानुपूर्वी इस प्रकार है–अनन्तप्रदेशिक, असंख्यातप्रदेशिक, संख्यातप्रदेशिक यावत् दशप्रदेशिक यावत् त्रिप्रदेशिक द्विप्रदेशिक स्कन्ध, परमाणुपुद्‌गल। विपरीत क्रम से किया जाने वाल न्यास पश्चानुपूर्वी है।

PASHCHANUPURVI

137. (Question) What is this *Pashchanupurvi* ?

(Answer) Pashchanupurvi is like this—(z) An aggregate (*skandh*) of infinite ultimate-particles (*paramanus*), (y) An aggregate (*skandh*) of uncountable ultimate-particles (*paramanus*), (x) An aggregate (*skandh*) of countable ultimate-particles (*paramanus*), (10) An aggregate (*skandh*) of ten ultimate-particles (*paramanus*), (and so on...), (3) An aggregate (*skandh*) of three ultimate-particles (*paramanus*), (2) An aggregate of two ultimate-particles (*paramanus*), (1) *Paramanu Pudgal* (ultimate particle of matter). The arrangement of aggregates of matter particles placed in such descending sequential order is called *pashchanupurvi* (descending sequence).

This concludes the description of *pashchanupurvi* (descending sequence).

अनानुपूर्वी का स्वरूप

१३८. से किं तं अणाणुपुव्वी ?

अणाणुपुव्वी एयाए चेव एगाइयाए एगुत्तरियाए अणंतगच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरूवूणो। से तं अणाणुपुव्वी। से तं ओवणिहिया दव्वाणुपुव्वी।

से तं जाणगव्वइरित्ता दव्वाणुपुव्वी। से तं नोआगमओ दव्वाणुपुव्वी। से तं दव्वाणुपुव्वी।

१३८. (प्रश्न) अनानुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) एक से प्रारम्भ करके एक-एक की वृद्धि करने के द्वारा निर्मित अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध पर्यन्त की श्रेणी की संख्या को परस्पर गुणित करने से निष्पन्न राशि में से आदि और अन्त रूप दो भंगों को कम करने पर अनानुपूर्वी बनती है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यह औपनिधिकी द्रव्यानुपूर्वी का वर्णन जानना चाहिए। (विशेष सूत्र १३४ के अनुसार)

इस प्रकार ज्ञायकशरीर भव्यशरीरव्यतिरिक्त द्रव्यानुपूर्वी का और साथ ही नो-आगमतः द्रव्यानुपूर्वी तथा द्रव्यानुपूर्वी का भी वर्णन पूर्ण हुआ।

ANANUPURVI

138. (Question) What is this *Ananupurvi* ?

(Answer) Place numbers starting from one and progressively adding one up to infinity (aggregate of infinite particles). Multiply all the numbers of this arithmetic progression and subtract 2 (depicting the ascending and descending sequence) from the result. This final result is called *ananupurvi* (random sequence). (This number is the total number of sequences that can be made in random order. In other words this is the sum total of all permutations and combinations of the random sequences that can be made with the given set of numbers).

This concludes the description of *ananupurvi* (random sequence). This concludes the description of *Aupanidhiki dravya-anupurvi* (orderly physical sequence). This also concludes the description of *Jnayak sharir-bhavya sharir vyatirikta dravya-anupurvi* (physical sequence other than the body of the knower and the body of the potential knower) as well as *No-Agamatah-dravya-anupurvi* (physical sequence without scriptural knowledge) and *dravya-anupurvi* (physical sequence).

क्षेत्रानुपूर्वी के प्रकार

१३९. से किं तं खेत्ताणुपुव्वी ?

खेत्ताणुपुव्वी दुविहा पण्णत्ता। तं जहा—ओवणिहिया य अणोवणिहिया य।

१३९. (प्रश्न) क्षेत्रानुपूर्वी क्या है ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(उत्तर) क्षेत्रानुपूर्वी दो प्रकार की है। यथा–(१) औपनिधिकी क्षेत्रानुपूर्वी, और (२) अनौपनिधिकी क्षेत्रानुपूर्वी।

KSHETRANUPURVI

139. (Question) What is this *kshetra-anupurvi* (area-sequence) ?

(Answer) *Kshetra-anupurvi* (area-sequence) is of two types—(1) *Aupanidhiki kshetra-anupurvi* (orderly area-sequence) and (2) *Anaupanidhiki kshetra-anupurvi* (disorderly area-sequence).

१४०. तत्थ णं जा सा ओवणिहिया सा ठप्पा।

१४०. इन दो भेदों में से औपनिधिकी क्षेत्रानुपूर्वी (अल्प विषय वाली होने के कारण) स्थाप्य है।

140. Out of these *Aupanidhiki kshetra-anupurvi* (orderly area-sequence) is worth installation only (worth a mention only because of its limited scope).

१४१. तत्थ णं जा सा अणोवणिहिया सा दुविहा पन्नत्ता। तं जहा–(१) णेगम–ववहाराणं, (२) संगहस्स य।

१४१. अनौपनिधिकी क्षेत्रानुपूर्वी दो प्रकार की है। यथा–(१) नैगम और व्यवहारनयसम्मत, तथा (२) संग्रहनयसम्मत।

141. And *anaupanidhiki kshetra-anupurvi* (disorderly area-sequence) is of two types—(1) *Naigam-vyavahar naya sammat* (conforming to coordinated and particularized viewpoints) and (2) *Samgrahanaya sammat* (conforming to generalized viewpoint).

नैगम–व्यवहारनयसम्मत अनौपनिधिकी क्षेत्रानुपूर्वी

१४२. से किं तं णेगम–ववहाराणं अणोवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णेगम–ववहाराणं अणोवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी पंचविहा पण्णत्ता। तं जहा–(१) अट्ठपयपरूवणया, (२) भंगसमुक्कित्तणया, (३) भंगोवदंसणया, (४) समोयारे, (५) अणुगमे।

१४२. (प्रश्न) नैगम और व्यवहारनयसम्मत अनौपनिधिकी क्षेत्रानुपूर्वी क्या है?

(उत्तर) नैगम और व्यवहारनय सम्मत अनौपनिधिकी क्षेत्रानुपूर्वी के पाँच प्रकार हैं। यथा–(१) अर्थपदप्ररूपणता, (२) भंगसमुत्कीर्तनता, (३) भंगोपदर्शनता, (४) समवतार, (५) अनुगम।

(अर्थपदप्ररूपणता आदि के लक्षण–व्याख्या द्रव्यानुपूर्वी के प्रसंग में किये गये वर्णन के समान सूत्र ९८–९९ के अनुसार समझना चाहिए)

NAIGAM-VYAVAHAR NAYA SAMMAT ANAUPANIDHIKI KSHETR-ANUPURVI

142. (Question) What is this *Naigam-vyavahar naya sammat anaupanidhiki kshetra-anupurvi* (disorderly area-sequence conforming to coordinated and particularized viewpoints)?

(Answer) *Naigam-vyavahar naya sammat anaupanidhiki kshetra-anupurvi* (disorderly area-sequence conforming to coordinated and particularized viewpoints) is of five types—(1) *Arth-padaprarupana* (semantics), (2) *Bhang-samutkirtanata* (enumeration of divisions or *bhangs*), (3) *Bhangopadarshanata* (explication of divisions or *bhangs*), (4) *Samavatara* (compatible assimilation), and (5) *Anugam* (systematic elaboration).

(The definition and elaboration of *Arth-padaprarupana* or semantics and other terms should be taken as mentioned in aphorisms 98 and 99 in connection with *Dravyanupurvi*.)

नैगम–व्यवहारनयसम्मत अर्थपदप्ररूपणा और प्रयोजन

१४३. से किं तं णेगम–ववहाराणं अट्ठपयपरूवणया?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णेगम—ववहाराणं अट्ठपयपरूवणया तिपएसोगाढे आणुपुव्वी जाव दसपएसोगाढे आणुपुव्वी जाव संखिज्जपएसोगाढे आणुपुव्वी, असंखिज्जपएसोगाढे आणुपुव्वी।

एगपएसोगाढे अणाणुपुव्वी।

दुपएसोगाढे अवत्तव्वए।

तिपएसोगाढा आणुपुव्वीओ जाव दसपएसोगाढा आणुपुव्वीओ जाव संखेज्जपएसोगाढा आणुपुव्वीओ, असंखेज्जपएसोगाढा आणुपुव्वीओ।

एगपएसोगाढा अणाणुपुव्वीओ,

दुपएसोगाढा अवत्तव्वगाइं। से तं णेगम—ववहाराणं अट्ठपयपरूवणया।

१४३. **(प्रश्न)** नैगम–व्यवहारनयसम्मत अर्थपदप्ररूपणता क्या है ?

(उत्तर) नैगम व्यवहारनय–सम्मत अर्थपदप्ररूपणा इस प्रकार कही है–तीन आकाशप्रदेशों में अवगाढ द्रव्यस्कन्ध आनुपूर्वी है यावत् दस प्रदेशावगाढ द्रव्यस्कन्ध आनुपूर्वी है यावत् संख्यात आकाशप्रदेशों में अवगाढ आनुपूर्वी है, असंख्यात प्रदेशों में अवगाढ आनुपूर्वी है।

आकाश के एक प्रदेश में अवगाढ द्रव्य (पुद्‌गलपरमाणु) से लेकर यावत् असंख्यातप्रदेशी स्कन्ध तक अनानुपूर्वी है। दो आकाशप्रदेशों में अवगाढ (दो, तीन या असंख्यातप्रदेशी स्कन्ध भी) अवक्तव्य है।

तीन आकाशप्रदेशावगाही अनेक–बहुत द्रव्यस्कन्ध आनुपूर्वियाँ हैं यावत् दसप्रदेशावगाही आनुपूर्वियाँ हैं यावत् संख्यातप्रदेशावगाढ द्रव्यस्कन्ध आनुपूर्वियाँ हैं, असंख्यात प्रदेशावगाढ द्रव्यस्कन्ध आनुपूर्वियाँ हैं।

एक प्रदेशावगाही पुद्‌गलपरमाणु आदि (अनेक) द्रव्य अनानुपूर्वियाँ हैं।

दो आकाशप्रदेशावगाही द्व्यणुकादि द्रव्यस्कन्ध अवक्तव्यक हैं।

यह नैगम–व्यवहारनयसम्मत अर्थपद प्ररूपणता का स्वरूप है।

NAIGAM-VYAVAHAR NAYA SAMMAT ARTH-PADAPRARUPANA

143. (Question) What is this *Naigam-vyavahar naya sammat arth-padaprarupana* (semantics conforming to coordinated and particularized viewpoints) ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(Answer) *Naigam-vyavahar naya sammat arth-padaprarupana* (semantics conforming to coordinated and particularized viewpoints) is described as follows—

An aggregate (*skandh*) of three ultimate-particles (*paramanus*) occupying three space-points is a sequential configuration (*anupurvi*). In the same way aggregates (*skandhs*) of four ultimate-particles (*paramanus*), (and so on...), ten ultimate-particles (*paramanus*), countable, uncountable, and infinite ultimate-particles (*paramanus*), are all sequential configurations (*anupurvis*).

A single ultimate-particle of matter (*paramanu pudgala*) or an aggregate of even uncountable *paramanus* (ultimate-particles) occupying just one space-point is non-sequential (*ananupurvi*).

An aggregate (*skandh*) of two or even uncountable ultimate-particles (*paramanus*) occupying just two space-points is inexpressible (*avaktavya*).

There also are numerous sequential configurations (*anupurvis*) of such aggregates (*skandhs*) of three ultimate-particles (*paramanus*), (and so on up to) infinite ultimate-particles (*paramanus*) occupying three to uncountable space-points.

There also are numerous non-sequential configurations (*ananupurvis*) of such separate ultimate-particles of matter (*paramanu* pudgala) occupying one space-point.

There also are numerous inexpressible configurations (*avaktavyas*) of such aggregates (*skandhs*) of two ultimate-particles (*paramanus*) occupying two space-points.

This concludes the description of *Naigam-vyavahar naya sammat arth-padaprarupana* (semantics conforming to coordinated and particularized viewpoints).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४४. एयाए णं णेगम–ववहाराणं अट्ठपयपरूवणयाए किं पओयणं ?

एयाए णं णेगम–ववहाराणं अट्ठपयपरूवणयाए णेगम–ववहाराणं भंगसमुक्कित्तणया कीरति।

१४४. (प्रश्न) इस नैगम–व्यवहारनयसम्मत अर्थपदप्ररूपणता का क्या प्रयोजन है ?

(उत्तर) इस नैगम–व्यवहारनयसम्मत अर्थपदप्ररूपणता द्वारा नैगम-व्यवहारनयसम्मत भंगसमुत्कीर्तनता की जाती है।

144. (Question) What is the purpose of this *anupurvi* (sequence) in the form of *naigam-vyavahar naya sammat arth-padaprarupana* (semantics conforming to coordinated and particularized viewpoints) ?

(Answer) This *anupurvi* (sequence) in the form of *Naigam-vyavahar naya sammat arth-padaprarupana* (semantics conforming to coordinated and particularized viewpoints) is used to derive and state *bhang-samutkirtanata* (enumeration of divisions or *bhangs*).

क्षेत्रानुपूर्वी– भंगसमुत्कीर्तनता एवं प्रयोजन

१४५. से किं तं णेगम–ववहाराणं भंगसमुक्कित्तणया ?

णेगम–ववहाराणं भंगसमुक्कित्तणया (१) अत्थि आणुपुव्वी, (२) अत्थि अणाणुपुव्वी, (३) अत्थि अवत्तव्वए। एवं दव्वाणुपुव्वीगमेणं खेत्ताणुपुव्वीए वि ते चेव छव्वीस भंगा भाणियव्वा, जाव से तं णेगम–ववहाराणं भंगसमुक्कित्तणया।

१४५. (प्रश्न) नैगम–व्यवहारनयसम्मत भंगसमुत्कीर्तनता क्या है ?

(उत्तर) नैगम–व्यवहारनयसम्मत भंगसमुत्कीर्तनता इस प्रकार है–(१) आनुपूर्वी है, (२) अनानुपूर्वी है, (३) अवक्तव्यक है इत्यादि द्रव्यानुपूर्वी के पाठ की तरह क्षेत्रानुपूर्वी के भी वही छब्बीस भंग होते हैं। इस प्रकार नैगमव्यवहारनयसम्मत भंगसमुत्कीर्तनता का कथन करना चाहिए। (सूत्र १०१ से १०३ के अनुसार समझें)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

KSHETRANUPURVI : BHANG-SAMUTKIRTANATA

145. (Question) What is this *naigam-vyavahar naya sammat bhang-samutkirtanata* (enumeration of divisions or *bhangs* conforming to coordinated and particularized viewpoints) ?

(Answer) *Naigam-vyavahar naya sammat bhang-samutkirtanata* (enumeration of divisions or *bhangs* conforming to coordinated and particularized viewpoints) is as follows—

(1) There is an *anupurvi* (sequence), (2) There is an *ananupurvi* (non-sequence), (3) There is an *avaktavya* (inexpressible), and so on including the twenty six divisions as mentioned in context of *Dravyanupurvi* (see aphorisms 101-103).

१४६. एयाए णं णेगम-ववहाराणं भंगसमुक्कित्तणयाए किं पओयणं ?

एयाए णं णेगम-ववहाराणं भंगसमुक्कित्तणयाए णेगम-ववहाराणं भंगोवदंसणया कज्जति।

१४६. (प्रश्न) इस नैगम-व्यवहारनयसम्मत भंगसमुत्कीर्तनता का क्या प्रयोजन है ?

(उत्तर) इस नैगम-व्यवहारनयसम्मत भंगसमुत्कीर्तनता द्वारा नैगम-व्यवहारनयसम्मत भंगोपदर्शनता की जाती है।

146. (Question) What is the purpose of this *naigam-vyavahar naya sammat bhang-samutkirtanata* (enumeration of divisions or *bhangs* conforming to coordinated and particularized viewpoints) ?

(Answer) This *naigam-vyavahar naya sammat bhang-samutkirtanata* (enumeration of divisions or *bhangs* conforming to coordinated and particularized viewpoints) is used to derive and state *Bhangopadarshanata* (explication of divisions or *bhangs*).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४७. से किं तं णेगम–ववहाराणं भंगोवदंसणया ?

णेगम–ववहाराणं भंगोवदंसणया (१) तिपएसोगाढे आणुपुव्वी, (२) एगपएसोगाढे अणाणुपुव्वी, (३) दुपएसोगाढे अवत्तव्वए, (४) तिपएसोगाढाओ आणुपुव्वीओ, (५) एगपएसोगाढाओ अणाणुपुव्वीओ, (६) दुपएसोगाढाइं अवत्तव्वयाइं।

अहवा तिपएसोगाढे य एगपएसोगाढे य आणुपुव्वी य अणाणुपुव्वी य, एवं तहा चेव दव्वाणुपुव्वीगमेणं छव्वीसं भंगा भाणियव्वा जाव से तं णेगम–ववहाराणं भंगोवदंसणंया।

१४७. (प्रश्न) नैगम–व्यवहारनयसम्मत भंगोपदर्शनता क्या है ?

(उत्तर) तीन आकाशप्रदेशावगाढ त्र्यणुकादि स्कन्ध आनुपूर्वी हैं। एक आकाशप्रदेशावगाही परमाणुसंघात अनानुपूर्वी तथा दो आकाशप्रदेशावगाही द्व्यणुकादि स्कन्ध क्षेत्र की अपेक्षा अवक्तव्यक कहलाता है।

तीन आकाशप्रदेशावगाही अनेक स्कन्ध 'आनुपूर्वियाँ' एवं एक-एक आकाशप्रदेशावगाही अनेक परमाणुसंघात 'अनानुपूर्वियाँ' तथा द्वि आकाशप्रदेशावगाही द्व्यणुक आदि अनेक द्रव्यस्कन्ध 'अवक्तव्यक' हैं।

अथवा त्रिप्रदेशावगाढस्कन्ध और एक प्रदेशावगाढस्कन्ध एक आनुपूर्वी और एक अनानुपूर्वी है। इस प्रकार द्रव्यानुपूर्वी के पाठ की तरह छब्बीस भंग यहाँ भी जानने चाहिए। यह नैगम–व्यवहारनयसम्मत भंगोपदर्शनता है।

NAIGAM-VYAVAHAR NAYA SAMMAT BHANGOPADARSHANATA

147. (Question) What is this *naigam-vyavahar naya sammat bhangopadarshanata* (explication of divisions or *bhangs* conforming to coordinated and particularized viewpoints)?

(Answer) *Naigam-vyavahar naya sammat bhangopadarshanata* (explication of divisions or *bhangs* conforming to coordinated and particularized viewpoints) is as follows—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

With respect to *kshetra* (area) there is a triad (of three ultimate-particles) *anupurvi* (sequence) occupying three space-points; there is a single particle (*paramanu-pudgala* or ultimate-particle of matter) *ananupurvi* (non-sequence) occupying one space-point; and there is a biunial-aggregate (aggregate of ultimate-particles) *avaktavya* (inexpressible) occupying two space-points.

There are many triad *anupurvis* (sequences) occupying three space-points; there are many single particle *ananupurvis* (non-sequences) occupying one space-point; there are many biunial-aggregate *avaktavyas* (inexpressibles) occupying two space-points.

Also there is a triad *anupurvi* (sequence) occupying three space-points and a single particle *ananupurvi* (non-sequence) occupying one space-point; and so on including the twenty six divisions as mentioned in context of *Dravyanupurvi.* (see aphorism 103)

This concludes the description of *Naigam-vyavahar naya sammat bhangopadarshanata* (explication of divisions or *bhangs* conforming to coordinated and particularized viewpoints).

क्षेत्रानुपूर्वी की समवतार प्ररूपणा

१४८. (१) से किं तं समोयारे ? समोयारे णेगम-ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं कहिं समोयरंति ? किं आणुपुव्वीदव्वेहिं समोयरंति ? अणाणुपुव्वीदव्वेहिं समोयरंति ? अवत्तव्वयदव्वेहिं समोयरंति ?

आणुपुव्वीदव्वाइं आणुपुव्वीदव्वेहिं समोयरंति, नो अणाणुपुव्वीदव्वेहिं समोयरंति नो अवत्तव्वयदव्वेहिं समोयरंति।

१४८. (प्रश्न १) समवतार क्या है? नैगम-व्यवहारनयसम्मत आनुपूर्वीद्रव्यों का समावेश कहाँ होता है? क्या आनुपूर्वी द्रव्यों में, अनानुपूर्वी द्रव्यों में अथवा अवक्तव्यक द्रव्यों में समावेश होता है?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(उत्तर) आनुपूर्वी द्रव्य आनुपूर्वी द्रव्यों में समाविष्ट होते हैं, किन्तु अनानुपूर्वी द्रव्यों और अवक्तव्यक द्रव्यों में समाविष्ट नहीं होते हैं।

KSHETRANUPURVI : SAMAVATARA

148. (Question 1) What is this *samavatara* (compatible assimilation) ?

Where can there be a compatible assimilation (*samavatara*) of *naigam-vyavahar naya sammat anupurvi dravya* (sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) ? Can they have compatible assimilation (*samavatara*) with sequential substances or non-sequential substances or inexpressible substances ?

(Answer) *Naigam-vyavahar naya sammat anupurvi dravya* (sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) can have compatible assimilation (*samavatara*) with sequential substances only and not with non-sequential substances or inexpressible substances.

(२) एवं तिण्णि वि सट्ठाणे समोयरंति त्ति भाणियव्वं। से तं समोयारे।

(२) इस प्रकार तीनों स्व-स्व स्थान में ही समाविष्ट होते हैं। यह समवतार का स्वरूप हैं।

(2) In the same way all the three can have compatible assimilation (*samavatara*) with substances of their own class and not with those of other classes.

This concludes the description of *samavatara* (compatible assimilation).

क्षेत्रानुपूर्वी की अनुगमप्ररूपणा

१४९. से किं तं अणुगमे ?

अणुगमे णवविह पण्णत्ते। तं जहा–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(१) संतपयपरूवणया, (२) दव्वपमाणं, च (३) खेत्त, (४) फुसणा य।
(५) कालो, (६) अंतरं, (७) भाग, (८) भाव, (९) अप्पाबहुं, चेव॥१०॥

१४९. (प्रश्न) अनुगम का क्या स्वरूप है?

(उत्तर) अनुगम नौ प्रकार का है। यथा-(१) सत्पदप्ररूपणता, (२) द्रव्य प्रमाण, (३) क्षेत्र, (४) स्पर्शना, (५) काल, (६) अन्तर, (७) भाग, (८) भाव, और (९) अल्पबहुत्व। (विशेषार्थ सूत्र १०५ के अनुसार समझना चाहिए।)

KSHETRANUPURVI : ANUGAM

149. (Question) What is this *anugam* (systematic elaboration)?

(Answer) *Anugam* (systematic elaboration) is of nine kinds—(1) *satpadprarupana,* (2) *dravyapramana,* (3) *kshetra,* (4) *sparshana,* (5) *kaal,* (6) *antar,* (7) *bhaag,* (8) *bhaava,* and (9) *alpabahutva.* (further details should be taken as mentioned in context of *Dravyanupurvi* in aphorism 105)

(१) क्षेत्रानुपूर्वी : सत्पदप्ररूपणता

१५०. से किं तं संतपयपरूवणया ? णेगम ववहाराणं खेत्ताणुपुव्वीदव्वाईं किं अत्थि णत्थि ? णियमा अत्थि। एवं दोण्णि वि।

१५०. (प्रश्न) सत्पदप्ररूपणता क्या है? नैगम-व्यवहारनयसम्मत क्षेत्रानुपूर्वीद्रव्य (सत्-अस्तित्वरूप) हैं या नहीं?

(उत्तर) नियमतः (सत्) हैं। इसी प्रकार दोनों-अनानुपूर्वी और अवक्तव्यक द्रव्यों के लिए भी समझना चाहिए कि वे भी नियमतः-निश्चित रूप से सत् हैं।

(1) KSHETRANUPURVI : SATPADPRARUPANA-DVAR

150. (Question) What is this *Satpadprarupana* (exposition of words for existent things)? Do the *naigam-vyavahar naya sammat kshetra-anupurvi dravya* (area-sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) exist or not?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(Answer) Indeed, as a rule they exist. Same is true also for *ananupurvi* (non-sequential) and *avaktavya* (inexpressible) substances.

(२) क्षेत्रानुपूर्वी : द्रव्यप्रमाण

१५१. णेगम-ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं किं संखेज्जाइं असंखेज्जाइं अणंताइं ?

नो संखेज्जाइं नो अणंताइं, नियमा असंखेज्जाइं। एवं दोण्णि वि।

१५१. (प्रश्न) नैगम-व्यवहारनयसम्मत आनुपूर्वी द्रव्य क्या संख्यात हैं, असंख्यात हैं, अथवा अनन्त हैं ?

(उत्तर) नैगम-व्यवहारनयसम्मत आनुपूर्वी द्रव्य न तो संख्यात हैं और न अनन्त हैं किन्तु नियमतः असंख्यात हैं। इसी प्रकार दोनों-अनानुपूर्वी और अवक्तव्यक द्रव्यों के लिए भी समझना चाहिए।

(2) KSHETRANUPURVI : DRAVYAPRAMANA-DVAR

151. (Question) According to the *naigam-vyavahar naya* (coordinated and particularized viewpoints) are the *anupurvi dravya* (sequential substances) countable, uncountable, or infinite (numerically) ?

(Answer) They are neither countable nor infinite but are uncountable (numerically). Same is true for the remaining two, *i.e.,* according to the *naigam-vyavahar naya* (coordinated and particularized viewpoints) both *ananupurvi dravya* (non-sequential substances) and *avaktavya dravya* (inexpressible substances) are uncountable (numerically).

विवेचन-सूत्र में क्षेत्र की अपेक्षा आनुपूर्वी आदि द्रव्यों का प्रमाण असंख्यात बतलाया है। इसका निम्न कारण है। आकाश के तीन प्रदेशों में स्थित द्रव्य क्षेत्र की अपेक्षा आनुपूर्वी रूप हैं और तीन आदि प्रदेश वाले स्कन्धों के आधारभूत क्षेत्र विभाग असंख्यातप्रदेशी लोक में असंख्यात हैं। इसलिए द्रव्य की अपेक्षा बहुत आनुपूर्वी द्रव्य भी आकाश रूप क्षेत्र के तीन प्रदेशों में तीन, चार, पाँच छह आदि से लेकर अनन्तप्रदेश (परमाणु) वाले अनेक आनुपूर्वीद्रव्य अवगाढ होकर रहते हैं। अतः ये सब द्रव्य तुल्य प्रदेशावगाही होने के कारण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक हैं। क्षेत्रानुपूर्वी में लोक के ऐसे त्रिप्रदेशात्मक विभाग असंख्यात हैं। इसलिए आनुपूर्वी द्रव्य भी उनके समान संख्या वाले होने के कारण असंख्यात होते हैं।

Elaboration—This aphorism gives the quantum with respect to *kshetra* (area) of *anupurvi* (sequential) and other substances as uncountable numerically or inexpressible. This is because *anupurvi* (sequential) substances occupying three space-points are *anupurvi* (sequential) also with respect to area (*kshetra*). Also the divisions of space providing occupancy to aggregates of three or more ultimate-particles (*paramanus*) are uncountable in the loka (universe) that is constituted of uncountable number of space-points. Therefore, a large quantum of physical *anupurvi* (sequential) substances, *i.e.,* aggregates of three, four, five, six, and so on up to infinite *paramanus* (ultimate-particles) can occupy just three space-points of area. As all these substances occupy the same area they are considered one with respect to *kshetra* (area). *Kshetranupurvi* (area-sequence) includes uncountable number of such divisions of three space-point area. Thus the *anupurvi* (sequential) substances having the same number in terms of *kshetra* (area) are also uncountable.

(३) क्षेत्रानुपूर्वी की अनुगमान्तर्वर्ती क्षेत्रप्ररूपणा

१५२. (१) णेगम-ववहाराणं खेत्ताणुपुव्वीदव्वाइं लोगस्स कतिभागे होज्जा ? किं संखिज्जइभागे वा होज्जा ? असंखेज्जइभागे वा होज्जा ? जाव सव्वलोए वा होज्जा ?

एगदव्वं पडुच्च लोगस्स संखेज्जइभागे वा होज्जा, असंखेज्जइभागे वा होज्जा, संखेज्जेसु वा भागेसु होज्जा, असंखेज्जेसु वा भागेसु होज्जा; देसूणे वा लोए होज्जा। णाणादव्वाइं पडुच्च णियमा सव्वलोए होज्जा।

१५२. (प्रश्न १) नैगम-व्यवहारनयसम्मत क्षेत्रानुपूर्वी द्रव्य लोक के कितनेवें भाग में रहते हैं ? क्या संख्यातवें भाग में, असंख्यातवें भाग में यावत् सर्वलोक में रहते हैं ?

(उत्तर) (१) एक द्रव्य की अपेक्षा लोक के संख्यातवें भाग में, (२) असंख्यातवें भाग में, (३) संख्यातभागों में, (४) असंख्यात भागों में अथवा, (५) देशोन (कुछ न्यून) लोक में रहते हैं, किन्तु विविध द्रव्यों की अपेक्षा नियमतः सर्वलोकव्यापी हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(3) KSHETRANUPURVI : KSHETRA-DVAR

152. (Question 1) In what area or section of the universe (occupied space) do the *naigam-vyavahar naya sammat kshetranupurvi dravya* (area-sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) exist. Are they in its countable fraction ? Are they in its uncountable (infinitesimal) fraction ? Are they in its countable sections ? Are they in its uncountable sections ? or Are they in the whole universe ?

(Answer) With respect to a single substance they exist in (1) countable fractions of the universe, (2) in its uncountable (infinitesimal) fractions, (3) in its countable sections, (4) in its uncountable sections, (5) and in slightly less than the whole universe. But with respect to many substances, as a rule, they occupy the whole universe.

(२) अणाणुपुव्वीदव्वाणं पुच्छा, एगं दव्वं पडुच्च नो संखिज्जइभागे होज्जा, असंखिज्जइभागे होज्जा, नो संखेज्जेसु. नो असंखेज्जेसु. नो सव्वलोए होज्जा, नाणादव्वाइं पडुच्च नियमा सव्वलोए होज्जा।

१५२. (प्रश्न २) नैगम-व्यवहारनयसम्मत अनानुपूर्वी द्रव्य के विषय में भी यही प्रश्न है।

(उत्तर) एक द्रव्य की अपेक्षा संख्यातवें भाग में, संख्यात भागों में, असंख्यात भागों में अथवा सर्वलोक में अवगाढ नहीं हैं किन्तु असंख्यातवें भाग में हैं तथा अनेक द्रव्यों की अपेक्षा सर्वलोक में व्याप्त हैं।

152. (Question 2) The same question is repeated for *ananupurvi dravya* (non-sequential substances).

(Answer) With respect to a single substance (a *paramanu*), they do not exist in a countable fraction, countable sections, uncountable sections of the universe or the whole universe but exist only in its uncountable (infinitesimal) fraction. But with respect to many substances, as a rule, they occupy the whole universe.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(३) एवं अवत्तव्वगदव्वाणि वि भाणियव्वाणि।

(३) अवक्तव्यक द्रव्यों के लिए भी इसी प्रकार जानना चाहिए।

(3) The same is true for *avaktavya* (inexpressible) substances.

विवेचन—सूत्र में एक और अनेक द्रव्यों की अपेक्षा क्षेत्रानुपूर्वी के द्रव्यों की क्षेत्रप्ररूपणा की गयी है। उसका आशय यह है—एक आनुपूर्वी द्रव्य, द्रव्य की अपेक्षा तो लोक के संख्यातवें या असंख्यातवें भाग में, संख्यात भागों या असंख्यात भागों में रहता है और देशोन लोक में भी रहता है। इसका कारण यह है कि स्कन्ध द्रव्यों की परिणमनशक्ति विचित्र प्रकार की होती है। कोई स्कन्ध छोटा होता है और कोई बड़ा। अतः विचित्र प्रकार की परिणमनशक्ति वाले होने के कारण स्कन्ध द्रव्यों का अवगाह लोक के संख्यात आदि भागों में होता है।

प्रश्न—नैगम और व्यवहारनयसम्मत क्षेत्रानुपूर्वी के प्रसंग में एक द्रव्य की अपेक्षा आनुपूर्वी द्रव्य को देशोन लोक में अवगाढ होना बताया है किन्तु द्रव्यानुपूर्वी में अनन्तान्त परमाणुओं से निष्पन्न एवं पुद्गलद्रव्य के सबसे बड़े स्कन्ध रूप अचित्त महास्कन्ध को सर्वलोकव्यापी कहा है। इस प्रकार अचित्त महास्कन्ध की अपेक्षा एक आनुपूर्वी द्रव्य समस्त लोक में व्याप्त होता है। अतः यहाँ (क्षेत्रानुपूर्वी में) जो एक आनुपूर्वी द्रव्य की अपेक्षा देशोन लोक में अवगाहना कही है, क्या वह युक्तियुक्त है?

उत्तर—इस जिज्ञासा के समाधान के लिए यह समझना चाहिए कि यह लोक आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवक्तव्यक द्रव्यों से व्याप्त है, यदि आनुपूर्वी द्रव्य को सर्वलोकव्यापी माना जाये तो फिर अनानुपूर्वी और अवक्तव्यक द्रव्यों के ठहरने के लिए स्थान न होने के कारण उनका अभाव मानना पड़ेगा। किन्तु जब देशोन लोक में एक आनुपूर्वी द्रव्य व्याप्त होकर रहता है, ऐसा मानते हैं तब अचित्त महास्कन्ध से पूरित हुए लोक में कम से कम एक प्रदेश और द्विप्रदेश ऐसे भी रह जाते हैं जो क्रमशः अनानुपूर्वी द्रव्य के विषयरूप से तथा अवक्तव्यक द्रव्य के विषयरूप से हेतु सुरक्षित हो जाते हैं। यदि यह मानें कि आनुपूर्वी द्रव्य हैं तथा द्रव्यानुपूर्वी की अपेक्षा सर्वलोक व्याप्त हैं तब भी इन एक और दो प्रदेशों में आनुपूर्वी द्रव्य का सद्भाव रहता है तो भी अप्रधान होने से वहाँ उसकी नहीं किन्तु अनानुपूर्वी और अवक्तव्यक द्रव्यों की अस्तित्त्ववाची प्रधानता होने से विवक्षा की जाती है। इसीलिए एक आनुपूर्वी द्रव्य की अपेक्षा से देशोन लोक में अवगाहित कहा गया है।

सारांश यह है कि क्षेत्रानुपूर्वी में यदि लोक के समस्त प्रदेश आनुपूर्वी रूप मान लिये जायें तो उस स्थिति में अनानुपूर्वी और अवक्तव्यक प्रदेश कौन से होंगे जिनमें अनानुपूर्वी और

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवक्तव्यक द्रव्य ठहर सकें ? अतः यह मानना चाहिए कि क्षेत्रानुपूर्वी में एक प्रदेश अनानुपूर्वी का विषय है और दो प्रदेश अवक्तव्यक के विषय हैं। अतः अनानुपूर्वी और अवक्तव्यक द्रव्यों के विषयभूत प्रदेश को छोड़कर शेष समस्त प्रदेश आनुपूर्वी रूप हैं। इस प्रकार क्षेत्रानुपूर्वी में एक आनुपूर्वी द्रव्य की अपेक्षा देशोन समस्त लोक में आनुपूर्वी द्रव्य अवगाढ हैं, यह जानना चाहिए।

एक अनानुपूर्वी द्रव्य लोक के असंख्यातवें भाग में अवगाही इसलिए माना है कि अनानुपूर्वी रूप से वही द्रव्य विवक्षित हुआ है जो लोक के एक प्रदेश में अवगाढ हो और लोक का एक प्रदेश लोक का असंख्यातवाँ भाग है।

नाना अनानुपूर्वी द्रव्य सर्वलोकव्यापी इसलिए माने हैं कि एक-एक प्रदेश में अवगाढ अनानुपूर्वी द्रव्यों के भेद समस्त लोक को व्याप्त किये हुए हैं।

अवक्तव्यक द्रव्यों की वक्तव्यता भी अनानुपूर्वी द्रव्यों के समान कथन करने का आशय यह है कि एक अवक्तव्यक द्रव्य लोक के असंख्यातवें भाग में अवगाहित रहता है। क्योंकि लोक के प्रदेशद्वय में अवगाढ हुए द्रव्य को अवक्तव्यक द्रव्य रूप से कहा गया है और ये दो प्रदेश लोक के असंख्यात प्रदेशों की अपेक्षा असंख्यातवें भाग रूप हैं तथा जितने भी अवक्तव्यक द्रव्य हैं वे सभी लोक के दो-दो प्रदेशों में रहने के कारण सर्वलोकव्यापी माने गये हैं।

Elaboration—This aphorism refers to the area occupied by *kshetranupurvi dravyas* (area-sequential substances) with respect to one and many substances. It conveys that a single *anupurvi* (sequential) substance exists in countable and uncountable fractions, countable and uncountable sections of the universe, and also in slightly less than the whole universe. The reason for this is that the *skandh-dravyas* (aggregate substances) possess a strange intrinsic power of transformation. Some aggregates are tiny and others are huge. Thus due to this strange capacity of transformation the aggregate substances occupy the aforesaid varying portions of the universe.

(Question) In context of *naigam-vyavahar naya sammat kshetranupurvi dravya* (area-sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) with respect to one substance, *anupurvi* (sequential) substance is said to occupy slightly less than the whole universe but in context of *dravyanupurvi* (physical sequence) it is mentioned that an *achitt*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

mahaskandh (the superlative aggregate of matter), the largest aggregate of matter made up of infinite times infinite *paramanus* (ultimate-particles), occupies the whole universe. Thus with respect to *achitt mahaskandh* a single anupurvi (sequential) substance occupies the whole universe. If that is so, what is the logic for mentioning here (in context of area-sequence) that a single *anupurvi* (sequential) substance occupies slightly less than the whole universe ?

(Answer) To understand this, one has to realize that this universe abounds in *anupurvi* (sequential), *ananupurvi* (non-sequential), and *avaktavya* (inexpressible) substances. If a single *anupurvi* (sequential) substance is accepted as occupying the whole universe there would be no space left for the *ananupurvi* (non-sequential) and *avaktavya* (inexpressible) substances. This would imply the denial of their existence. However, when we consider that a single *anupurvi* (sequential) substance occupies slightly less than the whole universe then even in the universe occupied by an *achitt mahaskandh* there is at least one space-point available for occupancy by *ananupurvi* (non-sequential) substance and two space-points available for occupancy by *avaktavya* (inexpressible) substance. If there is a general abundance of *anupurvi* (sequential) substances and with respect to physical sequence it is accepted that the *anupurvi* (sequential) substance occupies whole universe, even than, although occupancy of *anupurvi* (sequential) may be believed to be extending to these one and two space-points, *ananupurvi* (non-sequential) and *avaktavya* (inexpressible) substances get precedence there due to their relative existential importance. That is why it is said that a single *anupurvi* (sequential) substance occupies slightly less than the whole universe.

This means that in *kshetranupurvi* (area-sequence) if all space-points are accepted as *anupurvi* (sequential) then at which space-points the *ananupurvi* (non-sequential) and *avaktavya* (inexpressible) will exist? Therefore it should be accepted that in the *kshetranupurvi* (area-sequence) there is at least one space-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

point meant for *ananupurvi* (non-sequential) and two for *avaktavya* (inexpressible). In other words, setting aside one and two space-points meant for *ananupurvi* (non-sequential) and *avaktavya* (inexpressible) respectively, all the remaining space-points in the universe are *anupurvi* (sequential). Thus it should be accepted that in context of *kshetranupurvi* (area-sequence) when we consider a single *anupurvi* (sequential) substance, it occupies slightly less than the whole universe.

A single *ananupurvi* (non-sequential) substance is said to occupy an inexpressible fraction of universe because *ananupurvi* (non-sequential) substance has been defined only as a particle occupying a single space-point which in turn is only an inexpressible fraction of the universe.

Multiple *ananupurvi* (non-sequential) substances are said to be occupying the whole universe because a variety of *ananupurvi* (non-sequential) substances occupying unit space-points are spread all over the universe.

The purpose of stating that 'the same is true for *avaktavya* (inexpressible) substances' is that a single *avaktavya* (inexpressible) substance occupies only an inexpressible fraction of the universe. This is because a substance occupying two space-points is defined as *avaktavya* (inexpressible). Two space-points are just an inexpressible fraction of uncountable space-points constituting the universe. Also a variety of *avaktavya* (inexpressible) substances occupying two space-points are spread all over the universe.

(४) अनुगम के अनुसार स्पर्शना प्ररूपणा

१५३. (१) णेगम-ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं लोगस्स किं संखेज्जइभागं फुसंति? असंखेज्जति भागं २ जाव सव्वलोगं फुसंति?

एगं दव्वं पडुच्च संखेज्जतिभागं वा फुसंति, असंखेज्जतिभागं वा, संखेज्जे वा भागे, असंखेज्जे वा भागे, देसूणं वा लोगं फुसंति, णाणादव्वाइं पडुच्च णियमा सव्वलोगं फुसंति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५३. (प्रश्न १) नैगम-व्यवहारनयसम्मत आनुपूर्वी द्रव्य क्या (लोक के) संख्यातवें भाग का स्पर्श करते हैं? या असंख्यातवें भाग का, संख्यातवें भागों का अथवा असंख्यातवें भागों का अथवा सर्वलोक का स्पर्श करते हैं?

(उत्तर) एक द्रव्य की अपेक्षा वे संख्यातवें भाग का स्पर्श करते हैं, असंख्यातवें भाग का, संख्यातवें भागों का, असंख्यातवें भागों का अथवा देशोन सर्व लोक का स्पर्श करते हैं अनेक द्रव्यों की अपेक्षा तो नियमतः सर्वलोक का स्पर्श करते हैं।

(4) KSHETRANUPURVI : SPARSHANA-DVAR

153. (Question 1) Do the *naigam-vyavahar naya sammat kshetranupurvi dravya* (area-sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) have spatial contact with countable fraction of the universe (occupied space), with uncountable (infinitesimal) fraction, with countable sections, with uncountable sections, or with the whole universe?

(Answer) With respect to a single *anupurvi* (sequential) substance, they have spatial contact with countable fractions, with uncountable fraction, with countable sections, with uncountable sections of the universe and with slightly less than the whole universe. But with respect to many substances, as a rule, they have spatial contact with the whole universe.

(२) अणाणुपुव्वीदव्वाइं अवत्तव्वयदव्वाणि य जहा खेत्तं, नवरं फुसणा भाणियव्वा।

(२) अनानुपूर्वी और अवक्तव्यक की स्पर्शना का कथन पूर्वोक्त क्षेत्र द्वार के अनुरूप समझना चाहिए, क्षेत्र के बदले यहाँ स्पर्शना (स्पर्श करता है) कहना चाहिए।

(2) As regards *ananupurvi* (non-sequential) and *avaktavya* (inexpressible) the aforesaid statement with regard to *kshetra-dvar* should be repeated here changing *kshetra* (area) to *sparsh* (contact).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(५) अनुगम से कालप्ररूपणा

१५४. णेगम–ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं कालतो केवचिरं होइ ?

एगदव्वं पडुच्च जहन्नेणं एगं समयं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं, णाणादव्वाइं पडुच्च सव्वद्धा। एवं दोण्णि वि।

१५४. (प्रश्न) नैगम और व्यवहारनयसम्मत आनुपूर्वी द्रव्य काल की अपेक्षा कितने समय तक (आनुपूर्वी द्रव्य के रूप में) रहते हैं।

(उत्तर) एक द्रव्य की अपेक्षा जघन्यतः एक समय और उत्कृष्टतः असंख्यात काल तक रहते हैं। विविध द्रव्यों की अपेक्षा नियमतः (आनुपूर्वी द्रव्यों की स्थिति) सार्वकालिक है। इसी प्रकार दोनों–अनानुपूर्वी और अवक्तव्यक द्रव्यों की भी स्थिति जानना चाहिए।

(5) KSHETRANUPURVI : KAAL-DVAR

154. (Question) In context of time for what duration do the *naigam-vyavahar naya sammat anupurvi dravya* (sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) exist (in the same configuration) ?

(Answer) With respect to a single *anupurvi* (sequential) substance they exist in the same form for a minimum of one *samaya* and maximum of immeasurable time. With respect to many *anupurvi* (sequential) substances as a rule they exist always. Same is true for the remaining two (*ananupurvi* and *avaktavya* substances).

(६) अनुगम से अन्तरप्ररूपणा

१५५. णेगम–ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाणमंतरं कालतो केवचिरं होति ?

तिण्णि वि एगं दव्वं पडुच्च जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं, णाणादव्वाइं पडुच्च णत्थि अंतरं।

१५५. (प्रश्न) नैगम–व्यवहारनयसम्मत आनुपूर्वी द्रव्यों का काल की अपेक्षा अन्तर कितने समय का है ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(उत्तर) तीनों (आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवक्तव्यक द्रव्यों) का अन्तर एक द्रव्य की अपेक्षा जघन्य एक समय और उत्कृष्ट असंख्यात काल का है किन्तु अनेक द्रव्यों की अपेक्षा अन्तर नहीं है।

(6) KSHETRANUPURVI : ANTAR-DVAR

155. (Question) In context of time what is the *antar* (intervening period between loosing the present form and regaining it) in case of *naigam-vyavahar naya sammat anupurvi dravya* (sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) ?

(Answer) In case of all the three classes of substances (*anupurvi, ananupurvi* and *avaktavya*) with respect to a single *anupurvi* (sequential) substance this period is a minimum of one *samaya* and maximum of immeasurable time. However with respect to many substances this antar does not exist.

(७) अनुगम से भागप्ररूपणा

१५६. णेगम–ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं सेसदव्वाणं कतिभागे होज्जा ?

तिण्णि वि जहा दव्वाणुपुव्वीए।

१५६. (प्रश्न) नैगम और व्यवहारनयसम्मत आनुपूर्वी द्रव्य शेष द्रव्यों के कितनेवें भाग प्रमाण होते हैं ?

(उत्तर) द्रव्यानुपूर्वी जैसा ही कथन तीनों द्रव्यों के लिए यहाँ भी समझना चाहिए। (सूत्र ११२ के अनुसार समझें)

(7) KSHETRANUPURVI : BHAAG-DVAR

156. (Question) In what spatial proportion of other substances do the *naigam-vyavahar naya sammat anupurvi dravya* (sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) exist.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(Answer) The answer is same as that with regard to *dravyanupurvi* for all the three classes of substances. (aphorism 112)

विवेचन–सूत्र में द्रव्यानुपूर्वी के समान क्षेत्रानुपूर्वी के द्रव्यों की भाग प्ररूपणा का कथन किया है। इसका भाव यह है कि अनानुपूर्वी और अवक्तव्यक द्रव्यों की अपेक्षा आनुपूर्वी द्रव्य असंख्यात भागों से अधिक हैं तथा शेष द्रव्य आनुपूर्वी द्रव्यों के असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं।

इस विषय को अधिक स्पष्ट करने के लिए वृत्ति में स्थापना का प्रयोग किया है। आकाश के पाँच प्रदेशों की कल्पना करके अनानुपूर्वी, अवक्तव्यक और आनुपूर्वी द्रव्यों की स्थापना करके समझाया गया है। विस्तार के लिए देखें (अनु. महाप्रज्ञ. पृ. १३०–१३१) तथा (ज्ञानमुनि कृत टीका पृ. ६७२–७८ तक)

Elaboration—The aphorism states that the details regarding *bhaag* (spatial proportion) *dvar* (door of disquisition) of *kshetranupurvi* are same as those of *dravyanupurvi*. This indicates that *anupurvi* (sequential) substances are uncountable times more than the *ananupurvi* (non-sequential) and *avaktavya* (inexpressible) substances. In other words *ananupurvi* (non-sequential) and *avaktavya* (inexpressible) substances are equivalent to infinitesimal fraction of *anupurvi* (sequential) substances.

To clarify this, method of placement has been used in the *Vritti*. *Anupurvi* (sequential), *ananupurvi* (non-sequential), and *avaktavya* (inexpressible) substances have been placed in five imaginary space-points to explain the concept. (refer to *Anuyogadvara* by Acharya Mahaprajna p. 130-131; also that by Jnana Muni p. 672-78)

(८) अनुगम से भावप्ररूपणा

१५७. णेगम–ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं कयरम्मि भावे होज्जा ?

तिन्नि वि, णियमा सादिपारिणामिए भावे होज्जा।

१५७. **(प्रश्न)** नैगम–व्यवहारनयसम्मत आनुपूर्वीद्रव्य किस भाव में वर्तते हैं ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(उत्तर) तीनों ही–(आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी, अवक्तव्यक) द्रव्य नियमतः सादि पारिणामिक भाव में होते हैं। (देखें सूत्र ११३)

(8) KSHETRANUPURVI : BHAAVA-DVAR

157. (Question) In what state do the *naigam-vyavahar naya sammat anupurvi dravya* (sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) exist.

(Answer) As a rule all the three class of substances (*anupurvi* or sequential, *ananupurvi* or non-sequential, and *avaktavya* or inexpressible) exist in *sadi-parinamik-bhaava* (transformative state with a beginning). (see aphorism 113).

(९) अनुगम से अल्पबहुत्व प्ररूपणा

१५८. (१) एएसि णं भंते ! णेगम–ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाणं अणाणुपुव्वीदव्वाणं अवत्तव्वयदव्वाण य दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठ–पएसट्ठयाए य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवाइं णेगम–ववहाराणं अवत्तव्वयगदव्वाइं दव्वट्ठयाए, अणाणुपुव्वीदव्वाइं दव्वट्ठयाए विसेसाहियाइं, आणुपुव्वीदव्वाइं दव्वट्ठयाए असंखेज्जागुणाइं।

१५८. (प्रश्न १) भंते ! इन नैगम और व्यवहारनयसम्मत आनुपूर्वी द्रव्यों, अनानुपूर्वी द्रव्यों और अवक्तव्यक द्रव्यों में कौन द्रव्य किन द्रव्यों से द्रव्यार्थता, प्रदेशार्थता और द्रव्यार्थ–प्रदेशार्थता की अपेक्षा अल्प, बहुत्व, तुल्य या विशेषाधिक हैं ?

(उत्तर) गौतम ! नैगम और व्यवहारनयसम्मत अवक्तव्यक द्रव्य द्रव्यार्थता की अपेक्षा सबसे अल्प है। अनानुपूर्वी द्रव्य द्रव्यार्थता की अपेक्षा अवक्तव्यक द्रव्यों से विशेषाधिक हैं और आनुपूर्वी द्रव्य द्रव्यार्थता की अपेक्षा अनानुपूर्वी द्रव्यों से असंख्यातगुण हैं।

(9) ALPABAHUTVA-DVAR

158. (Question 1) Bhante! In terms of substance (mass), space-points (volume), and substance-cum-space-points

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(mass-cum-volume) which of these *naigam-vyavahar naya sammat anupurvi, ananupurvi,* and *avaktavya dravya* (sequential, non-sequential, and inexpressible substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) are comparatively less than, more than, equal to, are much more than others. (in the universe) ?

(Answer 1) Gautam ! In terms of *dravya* (substance), *naigam-vyavahar naya sammat avaktavya dravya* (inexpressible substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) are least in the universe; in terms of substance, *ananupurvi* (non-sequential) substances are much more than avaktavya (inexpressible) substances; and in terms of substance, *anupurvi* (sequential) substances are uncountable times more than *ananupurvi* (non-sequential) substances.

(२) पएसट्ठयाए सव्वत्थोवाइं णेगम-ववहाराणं अणाणुपुव्वीदव्वाइं अपएसट्ठयाए, अवत्तव्वयदव्वाइं पएसट्ठयाए विसेसाहियाइं, आणुपुव्वीदव्वाइं पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणाइं।

(२) प्रदेशार्थता की अपेक्षा नैगम और व्यवहारनयसम्मत अनानुपूर्वीद्रव्य अप्रदेशी होने के कारण सर्वस्तोक-अल्प है। प्रदेशार्थता की अपेक्षा अवक्तव्यक द्रव्य अनानुपूर्वी द्रव्यों से विशेषाधिक हैं और आनुपूर्वी द्रव्य प्रदेशार्थता की अपेक्षा अवक्तव्यक द्रव्यों से असंख्यातगुण हैं।

(2) In terms of *pradesh* (space-points), as they are *apradeshi* (devoid of space-points), *naigam-vyavahar naya sammat ananupurvi* (non-sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) are least in the universe; in terms of space-points, *avaktavya dravya* (inexpressible substances) are much more than *ananupurvi* (non-sequential) substances; and in terms of space-points *anupurvi* (sequential) substances are infinite times more than *avaktavya* (inexpressible) substances.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(३) दव्वट्ठ–पएसट्ठयाए सव्वत्थोवाइं णेगम–ववहाराणं अवत्तव्वयदव्वाइं दव्वट्ठयाए, अणाणुपुव्वीदव्वाइं दव्वट्ठयाए अपएसट्ठयाए विसेसाहियाइं, अवत्तव्वयदव्वाइं पएसट्ठयाए विसेसाहियाइं, आणुपुव्वीदव्वाइं दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणाइं, ताइं चेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणाइं। से तं अणुगमे। से तं णेगम–ववहाराणं अणोवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी।

(३) द्रव्यार्थ–प्रदेशार्थता की अपेक्षा से नैगम-व्यवहारनयसम्मत अवक्तव्यक द्रव्य द्रव्यार्थ से सबसे अल्प है, (क्योंकि पूर्व में द्रव्यार्थता से अवक्तव्यक द्रव्यों में सर्वस्तोकता बताई है।) द्रव्यार्थता और अप्रदेशार्थता की अपेक्षा अनानुपूर्वी द्रव्य अवक्तव्यक द्रव्यों से विशेषाधिक हैं। अवक्तव्यक द्रव्य प्रदेशार्थता की अपेक्षा विशेषाधिक हैं। आनुपूर्वी द्रव्य द्रव्यार्थता की अपेक्षा असंख्यातगुण है और प्रदेशार्थता की अपेक्षा भी असंख्यातगुण हैं।

इस प्रकार से अनुगम की वक्तव्यता जानना चाहिए तथा इसके साथ ही नैगम-व्यवहारनयसम्मत अनौपनिधिकी क्षेत्रानुपूर्वी का वर्णन पूर्ण हुआ।

(3) In terms of *dravya* and *pradesh* (substance-cum-space-points), *naigam-vyavahar naya sammat avaktavya dravya* (inexpressible substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) are least in the universe in context of substance (as stated earlier). *Ananupurvi* (non-sequential) substances are much more (than *avaktavya* substances) in context of substance and absence of space-points; *avaktavya* (inexpressible) substances are much more (than *ananupurvi* substances) in context of space-points. *Anupurvi* (sequential) substances are uncountable times more (than *avaktavya* substances) in context of substance and uncountable times more (than *avaktavya* substances) in context of space-points as well.

This concludes the description of *anugam*. This also concludes the description of *naigam-vyavahar naya sammat dravyanupurvi* (sequence of substances conforming to coordinated and particularized viewpoints).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवेचन–द्रव्यों की गणना को द्रव्यार्थता तथा प्रदेशों की गणना को प्रदेशार्थता एवं द्रव्यों तथा प्रदेशों की संयुक्त गणना को द्रव्यार्थ–प्रदेशार्थता या उभयार्थता कहते हैं।

आनुपूर्वी द्रव्यों में तीन प्रदेशों का एक समुदाय, चार आकाश प्रदेशों का एक समुदाय, इत्यादि विशिष्ट पुद्गल स्कन्धों से जितने समुदाय बनते हैं, वे द्रव्य कहलाते हैं और इन समुदायों के जो आरम्भक (इकाई) है, वह प्रदेश है।

अनानुपूर्वी द्रव्य में एक प्रदेशावगाही द्रव्य से सूचित आकाश का प्रत्येक प्रदेश द्रव्य है। इस एक–एक प्रदेशात्मक द्रव्य में अन्य प्रदेश की कल्पना सम्भव नहीं है।

अवक्तव्य–द्रव्य में लोक में द्विप्रदेशावगाढ द्रव्य से सूचित आकाश प्रदेश अवक्तव्य द्रव्य है।

अल्प–बहुत्व–अवक्तव्य द्रव्य–द्विप्रदेशी स्कन्ध सबसे अल्प है। अनानुपूर्वीद्रव्य एक परमाणु रूप है। इसलिए वह अवक्तव्य द्रव्य से दुगुना होना चाहिए, फिर यहाँ विशेषाधिक क्यों कहा? इस शंका का समाधान यह है कि भिन्न–भिन्न परमाणुओं के संयोग से द्विप्रदेशी स्कन्धों का निर्माण होता रहता है। द्विप्रदेशी स्कन्ध अधिक संख्या में हो जाते हैं, तो अनानुपूर्वी द्रव्य (एक प्रदेशी) उससे दुगुने नहीं हो पाते। द्रव्यानुपूर्वी में प्रदेशार्थ की अपेक्षा आनुपूर्वीद्रव्य अवक्तव्य द्रव्य से अनन्त गुना बतलाये गये हैं। क्षेत्रानुपूर्वी के प्रकरण में ये असंख्येय गुणा बतलाये हैं। कारण आकाश–क्षेत्र के प्रदेश असंख्येय ही होते हैं।

Elaboration—*Dravyarthata, pradesharthata,* and *dravyarth-pradesharthata* mean assessment or measurement with respect to *dravya* or substance (mass), *pradesh* or space-points (volume), and both combined respectively.

In *anupurvi* (sequential) substances are included all specific *skandhas* (aggregates) of three or more space-points or ultimate-particles. The unit of these is that space-point.

In *ananupurvi* (non-sequential) substances are included every ultimate particle occupying single space-point. Which means every space-point in space is included in this class. In such substance there is no scope for another space-point.

In *avaktavya* (inexpressible) substances are included all space-points occupied by aggregates of two *paramanus* (ultimate-particles)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Alpa-bahutva (comparison of degree)—With respect to substance the *avaktavya* (inexpressible) substances are minimum. *Anupurvi* (sequential) substances are in the form of single *paramanu* (ultimate-particle), therefore these should be double the number of *avaktavya* (inexpressible) substances. Then why they are said to be much more here ? This is because the chances of integration and disintegration of aggregates of two *paramanus* (ultimate-particles) are minimal as compared to *ananupurvi* (non-sequential) substances as they are free *paramanus* (ultimate-particles) having a tendency to form aggregates of two or more. In context of *dravyanupurvi, anupurvi* (sequential) substances are said to be infinite times more than *avaktavya* (inexpressible) substances whereas here, in context of *kshetranupurvi,* they are said to be uncountable times more. The reason for this is that the total number of space-points in the universe are only uncountable and not infinite.

संग्रहनयसम्मत अनौपनिधिकी क्षेत्रानुपूर्वी

१५९. से किं तं संगहस्स अणोवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी ?

जहेव दव्वाणुपुव्वी तहेव खेत्ताणुपुव्वी णेयव्वा। से तं संगहस्स अणोवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी। से तं अणोवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी।

१५९. (प्रश्न) संग्रहनयसम्मत अनौपनिधिकी क्षेत्रानुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) पूर्वोक्त संग्रहनयसम्मत अनौपनिधिकी द्रव्यानुपूर्वी की तरह इस क्षेत्रानुपूर्वी का भी स्वरूप समझना चाहिए।

इस प्रकार से संग्रहनयसम्मत अनौपनिधिकी क्षेत्रानुपूर्वी का और साथ ही अनौपनिधिकी क्षेत्रानुपूर्वी का वर्णन समाप्त हुआ

(अब क्षेत्रानुपूर्वी के दूसरे भेद औपनिधिकी क्षेत्रानुपूर्वी की प्ररूपणा करते हैं। इसके दो प्रकार हैं–विशेष और सामान्य। पहले विशेषापेक्षया का वर्णन किया जाता है)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

SAMGRAHA NAYA SAMMAT ANAUPANIDHIKI KSHETRA-ANUPURVI

159. (Question) What is this *Samgraha naya sammat anaupanidhiki kshetra-anupurvi* (disorderly area-sequence conforming to generalized viewpoint) ?

(Answer) *Samgraha naya sammat anaupanidhiki kshetra-anupurvi* (disorderly area-sequence conforming to generalized viewpoint) should be read to be same as the aforesaid *dravyanupurvi* in this context. (aphorism 115)

This concludes the description of *Samgraha naya sammat anaupanidhiki kshetra-anupurvi* (disorderly area-sequence conforming to generalized viewpoint) and *anaupanidhiki kshetra-anupurvi* (disorderly area-sequence).

(Now *aupanidhiki kshetranupurvi* or orderly area-sequence, the second category of *kshetranupurvi*, is being described. This is of two types—special and ordinary. First the special one is described)

औपनिधिकी क्षेत्रानुपूर्वी की विशेष प्ररूपणा

१६०. से किं तं ओवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी ?

ओवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता। तं जहा-(१) पुव्वाणुपुव्वी, (२) पच्छाणुपुव्वी, (३) अणाणुपुव्वी।

१६०. (प्रश्न) औपनिधिकी क्षेत्रानुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) औपनिधिकी क्षेत्रानुपूर्वी के तीन भेद हैं-(१) पूर्वानुपूर्वी, (२) पश्चानुपूर्वी, और (३) अनानुपूर्वी।

AUPANIDHIKI KSHETRA-ANUPURVI

160. (Question) What is this *Aupanidhiki kshetra-anupurvi* (orderly area-sequence) ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(Answer) This *Aupanidhiki kshetra-anupurvi* (orderly area-sequence) is of three types—(1) *Purvanupurvi*, (2) *Pashchanupurvi*, and (3) *Ananupurvi.*

पूर्वानुपूर्वी

१६१. से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?

पुव्वाणुपुव्वी-(१) अहोलोए, (२) तिरियलोए, (३) उड्ढलोए। से तं पुव्वाणुपुव्वी।

१६१. **(प्रश्न)** पूर्वानुपूर्वी का क्या स्वरूप है ?

(उत्तर) (१) अधोलोक, (२) तिर्यक्लोक, और (३) ऊर्ध्वलोक, इस क्रम से (क्षेत्र-लोक का) निर्देश करना पूर्वानुपूर्वी हैं।

इस प्रकार पूर्वानुपूर्वी का वर्णन समाप्त हुआ।

PURVANUPURVI

161. (Question) What is this *Purvanupurvi* ?

(Answer) *Purvanupurvi* is like this—(1) *Adholoka* (lower world), (2) *Tiryak-loka* (middle world), and (3) *Urdhvaloka* (upper world). Areas (worlds) arranged in such ascending sequential order is called *purvanupurvi* (ascending sequence).

This concludes the description of *purvanupurvi* (ascending sequence).

पश्चानुपूर्वी

१६२. से किं तं पच्छाणुपुव्वी?

पच्छाणुपुव्वी-(३) उड्ढलोए, (२) तिरियलोए, (१) अहोलोए। से तं पच्छाणुपुव्वी।

१६२. **(प्रश्न)** पश्चानुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) पूर्वानुपूर्वी के क्रम के विपरीत (१) ऊर्ध्वलोक, (२) तिर्यक्लोक, (३) अधोलोक, इस प्रकार का क्रम कथन करना पश्चानुपूर्वी है।

इस प्रकार पश्चानुपूर्वी वर्णन समाप्त हुआ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

PASHCHANUPURVI

162. (Question) What is this *Pashchanupurvi* ?

(Answer) *Pashchanupurvi* is like this—(3) *Urdhvaloka* (upper world), (2) *Tiryak-loka* (middle world), and (1) *Adholoka* (lower world). Areas arranged in such descending sequential order is called *pashchanupurvi* (descending sequence).

This concludes the description of *pashchanupurvi* (descending sequence).

अनानुपूर्वी

१६३. से किं तं अणाणुपुव्वी ?

अणाणुपुव्वी एयाए चेव एगादियाए एगुत्तरियाए तिगच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरूवणो। से तं अणाणुपुव्वी।

१६३. (प्रश्न) अनानुपूर्वी किसे कहते हैं ?

(उत्तर) एक से प्रारम्भ कर एक-एक की वृद्धि करते जाये। तीन की संख्या को श्रेणी में परस्पर गुणा करें उससे जो भंग संख्या प्राप्त हो उसमें से आद्य और अन्तिम दो भंगों को छोड़ देने से जो राशि प्राप्त हो वह अनानुपूर्वी है।

इस प्रकार अनानुपूर्वी का वर्णन समाप्त हुआ।

ANANUPURVI

163. (Question) What is this *Ananupurvi* ?

(Answer) Place three numbers starting from one and progressively adding one. Multiply all the six numbers of this arithmetic progression and subtract 2 (depicting the ascending and descending sequence) from the result. This final result is called *ananupurvi* (random sequence). (This number is the total number of sequences that can be made in random order. In other words this is the sum total of all permutations and combinations of the random sequences that can be made with the given set of numbers).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

This concludes the description of *ananupurvi* (random sequence).

विवेचन–इन तीन सूत्रों में औपनिधिकी क्षेत्रानुपूर्वी का स्वरूप बतलाया है।

औपनिधिकी द्रव्यानुपूर्वी के प्रकरण में जैसे द्रव्यानुपूर्वी का अधिकार होने से धर्मास्तिकाय आदि द्रव्यों को पूर्वानुपूर्वी आदि रूप में बताया हैं, वैसे ही यहाँ क्षेत्रानुपूर्वी का प्रकरण होने से अधोलोक आदि क्षेत्र पूर्वानुपूर्वी आदि के रूप में समझना चाहिए।

संख्या की स्थापना से अनानुपूर्वी का रूप इस प्रकार बनता है, १-२-३ (यह पूर्वानुपूर्वी है) ३-२-१ (यह पश्चानुपूर्वी है।

अब इन सभी संख्याओं को परस्पर गुणा करने से हमें प्राप्त होता है–१ × २ × ३ = ६। यह इन संख्याओं से बनने वाली समस्त श्रृंखलाएँ हैं–१, २, ३; १, ३, २; २, १, ३; २, ३, १; ३, १, २; तथा ३, २, १। अब इसमें से २ घटा दें (क्योंकि १, २, ३ पूर्वानुपूर्वी के रूप में तथा ३, २, १ पश्चानुपूर्वी के रूप में पहले दी जा चुकी हैं) तो हमें प्राप्त होता है ४। अतः इन संख्याओं में चार अनानुपूर्वियाँ हैं–१, ३, २; २, १, ३; २, ३, १; ३, १, २।

Elaboration—These three aphorisms describe *Aupanidhiki kshetra-anupurvi* (orderly area-sequence).

Just as entities like *Dharmastikaya* have been presented in ascending and other type of sequences to describe physical sequence, here areas like upper world have been presented in the same way to describe area-sequence.

When represented by numbers *ananupurvi* (random sequence) is like this : {1, 2, 3} is *purvanupurvi* or ascending sequence and {3, 2, 1} is *pashchanupurvi* or descending sequence. Now by multiplying these numbers together we get $1 \times 2 \times 3 = 6$. This is the total number of possible sequences—{1, 2, 3} {1, 3, 2} {2, 1, 3} {2, 3, 1} {3, 1, 2} and {3, 2, 1}. Now subtract 2 (because {1, 2, 3} is *purvanupurvi* and {3, 2, 1} is *pashchanupurvi* and both are already accounted for) from this and the result is 4. Thus there are four random sequences—{1, 3, 2} {2, 1, 3} {2, 3, 1} {3, 1, 2}.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६४. अहोलोयखेत्ताणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता। तं जहा–(१) पुव्वाणुपुव्वी, (२) पच्छाणुपुव्वी, (३) अणाणुपुव्वी।

१६४. अधोलोक क्षेत्रानुपूर्वी तीन प्रकार की है। जैसे–(१) पूर्वानुपूर्वी, (२) पश्चानुपूर्वी, (३) अनानुपूर्वी।

ADHOLOKA KSHETRA-ANUPURVI

164. *Adholoka kshetra-anupurvi* is of three types—(1) *Purvanupurvi,* (2) *Pashchanupurvi,* and (3) *Ananupurvi.*

१६५. से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?

पुव्वाणुपुव्वी–(१) रयणप्पभा, (२) सक्करप्पभा, (३) वालुयप्पभा, (४) पंकप्पभा, (५) धूमप्पभा, (६) तमप्पभा, (७) तमतमप्पभा, से तं पुव्वाणुपुव्वी।

१६५. **(प्रश्न)** अधोलोकक्षेत्रपूर्वानुपूर्वी का क्या स्वरूप है ?

(उत्तर) (१) रत्नप्रभा, (२) शर्कराप्रभा, (३) बालुकाप्रभा, (४) पंकप्रभा, (५) धूमप्रभा, (६) तमःप्रभा, (७) तमस्तमःप्रभा, इस क्रम से (सात नरकभूमियों का) गणना करना अधोलोकक्षेत्र पूर्वानुपूर्वी हैं। यह अधोलोक पूर्वानुपूर्वी का वर्णन हुआ।

165. (Question) What is this *Adholoka kshetra-purvanupurvi* ?

(Answer) *Adholoka kshetra-purvanupurvi* is like this—(1) *Ratnaprabha,* (2) *Sharkaraprabha,* (3) *Balukaprabha,* (4) *Pankaprabha,* (5) *Dhoom-prabha,* (6) *Tamah-prabha,* (7) *Tamastamah-prabha.* Areas (lower worlds or infernal worlds) arranged in such ascending sequential order is called *Adholoka kshetra-purvanupurvi* (ascending area-sequence of lower worlds).

This concludes the description of *Adholoka kshetra-purvanupurvi* (ascending area-sequence of lower worlds).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६६. से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?

पच्छाणुपुव्वी (७) तमतमा जाव (१) रयणप्पभा। से तं पच्छाणुपुव्वी।

१६६. (प्रश्न) अधोलोकक्षेत्र पश्चानुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) (७) तमस्तमःप्रभा से लेकर यावत् (१) रत्नप्रभा पर्यन्त व्युत्क्रम से (नरकभूमियों का) गणना करना अधोलोकपश्चानुपूर्वी है। यह अधोलोकपश्चानुपूर्वी का वर्णन हुआ।

166. (Question) What is this *Adholoka kshetra-pashchanupurvi* ?

(Answer) *Adholoka kshetra-pashchanupurvi* is like this—Arranging areas from (7) *Tamastamah-prabha* to (1) *Ratnaprabha* in reverse order. Areas arranged in such descending sequential order is called *Adholoka kshetra-pashchanupurvi* (descending area-sequence of lower worlds).

This concludes the description of *Adholoka kshetra-pashchanupurvi* (descending sequence).

१६७. से किं तं अणाणुपुव्वी ?

अणाणुपुव्वी एयाए चेव एगादियाए एगुत्तरियाए सत्तगच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णभासो दुरूवूणो। से तं अणाणुपुव्वी।

१६७. (प्रश्न) अधोलोकक्षेत्र अनानुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) अधोलोकक्षेत्र अनानुपूर्वी इस प्रकार है–आदि में एक स्थापित कर सात पर्यन्त एक–एक वृद्धि द्वारा निर्मित श्रेणी में परस्पर गुणा करने से जो राशि प्राप्त होती है। उसमें से प्रथम और अन्तिम दो भंगों को कम करने पर यह अनानुपूर्वी बनती है। यह अधोलोक अनानुपूर्वी का वर्णन हुआ।

167. (Question) What is this *Adholoka kshetra-ananupurvi* ?

(Answer) Place seven numbers starting from one and progressively adding one. Multiply all the seven numbers of this arithmetic progression and subtract 2 (depicting the

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अधोलोक क्षेत्रानुपूर्वी IN LOWER WORLD, THERE ARE SEVEN HELLISH EARTHS

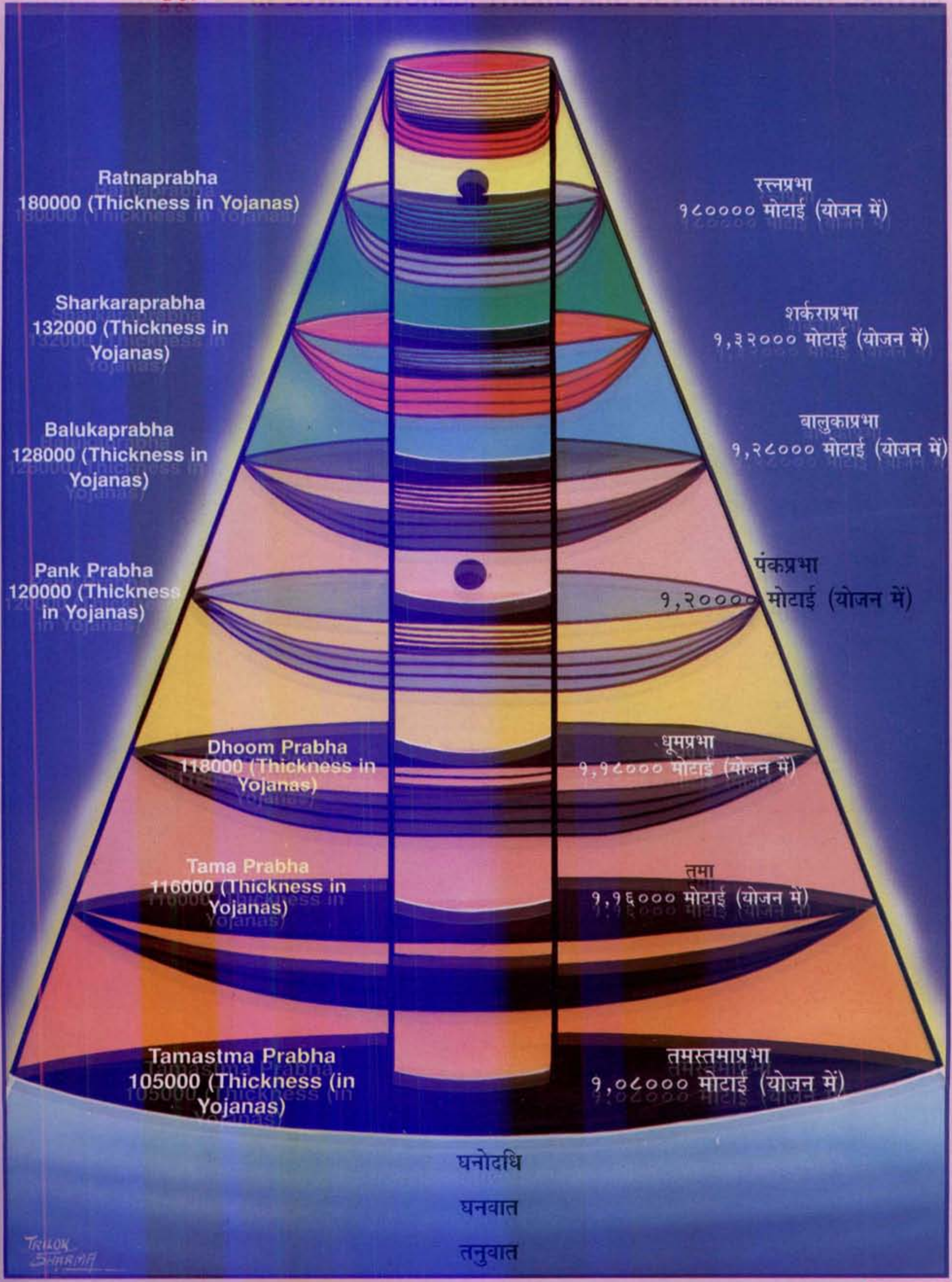

चित्र परिचय १२

Illustration No. 12

अधोलोक में सात नरक भूमियाँ

इस चौदह राजू लोक में नीचे का सात राजू लोक अधोलोक कहा जाता है। उसमें रत्नप्रभा पृथ्वी के ऊपर-नीचे के एक-एक हजार योजन छोड़कर बीच में भवनवासी देवों के करोड़ों भवन हैं। विविध प्रकार के रत्नों की प्रभा के कारण इसका नाम रत्नप्रभा है। इसके नीचे **घनोदधि**–जमी हुई पानी की परत, उसके नीचे **घनवात**–ठोस वायु और उसके नीचे **तनुवात**–पतली वायु है। फिर बीच का भाग आकाश से व्याप्त पोला है। उसके नीचे फिर शर्कराप्रभा आदि नरक भूमियाँ है।

रत्नप्रभा से क्रमशः शर्कराप्रभा, बालुकाप्रभा, पंकप्रभा, धूमप्रभा, तमःप्रभा, तमस्तमाप्रभा, क्रमशः गणना करना, अधोलोक क्षेत्रपूर्वानुपूर्वी है। इनकी तमःस्तम प्रभा, तमः प्रभा इस विपरीत क्रम से गणना करना अधोलोक क्षेत्र पश्चानुपूर्वी है।

–सूत्र १६४

विस्तृत वर्णन : गणितानुयोग अधोलोक वर्णन

THE SEVEN HELLS IN THE LOWER WORLD

In this fourteen *Rajju* high *Loka* the lower seven *Rajju* area is called lower world. Here, above and below the *Ratnaprabha* hell, leaving a gap of one thousand *yojans* there are millions of abodes of *Bhavan-vasi* gods. It is called *Ratnaprabha* because it is radiant with the glow of a variety of gems (*ratna*). Below this is a layer of frozen water (*ghanodadhi*) below which there is a layer of dense air (*ghanovat*) followed by that of thin air (*tanuvat*). After this there is hollow space. Under this are *Sharkaraprabha* and other hells.

Starting from *Ratnaprabha,* arranging hells named *Sharkaraprabha, Balukaprabha, Pankaprabha, Dhoom-prabha, Tamah-prabha,* and *Tamastamah-prabha* in ascending sequential order is called *Adholoka kshetra-purvanupurvi.* Arranging hells from *Tamastamah-prabha* to *Ratnaprabha* in reverse order is called *Adholoka kshetra-pashchanupurvi.*

—Sutra : 164

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ascending and descending sequence) from the result. This final result is called *Adholoka kshetra-ananupurvi* (random area-sequence of lower worlds).

This concludes the description of *Adholoka kshetra-ananupurvi* (random area-sequence of lower worlds).

विवेचन–अनानुपूर्वी में एक आदि सात पर्यन्त सात अंकों का परस्पर गुणा करने पर ५०४० भंग होते हैं। इनमें से आदि का भंग पूर्वानुपूर्वी और अन्तिम भंग पश्चानुपूर्वी रूप से इन दो को छोड़कर शेष ५०३८ भंग अनानुपूर्वी के हैं।

Elaboration—Represented by numbers this ananupurvi (random sequence) is like this : by multiplying numbers from 1 to 7 together we get 5040. Subtracting 2 (for *purvanupurvi* and *pashchanupurvi* from this gives us 5038. Thus there are 5038 random sequences.

तिर्यग् (मध्य) लोक क्षेत्रानुपूर्वी

१६८. तिरियलोयखेत्ताणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता। तं जहा–(१) पुव्वाणुपुव्वी, (२) पच्छाणुपुव्वी, (३) अणाणुपुव्वी।

१६८. तिर्यग् (मध्य) लोक क्षेत्रानुपूर्वी के तीन भेद हैं। जैसे–(१) पूर्वानुपूर्वी, (२) पश्चानुपूर्वी, (३) अनानुपूर्वी।

TIRYAK-LOKA KSHETRA-ANUPURVI

168. *Tiryak-loka kshetra-anupurvi* is of three types—(1) *Purvanupurvi,* (2) *Pashchanupurvi,* and (3) *Ananupurvi.*

१६९. से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?

पुव्वाणुपुव्वी–जंबुद्दीवे लवणे धायइ–कालोय–पुक्खरे वरुणे।

खीर–घय–खोय–नंदी–अरुणवरे कुंडले रुयगे॥११॥

जम्बुद्दीवाओ खलु निरंतरा, सेसया असंखइमा।

भुयगवर–कुसवरा वि य कोंचवराऽऽभरणमाईया॥१२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आभरण–वत्थ–गंधे उप्पल–तिलये य पउम–निहि–रयणे।

वासहर–दह–णदीओ विजया वक्खार–कप्पिंदा॥१३॥

कुरु–मंदर–आवासा कूडा नक्खत्त–चंद सूरा य।

देवे नागे जक्खे भूये य सयंभुरमणे य॥१४॥

से तं पुव्वाणुपुव्वी।

१६९. (प्रश्न) तिर्यक् लोक क्षेत्रपूर्वानुपूर्वी क्या है?

(उत्तर) तिर्यक् लोक क्षेत्रपूर्वानुपूर्वी इस प्रकार है–

जम्बूद्वीप, लवणसमुद्र, धातकीखण्डद्वीप, कालोदधिसमुद्र, पुष्करद्वीप, (पुष्करोद) समुद्र, वरुणद्वीप, वरुणोदसमुद्र, क्षीरद्वीप, क्षीरोदसमुद्र, घृतद्वीप, घृतोदसमुद्र, इक्षुवरद्वीप, इक्षुवरसमुद्र, नन्दीद्वीप, नन्दीसमुद्र, अरुणवरद्वीप, अरुणवरसमुद्र, कुण्डलद्वीप, कुण्डलसमुद्र, रुचकद्वीप, रुचकसमुद्र। ११।

जम्बूद्वीप से लेकर ये सभी द्वीप–समुद्र बिना किसी अन्तर के एक दूसरे को घेरे हुए हैं। रुचक से आगे असंख्यात–असंख्यात द्वीप–समुद्रों के बाद भुजगवर द्वीप है, तथा इसके बाद असंख्यात द्वीप–समुद्रों के पश्चात् कुशवरद्वीप समुद्र है और इसके बाद भी असंख्यात द्वीप–समुद्रों के पश्चात् क्रौंचवर द्वीप है। पुनः असंख्यात द्वीप–समुद्रों के पश्चात् आभरणों आदि के सदृश शुभ नाम वाले द्वीप समुद्र हैं। १२ । यथा–

आभरण, वस्त्र, गंध, उत्पल, तिलक, पद्म, निधि, रत्न, वर्षधर, ह्रद, नदी, विजय, वक्षस्कार, कल्पेन्द्र । १३ ।

कुरु, मंदर, आवास, कूट, नक्षत्र, चन्द्र,सूर्यदेव, नाग, यक्ष आदि के पर्यायवाचक नामों वाले द्वीप–समुद्र असंख्यात हैं और अन्त में स्वयंभूरमणद्वीप एवं स्वयंभूरमणसमुद्र है! यह मध्यलोकक्षेत्र पूर्वानुपूर्वी का कथन है।

169. (Question) What is this *Tiryak-loka kshetra-purvanupurvi*?

(Answer) *Tiryak-loka kshetra-purvanupurvi* is like this—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्र परिचय १३

Illustration No. 13

तिर्यक् लोक क्षेत्रानुपूर्वी

तिर्यक् लोक में मनुष्यों की प्रधानता होने से इसे मनुष्य लोक भी कहा जाता है। इसका आकार थाली जैसा गोल है तथा असंख्य योजन विस्तृत है। इसमें एक के पीछे एक द्वीप और समुद्र वलयाकार (चूड़ी के आकार) में एक दूसरे से घिरे हुए हैं। जैसे–

(१) सबसे मध्य में मेरूपवर्तत के चारों तरफ जम्बूद्वीप, (२) लवणसमुद्र, (३) धातकीखण्ड, (४) कालोदधि समुद्र, (५) पुष्करवर द्वीप। (मध्य में मानुषोत्तर पर्वत है)

इस प्रकार एक द्वीप, एक समुद्र एक दूसरे को घेरे हुए असंख्य द्वीप समुद्रों के अन्त में सबसे अन्त में स्वयंभूरमण द्वीप तथा स्वयंभूरमण समुद्र है। यह एक राज प्रमाण विस्तृत तिर्यक् लोक का अन्तिम किनारा है। जम्बूद्वीप से क्रमशः गिनती करना, तिर्यक् लोक क्षेत्रानुपूर्वी है। स्वयंभूरमण समुद्र से उल्टी गिनती करना–तिर्यक् लोक क्षेत्र पश्चानुपूर्वी है।

–सूत्र १६९

TIRYAK LOKA KSHETRA-ANUPURVI

As it is predominantly inhabited by human beings (*manushya*), Tiryak Loka is also called *Manushya Loka.* It is round shaped like a plate and innumerable *yojans* in area. Here *dveeps* (mass of land) and *samudra* (mass of water) alternatively surround each other in ring formation.

(1) *Meru* mountain at the center surrounded by *Jambudveep,* (2) *Lavan Samudra,* (3) *Dhatki Khand,* (4) *Kalodadhi Samudra,* (5) *Pushkarvar Dveep.* (*Manushottar* mountain at the center)

At the end of innumerable masses of land and water thus surrounding each other alternatively, there is the last pair of *Svayambhuraman Dveep* and sea of the same name. This is the edge of the one *Rajju* spread of *Tiryak Loka.* To count starting from *Jambu Dveep* in ascending order is *Tiryak Loka kshetra-purvanupurvi* and to count starting from *Svayambhuraman samudra* in reverse order is called *Tiryak Loka kshetra-paschanupurvi.*

—Sutra : 169

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jambudveep, Lavanasamudra, Dhatakikhandadveep, Kalodadhisamudra, Pushkaradveep, Pushkarodasamudra, Varunadveep, Varunodasamudra, Kshiradveep, Kshirodasamudra, Ghritadveep, Ghritodasamudra, Ikshuvaradveep, Ikshuvarasamudra, Nandidveep, Nandisamudra, Arunavaradveep, Arunavarasamudra, Kundaladveep, Kundalasamudra, and *Ruchakadveep, Ruchakasamudra.* (11)

Starting from *Jambudveep* (*dveep* means mass of land surrounded by water; continent; island) all these *dveep-samudra* (*samudra* means sea) surround each other without a gap. Beyond *Ruchakasamudra* after uncountable continents and seas lies *Bhujagavaradveep.* Further ahead after uncountable continents and seas lies *Kushavaradveep* followed by *Kraunchavaradveep* again after a gap of uncountable continents and seas. Beyond all these, after gaps of uncountable continents and seas, are continents and seas bearing beautiful names like *Abharana.* (12) Such as—

Abharana, Vastra, Gandh, Utpala, Tilak, Padma, Nidhi, Ratna, Varshadhar, Hrad, Nadi, Vijaya, Vakshaskar, Kalpendra. (13)

There are uncountable continents and seas having names like *Kuru, Mandar, Avaas, Koot, Nakshatra, Chandra, Suryadeva, Naag, Yaksha,* etc. and their synonyms, last one being *Svayambhuramanadveep* and *Svayambhuramanasamudra.*

This concludes the description of *Tiryak-loka kshetra-purvanupurvi* (ascending area-sequence of middle worlds).

१७०. से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?

पच्छाणुपुव्वी सयंभुरमणे य भूए य जाव जंबुद्दीवे। से तं पच्छाणुपुव्वी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७०. (प्रश्न) पश्चानुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) स्वयंभूरमणसमुद्र, भूतद्वीप आदि से लेकर जम्बूद्वीप पर्यन्त व्युत्क्रम से द्वीप-समुद्रों की गणना करने को मध्यलोकक्षेत्रपश्चानुपूर्वी कहते हैं। (सूत्र १६९ का विपरीत क्रम है यह।)

170. (Question) What is this *Tiryak-loka kshetra-pashchanupurvi* ?

(Answer) *Tiryak-loka kshetra-pashchanupurvi* is like this—Arranging areas (as mentioned in aphorism 169) from the last, *Svayambhuramanasamudra,* to the first, *Jambudveep,* in reverse order. Areas arranged in such descending sequential order is called *Tiryak-loka kshetra-pashchanupurvi* (descending area-sequence of middle worlds).

This concludes the description of *Tiryak-loka kshetra-pashchanupurvi* (descending sequence of middle worlds).

१७१. से किं तं अणाणुपुव्वी ?

अणाणुपुव्वी एयाए चेव एगादियाए एगुत्तरियाए असंखेज्जगच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णब्भासो दुरूवूणो। से तं अणाणुपुव्वी।

१७१. (प्रश्न) (मध्यलोकक्षेत्र) अनानुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) अनानुपूर्वी इस प्रकार है—एक से प्रारम्भ कर असंख्यात पर्यन्त की श्रेणी स्थापित कर उनका परस्पर गुणाकार करने पर निष्पन्न राशि में से आद्य और अन्तिम इन दो भंगों को छोड़कर मध्य के समस्त भंग मध्यलोकक्षेत्र अनानुपूर्वी है।

171. (Question) What is this *Tiryak-loka kshetra-ananupurvi* ?

(Answer) Place uncountable numbers starting from one and progressively adding one. Multiply all these numbers of this arithmetic progression and subtract 2 (depicting the ascending and descending sequence) from the result. This

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

final result is called *Tiryak-loka kshetra-ananupurvi* (random area-sequence of middle worlds).

This concludes the description of *Tiryak-loka kshetra-ananupurvi* (random area-sequence of middle worlds).

विवेचन—मध्यलोकवर्ती असंख्यात द्वीप-समुद्रों के मध्य में पहला द्वीप जम्बूद्वीप है और उसके बाद यथाक्रम से आगे-आगे समुद्र और द्वीप हैं। असंख्यात द्वीप-समुद्रों के अन्त में स्वयंभूरमण नामक समुद्र है। ये सभी द्वीप-समुद्र दूने-दूने विस्तार वाले, पूर्व-पूर्व समुद्र को वेष्टित किये हुए और चूड़ी के आकार वाले हैं। लेकिन जम्बूद्वीप लवणसमुद्र से घिरा हुआ थाली के आकार का है। इसके द्वारा अन्य कोई समुद्र वेष्टित नहीं है। इन असंख्यात द्वीपों की कोई गणना नहीं है। मध्यलोक के मध्य में स्थित यह जम्बूद्वीप एक लाख योजन लम्बा-चौड़ा है और इसके भी मध्य में एक लाख योजन ऊँचा सुमेरुपर्वत है।

समुद्रीय जलों का स्वाद—लवण समुद्र लवण के समान रस वाले जल से पूरित है। कालोद एवं पुष्करोद का जल शुद्धोदक के रस-समान रस वाला है। वारुणोद वारुणीरसवत्, क्षीरोद क्षीररस जैसे, घृतोद घृत जैसे तथा इक्षुरस समुद्र इक्षुरस जैसे स्वाद वाला है। इसके बाद के अन्तिम स्वयंभूरमणसमुद्र को छोड़कर शेष सभी समुद्र इक्षुरस जैसे स्वाद वाले जल से युक्त हैं। स्वयंभूरमणसमुद्र के जल का स्वाद शुद्ध जल जैसा है। (अनुयोगद्वार मलधारी हेमचन्द्र वृत्ति २२१)

Elaboration—Among the uncountable sets of continents surrounded by seas the first continent is *Jambudveep*. This is followed by others in aforesaid order. At the end of this uncountable series of continents surrounded by seas is the *Svayambhuramanasamudra*. These continents and seas get progressively double in area and surround the preceding one like concentric rings. Only *Jambudveep*, surrounded by *Lavanasamudra*, does not surround any sea and is like a circular dish. These numerous masses of land are uncountable. This *Jambudveep*, located at the center of the middle world is one hundred thousand square *yojans* in area (one *yojan* is approximately eight miles). At the center of this *Jambudveep* is *Meru* mountain that is one hundred thousand *yojans* high.

Taste of sea water : The *Lavanasamudra* is filled with water that tastes like salt (*lavana*). The water in *Kaloda* and

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Pushkaroda seas tastes like pure water. The water in *Varunoda, Kshiroda, Ghritoda,* and *Ikshuvara* seas tastes like wine (*varuni*), milk (*kshira*), butter (*ghrit*), and sugar-cane juice (*ikshurasa*) respectively. Water of all seas after this tastes like sugar-cane juice, only that of the last one, *Svayambhuramanasamudra,* tastes like pure water. (*Vritti* by Hemachandra p. 221)

ऊर्ध्वलोकक्षेत्रानुपूर्वी

१७२. उड्ढलोगखेत्ताणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता। तं जहा–(१) पुव्वाणुपुव्वी, (२) पच्छाणुपुव्वी, (३) अणाणुपुव्वी।

१७२. ऊर्ध्वलोकक्षेत्रानुपूर्वी तीन प्रकार की है। जैसे–(१) पूर्वानुपूर्वी, (२) पश्चानुपूर्वी, (३) अनानुपूर्वी।

URDHVALOKA KSHETRA-ANUPURVI

172. *Urdhvaloka kshetra-anupurvi* is of three types—(1) *Purvanupurvi,* (2) *Pashchanupurvi,* and (3) *Ananupurvi.*

१७३. से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?

पुव्वाणुपुव्वी (१) सोहम्मे, (२) ईसाणे, (३) सणंकुमारे, (४) माहिंदे, (५) बंभलोए, (६) लंतए, (७) महासुक्के, (८) सहस्सारे, (९) आणते, (१०) पाणते, (११) आरणे, (१२) अच्चुते (१३) गेवेज्जविमाणा, (१४) अणुत्तरविमाणा, (१५) ईसिपब्भारा। से तं पुव्वाणुपुव्वी।

१७३. (प्रश्न) ऊर्ध्वलोकक्षेत्रविषयक पूर्वानुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) (१) सौधर्म, (२) ईशान, (३) सनत्कुमार, (४) माहेन्द्र, (५) ब्रह्मलोक, (६) लान्तक, (७) महाशुक्र, (८) सहस्रार, (९) आनत, (१०) प्राणत, (११) आरण, (१२) अच्युत, (१३) ग्रैवेयकविमान, (१४) अनुत्तरविमान, (१५) ईषत्प्राग्भारापृथ्वी, इस क्रम से ऊर्ध्वलोक के क्षेत्रों की गणना करना ऊर्ध्वलोक क्षेत्रपूर्वानुपूर्वी हैं।

173. (Question) What is this *Urdhvaloka kshetra-purvanupurvi* ?

(Answer) *Urdhvaloka kshetra-purvanupurvi* is like this—(1) *Saudharma,* (2) *Ishan,* (3) *Sanatkumar,*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(4) *Mahendra,* (5) *Brahmaloka,* (6) *Lantak,* (7) *Mahashukra,* (8) *Sahasrara,* (9) *Anat,* (10) *Pranat,* (11) *Arana,* (12) *Achyut,* (13) *Graveyak,* (14) *Anuttaraviman,* (15) *Ishatpragbharaprithvi.* Areas (upper worlds or abodes of gods) arranged in such ascending sequential order is called *Urdhvaloka kshetra-purvanupurvi* (ascending area-sequence of upper worlds).

This concludes the description of *Urdhvaloka kshetra-purvanupurvi* (ascending area-sequence of upper worlds).

१७४. से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?

पच्छाणुपुव्वी ईसिपब्भारा १५ जाव सोहम्मे १। से तं पच्छाणुपुव्वी।

१७४. (प्रश्न) ऊर्ध्वलोकक्षेत्रपश्चानुपूर्वी क्या है?

(उत्तर) ईषत्प्राग्भाराभूमि से सौधर्मकल्प तक के क्षेत्रों की व्युत्क्रम से गणना करना ऊर्ध्वलोक क्षेत्रपश्चानुपूर्वी हैं।

174. (Question) What is this *Urdhvaloka kshetra-pashchanupurvi* ?

(Answer) *Urdhvaloka kshetra-pashchanupurvi* is like this—Arranging areas (as mentioned in aphorism 173) from the last, *Ishatpragbharaprithvi,* to the first, *Saudharma,* in reverse order. Areas arranged in such descending sequential order is called *Urdhvaloka kshetra-pashchanupurvi* (descending area-sequence of upper worlds).

This concludes the description of *Urdhvaloka kshetra-pashchanupurvi* (descending sequence).

१७५. से किं तं अणाणुपुव्वी ?

अणाणुपुव्वी एयाए चेव एगादिगाए एगुत्तरियाए पण्णरसगच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णब्भासो दुरूवूणो। से तं अणाणुपुव्वी।

१७५. (प्रश्न) ऊर्ध्वलोकक्षेत्र अनानुपूर्वी क्या है?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(उत्तर) आदि में एक रखकर एकोत्तरवृद्धि द्वारा निर्मित पन्द्रह पर्यन्त की श्रेणी में परस्पर गुणा करने पर प्राप्त राशि में से आदि और अन्त के दो भंगों को कम करने पर शेष भंगों को ऊर्ध्वलोकक्षेत्रअनानुपूर्वी कहते हैं।

175. (Question) What is this *Urdhvaloka kshetra-ananupurvi* ?

(Answer) Place fifteen numbers starting from one and progressively adding one. Multiply all these numbers of this arithmetic progression and subtract 2 (depicting the ascending and descending sequence) from the result. This final result is called *Urdhvaloka kshetra-ananupurvi* (random area-sequence of upper worlds).

This concludes the description of *Urdhvaloka kshetra-ananupurvi* (random area-sequence of upper worlds).

विवेचन–प्रस्तुत क्षेत्रानुपूर्वी आदि में अधोलोक, मध्यलोक तथा ऊर्ध्वलोक सम्बन्धी विस्तृत वर्णन जानने के इच्छुक मलधारी हेमचन्द्र कृत टीका तथा श्री ज्ञानमुनि कृत हिन्दी टीका भाग १ पृ. ७०० से ७५० तक देखें।

Elaboration—Those who desire to study more details about these lower, middle, and higher worlds may study *Tika* by *Maldhari Hemachandra* and Hindi *Tika* by Jnana Muni Part I, p. 700-750.

क्षेत्रानुपूर्वी के वर्णन का द्वितीय प्रकार

१७६. अहवा ओवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता। तं जहा–(१) पुव्वाणुपुव्वी, (२) पच्छाणुपुव्वी, (३) अणाणुपुव्वी।

१७६. अथवा औपनिधिकी क्षेत्रानुपूर्वी तीन प्रकार की है। यथा–(१) पूर्वानुपूर्वी, (२) पश्चानुपूर्वी, और (३) अनानुपूर्वी।

ANOTHER AUPANIDHIKI KSHETRA-ANUPURVI

176. Also, this *Aupanidhiki kshetra-anupurvi* (orderly area-sequence) is of three types—(1) *Purvanupurvi,* (2) *Pashchanupurvi,* and (3) *Ananupurvi.*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७७. से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?

पुव्वाणुपुव्वी एगपएसोगाढे दुपएसोगाढे जाव दसपएसोगाढे जाव असंखेज्जपएसोगाढे। से तं पुव्वाणुपुव्वी।

१७७. (प्रश्न) (औपनिधिकी क्षेत्रानुपूर्वी सम्बन्धी) पूर्वानुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) एकप्रदेशावगाढ, द्विप्रदेशावगाढ यावत् दसप्रदेशावागाढ़ यावत् असंख्यातप्रदेशावगाढ़ क्रम से क्षेत्र का कथन करना पूर्वानुपूर्वी हैं।

177. (Question) What is this *Purvanupurvi* (in context of *Aupanidhiki kshetra-anupurvi* or orderly area-sequence) ?

(Answer) *Purvanupurvi* is like this—(1) One *pradesh* (space-point), (2) An area of two space-points (*pradeshas*), (and so on...), (10) An area of ten space-points (*pradeshas*), (and so on...) (y) An area of uncountable space-points (*pradeshas*). The arrangement of aggregates of space points placed in such ascending sequential order is called *purvanupurvi* (ascending sequence).

This concludes the description of *purvanupurvi* (ascending sequence).

१७८. से किं पच्छाणुपुव्वी ?

पच्छाणुपुव्वी असंखेज्जपएसोगाढे जाव एगपएसोगाढे। से तं पच्छाणुपुव्वी।

१७८. (प्रश्न) पश्चानुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) असंख्यातप्रदेशावगाढ़ यावत् एक प्रदेशावगाढ रूप में व्युत्क्रम से क्षेत्र का कथन करना पश्चानुपूर्वी हैं।

178. (Question) What is this *Pashchanupurvi* ?

(Answer) *Pashchanupurvi* is like this—(z) An aggregate (*skandh*) of uncountable space points (*pradesh*), (and so on...) (1) One space point (*pradesh*). The arrangement of aggregates of space points placed in such descending

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

sequential order is called *pashchanupurvi* (descending sequence).

This concludes the description of *pashchanupurvi* (descending sequence).

१७९. से किं तं अणाणुपुव्वी ?

अणाणुपुव्वी एयाए चेव एगादियाए एगुत्तरियाए असंखेज्जगच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरूवूणो। से तं अणाणुपुव्वी। से तं ओवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी। से तं खेत्ताणुपुव्वी।

१७९. (प्रश्न) अनानुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) एक से प्रारम्भ कर एकोत्तरं वृद्धि द्वारा असंख्यात प्रदेश पर्यन्त की स्थापित श्रेणी का परस्पर गुणा करने से निष्पन्न राशि में से आदि और अन्तिम इन दो रूपों को कम करने पर क्षेत्रविषयक अनानुपूर्वी बनती है।

इस प्रकार से औपनिधिकी क्षेत्रानुपूर्वी की एवं साथ ही क्षेत्रानुपूर्वी की वक्तव्यता समाप्त हुई।

179. (Question) What is this *Ananupurvi* ?

(Answer) Place numbers starting from one and progressively adding one up to infinity (aggregate of infinite particles). Multiply all the numbers of this arithmetic progression and subtract 2 (depicting the ascending and descending sequence) from the result. This final result is called *ananupurvi* (random sequence).

This concludes the description of *ananupurvi* (random sequence). This concludes the description of *Aupanidhiki kshetra-anupurvi* (orderly area-sequence). This also concludes the description of *kshetra-anupurvi* (area-sequence).

कालानुपूर्वीप्ररूपणा

१८०. से किं तं कालाणुपुव्वी ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कालाणुपुव्वी दुविहा पण्णत्ता। तं जहा–(१) ओवणिहिया य, (२) अणोवणिहिया य।

१८०. (प्रश्न) कालानुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) कालानुपूर्वी के दो प्रकार हैं, यथा–(१) औपनिधिकी, और (२) अनौपनिधिकी।

KAAL-ANUPURVI

180. (Question) What is this *kaal-anupurvi* (time-sequence) ?

(Answer) *Kaal-anupurvi* (time-sequence) is of two types—(1) *Aupanidhiki kaal-anupurvi* (orderly time-sequence) and (2) *Anaupanidhiki kaal-anupurvi* (disorderly time-sequence).

१८१. तत्थ णं जा सा ओवणिहिया सा ठप्पा।

१८१. इनमें से औपनिधिकी कालानुपूर्वी स्थाप्य है। तथा–

181. Out of these, *Aupanidhiki kaal-anupurvi* (orderly time-sequence) is worth installation only (worth a mention only because of its limited scope).

१८२. तत्थ णं जा सा अणोवणिहिया सा दुविहा पण्णत्ता। तं जहा–(१) णेगम–ववहाराणं, (२) संगहस्स य।

१८२. अनौपनिधिकी कालानुपूर्वी दो प्रकार की है–(१) नैगम और व्यवहारनयसम्मत, तथा (२) संग्रहनयसम्मत।

182. And *anaupanidhiki kaal-anupurvi* (disorderly time-sequence) is of two types—(1) *Naigam-vyavahar naya sammat* (conforming to coordinated and particularized viewpoints) and (2) *Samgrahanaya sammat* (conforming to generalized viewpoint).

नैगम–व्यवहारनयसम्मत अनौपनिधिकी कालानुपूर्वी

१८३. से किं तं णेगम–ववहाराणं अणोवणिहिया कालाणुपुव्वी ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णेगम-ववहाराणं अणोवणिहिया कालाणुपुव्वी पंचविहा पण्णत्ता। तं जहा- (१) अट्ठपयपरूवणया, (२) भंगसमुक्कित्तणया, (३) भंगोवदंसणया, (४) समोतारे, (५) अणुगमे।

१८३. (प्रश्न) नैगम और व्यवहारनयसम्मत अनौपनिधिकी कालानुपूर्वी क्या है?

(उत्तर) (नैगम और व्यवहारनयसम्मत) अनौपनिधिकी कालानुपूर्वी के पाँच प्रकार हैं-(१) अर्थपदप्ररूपणता, (२) भंगसमुत्कीर्तनता, (३) भंगोपदर्शनता, (४) समवतार, (५) अनुगम।

NAIGAM-VYAVAHAR NAYA SAMMAT ANAUPANIDHIKI KAAL-ANUPURVI

183. (Question) What is this *Naigam-vyavahar naya sammat anaupanidhiki kaal-anupurvi* (disorderly time-sequence conforming to coordinated and particularized viewpoints)?

(Answer) *Naigam-vyavahar naya sammat anaupanidhiki kaal-anupurvi* (disorderly time-sequence conforming to coordinated and particularized viewpoints) is of five types—(1) *Arth-padaprarupana* (semantics), (2) *Bhang-samutkirtanata* (enumeration of divisions or *bhangs*), (3) *Bhangopadarshanata* (explication of divisions or *bhangs*), (4) *Samavatara* (compatible assimilation), and (5) *Anugam* (systematic elaboration).

विवेचन-जिस प्रकार द्रव्यानुपूर्वी का आधार है पुद्गल द्रव्य, तथा क्षेत्रानुपूर्वी का आधार है आकाश प्रदेश। उसी प्रकार कालानुपूर्वी का आधार है-काल, पर्याय। तीन समय, चार समय यावत् असंख्यात समय से उपलक्षित, द्रव्य कालानुपूर्वी कहलाते हैं।

असंख्यात समय की स्थिति वाले द्रव्य को कालानुपूर्वी में ग्रहण किया है, किन्तु किसी भी द्रव्य की अनन्त समय की स्थिति नहीं होती इसलिए यहाँ अनन्त समय की स्थिति वाली कालानुपूर्वी का उल्लेख नहीं है।

Elaboration—As the basis of *dravya-anupurvi* is matter and that of *kshetra anupurvi* is space-point, in the same way the

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

basis of *kaal-anupurvi* is time. Things arranged in context of units of time, such as three *samayas* (indivisible or ultimate fraction of time taken as unit), four *samayas* and so on up to uncountable *samayas,* are called *kaal-anupurvi* (time-sequence).

Things with existence measured in uncountable *samayas* have been included in *kaal-anupurvi* but as nothing has an existence measured in infinite *samayas* there is no mention of *kaal-anupurvi* of infinite *samayas.*

(The definition and elaboration of *Arth-padaprarupana* or semantics and other terms should be taken as mentioned in aphorisms 98 and 99 in connection with *Dravyanupurvi.*)

(क) अर्थपदप्ररूपणता

१८४. से किं तं णेगम–ववहाराणं अट्ठपदपरूवणया ?

णेगम–ववहाराणं अट्ठपदपरूवणया तिसमयट्ठिईए आणुपुव्वी जाव दससमयट्ठिईए आणुपुव्वी संखेज्जसमयट्ठिईए आणुपुव्वी असंखेज्जसमयट्ठिईए आणुपुव्वी।

एगसमयट्ठिईए अणाणुपुव्वी।

दुसमयट्ठिईए अवत्तव्वए।

तिसमयट्ठिईयाओ आणुपुव्वीओ जाव संखेज्जसमयट्ठिईयाओ आणुपुव्वीओ; असंखेज्जसमयट्ठिईयाओ आणुपुव्वीओ।

एगसमयट्ठिईयाओ अणाणुपुव्वीओ। दुसमयट्ठिईयाइं अवत्तव्वयाइं। से तं णेगम–ववहाराणं अट्ठपयपरूवणया।

१८४. (प्रश्न) नैगम–व्यवहारनयसम्मत अर्थपदप्ररूपणता क्या है ?

(उत्तर) (नैगम और व्यवहारनयसम्मत) अर्थपदप्ररूपणता इस प्रकार है–तीन समय की स्थिति वाला द्रव्य, आनुपूर्वी है यावत् दस समय, संख्यात समय, असंख्यात समय की स्थिति वाला द्रव्य, आनुपूर्वी है।

एक समय की स्थिति वाला द्रव्य, अनानुपूर्वी है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दो समय की स्थिति वाला द्रव्य, अवक्तव्यक है।

तीन समय की स्थिति वाले अनेक द्रव्य आनुपूर्वियाँ हैं यावत् संख्यातसमयस्थितिक, असंख्यातमसमयस्थितिक द्रव्य आनुपूर्वियाँ हैं।

एक समय की स्थिति वाले अनेक द्रव्य अनेक अनानुपूर्वियाँ हैं।

दो समय की स्थिति वाले अनेक द्रव्य अनेक अवक्तव्यक रूप हैं।

यह नैगम-व्यवहारनयसम्मत अर्थपदप्ररूपणता का स्वरूप है।

(A) NAIGAM-VYAVAHAR NAYA SAMMAT ARTH-PADAPRARUPANA

184. (Question) What is this *Naigam-vyavahar naya sammat arth-padaprarupana* (semantics conforming to coordinated and particularized viewpoints) ?

(Answer) *Naigam-vyavahar naya sammat arth-padaprarupana* (semantics conforming to coordinated and particularized viewpoints) is described as follows :

Substance with an existence of three *samaya* (ultimate-time-fraction) is a sequential configuration (*anupurvi*). In the same way substances with an existence of four *samayas* (ultimate-time-fraction), (and so on...), ten *samayas* (ultimate-time-fraction), countable, and uncountable *samayas* (ultimate-time-fraction) are all sequential configurations (*anupurvis*).

Substance with an existence of *one samaya* (ultimate-time-fraction) is non-sequential (*ananupurvi*).

Substance with an existence of two *samayas* (ultimate-time-fraction) is inexpressible (*avaktavya*).

There also are numerous sequential configurations (*anupurvis*) of such substances of three *samayas* (ultimate-time-fraction) existence, (and so on up to) uncountable *samayas* (ultimate-time-fraction) existence.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

There also are numerous *ananupurvi* (non-sequential) substances and configurations with one *samayas* existence.

There also are numerous inexpressible (*avaktavya*) substances and configurations with two *samaya* existence.

This concludes the description of *Naigam-vyavahar naya sammat arth-padaprarupana* (semantics conforming to coordinated and particularized viewpoints).

१८५. एयाए णं णेगम–ववहाराणं अट्ठपयपरूवणयाए जाव भंगसमुक्कित्तणया कज्जति।

१८५. इस नैगम–व्यवहारनयसम्मत अर्थपदप्ररूपणता के द्वारा यावत् भंगसमुत्कीर्तनता की जाती है।

185. This *Naigam-vyavahar naya sammat arth-padaprarupana* (semantics conforming to coordinated and particularized viewpoints) is used to derive and state *bhang-samutkirtanata* (enumeration of divisions or *bhangs*).

(ख) भंगसमुत्कीर्तनता

१८६. से किं तं णेगम–ववहाराणं भंगसमुक्कित्तणया ?

णेगम–ववहाराणं भंगसमुक्कित्तणया अत्थि आणुपुव्वी, अत्थि अणाणुपुव्वी, अत्थि अवत्तव्वए, एवं दव्वाणुपुव्वीगमेणं कालाणुपुव्वीए वि ते चेव छव्वीसं भंगा भाणियव्वा जाव से तं णेगम–ववहाराण भंगसमुक्कित्तणया।

१८६. (प्रश्न) नैगम–व्यवहारनयसम्मत भंगसमुत्कीर्तनता क्या है ?

(उत्तर) आनुपूर्वी है, अनानुपूर्वी है, अवक्तव्यक है, इस प्रकार द्रव्यानुपूर्वीवत् कालानुपूर्वी के भी २६ भंग जानना चाहिए यावत् यह नैगम–व्यवहारनयसम्मत भंगसमुत्कीर्तनता का स्वरूप है।

(B) KAAL-ANUPURVI : BHANG-SAMUTKIRTANATA

186. (Question) What is this *naigam-vyavahar naya sammat bhang-samutkirtanata* (enumeration of divisions or

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

bhangs conforming to coordinated and particularized viewpoints)?

Naigam-vyavahar naya sammat bhang-samutkirtanata (enumeration of divisions or *bhangs* conforming to coordinated and particularized viewpoints) is as follows—

(1) There is an *anupurvi* (sequence), (2) There is an *ananupurvi* (non-sequence), (3) There is an *avaktavya* (inexpressible), and so on..., including the twenty six divisions as mentioned in context of *Dravyanupurvi* (see aphorisms 101 - 103).

१८७. एयाए णं णेगम–ववहाराणं जाव किं पओयणं ?

एयाए णं णेगम–ववहाराणं जाव भंगोवदंसणया कज्जति।

१८७. (प्रश्न) इस नैगम–व्यवहारनयसम्मत यावत् (भंगसमुत्कीर्तनता का) क्या प्रयोजन है ?

(उत्तर) इस नैगम–व्यवहारनयसम्मत यावत् (भंगसमुत्कीर्तनता) से भंगोपदर्शनता की जाती है।

187. (Question) What is the purpose of this *naigam-vyavahar naya sammat bhang-samutkirtanata* (enumeration of divisions or *bhangs* conforming to coordinated and particularized viewpoints)?

(Answer) This *naigam-vyavahar naya sammat bhang-samutkirtanata* (enumeration of divisions or *bhangs* conforming to coordinated and particularized viewpoints) is used to derive and state *Bhangopadarshanata* (explication of divisions or *bhangs*).

विवेचन–द्रव्यानुपूर्वी की तरह कालानुपूर्वी के प्रसंग में भी छब्बीस भंग जानना चाहिए। वे छब्बीस भंग इस प्रकार हैं–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आनुपूर्वी आदि एकवचनान्त तीन पद के असंयोगी तीन भंग हैं और इसी प्रकार बहुवचनान्त पद के तीन भंग बनते हैं। इस प्रकार पृथक्-पृथक् छह भंग हो जाते हैं और संयोगपक्ष में इन तीनों पदों के द्विसंयोगी भंग तीन होते हैं। इनमें एक-एक भंग में दो-दो का संयोग होने पर एकवचन और बहुवचन को लेकर चार-चार भंग हो जाते हैं। इस प्रकार तीनों भंगों के द्विकसंयोगी कुल भंग बारह बनते हैं तथा त्रिकसंयोग में एकवचन और बहुवचन को लेकर आठ भंग बनते हैं। इस प्रकार सब भंग मिलाकर (६+१२+८=२६) छब्बीस होते हैं। द्रव्यानुपूर्वी के प्रसंग में सूत्र १०१ में इनके नाम बताये जा चुके हैं। तदनुसार यहाँ भी वही नाम समझ लेना चाहिए।

Elaboration—Like *dravya-anupurvi* (physical sequence) there are 26 divisions or *bhangs* conforming to *naigam-vyavahar naya* (coordinated and particularized viewpoints) in case of *kaal-anupurvi.* These are derived with mutual combination and separation. Separately taken there are six divisions or *bhangs,* three singular and three plural. Taken in combinations of two, there are three sets of four divisions or *bhangs.* In each of these sets combinations of a singular and a plural of each of the three categories make four divisions or *bhangs* each making three sets of four divisions or *bhangs* totaling to twelve divisions or *bhangs.* Taken in combination of three with singular and plural of each category there are eight divisions or *bhangs.* Thus adding together six, twelve, and eight divisions or *bhangs* make a total of twenty six divisions or *bhangs.* (refer to aphorism 101 for more details)

(ग) भंगोपदर्शनता

१८८. से किं तं णेगम-ववहाराणं भंगोवदंसणया ?

णेगम-ववहाराणं भंगोवदंसणया-(१) तिसमयट्ठितीए आणुपुव्वी, (२) एगसमयट्ठितीए अणाणुपुव्वी, (३) दुसमयट्ठितीए अवत्तव्वए, (४) तिसमयट्ठितीयाओ आणुपुव्वीओ, (५) एगसमयट्ठितीयाओ अणाणुपुव्वीओ, (६) दुसमयट्ठितीयाइं अवत्तव्वयाइं। एवं दव्वाणुगमेणं ते चेव छव्वीसं भंगा भाणियव्वा, जाव से तं णेगम-ववहाराणं भंगोवदंसणया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८८. (प्रश्न) नैगम और व्यवहारनयसम्मत भंगोपदर्शनता क्या है?

(उत्तर) नैगम और व्यवहारनयसम्मत भंगोपदर्शनता इस प्रकार है–(१) तीन समय की स्थिति वाला एक–एक परमाणु से अनन्ताणु पर्यन्त द्रव्य आनुपूर्वी है, (२) एक समय की स्थिति वाला (एक–एक परमाणु आदि) द्रव्य अनानुपूर्वी है और (३) दो समय की स्थिति वाला (परमाणु आदि द्रव्य) अवक्तव्यक है। (४) तीन समय की स्थिति वाले अनेक द्रव्य 'आनुपूर्वियाँ' हैं। (५) एक समय की स्थिति वाले अनेक द्रव्य 'अनानुपूर्वियाँ' तथा (६) दो समय की स्थिति वाले द्रव्य 'अवक्तव्यक' हैं। इस प्रकार यहाँ भी द्रव्यानुपूर्वी के पाठानुरूप छब्बीस भंगों के नाम जानने चाहिए, यावत् यह भंगोपदर्शनता का आशय हैं। (सूत्र १०१ के अनुसार भंग समझें)

(C) NAIGAM-VYAVAHAR NAYA SAMMAT BHANGOPADARSHANATA

188. (Question) What is this *naigam-vyavahar naya sammat bhangopadarshanata* (explication of divisions or *bhangs* conforming to coordinated and particularized viewpoints)?

(Answer) *Naigam-vyavahar naya sammat bhangopadarshanata* (explication of divisions or *bhangs* conforming to coordinated and particularized viewpoints) is as follows :

With respect to *kaal* (time) there is an *anupurvi* (sequential) substance of one to infinite *paramanu* with existence of three *samayas.* There is an *ananupurvi* (non-sequential) substance of one to infinite *paramanu* with existence of one *samaya.* There is an *avaktavya* (inexpressible) substance of one to infinite *paramanu* with existence of two *samayas.* There are many such triad *anupurvis* (sequential) substances with existence of three *samayas.* There are many such *ananupurvis* (non-sequential) substances with existence of one *samaya.* There are many such biunial-aggregate *avaktavyas* (inexpressibles) substances with existence of two *samayas.*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

And so on including the twenty six divisions as mentioned in context of *Dravyanupurvi.* (see aphorism 101-103)

This concludes the description of *Naigam-vyavahar naya sammat bhangopadarshanata* (explication of divisions or *bhangs* conforming to coordinated and particularized viewpoints).

(घ) समवतार

१८९. से किं तं समोयारे ? समोयारे णेगम-ववहाराणं आणुपुव्विदव्वाइं कहिं समोयरंति ? जाव तिण्णि वि सट्ठाणए समोयरंति त्ति भाणियव्वं। से तं समोयारे।

१८९. (प्रश्न) समवतार क्या है ? नैगम-व्यवहारनयसम्मत अनेक आनुपूर्वी द्रव्यों का कहाँ समवतार (अन्तर्भाव) होता है ?

(उत्तर) तीनों ही स्व-स्व स्थान में समवतरित होते हैं। इस प्रकार समवतार का स्वरूप जानना चाहिए।

(D) KAALNUPURVI : SAMAVATARA

189. (Question) What is this *samavatara* (compatible assimilation) ?

Where can there be a compatible assimilation (*samavatara*) of *naigam-vyavahar naya sammat anupurvi dravya* (sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) ?

(Answer) All the three can have compatible assimilation (*samavatara*) with substances of their own class and not with those of other classes.

This concludes the description of *samavatara* (compatible assimilation).

विवेचन-सूत्र में समवतार सम्बन्धी आशय का संकेत मात्र किया है। स्पष्टीकरण इस प्रकार है-

समवतार अर्थात् उन-उन द्रव्यों का अन्य द्रव्यों में अन्तर्भूत होना। इस अपेक्षा पूर्वपक्ष के रूप में निम्नलिखित प्रश्न उपस्थित किये हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्या नैगम और व्यवहारनयसम्मत समस्त आनुपूर्वीद्रव्य, आनुपूर्वीद्रव्यों में, अनानुपूर्वीद्रव्यों में तथा अवक्तव्यकद्रव्यों में समवतरित होते हैं ?

इसी प्रकार के तीन-तीन प्रश्न अनानुपूर्वी और अवक्तव्यक द्रव्य-विषयक भी जानना चाहिए। इस तरह कुल नौ प्रश्न हैं। जिनका उत्तर इस प्रकार है-

(१) नैगम और व्यवहारनयसम्मत सभी आनुपूर्वीद्रव्य आनुपूर्वीद्रव्यों में ही समाविष्ट होते हैं। किन्तु अनानुपूर्वी और अवक्तव्यक द्रव्यों में समाविष्ट नहीं होते हैं।

(२) नैगम और व्यवहारनयसम्मत समस्त अनानुपूर्वी अपनी जाति (अनानुपूर्वीद्रव्य) में समाविष्ट होते हैं। उनका विजातीय आनुपूर्वी या अवक्तव्य द्रव्यों में समवतार नहीं होता है।

(३) नैगम और व्यवहारनयसम्मत अवक्तव्यकद्रव्य अवक्तव्यकद्रव्यों में ही अन्तर्भूत होते हैं, अन्य आनुपूर्वी आदि द्रव्यों में नहीं।

Elaboration—The aphorism gives only brief indication regarding *samavatara* (compatible assimilation). The details are as follows—

Samavatara means compatible assimilation of various substances with other substances. In this regard the inquiry is in the form of three questions.

Can all N*aigam-vyavahar naya sammat anupurvi dravya* (sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) have compatible assimilation (*samavatara*) with *anupurvi* (sequential) substances ? or with *ananupurvi* (non-sequential) substances ? or with inexpressible (*avaktavya*) substances ?

Similarly three questions each regarding *ananupurvi* (non-sequential) substances and inexpressible (*avaktavya*) substances have been put forth. Thus there are nine questions in all. The answers are as follows—

(1) All *Naigam-vyavahar naya sammat anupurvi dravya* (sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) can have compatible assimilation (*samavatara*) with *anupurvi* (sequential) substances only and not with *ananupurvi* (non-sequential) substances or inexpressible (*avaktavya*) substances.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(2) All *Naigam-vyavahar naya sammat ananupurvi dravya* (non-sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) can have compatible assimilation (*samavatara*) only with substances of their own class (non-sequential) and not with *anupurvi* (sequential) substances, or inexpressible (*avaktavya*) substances.

(3) All *Naigam-vyavahar naya sammat avaktavya dravya* (inexpressible substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) can have compatible assimilation (*samavatara*) only with inexpressible (*avaktavya*) substances and not with *anupurvi* (sequential) substances or *ananupurvi* (non-sequential) substances.

(ङ) अनुगम

१९०. से किं तं अणुगमे ?

अणुगमे णवविहे पण्णत्ते। तं जहा–

संतपयपरूवणया १ जाव अप्पाबहुं चेव ९ ॥१५॥

१९०. (प्रश्न) अनुगम क्या है ?

(उत्तर) अनुगम नौ प्रकार का कहा है। जैसे–(१) सत्पदप्ररूपणा यावत् (९) अल्पबहुत्व। (सूत्र १०५ के अनुसार नौ प्रकार हैं)

(E) KAALNUPURVI : ANUGAM

190. (Question) What is this *anugam* (systematic elaboration)?

(Answer) *Anugam* (systematic elaboration) is of nine kinds—(1) *satpadprarupana,* and so on up to (9) *alpabahutva.* (further details should be taken as mentioned in context of *Dravyanupurvi* in aphorism 105)

(ङ-१) सत्पदप्ररूपणता

१९१. णेगम–ववहाराणं आणुपुव्विदव्वाइं किं अत्थि णत्थि ?

नियमा तिण्णि वि अत्थि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१९१. (प्रश्न) नैगम और व्यवहारनयसम्मत आनुपूर्वी द्रव्य हैं या नहीं हैं?

(उत्तर) नियमतः ये तीनों द्रव्य हैं।

(E-1) KAALNUPURVI : SATPADPRARUPANA-DVAR

191. (Question) Do the *naigam-vyavahar naya sammat anupurvi dravya* (sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) exist or not?

(Answer) Indeed, as a rule all the three (*anupurvi, ananupurvi,* and *avaktavya*) exist.

(ङ-२) द्रव्यप्रमाण

१९२. णेगम-ववहाराणं आणुपुव्विदव्वाइं किं संखेज्जाइं असंखेज्जाइं अणंताइं?

तिण्णि वि नो संखेज्जाइं, असंखेज्जाइं, नो अणंताइं।

१९२. (प्रश्न) नैगम-व्यवहारनयसम्मत आनुपूर्वी आदि द्रव्य संख्यात हैं, असंख्यात है या अनन्त हैं?

(उत्तर) तीनों द्रव्य संख्यात नहीं है, अनन्त नहीं हैं, परन्तु असंख्यात हैं।

(E-2) KAALNUPURVI : DRAVYAPRAMANA-DVAR

192. (Question) According to the *naigam-vyavahar naya* (coordinated and particularized viewpoints) are the *anupurvi dravya* (sequential substances) countable, uncountable, or infinite (numerically)?

(Answer) All the three are neither countable nor infinite but are uncountable (numerically).

विवेचन–आनुपूर्वी आदि द्रव्यों को असंख्यात बताने का कारण यह है कि लोक में तीन समय की स्थिति वाले द्रव्य तो अनन्त हैं, किन्तु तीन समय आदि की स्थिति वाले प्रत्येक परमाणु आदि की कालावधि की अपेक्षा उनमें एकत्व है। क्योंकि कालानुपूर्वी में काल की प्रधानता है और द्रव्यबहुत्व की गौणता। इसलिये तीन समय, चार समय आदि की, एक समय की और दो समय की स्थिति वाले जितने भी परमाणु आदि अनन्त द्रव्य हैं वे सब अपनी-अपनी स्थिति की अपेक्षा से एक एक आनुपूर्वी आदि द्रव्य रूप हैं अर्थात् तीन समय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

की स्थिति वाले अनन्त द्रव्य एक ही आनुपूर्वी हैं। इसी प्रकार चार समय की स्थिति वाले अनन्त द्रव्य एक आनुपूर्वी हैं यावत् दस समय की स्थिति वाले यावत् असंख्य समय की स्थिति वाले द्रव्यों की एक-एक आनुपूर्वी है।

अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्य असंख्यात कैसे—यद्यपि एक समय की स्थिति वाले और दो समय की स्थिति वाले द्रव्यों में प्रत्यके द्रव्य अनन्त है। लेकिन लोक के केवल असंख्यात प्रदेश हैं, अतः उनके अवगाह भेद असंख्यात हैं। एक समय की स्थिति वाले और दो समय की स्थिति वाले जितने भी द्रव्य हैं, उनमें अवगाहना के संदर्भ में यह भिन्नता है। अतएव इस भिन्नता के कारण प्रत्येक द्रव्य असंख्यात हैं। तात्पर्य यह है कि लोक असंख्यातप्रदेशी हैं, उनकी वर्तना हेतु काल के समय भी असंख्य है, अतः लोक में एक समय की स्थिति वाले और दो समय की स्थिति वाले द्रव्यों के रहने के स्थान असंख्यात हैं। इसलिए एक समय की और दो समय की स्थिति वाले प्रत्येक द्रव्य में असंख्यातता सिद्ध है।

Elaboration—The reason for stating *anupurvi* and other substances as uncountable is that although there are infinite substances in the universe with three *samaya* existence, there is a uniformity in all substances with one or more *paramanus* in context of time of existence. Because in context of *kaal-anupurvi* (time sequence) more emphasis is on time (*kaal*) and less on substantiality (*dravyatva*), all the infinite substances including *paramanus* of a specific period of existence (one, two, three, four *samaya* and so on) are counted as just one (sequential, etc.) substance. In other words all the infinite substances with three *samaya* existence form just one *anupurvi* (sequence). In the same way all the infinite substances with four *samaya* existence form just one *anupurvi* (sequence). And so on up to uncountable *samaya* existence.

Why *ananupurvi* and *avaktavya* (inexpressible) substances are uncountable ?—Each type of substances having one and two *samay* existence is infinite in number. But there are only uncountable space points in the universe. Thus the variations in terms of occupancy can only be uncountable. This numerical variation in all substances having one or two *samaya* existence is in context of occupancy. It is due to this variation that substances of each said type are uncountable in number and not

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

infinite. In other words, the universe is constituted of uncountable space-points and related to that the fractional units of time (*samaya*) are also uncountable. This indicates that the number of spacepoints available to substances having one and two *samaya* existence for occupancy is uncountable. This proves that the total number of substances having one and two *samaya* existence is only uncountable not infinite.

(ङ-३, ४) क्षेत्र और स्पर्शना प्ररूपणा

१९३. णेगम-ववहाराणं आणुपुव्विदव्वाइं लोगस्स किं संखेज्जइभागे होज्जा ? पुच्छा।

एगदव्वं पडुच्च लोगस्स संखेज्जतिभागे वा होज्जा जाव असंखेज्जेसु वा भागेसु होज्जा, देसूणे वा लोए होज्जा, णाणादव्वाइं पडुच्च नियमा-सव्वलोए होज्जा। एवं अणाणुपुव्वि-अवत्तव्वयदव्वाणि भाणियव्वाणि। जहा णेगम-ववहाराणं खेत्ताणुपुव्वीए।

१९३. (प्रश्न) नैगम-व्यवहारनयसम्मत अनेक आनुपूर्वी द्रव्य क्या लोक के संख्यात भाग में रहते हैं ? इत्यादि प्रश्न है।

(उत्तर) एक द्रव्य की अपेक्षा (समस्त आनुपूर्वीद्रव्य) लोक के संख्यात भाग में रहते हैं यावत् असंख्यात भागों में रहते हैं अथवा देशोन लोक में रहते हैं। किन्तु अनेक द्रव्यों की अपेक्षा नियमतः सर्वलोक में रहते हैं।

समस्त अनानुपूर्वी द्रव्यों और अवक्तव्य द्रव्यों की वक्तव्यता भी नैगम-व्यवहारनयसम्मत क्षेत्रानुपूर्वी के समान है।

(E-3, 4) KAALNUPURVI : KSHETRA-DVAR AND SPARSHANA-DVAR

193. (Question) In what area or section of the universe (occupied space) do the *naigam-vyavahar naya sammat anupurvi dravya* (sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) exist. Are they in its countable fraction ? (and so on as in aphorism 152)

(Answer) With respect to a single substance they exist in (1) countable fractions of the universe, and so on up to

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(5) in slightly less than the whole universe. But with respect to many substances, as a rule, they occupy the whole universe.

The details regarding *ananupurvi* (non-sequential) and *avaktavya* (inexpressible) substances are also same as mentioned in context of *naigam-vyavahar naya sammat kshetra-anupurvi* (area-sequence conforming to coordinated and particularized viewpoints)

१९४. एवं फुसणा कालाणुपुव्वीए वि तहा चेव भाणियव्वा।

१९४. इस कालानुपूर्वी में स्पर्शनाद्वार का कथन क्षेत्रानुपूर्वी जैसा ही समझना चाहिए।

194. The details regarding *sparshana-dvar* of this *kaal-anupurvi* (time sequence) are also same as mentioned in context of *kshetra-anupurvi* (area-sequence). (aphorism 153)

(ङ-५) कालप्ररूपणा

१९५. णेगम-ववहाराणं आणुपुव्विदव्वाइं कालतो केवचिरं होंति ?

एगं दव्वं पडुच्च जहण्णेणं तिण्णि समया उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं, णाणादव्वाइं पडुच्च सव्वद्धा।

१९५. (प्रश्न १) नैगम-व्यवहारनयसम्मत आनुपूर्वीद्रव्य काल की अपेक्षा (आनुपूर्वी रूप में) कितने काल तक रहते हैं ?

(उत्तर) एक आनुपूर्वीद्रव्य की अपेक्षा जघन्य स्थिति तीन समय की ओर उत्कृष्ट स्थिति असंख्यात काल की है। अनेक आनुपूर्वीद्रव्यों की अपेक्षा स्थिति सर्वकालिक है।

(E-5) KAALNUPURVI : KAAL-DVAR

195. (Question 1) In context of time, for what duration do the *naigam-vyavahar naya sammat anupurvi dravya* (sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) exist (in the same configuration) ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(Answer) With respect to a single *anupurvi* (sequential) substance they exist in the same form for a minimum of three *samayas* and maximum of uncountable time. With respect to many *anupurvi* (sequential) substances as a rule they exist always.

(२) णेगम-ववहाराणं अणाणुपुव्विदव्वाइं कालओ केवचिरं होंति ?

एगदव्वं पडुच्च अजहण्णमणुक्कोसेणं एक्कं समयं, णाणादव्वाइं पडुच्च सव्वद्धा।

१९५. (प्रश्न २) नैगम-व्यवहारनयसम्मत अनानुपूर्वीद्रव्य काल की अपेक्षा (अनानुपूर्वी रूप में) कितने काल तक रहते हैं ?

(उत्तर) एक द्रव्य की अपेक्षा आनुपूर्वी द्रव्य जघन्य और उत्कृष्ट का भेद किये बिना एक द्रव्य की अपेक्षा एक समय तक तथा अनेक द्रव्यों की अपेक्षा सर्वकाल में होते हैं।

195. (Question 2) In context of time, for what duration do the *naigam-vyavahar naya sammat ananupurvi dravya* (non-sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) exist (in the same configuration)?

(Answer) With respect to a single *ananupurvi* (non-sequential) substance they exist in the same form for one *samaya* without any variation of minimum and maximum. With respect to many *ananupurvi* (non-sequential) substances as a rule they exist always.

(३) णेगम-ववहाराणं अवत्तव्वयदव्वाइं कालतो केवचिरं होंति ?

एगं दव्वं पडुच्च अजहण्णमणुक्कोसेणं दो समया, णाणादव्वाइं पडुच्च सव्वद्धा।

१९५. (प्रश्न ३) नैगम-व्यवहारनयसम्मत अवक्तव्यकद्रव्य काल की अपेक्षा (अवक्तव्यक रूप में) कितने काल रहते हैं ?

(उत्तर) एक द्रव्य की अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट का भेद किये बिना दो समय तक और अनेक द्रव्यों की अपेक्षा सर्वकाल में होते हैं।

195. (Question 3) In context of time, for what duration do the *naigam-vyavahar naya sammat avaktavya dravya*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(inexpressible substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) exist (in the same configuration)?

(Answer) With respect to a single *avaktavya* (inexpressible) substance they exist in the same form for two *samaya* without any variation of minimum and maximum. With respect to many *avaktavya* (inexpressible) substances as a rule they exist always.

विवेचन–एक आनुपूर्वीद्रव्य की जघन्य स्थिति तीन समय और उत्कृष्ट स्थिति असंख्यात समय की बताने का कारण यह है कि आनुपूर्वीद्रव्यों में तीन समय की स्थिति वाले द्रव्य सबसे कम हैं और वे तीन समय तक ही आनुपूर्वी के रूप में रहते हैं। इसलिए एकवचनान्त आनुपूर्वी द्रव्यों की जघन्य स्थिति तीन समय प्रमाण कही है और असंख्यात समय की स्थिति कहने का कारण यह है कि वह द्रव्य असंख्यात काल के बाद आनुपूर्वी रूप में रहता ही नहीं है।

नाना आनुपूर्वीद्रव्यों की अपेक्षा स्थिति सर्वकालिक इसलिए है कि नाना आनुपूर्वी द्रव्यों का सदैव सद्भाव रहता है।

एक-एक अनानुपूर्वी और अवक्तव्यक द्रव्य की स्थिति मात्र क्रमशः एक समय और दो समय प्रमाण होने से इन दोनों के विषय में जघन्य और उत्कृष्ट की अपेक्षा विचार किया जाना सम्भव नहीं होने से अजघन्य और अनुत्कृष्ट काल स्थिति एक और दो समय की बतलाई है। नाना अनानुपूर्वी और अवक्तव्यक द्रव्य सर्वकाल में सम्भव होने से उनकी स्थिति सर्वकाल प्रमाण है।

Elaboration—The reason for stating that the existence of single *anupurvi* (sequential) substance is minimum three *samayas* and maximum of uncountable time is that among *anupurvi* (sequential) substances the number of those having three *samaya* existence is minimum and they exist in the *anupurvi* (sequential) form just for three *samayas*. Therefore the minimum period of existence has been stated as three *samaya*. The *anupurvi* substances have greater period of existence as well, but in no case they can exist as *anupurvi* (sequential) substance beyond uncountable *samayas*. Therefore the maximum period has been stated as uncountable *samayas*.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

In case of many *anupurvi* (sequential) substances the existence period is stated as always because some or the other *anupurvi* (sequential) substance exists always.

Single *ananupurvi* (non-sequential) and *avaktavya* (inexpressible) substance exist only for one and two samay respectively therefore there is no scope for minimum and maximum. Thus it is stated as one and two *samaya* without any minimum or maximum. In case of many *ananupurvi* (non-sequential) and *avaktavya* (inexpressible) substances the existence period is stated as always because some or the other *ananupurvi* (non-sequential) and *anupurvi* (sequential) substance exists always.

(ङ-६) अन्तरप्ररूपणा

१९६. (१) णेगम-ववहाराणं आणुपुब्विदव्वाणमंतरं कालतो केवचिरं होति ?

एगदव्वं पडुच्च जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं दो समया, नाणादव्वाइं पडुच्च नत्थि अंतरं।

१९६. (प्रश्न १) नैगम और व्यवहारनयसम्मत आनुपूर्वी द्रव्यों का काल की अपेक्षा अन्तर कितने समय का होता है ?

(उत्तर) एक द्रव्य की अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर दो समय है। किन्तु अनेक द्रव्यों की अपेक्षा अन्तर नहीं है-

(E-6) KAALNUPURVI : ANTAR-DVAR

196. (Question 1) In context of time, what is the *antar* (intervening period between loosing the present form and regaining it) in case of *naigam-vyavahar naya sammat anupurvi dravya* (sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) ?

(Answer) With respect to a single *anupurvi* (sequential) substance this period is a minimum of one *samaya* and maximum of two *samayas*. However with respect to many *anupurvi* (sequential) substances this *antar* does not exist.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(२) णेगम–ववहाराणं अणाणुपुव्विदव्वाणं अंतरं कालतो केवचिरं होति ?

एगदव्वं पडुच्च जहण्णेणं दो समया उक्कोसेणं असंखेज्जं काल, णाणादव्वाइं पडुच्च णत्थि अंतरं।

१९६. (प्रश्न २) काल की अपेक्षा नैगम और व्यवहारनयसम्मत अनानुपूर्वी द्रव्यों का अन्तर कितने समय का होता है ?

(उत्तर) एक द्रव्य की अपेक्षा जघन्य अन्तर दो समय का और उत्कृष्ट असंख्यात काल का है। अनेक द्रव्यों की अपेक्षा अन्तर नहीं है।

196. (Question 2) In context of time, what is the *antar* (intervening period between loosing the present form and regaining it) in case of *naigam-vyavahar naya sammat ananupurvi dravya* (non-sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) ?

(Answer) With respect to a single *ananupurvi* (non-sequential) substance this period is a minimum of two *samaya* and maximum of immeasurable time. However with respect to many *ananupurvi* (non-sequential) substances this *antar* does not exist.

(३) णेगम–ववहाराणं अवत्तव्वगदव्वाणं पुच्छा।

एगदव्वं पडुच्च जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं, णाणादव्वाइं पडुच्च णत्थि अंतरं।

१९६. (प्रश्न ३) अनानुपूर्वीद्रव्यों की तरह नैगम–व्यवहारनयसम्मत अवक्तव्यकद्रव्यों के विषय में भी प्रश्न है।

(उत्तर) एक द्रव्य की अपेक्षा अवक्तव्यकद्रव्यों का अन्तर एक समय का और उत्कृष्ट असंख्यात काल प्रमाण है। अनेक द्रव्यों की अपेक्षा अन्तर नहीं है।

196. (Question 3) Same question for *naigam-vyavahar naya sammat avaktavya dravya* (inexpressible substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(Answer) With respect to a single *avaktavya* (inexpressible) substance this period is a minimum of one *samaya* and maximum of infinite time. However with respect to many *avaktavya* (inexpressible) substances *antar* does not exist.

(ङ-७) भागद्वार

१९७. णेगम-ववहाराणं आणुपुव्विदव्वाइं सेसदव्वाणं कइभागे होज्जा ? पुच्छा। जहेव खेत्ताणुपुव्वीए।

१९७. (प्रश्न) नैगम और व्यवहारनयसम्मत आनुपूर्वी द्रव्य शेष द्रव्यों के कितनेवें भाग प्रमाण हैं ?

(उत्तर) यहाँ कालानुपूर्वी के प्रसंग में तीनों द्रव्यों के लिए क्षेत्रानुपूर्वी जैसा ही कथन समझना चाहिए। (द्रव्यानुपूर्वी सूत्र ११२ के अनुसार समझें)

(E-7) KAALNUPURVI : BHAAG-DVAR

197. (Question) In what spatial proportion of other substances do the *naigam-vyavahar naya sammat anupurvi dravya* (sequential substances conforming to coordinated and particularized viewpoints) exist.

(Answer) The answer is same as that with regard to *kshetra-anupurvi* for all the three classes of substances. (aphorism 112)

(ङ-८, ९) भाव और अल्पबहुत्व द्वार

१९८. भावो वि तहेव। अप्पाबहुं पि तहेव नेयव्वं जाव से तं अणुगमे। से तं णेगम-ववहाराणं अणोवणिहिया कालाणुपुव्वी।

१९८. भावद्वार और अल्पबहुत्व का भी कथन क्षेत्रानुपूर्वी जैसा ही समझना चाहिए यावत् अनुगम का यह स्वरूप है। (द्रव्यानुपूर्वी प्रकरण के सूत्र ११४ के अनुसार समझें)

इस प्रकार नैगम-व्यवहारनयसम्मत अनौपनिधिकी कालानुपूर्वी का वर्णन पूर्ण हुआ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

198. The details about *Bhaava-dvar* and *Alpabahutva-dvar* are same as those with regard to *kshetra-anupurvi.* (aphorism 114)

This concludes the description of *anugam.* This also concludes the description of *naigam-vyavahar naya sammat anaupanidhiki kaal-anupurvi* (disorderly sequence of substances conforming to coordinated and particularized viewpoints).

संग्रहनयसम्मत अनौपनिधिकी कालानुपूर्वी

१९९. से किं तं संगहस्स अणोवणिहिया कालाणुपुव्वी ?

संगहस्स अणोवणिहिया कालाणुपुव्वी पंचविहा पण्णत्ता। तं जहा—(१) अट्ठपयपरूवणया, (२) भंगसमुक्कित्तणया, (३) भंगोवदंसणया, (४) समोयारे, (५) अणुगमे।

१९९. (प्रश्न) संग्रहनयसम्मत अनौपनिधिकी कालानुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) संग्रहनयसम्मत अनौपनिधिकी कालानुपूर्वी पाँच प्रकार की है—(१) अर्थपदप्ररूपणता, (२) भंगसमुत्कीर्तनता, (३) भंगोपदर्शनता, (४) समवतार और (५) अनुगम।

SAMGRAHA NAYA SAMMAT ANAUPANIDHIKI KAAL-ANUPURVI

199. (Question) What is this *Samgraha naya sammat anaupanidhiki kaal-anupurvi* (disorderly time-sequence conforming to generalized viewpoint) ?

(Answer) *Samgraha naya sammat anaupanidhiki kaal-anupurvi* (disorderly time-sequence conforming to generalized viewpoint) is of five types—(1) *Arth-padaprarupana* (semantics), (2) *Bhang-samutkirtanata* (enumeration of divisions or *bhangs*), (3) *Bhangopadarshanata* (explication of divisions or *bhangs*), (4) *Samavatara* (compatible assimilation), and (5) *Anugam* (systematic elaboration).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२००. से किं तं संगहस्स अट्ठपयपरूवणया ?

संगहस्स अट्ठपयपरूवणया एयाइं पंच वि दाराइं जहा खेत्ताणुपुव्वीए संगहस्स तहा कालाणुपुव्वीए वि भाणियव्वाणि, णवरं ठिती अभिलावो जाव से तं संगहस्स अणोवणिहिया कालाणुपुव्वी। से तं अणोवणिहिया कालाणुपुव्वी।

२००. (प्रश्न) संग्रहनयसम्मत अर्थपदप्ररूपणता क्या है ?

(उत्तर) इन पाँचों द्वारों का कथन संग्रहनयसम्मत क्षेत्रानुपूर्वी की तरह समझ लेना चाहिए। विशेष यह कि क्षेत्रानुपूर्वी में जैसे कि प्रदेशावगाढ आदि है, वैसे यहाँ पर तीन समय की स्थिति वाला पुद्गल आनुपूर्वी, एक समय की स्थिति वाला अनानुपूर्वी, दो समय की स्थिति वाला अवक्तव्य ऐसा प्रयोग करना चाहिए। यह संग्रहनयसम्मत अनौपनिधिकी कालानुपूर्वी और अनौपनिधिकी कालानुपूर्वी का वर्णन हुआ। (सूत्र ११६ देखें)

SAMGRAHA NAYA SAMMAT ARTH-PADAPRARUPANA

200. (Question) What is this *Samgraha naya sammat arth-padaprarupana* (semantics conforming to generalized viewpoint) ?

(Answer) The description of all these five *dvars* (doors of disqisition) should be read to be same as the aforesaid *kshetra-anupurvi* in this context. The only difference being that the substance having three *samaya* existence is *anupurvi* (sequential), that having one *samaya* existence is *ananupurvi* (non-sequential), and that having two *samaya* existence is *avaktavya* (inexpressible) should be read instead of similar statements with respect to area of occupation, etc. (aphorism 116)

This concludes the description of *Samgraha naya sammat anaupanidhiki kaal-anupurvi* (disorderly time-sequence conforming to generalized viewpoint) and *anaupanidhiki kaal-anupurvi* (disorderly time-sequence).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(Now *aupanidhiki kaalnupurvi* or orderly time-sequence, the second category of *kaalnupurvi,* is being described. This is of two types—special and ordinary. First the special one is described)

औपनिधिकी कालानुपूर्वी

२०१. (१) से किं तं ओवणिहिया कालाणुपुव्वी ?

ओवणिहिया कालाणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता। तं जहा–(१) पुव्वाणुपुव्वी, (२) पच्छाणुपुव्वी, (३) अणाणुपुव्वी।

२०१. (प्रश्न १) औपनिधिकी कालानुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) औपनिधिकी कालानुपूर्वी के तीन प्रकार हैं–(१) पूर्वानुपूर्वी, (२) पश्चानुपूर्वी, और (३) अनानुपूर्वी।

AUPANIDHIKI KAAL-ANUPURVI

201. (Question 1) What is this *Aupanidhiki kaal-anupurvi* (orderly time-sequence)?

(Answer) This *Aupanidhiki kaal-anupurvi* (orderly time-sequence) is of three types—(1) *Purvanupurvi,* (2) *Pashchanupurvi,* and (3) *Ananupurvi.*

(२) से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?

पुव्वाणुपुव्वी एगसमयठितीए दुसमयठितीए तिसमयठितीए जाव दससमयठितीए जाव संखेज्जसमयठितीए असंखेज्जसमयठितीए। से तं पुव्वाणुपुव्वी।

२०१. (प्रश्न २) पूर्वानुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) पूर्वानुपूर्वी का स्वरूप इस प्रकार है–एक समय की स्थिति वाले, दो समय की स्थिति वाले, तीन समय की स्थिति वाले यावत् दस समय की स्थिति वाले यावत् संख्यात समय की स्थिति वाले, असंख्यात समय की स्थिति वाले द्रव्यों की अनुक्रम से गणना करने को औपनिधिकी पूर्वानुपूर्वी कहते हैं।

201. (Question 2) What is this *Purvanupurvi* ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(Answer) *Purvanupurvi* is like this—To arrange substances in ascending sequential order with respect to the period of existence is called *purvanupurvi* (ascending sequence). The arrangement being—substance having existence of one *samaya,* two *samayas,* three *samayas,* and so on... , ten *samayas,* and so on... , countable *samayas,* and uncountable *samayas.*

This concludes the description of *aupanidhiki purvanupurvi* (orderly ascending sequence).

(३) से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?

पच्छाणुपुव्वी असंखेज्जसमयठितीए जाव ए एक्कसमयठितीए। से तं पच्छाणुपुव्वी।

२०१. (प्रश्न ३) पश्चानुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) असंख्यात समय की स्थिति वाले से लेकर एक समय पर्यन्त की स्थिति वाले द्रव्यों की-व्युत्क्रम से गणना करना पश्चानुपूर्वी है।

201. (Question 3) What is this *Pashchanupurvi* ?

(Answer) *Pashchanupurvi* is like this—To arrange the aforesaid substances in descending sequential order with respect to the period of existence is called *pashchanupurvi* (descending sequence). The arrangement being—uncountable *samayas* existence, and so on up to one *samaya* existence.

This concludes the description of *pashchanupurvi* (descending sequence).

(४) से किं तं अणाणुपुव्वी ?

अणाणुपुव्वी एयाए चेव एगादिया एगुत्तरियाए असंखेज्जगच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णब्भासो दुरूवूणो। से तं अणाणुपुव्वी।

२०१. (प्रश्न ४) अनानुपूर्वी क्या है ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(उत्तर) अनानुपूर्वी का स्वरूप इस प्रकार है—एक से लेकर असंख्यात पर्यन्त एक-एक की वृद्धि द्वारा निष्पन्न श्रेणी में परस्पर गुणाकार करने से प्राप्त राशि में से आदि और अन्त के दो भंगों से न्यून भंग अनानुपूर्वी हैं।

201. (Question 4) What is this *Ananupurvi* ?

(Answer) Place uncountable numbers starting from one and progressively adding one. Multiply all these numbers of this arithmetic progression and subtract 2 (depicting the ascending and descending sequence) from the result. This final result is called *ananupurvi* (random sequence).

This concludes the description of *ananupurvi* (random sequence).

औपनिधिकी कालानुपूर्वी : द्वितीय प्रकार

२०२. (१) अहवा ओवणिहिया कालाणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता । तं जहा–(१) पुव्वाणुपव्वी, (२) पच्छाणुपुव्वी, (३) अणाणुपुव्वी।

२०२. (१) अथवा औपनिधिकी कालानुपूर्वी तीन प्रकार की है। जैसे–(१) पूर्वानुपूर्वी, (२) पश्चानुपूर्वी, (३) अनानुपूर्वी।

ANOTHER AUPANIDHIKI KAAL-ANUPURVI

202. (1) Also, this *Aupanidhiki kaal-anupurvi* (orderly time-sequence) is of three types—(1) *Purvanupurvi,* (2) *Pashchanupurvi,* and (3) *Ananupurvi.*

(२) से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?

पुव्वाणुपुव्वी समए आवलिया आणापाणू थोवे लवे मुहुत्ते दिवसे अहोरत्ते पक्खे मासे उदू अयणे संवच्छरे जुगे वाससए वाससहस्से वाससतसहस्से पुव्वंगे पुव्वे तुडियंगे तुडिए अडडंगे अडडे अववंगे अववे हूहुयंगे हूहुए उप्पलंगे उप्पले पउमंगे पउमे णलिणंगे णलिणे अत्थनिउरंगे अत्थनिउरे अउयंगे अउए नउयंगे नउए पउयंगे पउए चूलियंगे चूलिए सीसपहेलियंगे सीसपहेलिया पलिओवमे सागरोवमे ओसप्पिणी उस्सप्पिणी पोग्गलपरियट्टे तीतद्धा अणागतद्धा सव्वद्धा। से तं पुव्वाणुपुव्वी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०२. (प्रश्न २) पूर्वानुपूर्वी क्या है?

(उत्तर) पूर्वानुपूर्वी का स्वरूप इस प्रकार है–समय, आवलिका, आन (उच्छ्वास), अपान (निःश्वास) प्राण, स्तोक, लव, मुहूर्त, दिवस, अहोरात्र, पक्ष, मास, ऋतु, अयन, संवत्सर, युग, वर्षशत, वर्षसहस्र, वर्षशतसहस्र, पूर्वांग, पूर्व, त्रुटितांग, त्रुटित, अडडांग, अडड, अववांग, अवव, हुहुकांग, हुहुक, उत्पलांग, उत्पल, पद्मांग, पद्म, नलिनांग, नलिन, अर्थनिपुरांग, अर्थनिपुर, अयुतांग, अयुत, नयुतांग, नयुत, प्रयुतांग, प्रयुत, चूलिकांग, चूलिका, शीर्षप्रहेलिकांग, शीर्षप्रहेलिका, पल्योपम, सागरोपम, अवसर्पिणी, उत्सर्पिणी, पुद्गलपरावर्त, अतीतकाल, अनागतकाल और सर्वकाल रूप क्रम से पदों का उपन्यास करना काल पूर्वानुपूर्वी है।

202. (Question 2) What is this *Purvanupurvi* (in context of *Aupanidhiki kaal-anupurvi* or orderly time-sequence)?

(Answer) *Purvanupurvi* is like this—*samaya, avalika, aan, apaan, pran, stoka, lava, muhurt, divas, ahoratra, paksha, maas, ritu, ayan, samvatsar, yug, varshashat, varshasahasra, varshashatsahasra, purvanga, purva, trutitanga, trutit, adadanga, adada, avavanga, avava, huhukanga, huhuka, utpalanga, utpala, padmanga, padma, nalinanga, nalina, arthanipuranga, arthanipura, ayutanga, ayut, nayutanga, nayuta, prayutanga, prayuta, chulikanga, chulika, sheershaprahelikanga, sheershaprahelika, palyopam, sagaropam, avasarpini, utsarpini, pudgalaparavart, atitakaal, anagatakaal, and sarvakaal.* The arrangement of these units of time placed in such ascending sequential order (*samaya* being the smallest unit and *sarvakaal* or all-time being the largest unit) is called *purvanupurvi* (ascending sequence).

This concludes the description of *purvanupurvi* (ascending sequence).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवेचन–जैन ग्रन्थों में काल वर्णन काफी विस्तार पूर्वक मिलता है। वहाँ काल के दो विभाग हैं–प्रथम संख्यात काल तथा दूसरा औपमिक काल।

Elaboration—Jains have also worked out the minute, detailed and scientific division of time. This has two sections-one is the countable time and the other is the metaphoric time.

(१) संख्यात काल

(1) NUMERICAL TIME

सूक्ष्मतम निर्विभाज्य काल (Indivisible unit of time)	= १ समय (1 *Samaya*)
असंख्यात समय (Innumerable *Samaya*)	= १ आवलिका (1 *Avalika*)
संख्यात आवलिका (Numerical *Avalika*)	= १ उच्छ्वास अथवा १ निश्वास (1 Exhalation or 1 Inhalation)
१ उच्छ्वास + निश्वास (1 Inhalation + 1 Exhalation)	= १ प्राण (1 *Pran*)
७ प्राण (*Pran*)	= १ स्तोक (*Stok*)
७ स्तोक (*Stok*)	= १ लव (*Lav*)
७७ लव (*Lav*)	= १ मूहूर्त्त (*Muhurt*) (४८ मिनट 48 minutes)
३० मूहूर्त्त (*Muhurt*)	= १ अहोरात्र (Day and Night) (24 hrs)
१५ अहोरात्र (Day and Night)	= १ पक्ष (Fortnight)
२ पक्ष (Fortnight)	= १ मास (Month)
२ मास (Month)	= १ ऋतु (Season)
३ ऋतु (Season)	= १ अयन (*Ayan*) (1/2 year)
२ अयन (*Ayan*)	= १ संवत्सर (Year)
५ संवत्सर (Year)	= १ युग (*Yug*) (half a decade)
२० युग (*Yug*)	= १ शताब्दी (Century) 10^2 years
१० शताब्दी (Century)	= १ सहस्राब्दी (Millennium) 10^3 years
१०० सहस्राब्दी (Millennium)	= १ लक्षाब्दी (*Lakshabdi*) 10^5 years
८४ लक्षाब्दी (*Lakshabdi*)	= १ पूर्वांग (*Purvang*) 84×10^5 years
८४ लक्ष पूर्वांग (Lac *Purvang*)	= १ पूर्व (*Purva*) 7056×10^{10} years

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'पूर्व' के बाद पच्चीस इकाइयाँ और हैं जो प्रत्येक पूर्ववर्ती इकाई से ८४ लाख गुणा अधिक है। इन इकाइयों के नाम सूत्र २०२ (२) में सूचिबद्ध हैं। अन्तिम इकाई का नाम 'शीर्ष प्रहेलिका' है जिसमें ५४ अंकों के बाद १४० शून्य होते हैं। यह लगभग 7.582×10^{193} के बराबर होती है।

After the '*Purva*' there are twenty five units more. The names of these units are listed in aphorism 202 (2). Each unit is a multiple of 84,00,000 and the previous unit. The last such unit of the finite numbers in this series is known as *Sheersh Prahelika*. It contains 54 numbers and 140 zeros. In mathematical terms it is approximately 7.582×10^{193}. (Exact figure being 75, 82, 63, 25, 30, 73, 01, 02, 41, 15, 79, 73, 56, 99, 75, 69, 64, 06, 21, 89, 66, 84, 80, 80, 18, 32, 96×10^{140})

(२) औपमिक काल

यह वह काल है जिसे संख्याओं या गणित से नहीं मापा जा सकता। अतः इसे समझने के लिए उपमा की आवश्यकता होती है। इसकी सबसे छोटी इकाई का नाम है पल्योपम। पल्योपम का परिमाण समझने के लिए शास्त्रोक्त परिभाषा इस प्रकार है–"एक योजन लम्बा–चौड़ा–गहरा प्याले के आकार का गड्ढ़ा खोदा जाये जिसकी परिधि तीन योजन हो। उसे उत्तर कुरु के तुरन्त जन्मे मनुष्य के एक दिन से सात दिनों तक के बालाग्र (अत्यन्त सूक्ष्म बाल का अग्रभाग) से ऐसे ठसाठस भर दिया जाये कि जल और वायु भी प्रवेश न पा सके। उसमें से एक–एक बालाग्र प्रत्येक १०० वर्ष के बाद निकाला जाये। इस प्रकार जितने समय में वह पल्य (गड्ढा) खाली हो जाये उस काल को पल्योपम कहते हैं।

१० कोटा–कोटि पल्योपम = १ सागरोपम

१० कोटा–कोटि सागरोपम = १ उत्सर्पिणी अथवा १ अवसर्पिणी

२० कोटा–कोटि सागरोपम = १ काल–चक्र

(2) METAPHORIC TIME SCALE

This is the period of time beyond the scope of numbers or mathematics. As such, it is measured metaphorically, Its smallest unit is *Palyopam*. The definition of *Palyopam* available in Jain scriptures is as follows : Dig a cup shape ditch measuring 1 *yojan* (approx. 8 miles) on all sides. Fill it with miniscule hair of man from Uttar Kuru. It should be so tightly packed that air or water may not find a passage within. Now start taking out one hair every hundred years. The time taken in emptying this ditch is termed as *Palyopam*.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

1 thousand trillion *Palyopam* = 1 *Sagaropam*

1 thousand trillion *Sagaropam* = 1 *Utsarpini* or 1 *Avasarpini*

2 thousand trillion *Sagaropam* = 1 time cycle

२० कोटा-कोटि सागरोपम अर्थात् एक उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी को मिलाकर एक कालचक्र होता है। अनन्त उत्सर्पिणियाँ-अवसर्पिणियाँ का एक पुद्‌गल परावर्त होता है। जितने काल में एक जीव (आत्मा) समस्त लोकादाश के प्रत्येक पुद्‌गल का स्पर्श करता है उसे पुद्‌गल परावर्त कहा है। अनन्त पुद्‌गल परावर्तों का समुदाय एक अतीताद्धा (अतीत काल) कहलाता है। इसी प्रकार अनन्त अनागत काल के पुद्‌गल परावर्तों का समुदाय अनागताद्धा कहा जाता है। अतीत-अनागत-वर्तमान तीनों कालों का सम्मिलित रूप सर्वाद्धा-सर्वकाल कहा जाता है।

Two thousand trillion *Sagaropam* or one *Utsarpini* and one *Avasarpini* make one time cycle. Infinite time cycles make one *pudgal-paravart.* The time taken by a soul to touch each and every matter particle in the whole universe is said to be *pudgal-paravart.* Infinite *pudgal-paravart* is one *atitaddha* (past-eons). Similarly infinite *pudgal-paravart* of future time is one *anagataddha* (future eons). Past-present-future time is called *sarvaddha* or all-time.

(३) से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?

पच्छाणुपुव्वी सव्वद्धा अणागतद्धा जाव समए। से तं पच्छाणुपुव्वी।

२०२. (प्रश्न ३) पश्चानुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) सर्वकाल, अनागतकाल यावत् समय पर्यन्त व्युत्क्रम से पदों की स्थापना करना पश्चानुपूर्वी है।

202. (Question 3) What is this *Pashchanupurvi* ?

(Answer) The arrangement of the aforesaid units of time placed in descending sequential order is called *pashchanupurvi* (descending sequence). The arrangement being—*sarvakaal, anagatakaal,* and so on up to *samaya.*

This concludes the description of *pashchanupurvi* (descending sequence).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(४) से किं तं अणाणुपुव्वी ?

अणाणुपुव्वी एयाए चेव एगादियाए एगुत्तरियाए अणंतगच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णब्भासो दुरूवूणे। से तं अणाणुपुव्वी। से तं ओवणिहिया कालाणुपुव्वी। से तं कालाणुपुव्वी।

२०२. (प्रश्न ४) अनानुपूर्वी क्या है?

(उत्तर) इन्हीं समयादि की एक से प्रारम्भ कर एकोत्तर वृद्धि द्वारा सर्वकाल पर्यन्त की श्रेणी स्थापित कर परस्पर गुणाकार से निष्पन्न राशि में से आदि और अन्तिम दो भंगों को कम करने के बाद बचे शेष भंग अनानुपूर्वी हैं।

औपनिधिकी कालानुपूर्वी का वर्णन पूर्ण हुआ। कालानुपूर्वी का वर्णन पूर्ण हुआ।

202. (Question 4) What is this *Ananupurvi* ?

(Answer) Place numbers starting from one and progressively adding one up to *sarvakaal.* Multiply all the numbers of this arithmetic progression and subtract 2 (depicting the ascending and descending sequence) from the result. This final result is called *ananupurvi* (random sequence).

This concludes the description of *ananupurvi* (random sequence). This concludes the description of *Aupanidhiki kaal-anupurvi* (orderly time-sequence). This also concludes the description of *kaal-anupurvi* (time-sequence).

उत्कीर्तनानुपूर्वी निरूपण

२०३. (१) से किं तं उक्कित्तणाणुपुव्वी ?

उक्कित्तणाणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता। तं जहा-(१) पुव्वाणुपुव्वी, (२) पच्छाणुपुव्वी, (३) अणाणुपुव्वी।

२०३. (प्रश्न १) उत्कीर्तनानुपूर्वी क्या है?

(उत्तर) उत्कीर्तनानुपूर्वी के तीन प्रकार हैं। यथा-(१) पूर्वानुपूर्वी, (२) पश्चानुपूर्वी, (३) अनानुपूर्वी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

203. (Question 1) What is this *Utkirtana-anupurvi* (name-chanting sequence) ?

(Answer) This *Utkirtana-anupurvi* (name-chanting sequence) is of three types—(1) *Purvanupurvi*, (2) *Pashchanupurvi*, and (3) *Ananupurvi*.

(२) से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?

पुव्वाणुपुव्वी-(१) उसभे, (२) अजिए, (३) संभवे, (४) अभिणंदणे, (५) सुमती, (६) पउमप्पभे, (७) सुपासे, (८) चंदप्पहे, (९) सुविही, (१०) सीतले, (११) सेज्जंसे, (१२) वासुपुज्जे, (१३) विमले, (१४) अणंते, (१५) धम्मे, (१६) संती, (१७) कुंथू, (१८) अरे, (१९) मल्ली, (२०) मुणिसुव्वए, (२१) णमी, (२२) अरिट्ठणेमी, (२३) पासे, (२४) वद्धमाणे। से तं पुव्वाणुपुव्वी।

२०३. (प्रश्न २) (उत्कीर्तन) पूर्वानुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) उत्कीर्तन पूर्वानुपूर्वी इस प्रकार है-(१) ऋषभ, (२) अजित, (३) सम्भव, (४) अभिनन्दन, (५) सुमति, (६) पद्मप्रभ, (७) सुपार्श्व, (८) चन्द्रप्रभ, (९) सुविधि, (१०) शीतल, (११) श्रेयांस, (१२) वासुपूज्य, (१३) विमल, (१४) अनन्त, (१५) धर्म, (१६) शान्ति, (१७) कुन्थू, (१८) अर, (१९) मल्लि, (२०) मुनिसुव्रत, (२१) नमि, (२२) अरिष्टनेमि, (२३) पार्श्व, (२४) वर्धमान, इस क्रम से नामोच्चारण करने को उत्कीर्तन पूर्वानुपूर्वी कहते हैं। (२४ तीर्थंकरों के विस्तृत जीवन चरित्र के लिए देखें सचित्र कल्पसूत्र तथा सचित्र तीर्थंकर चरित्र।)

203. (Question 2) What is this *Purvanupurvi* (in context of *Utkirtana-anupurvi* (name-chanting sequence) ?

(Answer) *Purvanupurvi* is like this—(1) Rishabh, (2) Ajit, (3) Sambhav, (4) Abhinandan, (5) Sumati, (6) Padmaprabh, (7) Suparshva, (8) Candraprabh, (9) Suvidhi, (10) Sheetal, (11) Shreyans, (12) Vasupujya, (13) Vimal, (14) Anant, (15) Dharma, (16) Shanti, (17) Kunthu, (18) Ar, (19) Malli, (20) Munisuvrat, (21) Nami, (22) Nemi (Arishtanemi), (23) Parshva, and

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(24) Vardhaman. The arrangement of these names chanted in such ascending sequential order (these are the names of *Tirthankars* of this descending cycle of time) is called *purvanupurvi* (ascending sequence). (For detailed life-sketches of 24 Tirthankars refer to *Illustrated Kalpa Sutra* and *Illustrated Tirthankar charitra.*)

This concludes the description of *purvanupurvi* (ascending sequence).

(३) से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?

पच्छाणुपुव्वी वद्धमाणे २४ पासे २३ जाव उसभे १। से तं पच्छाणुपुव्वी।

२०३. (प्रश्न ३) (उत्कीर्तन) पश्चानुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) व्युत्क्रम से अर्थात् वर्धमान, पार्श्व से प्रारम्भ करके प्रथम ऋषभ पर्यन्त नामोच्चारण करना पश्चानुपूर्वी है।

203. (Question 3) What is this *Pashchanupurvi* ?

(Answer) The arrangement of the aforesaid names chanted in descending sequential order is called *pashchanupurvi* (descending sequence). The arrangement being—Vardhaman, Parshva, and so on up to Rishabh.

This concludes the description of *pashchanupurvi* (descending sequence).

(४) से किं तं अणाणुपुव्वी ?

अणाणुपुव्वी एयाए चेव एगादियाए एगुत्तरियाए चउवीसगच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णब्भासो दुरूवूणे। से तं अणाणुपुव्वी। से तं उक्कित्तणाणुपुव्वी।

२०३. (प्रश्न ४) (उत्कीर्तन) अनानुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) इन्हीं की (ऋषभ से वर्धमान पर्यन्त की) एक से लेकर एक-एक की वृद्धि करके चौबीस संख्या की श्रेणी स्थापित कर परस्पर गुणाकार करने से जो राशि बनती है उसमें से प्रथम और अन्तिम भंग को कम करने पर शेष भंग अनानुपूर्वी हैं।

203. (Question 4) What is this *Ananupurvi* ?

(Answer) Place the aforesaid numbers (of names) starting from first and progressively adding one up to

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

twenty fourth. Multiply all the numbers of this arithmetic progression and subtract 2 (depicting the ascending and descending sequence) from the result. This final result is called *ananupurvi* (random sequence).

This concludes the description of *ananupurvi* (random sequence). This concludes the description of *Utkirtana-anupurvi* (name-chanting sequence).

विवेचन–चूर्णिकार ने उत्कीर्तन का अर्थ किया है, उक्कित्तण–गुणवतो थुती–गुणवान पुरुषों का नाम उच्चारण, उनकी स्तुति करना उत्कीर्तन है। इसमें उदाहरण स्वरूप ऋषभ आदि २४ तीर्थंकरों का नामोल्लेख किया है। इसी तरह बारह चक्रवर्ती, कुलकर, गणधर आदि किसी गुणवान पुरुष का नामोत्कीर्तन किया जा सकता है।

Elaboration—The commentator (*Churni*) has interpreted *Ukkittana* as *gunavato thuti,* which means chanting names of virtuous individuals or to recite panegyrics for them. Here names of twenty four *Tirthankars* have been given as an example. In the same way names of *Chakravartis, Kulakars, Ganadhars,* and other sets of virtuous individuals can be chanted.

गणनानुपूर्वी प्ररूपणा

२०४. (१) से किं तं गणणाणुपुव्वी ?

गणणाणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता। तं जहा–(१) पुव्वाणुपुव्वी, (२) पच्छाणुपुव्वी, (३) अणाणुपुव्वी।

२०४. (प्रश्न १) गणनानुपूर्वी क्या है?

(उत्तर) गणनानुपूर्वी के तीन प्रकार हैं–(१) पूर्वानुपूर्वी, (२) पश्चानुपूर्वी, (३) अनानुपूर्वी।

GANANA-ANUPURVI

204. (Question 1) What is this *Ganana-anupurvi* (counting sequence)?

(Answer) This *Ganana-anupurvi* (counting sequence) is of three types—(1) *Purvanupurvi,* (2) *Pashchanupurvi,* and (3) *Ananupurvi.*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(२) से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?

पुव्वाणुपुव्वी एक्को दस सयं सहस्सं दससहस्साइं सयसहस्सं दससयसहस्साइं कोडी, दस कोडीओ, कोडीसयं, दसकोडीसयाइं। से तं पुव्वाणुपुव्वी।

२०४. (प्रश्न २) पूर्वानुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) एक, दस, सौ, सहस्र, दस सहस्र, शतसहस्र (लाख), दसशतसहस्र (दस लाख) कोटि (करोड़), दस कोटि, कोटिशत (अरब), दस कोटिशत (दस अरब), इस प्रकार से गिनती करना गणना-पूर्वानुपूर्वी है।

204. (Question 2) What is this *Purvanupurvi* (in context of *Ganana-anupurvi* (counting sequence) ?

(Answer) *Purvanupurvi* is like this—one, ten, hundred, thousand, ten thousand, hundred thousand (a lac), ten hundred thousand (a million), *koti* (crore or ten million), ten *koti* (hundred million), *kotishat* (hundred *koti* or one *arab* or billion), ten *kotishat* (ten *arab*). The arrangement of these numbers counted in such ascending sequential order is called *purvanupurvi* (ascending sequence).

This concludes the description of *purvanupurvi* (ascending sequence).

(३) से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?

पच्छाणुपुव्वी दसकोडिसयाइं जाव एक्को। से तं पच्छाणुपुव्वी।

२०४. (प्रश्न ३) पश्चानुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) दस अरब से लेकर व्युत्क्रम से एक पर्यन्त की गिनती करना पश्चानुपूर्वी है।

204. (Question 3) What is this *Pashchanupurvi* ?

(Answer) The arrangement of the aforesaid numbers counted in descending sequential order is called *pashchanupurvi* (descending sequence). The arrangement being—ten *kotishat* (ten *arab*), *kotishat* (hundred *koti* or one *arab* or billion), and so on up to one.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

This concludes the description of *pashchanupurvi* (descending sequence).

(४) से किं तं अणाणुपुव्वी ?

अणाणुपुव्वी एयाए चेव एगादियाए एगुत्तरियाए दसकोडिसयगच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरूवूणो। से तं अणाणुपुव्वी। से तं गणणाणुपुव्वी।

२०४. (प्रश्न ४) अनानुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) इन्हीं को एक से लेकर दस अरब पर्यन्त की एक-एक वृद्धि वाली श्रेणी में स्थापित संख्या का परस्पर गुणा करने पर जो भंग हो, उनमें से आदि और अन्त के दो भंगों को कम करने पर शेष रहे भंग अनानुपूर्वी हैं।

204. (Question 4) What is this *Ananupurvi* ?

(Answer) Place the aforesaid numbers (of numerical units) starting from first and progressively adding one up to ten *kotishat* (ten *arab*). Multiply all the numbers of this arithmetic progression and subtract 2 (depicting the ascending and descending sequence) from the result. This final result is called *ananupurvi* (random sequence).

This concludes the description of *ananupurvi* (random sequence). This concludes the description of *Ganana-anupurvi* (counting sequence).

संस्थानानुपूर्वी प्ररूपणा

२०५. (१) से किं तं संठाणाणुपुव्वी ?

संठाणाणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता। तं जहा-(१) पुव्वाणुपुव्वी, (२) पच्छाणुपुव्वी, (३) अणाणुपुव्वी।

२०५. (प्रश्न १) संस्थानानुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) संस्थानानुपूर्वी के तीन प्रकार हैं-(१) पूर्वानुपूर्वी, (२) पश्चानुपूर्वी, (३) अनानुपूर्वी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

205. (1 Question) What is this *Samsthana-anupurvi* (structural sequence)?

(Answer) This *Samsthana-anupurvi* (structural sequence) is of three types—(1) *Purvanupurvi,* (2) *Pashchanupurvi,* and (3) *Ananupurvi.*

(२) से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?

पुव्वाणुपुव्वी–(१) समचउरंसे, (२) णग्गोहमंडले, (३) सादी, (४) खुज्जे, (५) वामणे, (६) हुंडे। से तं पुव्वाणुपुव्वी।

२०५. (प्रश्न २) (संस्थान) पूर्वानुपूर्वी किसे कहते हैं ?

(उत्तर) (१) समचतुरस्रसंस्थान, (२) न्यग्रोधपरिमंडलसंस्थान, (३) सादिसंस्थान, (४) कुब्जसंस्थान, (५) वामनसंस्थान, (६) हुंडसंस्थान के क्रम से संस्थानों के विन्यास–स्थापना करने को पूर्वानुपूर्वी कहते हैं।

205. (Question 2) What is this *Purvanupurvi* (in context of *Samsthana-anupurvi* (structural sequence)?

(Answer) *Purvanupurvi* is like this—(1) *Samachaturasra Samsthan,* (2) *Nyagrodhaparimandal Samsthan,* (3) *Sadi Samsthan,* (4) *Kubja Samsthan,* (5) *Vaman Samsthan,* and (6) *Hunda Samsthan.* The arrangement of these types of structures in such ascending sequential order is called *purvanupurvi* (ascending sequence).

This concludes the description of *purvanupurvi* (ascending sequence).

(३) से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?

पच्छाणुपुव्वी–हुंडे ६ जाव समचउरंसे १। से तं पच्छाणुपुव्वी।

२०५. (प्रश्न ३) पश्चानुपूर्वी क्या है ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छह संस्थानों की रचना

SIX SHAPES OF HUMAN BODY

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्र परिचय १४

Illustration No. 14

छह संस्थानों की आकृति

शरीर के आकार को संस्थान कहा जाता है। वह छह प्रकार का है, जैसे–

(१) **सम चतुरस्र संस्थान**–पालथी मारकर बैठने पर जिस शरीर के चारों कोण समान हों।

(२) **न्यग्रोध परिमंडल संस्थान**–वट वृक्ष के समान जिसका नाभि से ऊपर का भाग विस्तृत फैला हुआ तथा नीचे का भाग संकुचित हो।

(३) **सादिक संस्थान**–नाभि से नीचे का भाग प्रमाण युक्त व सुन्दर हो और ऊपर का भाग संकुचित व दुर्बल हो। जैसे सेमल का वृक्ष नीचे से पुष्ट होता है, ऊपर से कमजोर।

(४) **कुब्ज संस्थान**–जिस शरीर में हाथ, पैर, सिर, गर्दन आदि अवयव ठीक हों, किन्तु छाती, पेट, पीठ आदि टेढ़े हों।

(५) **वामन संस्थान**–जिस शरीर में छाती, पेट, पीठ आदि अवयव परिपूर्ण हों, किन्तु हाथ, पैर, सिर, गर्दन छोटे हों।

(६) **हुंडक संस्थान**–जिस शरीर के सभी अवयव टेढ़े-मेढ़े बेडोल हों।

–सूत्र २०५

SIX SAMSTHANAS

The structure of the human body is called *Samsthana*. It is of six kinds—

(1) Samachaturasra Samsthana—When parallel lines drawn from the extremities of a body sitting cross-legged form a square, the anatomical structure is called *Samachaturasra Samsthana*. For example the distance between two knees is equal to that between two shoulders. In other words all parts of the body are beautiful and ideally formed.

(2) Nyagrodhaparimandal Samsthana—Like a banyan tree it is much broader and developed above the navel and comparatively lean and underdeveloped below.

(3) Sadi Samsthana—It is fully developed below the navel and under-developed above the navel. Like a *Saimal* tree, which is thick below and thin above.

(4) Kubja Samsthana—Here torso is weak and deformed and limbs, head and neck are normal. Such as a hunchback.

(5) Vaman Samsthana—It has a proportionate torso but smaller limbs. Such as a dwarf.

(6) Hunda Samsthana—It has deformities in every part of the body.

—Sutra : 205

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(उत्तर) हुंडसंस्थान से लेकर समचतुरस्रसंस्थान तक व्युत्क्रम से संस्थानों की स्थापना करना पश्चानुपूर्वी है।

205. (Question 3) What is this *Pashchanupurvi* ?

(Answer) The arrangement of the aforesaid types of structures in descending sequential order is called *pashchanupurvi* (descending sequence). The arrangement being—*Hunda Samsthan*, and so on up to *Samchaturasra Samsthan.*

This concludes the description of *pashchanupurvi* (descending sequence).

(४) से किं तं अणाणुपुव्वी ?

अणाणुपुव्वी एयाए चेव एगादियाए एगुत्तिरियाए छगच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरूवूणो। से तं अणाणुपुव्वी। से तं संठाणाणुपुव्वी।

२०५. **(४ प्रश्न)** (संस्थान) अनानुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) एक से लेकर छह तक की एकोत्तर वृद्धि वाली श्रेणी में स्थापित संख्या का परस्पर गुणाकार करने पर निष्पन्न राशि में से आदि और अन्त रूप दो भंगों को कम करने पर शेष भंग अनानुपूर्वी हैं।

यह संस्थानानुपूर्वी का स्वरूप है।

205. (Question 4) What is this *Ananupurvi* ?

(Answer) Place the aforesaid numbers (of types of structures) starting from one and progressively adding one up to six. Multiply all the numbers of this arithmetic progression and subtract 2 (depicting the ascending and descending sequence) from the result. This final result is called *ananupurvi* (random sequence).

This concludes the description of *ananupurvi* (random sequence). This concludes the description of *Samsthana-anupurvi* (structural sequence).

विवेचन–संस्थान, आकार अथवा आकृति, ये पर्यायवाची शब्द हैं। इन संस्थानों की क्रमिक परिपाटी क्रमशः गणना करना संस्थानानुपूर्वी कहलाती है। यद्यपि संस्थान जीव और

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अजीव सम्बन्धी होने से अनेक भिन्न प्रकार के हैं, तथापि यहाँ पंचेन्द्रिय जीव सम्बन्धी संस्थान का उल्लेख है।

(१) **समचतुरस्रसंस्थान**–शरीर के नाभि से ऊपर और नीचे के सभी अंग-प्रत्यंग प्रमाणोपेत होते हैं। आरोह-परिणाह (उतार-चढ़ाव) अनुरूप होता है। शरीर अपने अंगुल से एक सौ आठ अंगुल ऊँचाई वाला होता है, यह समचतुरस्रसंस्थान होता है। पलहत्थी मार कर बैठने पर जिस शरीर के चारों कोण (कोने) समान हों, उसे समचतुरस्र संस्थान कहते हैं।

(२) **न्यग्रोधपरिमंडलसंस्थान**–न्यग्रोध-वटवृक्ष का नाम है। इसके समान जिसका मण्डल (आकार) हो अर्थात् जैसे न्यग्रोध-वृक्ष ऊपर में सम्पूर्ण अवयवों वाला होता है और नीचे वैसा नहीं होता। इसी प्रकार यह संस्थान भी नाभि से ऊपर विस्तार वाला और नाभि से नीचे हीन प्रमाण वाला होता है।

(३) **सादिसंस्थान**–नाभि से नीचे का भाग परिपूर्ण हो और नाभि से ऊपर का भाग हीन होता है, वह सादि संस्थान है।

(४) **कुब्जसंस्थान**–जिस संस्थान में सिर, ग्रीवा, हाथ, पैर तो उचित प्रमाण वाले हों, किन्तु हृदय, पीठ और उदर प्रमाण-विहीन हों, कूबड निकली हुई हो वह कुब्जसंस्थान है।

(५) **वामनसंस्थान**–जिस संस्थान में वक्षस्थल, उदर और पीठ लक्षणयुक्त प्रमाणोपेत हों और हाथ-पैर आदि छोटे हों, वह वामनसंस्थान है। सामान्य व्यवहार में ऐसे संस्थान वाले को बौना कहा जाता है।

(६) **हुंडसंस्थान**–जिस शरीर में सभी अवयव टेढ़े-मेढ़े बेडोल व बेढब हों।

Elaboration—*Samsthan* (structure), *akar* (shape), and *akriti* (shape) have similar meanings. A sequence of these structures or shapes is called *Samsthana-anupurvi* (structural sequence). As structures cover beings and non-beings both, they are of numerous different types. However, here only those related to five sensed beings, specifically human beings, are mentioned. Thus these are anatomical structures or constitution of body.

(1) Samachaturasra Samsthan—An anatomical structure of a human being where all the parts of body above and below the navel are of standard dimensions. The dimensions increase and decrease proportionately. The height of the body is 108 times the width of a finger (*angul*). When parallel lines drawn from the extremities of a body sitting cross-legged form a square, the anatomical structure is called *Samachaturasra Samsthan.*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(2) Nyagrodhaparimandal Samsthan—*Nyagrodh* means a banyan tree. An anatomical structure similar to the shape of a banyan tree is called *Nyagrodhaparimandal Samsthan.* Like a banyan tree, it is much broader and developed above the navel and comparatively lean and underdeveloped below.

(3) Sadi Samsthan—An anatomical structure fully developed below the navel and under-developed above the navel is called *Sadi Samsthan.*

(4) Kubja Samsthan—An anatomical structure where torso is weak and deformed and remaining parts including limbs and head are normal is called *Kubja Samsthan.* Such as a hunchback.

(5) Vaman Samsthan—An anatomical structure with a proportionate torso but smaller limbs is called *Vaman Samsthan.* Such as a dwarf.

(6) Hunda Samsthan—An anatomical structure having deformities in every part of the body is called *Hunda Samsthan.*

समाचारी–आनुपूर्वीप्ररूपणा

२०६. (१) से किं तं सामायारी आणुपुव्वी ?

सामायारी आणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता। तं जहा–(१) पुव्वाणुपुव्वी, (२) पच्छाणुपुव्वी, (३) अणाणुपुव्वी।

२०६. (प्रश्न १) समाचारी–आनुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) समाचारी–आनुपूर्वी तीन प्रकार की है–(१) पूर्वानुपूर्वी, (२) पश्चानुपूर्वी, (३) अनानुपूर्वी।

SAMACHARI-ANUPURVI

206. (Question 1) What is this *Samachari-anupurvi* (behavioural sequence) ?

(Answer) This *Samachari-anupurvi* (behavioural sequence) is of three types—(1) *Purvanupurvi,* (2) *Pashchanupurvi,* and (3) *Ananupurvi.*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(२) से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?

पुव्वाणुपुव्वी–(१) इच्छा, (२) मिच्छा, (३) तहक्कारो, (४) आवसिया, (५) य निसीहिया।

(६) आपुच्छणा, (७) य पडिपुच्छा, (८) छंदणा, (९) य निमंतणा।

(१०) उवसंपया य काले, सामायारी भवे दसविहा॥१६॥

से तं पुव्वाणुपुव्वी।

२०६. (प्रश्न २) (समाचारी) पूर्वानुपूर्वी क्या है?

(उत्तर) पूर्वानुपूर्वी का स्वरूप इस प्रकार है–

(१) इच्छाकार, (२) मिथ्याकार, (३) तथाकार, (४) आवश्यकी, (५) नैषेधिकी, (६) आपृच्छना, (७) प्रतिपृच्छना, (८) छंदना, (९) निमंत्रणा, (१०) उपसंपद्। यह दस प्रकार की समाचारी है।

206. (Question 2) What is this *Purvanupurvi* (in context of *Samachari-anupurvi* (behavioural sequence)?

(Answer) *Purvanupurvi* is like this—(1) *Icchakar*, (2) *Mithyakar*, (3) *Tathakar*, (4) *Avashyaki*, (5) *Naishedhiki*, (6) *Apricchana*, (7) *Pratiprichhana*, (8) *Chhandana*, (9) *Nimantrana*, and (10) *Upasampad*. The arrangement of these types of behaviour (of ascetics) in such ascending sequential order is called *purvanupurvi* (ascending sequence).

This concludes the description of *purvanupurvi* (ascending sequence).

(३) से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?

पच्छाणुपुव्वी उवसंपया १० जाव इच्छा १। से तं पच्छाणुपुव्वी।

२०६. (प्रश्न ३) पश्चानुपूर्वी क्या है?

(उत्तर) उपसंपद् से लेकर इच्छाकार पर्यन्त व्युत्क्रम से स्थापना करना समाचारी सम्बन्धी पश्चानुपूर्वी है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

206. (Question 3) What is this *Pashchanupurvi* ?

(Answer) The arrangement of the aforesaid types of behaviour in descending sequential order is called *pashchanupurvi* (descending sequence). The arrangement being—*Upasampad*, and so on up to *Icchakar*.

This concludes the description of *pashchanupurvi* (descending sequence).

(४) से किं तं अणाणुपुव्वी ?

अणाणुपुव्वी एयाए चेव एगादियाए एगुत्तरियाए दसगच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरूवूणो। से तं अणाणुपुव्वी। से तं सामायारी आणुपुव्वी।

२०६. (प्रश्न ४) अनानुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) एक से लेकर दस पर्यन्त एक-एक की वृद्धि द्वारा श्रेणी रूप में स्थापित संख्या का परस्पर गुणाकार करने से प्राप्त राशि में से प्रथम और अन्तिम भंग को कम करने पर शेष रहे भंग अनानुपूर्वी हैं।

यह समाचारी-आनुपूर्वी का स्वरूप।

206. (Question 4) What is this *Ananupurvi* ?

(Answer) Place the aforesaid numbers (of types of behaviour) starting from one and progressively adding one up to ten. Multiply all the numbers of this arithmetic progression and subtract 2 (depicting the ascending and descending sequence) from the result. This final result is called *ananupurvi* (random sequence).

This concludes the description of *ananupurvi* (random sequence). This concludes the description of *Samachari-anupurvi* (behavioural sequence).

विवेचन-शिष्टजनों (श्रेष्ठ श्रमणों) द्वारा आचरित सम्यक् आचार व क्रियाकलाप को समाचारी कहते हैं। उस समाचारी का इच्छाकार आदि के क्रम से उपन्यास करना पूर्वानुपूर्वी समाचारी आदि है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(१) इच्छाकार–बिना किसी दबाव के आन्तरिक प्रेरणा से व्रतादि का आचरण करने की इच्छा।

(२) मिथ्याकार–अकृत्य का सेवन हो जाने पर पश्चात्ताप द्वारा मैंने यह मिथ्या–असत् आचरण किया, ऐसा विचार करना।

(३) तथाकार–गुरु के वचनों को 'तहत' कहकर स्वीकार करना।

(४) आवश्यकी–आवश्यक कार्य के लिए बाहर जाने पर गुरु से निवेदन करना।

(५) नैषेधिकी–कार्य करके वापस आने पर अपने प्रवेश की सूचना देना।

(६) आपृच्छना–किसी भी कार्य को करने के लिए गुरुदेव से आज्ञा लेना।

(७) प्रतिपृच्छना–कार्य को प्रारम्भ करते समय पुनः गुरुदेव से पूछना अथवा किसी कार्य के लिए गुरुदेव ने मना कर दिया हो तब थोड़ी देर बाद कार्य की अनिवार्यता बताकर पुनः पूछना।

(८) छंदना–अन्य सांभोगिक साधुओं से अपना लाया आहार आदि ग्रहण करने के लिए निवेदन करना।

(९) निमन्त्रणा–आहारादि लाकर (किन्तु अभी तक लाया नहीं है) आपको दूँगा, ऐसा कहकर अन्य साधुओं को निमंत्रित करना।

(१०) उपसंपत्–श्रुतादि की प्राप्ति के लिए अन्य साधु की अधीनता स्वीकार करना।

(इनका विस्तृत वर्णन सचित्र उत्तराध्ययन के समाचारी अध्ययन पृष्ठ ३२२ पर देखें)

Elaboration—The right behaviour or conduct as followed by civilized and virtuous people (here it means accomplished ascetics) is called *samachari* (behaviour). To arrange the parts of that *samachari* in a specific order is *purvanupurvi* (ascending sequence), and others.

(1) *Icchakar*—to have the desire to indulge in observing religious duties, like vows, of one's own volition without any compulsion.

(2) *Mithyakar*—to accept with a feeling of repentance any misdeed committed.

(3) *Tathakar*—to assent to the order or word of the preceptor by uttering '*tahat*'.

(4) *Avashyaki*—to inform the guru when going out for any necessary work.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(5) *Naishedhiki*—to inform or announce on return after doing some work.

(6) *Apricchana*—to seek permission of the guru before doing any work.

(7) *Pratiprichhana*—to seek permission again just before commencing the work; also to re-seek permission by explaining the compulsion, if permission is denied at the first instance.

(8) *Chhandana*—to offer acquired things including food to other ascetics of the group.

(9) *Nimantrana*—to invite other ascetics of the group to partake things to be acquired in future.

(10) *Upasampad*—to submit to other senior ascetic or guru in order to acquire knowledge including that of scriptures.

(for details refer to the chapter on *Samachari* in *Uttardhyayan Sutra*).

भावानुपूर्वीप्ररूपणा

२०७. (१) से किं तं भावाणुपुव्वी ?

भावाणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता। तं जहा–(१) पुव्वाणुपुव्वी, (२) पच्छाणुपुव्वी, (३) अणाणुपुव्वी।

२०७. (प्रश्न १) भावानुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) भावानुपूर्वी तीन प्रकार की है। यथा–(१) पूर्वानुपूर्वी, (२) पश्चानुपूर्वी, (३) अनानुपूर्वी।

BHAAVA-ANUPURVI

207. (Question 1) What is this *Bhaava-anupurvi* (state-sequence) ?

(Answer) This *Bhaava-anupurvi* (state-sequence; here state refers to the state of a being) is of three types—(1) *Purvanupurvi,* (2) *Pashchanupurvi,* and (3) *Ananupurvi.*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(२) से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?

पुव्वाणुपुव्वी उदइए (१) उवसमिए, (२) खतिए, (३) खओवसमिए, (४) पारिणामिए, (५) सन्निवातिए, (६) से तं पुव्वाणुपुव्वी।

२०७. (प्रश्न २) (भाव) पूर्वानुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) (१) औदयिकभाव, (२) औपशमिकभाव, (३) क्षायिकभाव, (४) क्षायोपशमिकभाव, (५) पारिणामिकभाव, (६) सान्निपातिकभाव, इस क्रम से भावों का उपन्यास करना भाव-पूर्वानुपूर्वी है।

207. (Question 2) What is this *Purvanupurvi* (in context of *Bhaava-anupurvi* (state-sequence) ?

(Answer) *Purvanupurvi* is like this—(1) *audayik-bhaava* (culminated state), (2) *aupashamik-bhaava* (pacified state), (3) *kshayik-bhaava* (extinct state), (4) *kshayopashamik-bhaava* (state of extinction-cum-pacification), (these four states are in context of *karma* particles), (5) *parinamik-bhaava* (transformed state), and (6) *sannipatik-bhaava* (mixed state). The arrangement of these states (of beings) in such ascending sequential order is called *purvanupurvi* (ascending sequence).

This concludes the description of *purvanupurvi* (ascending sequence).

(३) से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?

पच्छाणुपुव्वी सन्निवातिए ६ जाव उदइए १। से तं पच्छाणुपुव्वी।

२०७. (प्रश्न ३) पश्चानुपूर्वी क्या है ?

(उत्तर) सान्निपातिकभाव से लेकर औदयिकभाव पर्यन्त भावों की व्युत्क्रम से स्थापना करना पश्चानुपूर्वी है।

207. (Question 3) What is this *Pashchanupurvi* ?

(Answer) The arrangement of the aforesaid states in descending sequential order is called *pashchanupurvi*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(descending sequence). The arrangement being—*sannipatik-bhaava,* and so on up to *audayik-bhaava.*

This concludes the description of *pashchanupurvi* (descending sequence).

(४) से किं तं अणाणुपुव्वी ?

अणाणुपुव्वी एयाए चेव एगादियाए एगुत्तरियाए छगच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरूवूणो। से तं अणाणुपुव्वी। से तं भावाणुपुव्वी। से तं आणुपुव्वी त्ति पदं समत्तं।

२०७. (प्रश्न ४) अनानुपूर्वी क्या है?

(उत्तर) एक से लेकर एकोत्तर वृद्धि द्वारा छह पर्यन्त की श्रेणी में स्थापित संख्या का परस्पर गुणाकार करने पर प्राप्त राशि में से प्रथम और अन्तिम भंग को कम करने पर शेष रहे भंग अनानुपूर्वी हैं।

यह भाव-अनानुपूर्वी का वर्णन पूर्ण हुआ। (विशेष-छह भावों का वर्णन आगे सूत्र २३३ से २५९ तक किया गया है।)

॥ आनुपूर्वी प्रकरण समाप्त ॥

207. (Question 4) What is this *Ananupurvi* ?

(Answer) Place the aforesaid numbers (of states) starting from one and progressively adding one up to six. Multiply all the numbers of this arithmetic progression and subtract 2 (depicting the ascending and descending sequence) from the result. This final result is called *ananupurvi* (random sequence).

This concludes the description of *ananupurvi* (random sequence). This concludes the description of *Bhaava-anupurvi* (state-sequence). This also concludes the description of *Anupurvi* (sequence). (The detailed description of the said six states is available in aphorisms 233-259)

● END OF THE DISCUSSION ON ANUPURVI ●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नामाधिकार प्रकरण
THE DISCUSSION ON NAMA

सूत्र-१२ में उपक्रम के आनुपूर्वी, नाम, प्रमाण, वक्तव्यता, अर्थाधिकार तथा समवतार- इन छह भेदों का वर्णन करने का कथन किया गया है। आनुपूर्वी के सभी भेदों का वर्णन किया जा चुका है। अब नाम आदि का वर्णन प्रारम्भ कर रहे हैं।

It has been stated in aphorism 92 that six categories of *Upakram,* namely *Anupurvi, Nama, Pramana, Vaktavyata, Arthandhikara,* and *Samavatar,* will be discussed. Discussion on all the kinds of *Anupurvis* has been concluded. Now the discussion on *Nama* is being taken up.

नाम

२०८. से किं तं णामे ?

णामे दसविहे पण्णत्ते। तं जहा-(१) एगणामे, (२) दुणामे, (३) तिणामे, (४) चउणामे, (५) पंचणामे, (६) छणामे, (७) सत्तणामे, (८) अट्ठणामे, (९) नवणामे, (१०) दसणामे।

२०८. (प्रश्न) वह नाम क्या है ?

(उत्तर) नाम के दस प्रकार हैं-(१) एक नाम, (२) दो नाम, (३) तीन नाम, (४) चार नाम, (५) पाँच नाम, (६) छह नाम, (७) सात नाम, (८) आठ नाम, (९) नौ नाम, (१०) दस नाम।

NAMA

208. (Question) What is this *nama* ?

(Answer) *Nama* (name) is of ten types—(1) *Eka nama* (one-named), (2) *Do nama* or *Dvinama* (*Two-named* or *bi-named*), (3) *Teen nama* or *Trinama* (Three-named or tri-named), (4) *Char nama* or *Chaturnama* (Four-named), (5) *Panch nama* (Five-named), (6) *Chhaha nama* (Six-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

named), (7) *Saat nama* (Seven-named), (8) *Aath nama* (Eight-named), (9) *No nama* (Nine-named), (10) *Dus nama* (Ten-named).

विवेचन–जीव, अजीव आदि प्रत्येक पदार्थ की पहचान नाम से होती है। वस्तु का वाचक शब्द 'नाम' कहलाता है।

इस नाम के एक, दो, तीन आदि दस भेद हैं। किसी विवक्षित पदार्थ के समस्त रूपों के कथन के लिए जितने नामों की आवश्यकता पड़ती है उस पर नाम के ये प्रकार आधारित हैं। जिस एक नाम से समस्त पदार्थों का कथन हो जाय, वह एक नाम है। जैसे 'सत्'। ऐसा कोई भी पदार्थ नहीं जो सत्ता से विहीन हो अतः इस 'सत्' नाम से लोकवर्ती समस्त पदार्थों का एक साथ कथन हो जाने से 'सत्' एक नाम का उदाहरण है।

इसी प्रकार जिन दो, तीन, चार, यावत् दस नामों से समस्त विवक्षित पदार्थ कहने योग्य बनते हैं वे क्रमशः दो से लेकर दस नाम तक बताये गये हैं।

Elaboration—Every substance including being and non-being is recognized by a name. A word attributed to a thing is called *nama* or name. Ten classes of names have been mentioned here with numerical values of one to ten. These classes are based on the number of names required to express all possible forms or categories of a thing. Eka nama (One name) is that name by which all things can be expressed. For example *sat* (existent). There is no substance or thing that is without existence. As the word existent is one single word (noun) that covers all things in this universe, it is an example of the class *Eka nama* (One-named).

In the same way the number of nouns required to express the desired thing indicates its place among the said list of ten classes of names.

(१) एक नाम

२०९. से किं तं एगणामे ?

णामाणि जाणि काणि वि दव्वाण गुणाण पज्जवाणं च।
तेसिं आगमनिहसे नामं ति परूविया सण्णा॥१७॥

से तं एगणामे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०९. (प्रश्न) एक नाम क्या है ?

(उत्तर) द्रव्यों, गुणों एवं पर्यायों के जितने नाम लोक में प्रचलित हैं, उन सबका 'नाम' ऐसी एक संज्ञा आगम में कही गई है।।१७।। यह एक नाम है।

(1) **EKA NAMA (ONE-NAMED)**

209. (Question) What is this *Eka nama* (one-named) ?

(Answer) Whatever names there are of substances, attributes, and modes (alternatives or transformations) have all been assigned to the term *'nama'* (name) in *Agam*. (17)

This concludes the description of *Eka nama* (one-named).

विवेचन–द्रव्यों–अर्थात् जीव, अजीव आदि, **गुणों**–द्रव्य के गुण जैसे ज्ञान, बुद्धि, गंध, रूप, स्पर्श आदि और **पर्यायों**–द्रव्य के विविध पर्याय अवस्था आदि–जैसे नारक, देव, मनुष्य। ये सभी लोक में प्रचलित जितने भी शब्द हैं, वे भिन्न-भिन्न होने पर भी 'नाम' शब्द में आ जाते हैं। अतः 'नाम'–वह एक नाम है जो किसी भी पदार्थ के समस्त रूप को सम्पादित कर लेता है।

Elaboration—Substances include being, non-being, etc.; their attributes include knowledge, wisdom, smell, form, taste, touch, etc; their modes include infernal beings, human beings, divine, beings, etc.; all these words in use in this world fall under the single category name. Thus name is a word that covers all possible forms or attributes of any given thing.

(२) द्विनाम

२१०. से किं तं दुणामे ?

दुणामे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा–(१) एगक्खरिए य, (२) अणेगक्खरिए य।

२१०. (प्रश्न) द्विनाम क्या है ?

(उत्तर) द्विनाम के दो प्रकार हैं–(१) एकाक्षरिक और, (२) अनेकाक्षरिक।

(2) DO NAMA (TWO-NAMED)

210. (Question) What is this *Do nama* (Two-named) ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(Answer) *Do nama* (Two-named) is of two kinds—(1) *Ekasharika* (monosyllable) and (2) *Anekaksharik* (multi-syllable).

२११. से किं तं एगक्खरिए ?

एगक्खरिए अणेगविहे पण्णत्ते। तं जहा–ह्रीः श्रीः धीः स्त्री। से तं एगक्खरिए।

२११. (प्रश्न) एकाक्षरिक द्विनाम क्या है ?

(उत्तर) एकाक्षरिक द्विनाम के अनेक प्रकार हैं, जैसे–ह्री (लज्जा अथवा देवता विशेष), श्री (लक्ष्मी अथवा देवता विशेष), धी (बुद्धि), स्त्री आदि एकाक्षरिक नाम हैं।

211. (Question) What is this Ekasharika (monosyllable) ?

(Answer) There are many kinds of Ekasharika Do nama (monosyllable Two-named)—Hri, Shri, Dhi, Stree, etc. (Sanskrit monosyllable names meaning shyness or a specific deity, wealth or specific deity, wisdom, and woman respectively.)

२१२. से किं तं अणेगक्खरिए ?

अणेगक्खरिए अणेगविहे पण्णत्ते। तं जहा–कण्णा वीणा लता माला। से तं अणेगक्खरिए।

२१२. (प्रश्न) अनेकाक्षरिक द्विनाम क्या है ?

(उत्तर) अनेकाक्षरिक नाम के भी अनेक प्रकार हैं। यथा–कन्या, वीणा, लता, माला आदि अनेकाक्षरिक द्विनाम हैं।

212. (Question) What is this *Anekasharika* (multi-syllable) ?

(Answer) There are many kinds of *Anekasharika Do nama* (multi-syllable Two-named)—Kanya, Vina, Lata, Mala, etc. (Hindi nouns meaning daughter, a stringed musical instrument, creeper, and garland respectively.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवेचन–किसी भी वस्तु का उच्चारण अक्षरों के माध्यम से होता हैं। अतः एक अक्षर से निष्पन्न नाम को एकाक्षरिक और एक से अधिक–अनेक अक्षरों से निष्पन्न बने नाम को अनेकाक्षरिक कहते हैं।

श्री, ह्री आदि नामों के अतिरिक्त अन्य नामों को भी एकाक्षरिक नाम समझना चाहिए तथा वीणा, माला आदि दो अक्षरों के योग से बने नामों की तरह, बलाका, पताका आदि तीन अक्षरों या इनसे अधिक अक्षरों से बने नामों को अनेकाक्षरिक नाम जानना चाहिए।

Elaboration—Each word or name is made up of syllables. As such a word or name having just one syllable is called monosyllable name. A name having more than one syllable is called multi- syllable.

Names with one syllable, other than those mentioned here, are also monosyllable names. Names with two or more syllables, such as *balaka, pataka,* etc. are also multi-syllable names like *vina, mala,* etc. mentioned here.

२१३. अहवा दुनामे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा–(१) जीवनामे य, (२) अजीवनामे य।

२१३. अथवा द्विनाम के दो प्रकार हैं। यथा–(१) जीवनाम और (२) अजीवनाम।

213. Also there are another two kinds of *Dvinama* (bi-named)—(1) *Jiva-nama* (name of a being) and (2) *Ajiva-nama* (name of a non-being).

२१४. से किं तं जीवणामे ?

जीवणामे अणेगविहे पण्णत्ते। तं जहा–देवदत्तो जण्णदत्तो विण्हुदत्तो सोमदत्तो। से तं जीवनामे।

२१४. **(प्रश्न)** जीवनाम क्या है ?

(उत्तर) जीवनाम के अनेक प्रकार हैं। जैसे–देवदत्त, यज्ञदत्त, विष्णुदत्त, सोमदत्त इत्यादि। यह जीवनाम का स्वरूप है।

214. (Question) What is this *Jiva-nama* (name of a being) ?

(Answer) There are many kinds of *Jiva-nama* (name of a being)—Devadatt, Yajnadatta, Vishnudatta, Somadatta, etc.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

This concludes the description of *Jiva-nama* (name of a being).

२१५. से किं तं अजीवनामे ?

अजीवनामे अणेगविहे पण्णत्ते। तं जहा—घडो पडो कडो रह। से तं अजीवनामे।

२१५. (प्रश्न) अजीवनाम क्या है ?

(उत्तर) अजीवनाम भी अनेक प्रकार के हैं। यथा–घट, पट, कट, रथ इत्यादि। यह अजीवनाम हैं।

215. (Question) What is this *Ajiva-nama* (name of a non-being) ?

(Answer) There are many kinds of Ajiva-nama (name of a non-being)—*Ghat, Pat, Kat, Rath,* etc.

This concludes the description of *Ajiva-nama* (name of a non-being).

दो नाम के सामान्य –विशेष भेद

२१६. (१) अहवा दुनामे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा–(१) विसेसिए य, (२) अविसेसिए य।

२१६. (१) अथवा अपेक्षादृष्टि से द्विनाम के और भी दो प्रकार हैं। यथा–(१) विशेषित (भेद वाला) और (२) अविशेषित (सामान्य)।

SPECIFIC AND GENERAL

216. (1) Also, comparatively speaking there are two more kinds of *Dvinama* (bi-named)—(1) Specific and (2) general.

(२) अविसेसिए दव्वे, विसेसिए जीवदव्वे य अजीवदव्वे य।

(२) द्रव्य यह अविशेषित (सामान्य) नाम है और जीवद्रव्य एवं अजीव द्रव्य ये विशेषित (विशेष) नाम हैं।

(2) *Dravya* (substance) is a general name whereas *Jiva dravya* (living substance) and *Ajiva dravya* (non-living substance) are specific names.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(३) अविसेसिए जीवदव्वे, विसेसिए णेरइए तिरिक्खजोणिए मणुस्से देवे।

(३) जीवद्रव्य को अविशेषित (सामान्य) नाम मानने पर नारक, तिर्यंचयोनिक, मनुष्य और देव ये विशेषित नाम हैं।

(3) When *jiva dravya* is taken to be a general name, the specific names are—*Naarak* (infernal being), *Tiryanch-yonik* (animals), *Manushya* (human beings), and *Deva* (gods or divine beings).

(४) अविसेसिए णेरइए, विसेसिए रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुप्पभाए पंकप्पभाए धूमप्पभाए तमाए तमतमाए। अविसेसिए रयणप्पभापुढविणेरइए, विसेसिए पज्जत्तए य अपज्जत्तए य। एवं जाव अविसेसिए तमतमापुढविणेरइए, विसेसिए पज्जत्तए य अपज्जत्तए य।

(४) नैरयिक अविशेषित (सामान्य) नाम है और रत्नप्रभा का नैरयिक, शर्कराप्रभा का नैरयिक, बालुकाप्रभा का नैरयिक पंकप्रभा का नैरयिक, धूम प्रभा का नैरयिक, तमः प्रभा का नैरयिक, तमस्तमःप्रभा का नैरयिक यह विशेषित द्विनाम हैं।

रत्नप्रभा का नैरयिक, इस नाम को अविशेषित मानने पर रत्नप्रभा का पर्याप्त नैरयिक और रत्नप्रभा का अपर्याप्त नैरयिक विशेषित नाम होंगे यावत् तमस्तमःप्रभा पृथ्वी के नैरयिक को अविशेषित मानने पर उसके पर्याप्त और अपर्याप्त ये विशेषित नाम कहलायेंगे।

(4) When *naarak* (infernal being) is taken to be a general name, the specific names are—*Ratnaprabha Naarak* (infernal being of the hell named *Ratnaprabha*), *Sharkaraprabha Naarak* (infernal being of the hell named *Sharkaraprabha*). *Balukaprabha Naarak* (infernal being of the hell named *Balukaprabha*), *Pankaprabha Naarak* (infernal being of the hell named *Pankaprabha*), *Dhoom-prabha Naarak* (infernal being of the hell named *Dhoom-prabha*), *Tamah-prabha Naarak* (infernal being of the hell named *Tamah-prabha*), *Tamastamah-prabha Naarak* (infernal being of the hell named *Tamastamah-prabha*).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

When *Ratnaprabha Naarak* (infernal being of the hell named *Ratnaprabha*) is taken to be a general name, the specific names are—*Ratnaprabha Paryapt-Naarak* (fully developed infernal being of *Ratnaprabha-hell*) and *Ratnaprabha Aparyapt-Naarak* (under-developed infernal being of *Ratnaprabha-hell*). The same rule applies to the remaining hells up to *Tamastamah-prabha*-hell.

(५) अविसेसिए तिरिक्खजोणिए, विसेसिए एगिंदिए बेइंदिए तेइंदिए चउरिंदिए पंचिंदिए।

(५) तिर्यंचयोनिक इस नाम को अविशेषित मानने पर एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय ये पाँच विशेषित नाम होंगे।

(5) When *Tiryanch-yonik* (animals) is taken to be a general name, the specific names are—*Ekendriya* (one-sensed being), *Dvindriya* (Two-sensed being), *Trindriya* (three-sensed being), *Chaturindriya* (four-sensed being), and *Panchendriya* (five-sensed being).

(६) अविसेसिए एगिंदिए, विसेसिए पुढविकाइए आउकाइए तेउकाइए वाउकाइए वणस्सइकाइए।

अविसेसिए पुढविकाइए—विसेसिए सुहुमपुढविकाइए य बादरपुढविकाए य।

अविसेसिए सुहुमपुढविकाइए, विसेसिए पज्जत्तयसुहुमपुढविकाइए य अपज्जत्तयसुहुमपुढविकाइए य।

अविसेसिए बादरपुढविकाइए, विसेसिए पज्जत्तयबादरपुढविकाइए य अपज्जत्तयबादरपुढविकाइए य।

एवं आउ. तेउ. वाउ. वणस्सती. य अविसेसिए य पज्जत्तय-अपज्जत्तयभेदेहिं भाणियव्वा।

(६) एकेन्द्रिय को अविशेषित नाम मानने पर पृथ्वीकाय, अप्काय, तेजस्काय, वायुकाय, वनस्पतिकाय ये विशेषित नाम होते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यदि पृथ्वीकाय नाम को अविशेषित माना जाये तो सूक्ष्मपृथ्वीकाय और बादरपृथ्वीकाय यह विशेषित नाम होता है।

सूक्ष्मपृथ्वीकाय नाम को अविशेषित माना जाये तो पर्याप्त सूक्ष्मपृथ्वीकाय और अपर्याप्त सूक्ष्मपृथ्वीकाय यह विशेषित नाम होता है।

बादरपृथ्वीकाय नाम अविशेषित मानें तो पर्याप्त बादरपृथ्वीकाय और अपर्याप्त बादरपृथ्वीकाय यह विशेषित नाम हैं।

इसी प्रकार अप्काय, तेजस्काय, वायुकाय, वनस्पतिकाय इन नामों को अविशेषित नाम माने जाने पर अनुक्रम से उनके पर्याप्त और अपर्याप्त ये विशेषित नाम होते हैं।

(6) When *ekendriya* (one-sensed being) is taken to be a general name, the specific names are—*Prithvikaya* (earth-bodied), *Apkaya* (water-bodied), *Tejas-kaya* (fire-bodied), *Vayukaya* (air-bodied), *Vanaspatikaya* (plant-bodied) (being).

When *prithvikaya* (earth-bodied) is taken to be a general name, the specific names are—*Sukshma Prithvikaya* (minute earth-bodied) and *Badar Prithvikaya* (gross earth-bodied) (being).

When *sukshma Prithvikaya* (minute earth-bodied) is taken to be a general name, the specific names are—*Paryapt Sukshma Prithvikaya* (fully developed minute earth-bodied) and *Aparyapt Sukshma Prithvikaya* (under-developed minute earth-bodied) (being).

When *badar Prithvikaya* (gross earth-bodied) is taken to be a general name, the specific names are—*Paryapt Badar Prithvikaya* (fully developed gross earth-bodied) and *Aparyapt Badar Prithvikaya* (under-developed gross earth-bodied) (being).

The same rule also applies to *apkaya* (water-bodied), *tejas-kaya* (fire-bodied), *vayukaya* (air-bodied), and *vanaspatikaya* (plant-bodied) (being).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(७) अविसेसिए बेइंदिए, विसेसिए पज्जत्तयबेइंदिए य अपज्जत्तयबेइंदिए य। एवं तेइंदियचउरिंदिया वि भाणियव्वा।

(७) यदि द्वीन्द्रिय को अविशेषित नाम माना जाये तो पर्याप्त द्वीन्द्रिय और अपर्याप्त द्वीन्द्रिय विशेषित नाम हैं। इसी प्रकार त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय के लिए भी ज़ानना चाहिए।

(7) When *dvindriya* (two-sensed being) is taken to be a general name, the specific names are—*Paryapt Dvindriya* (fully developed two-sensed being) and *Aparyapt Dvindriya* (under-developed two sensed-being). The same rule also applies to *trindriya* (three-sensed being) and *chaturindriya* (four-sensed being).

(८) अविसेसिए पंचेंदियतिरिक्खजोणिए, विसेसिए जलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिए थलयर–पंचेंदियतिरिक्खजोणिए खहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिए य।

(८) यदि पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक को अविशेषित नाम मानें तो जलचर पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिक, स्थलचर पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिक, खेचर पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिक विशेषित नाम होंगे।

(8) When *Panchendriya Tiryanch-yonik* (five-sensed animal) is taken to be a general name, the specific names are—*Jalachar-Panchendriya Tiryanch-yonik* (aquatic five-sensed animal), *Sthalachar-Panchendriya Tiryanch-yonik* (terrestrial five-sensed animal), and *Khechar-Panchendriya Tiryanch-yonik* (aerial five-sensed animal).

(९) अविसेसिए जलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिए, विसेसिए सम्मुच्छिमजलयर-पंचेंदियतिरिक्खजोणिए य गब्भवक्कंतियजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिए य।

अविसेसिए सम्मुच्छिमजलयर–पंचेंदियतिरिक्खजोणिए, विसेसिए पज्जत्तयसम्मुच्छिमजलयर-पंचेंदियतिरिक्खजोणिए य अपज्जत्तयसमुच्छिमजलयर-पंचेंदियतिरिक्खजोणिए य।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अविसेसिए गब्भवक्कंतियजलयर-पंचेंदियतिरिक्खजोणिए, विसेसिए पज्जत्तयगब्भवक्कंतिय-जलयरपंचेन्द्रियतिरिक्खजोणिए य अपज्जत्तयगब्भवक्कंतियजलयर-पंचेंदियतिरिक्खजोणिए य।

(९) जलचर पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिक अविशेषित नाम है तो सम्मूर्च्छिम जलचर पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिक और गर्भव्युत्क्रान्तिक जलचर पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिक यह विशेषित नाम है।

सम्मूर्च्छिम जलचर पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिक अविशेषित नाम है तो उसके पर्याप्त सम्मूर्च्छिम जलचर पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिक, अपर्याप्त सम्मुर्च्छिम जलचर पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिक ये दो भेद विशेषित नाम है।

गर्भव्युत्क्रान्तिक जलचर पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिक यह नाम अविशेषित है और पर्याप्त गर्भव्युत्क्रान्तिक जलचर पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिक तथा अपर्याप्त गर्भव्युत्क्रान्तिक जलचर पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिक नाम विशेषित हैं।

(9) When *Jalachar-Panchendriya Tiryanch-yonik* (aquatic five-sensed animal) is taken to be a general name, the specific names are—*Sammurchhim Jalachar-Panchendriya Tiryanch-yonik* (aquatic five-sensed animal of asexual origin) and *Garbhavyutkrantik Jalachar-Panchendriya Tiryanch-yonik* (aquatic five-sensed animal born out of womb).

When *Sammurchhim Jalachar-Panchendriya Tiryanch-yonik* (aquatic five-sensed animal of asexual origin) is taken to be a general name, the specific names are—*Paryapt Sammurchhim Jalachar-Panchendriya Tiryanch-yonik* (fully developed aquatic five-sensed animal of asexual origin) and *Aparyapt Sammurchhim Jalachar-Panchendriya Tiryanch-yonik* (under-developed aquatic five-sensed animal of asexual origin).

When *Garbhavyutkrantik Jalachar-Panchendriya Tiryanch-yonik* (aquatic five-sensed animal born out of womb) is taken to be a general name, the specific names

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

are—*Paryapt Garbhavyutkrantik Jalachar-Panchendriya Tiryanch-yonik* (fully developed aquatic five-sensed animal born out of womb) and *Aparyapt Garbhavyutkrantik Jalachar-Panchendriya Tiryanch-yonik* (under-developed aquatic five-sensed animal born out of womb).

(१०) अविसेसिए थलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिए, विसेसिए चउप्पयथलयर-पंचेंदियतिरिक्खजोणिए य परिसप्प-थलयर-पंचेंदियतिरिक्खजोणिए य।

अविसेसिए चउप्पय-थलयर-पंचेंदियतिरिक्खजोणिए विसेसिए सम्मुच्छिमचउप्पयथलयर-पंचेंदियतिरिक्खजोणिए य गब्भवक्कंतियचउप्पयथलयर-पंचेंदियतिरिक्खजोणिए य।

अविसेसिए सम्मुच्छिमचउप्पयथलयर–पंचेंदियतिरिक्खजोणिए, विसेसिए पज्जत्तयसम्मुच्छिमचउप्पयथलयर-पंचेंदियतिरिक्खजोणि य अपज्जत्तय-सम्मुच्छिमचउप्पय थलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिए य।

अविसेसिए गब्भवक्कंतियचउप्पयथलयर-पंचेंदियतिरिक्खजोणिए, विसेसिए पज्जत्तयगब्भवक्कंतियचउप्पय थलयर पंचेंदियतिरिक्खजोणिए य अपज्जत्तय-गब्भवक्कंतियचउप्पय थलयर-पंचेंदियतिरिक्खजोणिए य।

अविसेसिए परिसप्पथलयर-पंचेंदियतिरिक्खजोणिए, विसेसिए उरपरिसप्पथलयर-पंचेंदियतिरिक्खजोणिए य भुयपरिसप्पथलयरपंचेंदिय तिरिक्खजोणिएय।

एवं सम्मुच्छिमा पज्जत्ता अपज्जत्ता य, गब्भवक्कंतिया वि पज्जत्ता अपज्जत्ता य भाणियव्वा।

(१०) थलचर पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिक को अविशेषित नाम मानने पर चतुष्पद थलचर पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिक, परिसर्प थलचर पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिक विशेषित नाम हैं।

यदि चतुष्पद थलचर पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिक को अविशेषित मानें तो सम्मूर्च्छिम चतुष्पद थलचर पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिक और गर्भव्युत्क्रान्तिक चतुष्पद थलचर पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिक ये भेद विशेषित नाम होते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्मूर्च्छिम चतुष्पद थलचर पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिक यह अविशेषित नाम मानने पर पर्याप्त **सम्मूर्च्छिम चतुष्पद थलचर पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिक** और अपर्याप्त-सामूहिक विशेषित नाम हैं।

यदि गर्भव्युत्क्रान्तिक चतुष्पद थलचर पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिक नाम को अविशेषित मानें तो पर्याप्त गर्भव्युत्क्रान्तिक चतुष्पद थलचर पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिक और अपर्याप्त गर्भव्युतत्क्रान्तिक चतुष्पद थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक ये विशेषित नाम हैं।

यदि परिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक यह अविशेषित नाम मानें तो उसके भेद उरपरिसर्प थलचर पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिक और भुजपरिसर्प थलचर पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिक नाम विशेषित नाम है।

इसी प्रकार सम्मूर्च्छिम पर्याप्त और अपर्याप्त तथा गर्भव्युत्क्रान्तिक पर्याप्त, अपर्याप्त का कथन करना चाहिए।

(10) When *Sthalachar-Panchendriya Tiryanch-yonik* (terrestrial five-sensed animal) is taken to be a general name, the specific names are—*Chatushpad Sthalachar-Panchendriya Tiryanch-yonik* (quadruped terrestrial five-sensed animal) and *Parisarp Sthalachar-Panchendriya Tiryanch-yonik* (reptilian five-sensed animal).

When *Chatushpad Sthalachar-Panchendriya Tiryanch-yonik* (quadruped terrestrial five-sensed animal) is taken to be a general name, the specific names are—*Sammurchhim Chatushpad Sthalachar-Panchendriya Tiryanch-yonik* (quadruped terrestrial five-sensed animal of asexual origin) and *Garbhavyutkrantik Chatushpad Sthalachar-Panchendriya Tiryanch-yonik* (quadruped terrestrial five-sensed animal born out of womb).

When *Sammurchhim Chatushpad Sthalachar-Panchendriya Tiryanch-yonik* (quadruped terrestrial five-sensed animal of asexual origin) is taken to be a general name, the specific names are—*Paryapt Sammurchhim Chatushpad Sthalachar-Panchendriya Tiryanch-yonik* (fully

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

developed quadruped terrestrial five-sensed animal of asexual origin) and *Aparyapt Sammurchhim Chatushpad Sthalachar-Panchendriya Tiryanch-yonik* (under-developed quadruped terrestrial five-sensed animal of asexual origin).

When *Garbhavyutkrantik Chatushpad Sthalachar-Panchendriya Tiryanch-yonik* (quadruped terrestrial five-sensed animal born out of womb) is taken to be a general name, the specific names are—*Paryapt Garbhavyutkrantik Chatushpad Sthalachar-Panchendriya Tiryanch-yonik* (fully developed quadruped terrestrial five-sensed animal born out of womb) and *Aparyapt Garbhavyutkrantik Chatushpad Sthalachar-Panchendriya Tiryanch-yonik* (under-developed quadruped terrestrial five-sensed animal born out of womb).

When *Parisarp Sthalachar-Panchendriya Tiryanch-yonik* (reptilian terrestrial five-sensed animal) is taken to be a general name, the specific names are—*Ur-Parisarp Sthalachar-Panchendriya Tiryanch-yonik* (non-limbed reptilian terrestrial five-sensed animal) and *Bhuj-Parisarp Sthalachar-Panchendriya Tiryanch-yonik* (limbed reptilian terrestrial five-sensed animal).

Here *Sammurchhim, Paryapt, Aparyapt* and *Garbhavyutkrantik, Paryapt, Aparyapt* should also be stated as before.

(११) अविसेसिए खहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिए, विसेसिए सम्मुच्छिमखहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिए य गब्भवक्कंतियखहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिए य।

अविसेसिए सम्मुच्छिमखहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिए, विसेसिए पज्जत्तयसम्मुच्छिमखहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिए य अपज्जत्तयसमुच्छिमखहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अविसेसिए गब्भवक्कंतियखहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिए, विसेसिए पज्जत्तयगब्भवक्कंतियखहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिए य अपज्जत्तयगब्भवक्कंतियखहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिए य।

(११) खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक अविशेषित नाम मानने पर सम्मूर्च्छिम खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक और गर्भव्युत्क्रान्तिक खेचर पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिक विशेषित नाम होता है।

यदि सम्मूर्च्छिम खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक नाम को अविशेषित नाम माना जाये तो पर्याप्त सम्मूर्च्छिम खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक और अपर्याप्त सम्मूर्च्छिम खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक विशेषित नाम है।

इसी प्रकार गर्भव्युत्क्रान्तिक खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक नाम को अविशेषित माना जाये तो पर्याप्त गर्भव्युतूत्क्रान्तिक खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक और अपर्याप्त गर्भव्युत्क्रान्तिक खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक ये विशेषित नाम कहे जायेंगे।

(11) When *Khechar-Panchendriya Tiryanch-yonik* (aerial five-sensed animal) is taken to be a general name, the specific names are—*Sammurchhim Khechar-Panchendriya Tiryanch-yonik* (aerial five-sensed animal of asexual origin) and *Garbhavyutkrantik Khechar-Panchendriya Tiryanch-yonik* (aerial five-sensed animal born out of womb).

When *Sammurchhim Khechar-Panchendriya Tiryanch-yonik* (aerial five-sensed animal of asexual origin) is taken to be a general name, the specific names are—*Paryapt Sammurchhim Khechar-Panchendriya Tiryanch-yonik* (fully developed aerial five-sensed animal of asexual origin) and *Aparyapt Sammurchhim Khechar-Panchendriya Tiryanch-yonik* (under-developed aerial five-sensed animal of asexual origin).

When *Garbhavyutkrantik Khechar-Panchendriya Tiryanch-yonik* (aerial five-sensed animal born out of womb) is taken to be a general name, the specific names are—*Paryapt Garbhavyutkrantik Khechar-Panchendriya*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Tiryanch-yonik (fully developed aerial five-sensed animal born out of womb) and *Aparyapt Garbhavyutkrantik Khechar-Panchendriya Tiryanch-yonik* (under-developed aerial five-sensed animal born out of womb).

(१२) अविसेसिए मणुस्से, विसेसिए सम्मुच्छिममणूसे य गब्भवक्कंतियमणुस्से य।

अविसेसिए सम्मुच्छिममणुसे, विसेसिए पज्जत्तयसम्मुच्छिममणूसे य अपज्जत्तगसम्मुच्छिमणूसे।

(१२) मनुष्य नाम को अविशेषित (सामान्य) नाम माना जाये तो सम्मूर्च्छिम मनुष्य और गर्भव्युत्क्रान्तिक मनुष्य यह नाम विशेषित कहलायेंगे।

सम्मुर्च्छिम मनुष्य को अविशेषित नाम मानने पर पर्याप्त सम्मूर्च्छिम मनुष्य और अपर्याप्त सम्मूर्च्छिम मनुष्य यह दो नाम विशेषित नाम हैं।

यदि गर्भव्युत्क्रान्तिक मनुष्य को अविशेषित मानें तो पर्याप्त गर्भव्युत्क्रान्तिक मनुष्य और अपर्याप्त गर्भव्युत्क्रान्तिक मनुष्य नाम विशेषित हो जायेंगे।

(12) When *Manushya* (human being) is taken to be a general name, the specific names are—*Sammurchhim Manushya* (human being of asexual origin) and *Garbhavyutkrantik Manushya* (human being born out of womb).

When *Sammurchhim Manushya* (human being of asexual origin) is taken to be a general name, the specific names are—*Paryapt Sammurchhim Manushya* (fully developed human being of asexual origin) and *Aparyapt Sammurchhim Manushya* (under-developed human being of asexual origin).

When *Garbhavyutkrantik Manushya* (human being born out of womb) is taken to be a general name, the specific names are—*Paryapt Garbhavyutkrantik Manushya* (fully developed human being born out of womb) and *Aparyapt Garbhavyutkrantik Manushya* (under-developed human being born out of womb).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(१३) अविसेसिए देवे, विसेसिए भवणवासी वाणमंतरे जोइसिए वेमाणिए य।

अविसेसिए भवणवासी, विसेसिए असुरकुमारे एवं नाग. सुवण्ण. विज्जु. अग्गि. दीव. उदधि. दिसा. वात. थणियकुमारे।

सव्वेसिं पि अविसेसिय–विसेसिय–पज्जत्तय–अपज्जत्तयभेया भाणियव्वा।

(१३) देव नाम को अविशेषित मानने पर उसके अवान्तर भेद भवनवासी, वाणव्यंतर, ज्योतिष्क और वैमानिक यह देवनाम कहलायेंगे।

यदि उक्त देवभेदों में से भवनवासी नाम को अविशेषित माना जाये तो असुरकुमार, नागकुमार, सुपर्णकुमार, विद्युत्कुमार, अग्निकुमार, द्वीपकुमार, उदधिकुमार, दिक्कुमार, वायुकुमार और स्तनितकुमार ये नाम विशेषित हैं।

इन सब नामों में से भी प्रत्येक को यदि अविशेषित माना जाये तो उन सबके पर्याप्त और अपर्याप्त भेद विशेषित नाम कहलायेंगे।

(13) When *Deva* (god or divine being) is taken to be a general name, the specific names are—*Bhavan-vasi* (mansion residing god), *Vanavyantar* (interstitial god), *Jyotishk* (stellar god), and *Vaimanik* (god endowed with celestial vehicles)

When *Bhavan-vasi* (mansion residing god) is taken to be a general name, the specific names are—*Asur-kumar, Naag-kumar, Suparn-kumar, Vudyut-kumar, Agni-kumar, Dveep-kumar, Udadhi-kumar, Dik-kumar, Vayu-kumar, and Stanit-kumar.*

When each one of these is taken to be a general name, the specific names would be their fully developed and under-developed forms.

(१४) अविसेसिए वाणमंतरे, विसेसिए पिसाए भूते जक्खे रक्खसे किण्णरे किंपुरिसे महोरगे गंधव्वे।

एतेसिं पि अविसेसिय–विसेसिय–पज्जत्तय–अपज्जत्तयभेया–भाणियव्वा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(१४) वाणव्यंतर नाम को अविशेषित मानने पर पिशाच, भूत, यक्ष, राक्षस, किन्नर, किंपुरुष, महोरग, गंधर्व, ये नाम विशेषित नाम हैं।

इन सबमें से भी प्रत्येक को अविशेषित नाम माना जाये तो उनके पर्याप्त अपर्याप्त भेद विशेषित नाम कहलायेंगे।

(14) When *Vanavyantar* (interstitial god) is taken to be a general name, the specific names are—*Pishach, Bhoot, Yaksh, Rakshas, Kinnar, Kimpurush, Mahorag,* and *Gandharva*.

When each one of these is taken to be a general name, the specific names would be their fully developed and under-developed forms.

(१५) अविसेसिए जोइसिए, विसेसिए चंदे सूरे गहे नक्खत्ते ताराख्वे

एतेसिं पि अविसेसिय–विसेसिय–पज्जत्तय–अपज्जत्तयभेया भाणियव्वा।

(१५) ज्योतिष्क नाम विशेषित माना जाये तो चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और तारारूप नाम विशेषित हैं।

इनमें से भी प्रत्येक को अविशेषित नाम मानने पर उनके पर्याप्त, अपर्याप्त भेद विशेषित नाम कहे जायेंगे।

(15) When *Jyotishk* (stellar god) is taken to be a general name, the specific names are—*Chandra* (moon), *Surya* (sun), *Graha* (planet), *Nakshatra* (heavenly body), and *Tara* (star).

When each one of these is taken to be a general name, the specific names would be their fully developed and under-developed forms.

(१६) अविसेसिए वेमाणिए, विसेसिए कप्पोवगे य कप्पातीतए य। अविसेसिए कप्पोवए, विसेसए सोहम्मए ईसाणए सणंकुमारए माहिंदए बंभलोगए लंतयए महासुक्कए सहस्सारए आणयए पाणयए आरणए अच्चुतए।

एतेसिं पि अविसेसिय–विसेसिय–पज्जत्तय–अपज्जत्तयभेदा भाणियव्वा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(१६) वैमानिक अविशेषित नाम माना जाये तो उसके कल्पोपपन्न और कल्पातीत यह दो प्रकार विशेषित नाम है।

कल्पोपपन्न को अविशेषित नाम मानने पर सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्मलोक, लांतक, महाशुक्र, सहस्रार, आनत, प्राणत, आरण, अच्युत विमानवासी देव विशेषित नाम हैं।

यदि इनमें से प्रत्येक को अविशेषित नाम माना जाये तो उनके पर्याप्त, अपर्याप्त भेद विशेषित नाम हैं।

(16) When *Vaimanik* (god endowed with celestial vehicles) is taken to be a general name, the specific names are—*Kalpopapanna* (born in *Kalp*-heaven or a specific celestial area) and *Kalpateet* (born outside the Kalp-heaven).

When *Kalpopapanna* (born in *Kalp*-heaven or a specific celestial area) is taken to be a general name, the specific names are—(Gods residing in celestial vehicles named) *Saudharma, Ishan, Sanatkumar, Mahendra, Brahmalok, Lantak, Mahashukra, Sahasrar, Anat, Pranat, Aran, and Achuyt.*

When each one of these is taken to be a general name, the specific names would be their fully developed and under-developed forms.

(१७) अविसेसिए कप्पातीतए, विसेसिए गेवेज्जए य अणुत्तरोववाइए य।

अविसेसिए गेवेज्जए, विसेसिए हेट्ठिमगेवेज्जए मज्झिमगेवेज्जए उवरिमगेवेज्जए।

अविसेसिए हेट्ठिमगेवेज्जए, विसेसिए हेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्जए हेट्ठिम–मज्झिमगेवेज्जए हेट्ठिम–उवरिमगेवेज्जए।

अविसेसिए मज्झिमगेवेज्जए, विसेसिए मज्झिमहेट्ठिमगेज्जए मज्झिममज्झिमगेवेज्जए मज्झिमउवरिमगेवेज्जए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अविसेसिए उवरिमगेवेज्जए, विसेसिए उवरिमहेट्ठिमगेवेज्जए उवरिममज्झिमगेवज्जए उवरिमउवरिमगेवेज्जए।

एतेसिं पि सव्वेसिं अविसेसिय–विसेसिय–पज्जत्तय–अपज्जत्तयभेदा भाणियव्वा।

(१७) कल्पातीत का अविशेषित नाम मानें तो ग्रैवेयकवासी और अनुत्तरौपपताकि देव विशेषित नाम होंगे।

ग्रैवेयकवासी अविशेषित नाम मानने पर अधस्तनग्रैवेयक, मध्यमग्रैवेयक, उपरितनग्रैवेयक ये विशेषित नाम होंगे।

जब अधस्तनग्रैवेयक को अविशेषित नाम माना जायेगा तब अधस्तन–अधस्तन ग्रैवेयक, अधस्तन–मध्यम ग्रैवेयक, अधस्तन–उपरितन ग्रैवेयक विशेषित नाम कहलायेंगे।

मध्यमग्रैवेयक को अविशेषित मानने पर मध्यम–अधस्तन ग्रैवेयक, मध्यम–मध्यम ग्रैवेयक, मध्यम–उपरिम ग्रैवेयक विशेषित नाम होंगे।

यदि उपरिम ग्रैवेयक को अविशेषित नाम माना जाये तो उपरिम–अधस्तन ग्रैवेयक, उपरिम मध्यम ग्रैवेयक, उपरिम–उपरिम ग्रैवेयक ये विशेषित नाम कहलायेंगे।

इन सबको भी अविशेषित नाम माना जाये तो उनके पर्याप्त और अपर्याप्त ये विशेषित नाम कहलायेंगे।

(17) When *Kalpateet* (born outside the *Kalp*-heaven) is taken to be a general name, the specific names are—*Graiveyak-vasi* (dwelling in a celestial area named *Graiveyak*) and *Anuttaropapatik* (gods residing in highest heaven called *anuttar* or unique).

When *Graiveyak-vasi* (dwelling in a celestial area named *Graiveyak*) is taken to be a general name, the specific names are—*Adhastan* (lower) *Graiveyak, Madhyam* (middle) *Graiveyak*, and *Uparitan* (upper) *Graiveyak*.

When *Adhastan* (lower) *Graiveyak* is taken to be a general name, the specific names are—*Adhastan-Adhastan*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Graiveyak, Adhastan-Madhyam Graiveyak, and *Adhastan-Uparitan Graiveyak*

When *Madhyam* (middle) *Graiveyak* is taken to be a general name, the specific names are—*Madhyam-Adhastan Graiveyak, Madhyam-Madhyam Graiveyak*, and *Madhyam-Uparitan Graiveyak*

When *Uparitan* (upper) *Graiveyak* is taken to be a general name, the specific names are—*Uparitan-Adhastan Graiveyak, Uparitan-Madhyam Graiveyak*, and *Uparitan-Uparitan Graiveyak*

When each one of these is taken to be a general name, the specific names would be their fully developed and under-developed forms.

(१८) अविसेसिए अणुत्तरोववाइए, विसेसिए विजयए वेजयंतए जयंतए अपराजियए सव्वट्ठसिद्धए य।

एतेसिं पि सव्वेसिं अविसेसिय-विसेसिय-पज्जत्तय-अपज्जत्तयभेदा भाणियव्वा।

(१८) अनुत्तरोपपातिक देव नाम को अविशेषित कहा जाये तो विजय, वैजयन्त, जयन्त, अपराजित, सर्वार्थसिद्धविमानदेव विशेषित नाम कहलायेंगे।

इन सबको भी अविशेषित नाम की कोटि में ग्रहण किया जाये तो प्रत्येक के पर्याप्त और अपर्याप्त भेद विशेषित नाम हैं।

(18) When *Anuttaropapatik* (gods residing in highest heaven called *Anuttar* or unique) is taken to be a general name, the specific names are—(Gods residing in celestial vehicles named) *Vijaya, Vaijayant, Jayant, Aparajit, and Sarvarthsiddha.*

When each one of these is taken to be a general name, the specific names would be their fully developed and under-developed forms.

(१९) अविसेसिए अजीवदव्वे, विसेसिए धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए अद्धासमए य।

अविसेसिए पोग्गलत्थिकाए विसेसिए परमाणुपोग्गले दुपएसिए जाव अणंतपएसिए। से तं दुनामे।

(१९) अजीवद्रव्य को अविशेषित नाम मानने पर धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, पुद्‌गलास्तिकाय और अद्धासमय ये विशेषित नाम होंगे।

पुद्‌गलास्तिकाय को भी अविशेषित नाम मानने पर परमाणुपुद्‌गल, द्विप्रदेशिक यावत् अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध, विशेषित नाम कहलायेंगे। यह द्विनाम का स्वरूप है।

GENERAL AND SPECIFIC NAMES OF NON-LIVING SUBSTANCE

(19) When *Ajiva dravya* (non-living substance) is taken to be a general name, the specific names are—*Dharmastikaya* (motion entity), *Adharmastikaya* (rest entity), *Akashastikaya* (space entity), *Pudgalastikaya* (matter entity), and *Addhakala* (time).

When *Pudgalastikaya* (matter entity) is taken to be a general name, the specific names are—*Paramanu-pudgala* (ultimate-particle of matter), and aggregates of two to infinite space-points (or *paramanus*).

This concludes the description of *Dvinama* (bi-named).

विवेचन—इन सूत्रों में अविशेषित और विशेषित इन दो अपेक्षाओं से द्विनाम का वर्णन किया है। तात्पर्य यह है कि प्रत्येक वस्तु सामान्य-विशेषात्मक है। संग्रहनय सामान्य अंश को और व्यवहारनय विशेष को प्रधानता देकर स्वीकार करता है। संग्रहनय द्वारा गृहीत अविशेषित-सामान्य-एकत्व में व्यवहारनय विधिपूर्वक भेद करता है। इन दोनों नयों की दृष्टि से ये नाम अविशेषित और विशेषित बन जाते हैं।

सम्मूर्च्छिम जीव वे हैं जो गर्भ के बिना ही उत्पन्न हो जाते हैं। इनका जन्म न तो देव-नारकों की तरह नियत स्थान से ही होता है और न ही गर्भ से। **व्युत्क्रान्तिक** का तात्पर्य

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उत्पत्ति है। जिन जीवों की उत्पत्ति गर्भ से होती है वे गर्भव्युत्क्रान्तिक जीव हैं। जो सरकते, रेंगते हैं, वे **परिसर्प** कहलाते हैं। सर्पादिक जीव छाती से सरकने वाले होने से **उरपरिसर्प** हैं और जो जीव भुजाओं से सरकते हैं, वे **भुजपरिसर्प** हैं। जैसे गोधा, नकुल आदि।

Elaboration—The aforesaid aphorisms have described bi-named in two contexts—general and specific. This conveys that every thing has two facets—general and specific. *Samgraha naya* (generalized viewpoint) accepts with emphasis on general facet and *Vyavahar naya* on specific facet. *Vyavahar naya* methodically classifies the unitary or specific view of *Samgraha naya*. From the viewpoint of these two *nayas* these names become general and specific.

Technical Terms—*Sammurchhim* beings are those that do not require a womb to be born. In other words they are of asexual origin. They are neither born out of a womb nor at a specific spot like divine and infernal beings.

Vyutkranti means origin or birth. The beings that are born out of a womb are called *garbh-vyutkrantit* (*garbh* means womb).

Parisarp are beings that crawl; reptiles are in this class. Those that crawl with the help of their breasts are called *ur-parisarp* (*ur* means breast); reptiles without limbs, like snakes, are in this class. Those that crawl with the help of arms are called *bhuj-parisarp* (*bhuja* means arms); reptiles with limbs, like lizards, are in this class.

(३) त्रिनाम

२१७. से किं तं तिनामे ?

तिनामे तिविहे पण्णत्ते। तं जहा–(१) दव्वणामे, (२) गुणणामे, (३) पज्जवणामे य।

२१७. (प्रश्न) त्रिनाम क्या है ?

(उत्तर) त्रिनाम के तीन भेद हैं–(१) द्रव्यनाम, (२) गुणनाम और (३) पर्यायनाम।

(3) TRINAMA

217. (Question) What is this *Trinama* (Tri-named) ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(Answer) *Trinama* (Tri-named) is of three kinds—(1) *Dravya-nama*, (2) *Guna-nama*, (3) *Paryaya-nama*.

विवेचन–तीन विकल्प वाला नाम त्रिनाम है। सूत्र में द्रव्य, गुण और पर्याय को त्रिनाम का उदाहरण बताया है।

द्रव्य, गुण, पर्याय का लक्षण–जो पर्यायों (अवस्थाओं) को प्राप्त करता है उसका नाम **द्रव्य** है। इस अर्थ के अनुसार द्रव्य की व्याख्या दो प्रकार से की जाती है–जो गुण और पर्याय का आधार हो तथा उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य स्वभाव वाला हो, उसे द्रव्य कहते हैं। त्रिकाल स्थायी स्वभाव वाले **गुण** और प्रति समय पलटने वाली अवस्था को अथवा गुणों के विकार को **पर्याय** कहते हैं। गुण-द्रव्य का स्वभाव अभिन्न अंग होने से ध्रुव है, तथा पर्याय निरन्तर उत्पाद–व्यय–रूप होने से अस्थायी–परिवर्तनशील है। इन द्रव्य, गुण और पर्याय के नाम को क्रमशः द्रव्यनाम, गुणनाम और पर्यायनाम कहते हैं।

Elaboration—A name having three categories is called *Trinama* (Tri-named). In this aphorism the example given is of *dravya* (substance), *guna* (attributes), and *paryaya* (modes).

Characteristics of dravya, guna and paryaya—That which undergoes transformations is called *dravya* (substance). In this context *dravya* (substance) is defined two ways—That which is the basis of *guna* (attributes) and *paryaya* (modes) is called *dravya*. And that which has the properties of creation, destruction, and permanence is called *dravya*. The intrinsic nature that persists in threefold time (past, present, and future) is called *guna* (attributes). The ever transforming state or the distortion of attributes is called *paryaya* (modes).

(क) द्रव्यनाम

२१८. से किं तं दव्वणामे ?

दव्वणामे छव्विहे पण्णत्ते। तं जहा–(१) धम्मत्थिकाए, (२) अधम्मत्थिकाए, (३) आगासत्थिकाए, (४) जीवत्थिकाए, (५) पोग्गलत्थिकाए. (६) अद्धासमए अ। से तं दव्वणामे।

२१८. **(प्रश्न)** द्रव्य नाम क्या है?

(उत्तर) द्रव्य नाम छह प्रकार का है। यथा–(१) धर्मास्तिकाय, (२) अधर्मास्तिकाय, (३) आकाशास्तिकाय, (४) जीवास्तिकाय, (५) पुद्गलास्तिकाय, (६) अद्धासमय।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(A) DRAVYA-NAMA

218. (Question) What is this *Dravya-nama* (substance name)?

(Answer) *Dravya-nama* (substance-name) is of six types—(1) *Dharmastikaya* (motion entity), (2) *Adharmastikaya* (rest entity), (3) *Akashastikaya* (space entity), (4) *Jivastikaya* (life entity), (5) *Pudgalastikaya* (matter entity), (6) *Addhakala* (time).

(ख) गुणनाम

२१९. से किं तं गुणनामे ?

गुणनामे पंचविहे पण्णत्ते। तं जहा-(१) वण्णनामे, (२) गंधनामे, (३) रसणामे, (४) फासनामे, (५) संठाणनामे।

२१९. (प्रश्न) गुण नाम क्या है ?

(उत्तर) गुण नाम के पाँच प्रकार के हैं-(१) वर्णनाम, (२) गंधनाम, (३) रसनाम, (४) स्पर्शनाम, (५) संस्थाननाम।

(B) GUNA-NAMA

219. (Question) What is this *Guna-nama* (attribute-name)?

(Answer) *Guna-nama* (attribute-name) is of five types—(1) *Varna-nama* (appearance-name), (2) *Gandh-nama* (smell-name), (3) *Rasa-nama* (taste-name), (4) *Sparsh-nama* (touch-name), (5) *Samsthan-nama* (structure-name).

विवेचन-सूत्र में बताए गये गुणनाम के पाँचों भेद पुद्गलद्रव्य में पाये जाते हैं। यद्यपि धर्मास्तिकाय आदि द्रव्यों के अपने-अपने गुण हैं, परन्तु पुद्गलद्रव्य के सिवाय शेष द्रव्य अमूर्त होने से उनके गुण भी अमूर्त हैं।

इन वर्णनाम आदि के लक्षण इस प्रकार हैं-

वर्णनाम-सामान्यतया वर्ण का अर्थ रंग होता है किन्तु यहाँ दृष्ट रूप के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। वर्ण चक्षुरिन्द्रिय का विषय है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गंधनाम–जो सूंघा जाये वह गंध है। यह घ्राणेन्द्रिय का विषय है।

रसनाम–जो चखा जाता है वह रस है। यह रसनेन्द्रिय का विषय है।

स्पर्शनाम–जो स्पर्शनेन्द्रिय द्वारा छूने पर जाना जाये वह स्पर्श है।

संस्थाननाम–आकार, आकृति को संस्थान कहते हैं।

Elaboration—The five types of *Guna-nama* (attribute-name) are evident in matter (*pudgala dravya*). Although substances like *Dharmastikaya* (motion entity) also have their own attributes, but as besides matter all other substances are formless their attributes are also intangible.

The definitions of these *Guna-namas* (attribute-names) including *Varna-nama* (appearance-name) are as follows—

Varna-nama (appearance-name)—The common meaning of *varna* is colour but here it means appearance. It is the subject of eyes or the sense of seeing.

Gandh-nama (smell-name)—*Gandh* means smell. It is the subject of nose or the sense of smell.

Rasa-nama (taste-name)—*Rasa* here means taste. It is the subject of taste buds or the sense of taste.

Sparsh-nama (touch-name)—*Sparsh* means touch. It is the subject of skin or the sense of touch.

Samsthan-nama (structure-name)—*Samsthan* means shape or form. It defines the structure or constitution of things.

वर्णनाम के भेद

२२०. से किं तं वण्णनामे ?

वण्णनामे पंचविहे पण्णत्ते। तं जहा–(१) कालवण्णनामे, (२) नीलवण्णनामे, (३) लोहियवण्णनामे, (४) हालिद्दवण्णनामे, (५) सुक्किलवण्णनामे। से तं वण्णनामे।

२२०. (प्रश्न) वर्ण नाम क्या है ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(उत्तर) वर्ण नाम के पाँच भेद हैं—(१) कृष्णवर्णनाम, (२) नीलवर्णनाम, (३) लोहित (रक्त) वर्णनाम, (४) हारिद्र (पीत) वर्णनाम, (५) शुक्लवर्णनाम। यह वर्णनाम का स्वरूप है।

VARNA-NAMA

220. (Question) What is this *Varna-nama* (appearance-name)?

(Answer) *Varna-nama* (appearance-name) is of five types—(1) *Krishna Varna-nama* (black appearance), (2) Neel Varna-nama (blue appearance), (3) *Lohit Varna-nama* (red appearance), (4) *Haridra Varna-nama* (yellow appearance), (5) *Shukla Varna-nama* (white appearance).

This concludes the description of *Varna-nama* (appearance-name).

गंधनाम

२२१. से किं तं गंधनामे ?

गंधनामे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा—(१) सुरभिगंधनामे य, (२) दुरभिगंधनामे य। से तं गंधनामे।

२२१. (प्रश्न) गंध नाम क्या है?

(उत्तर) गंध नाम के दो प्रकार हैं। यथा—(१) सुरभिगंधनाम, (२) दुरभिगंधनाम। यह गंधनाम का स्वरूप है।

GANDH-NAMA

221. (Question) What is this *Gandh-nama* (smell-name)?

(Answer) *Gandh-nama* (smell-name) is of two types—(1) *Surabhi Gandh-nama* (good smell-name) and (2) *Durabhi Gandh-nama* (bad smell-name).

This concludes the description of *Gandh-nama* (smell-name).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रसनाम

२२२. से किं तं रसनामे ?

रसनामे पंचविहे पण्णत्ते। तं जहा–(१) तित्तरसणामे, (२) कडुयरसणामे, (३) कसायरसणामे, (४) अंबिलरसणामे, (५) महुररसणामे य। से तं रसनामे।

२२२. **(प्रश्न)** रस नाम क्या है ?

(उत्तर) रस नाम के पाँच भेद हैं। जैसे–(१) तिक्तरसनाम, (२) कटुकरसनाम, (३) कषायरसनाम, (४) आम्लरसनाम, (५) मधुररसनाम। यह रसनाम का स्वरूप है।

RASA-NAMA

222. (Question) What is this *Rasa-nama* (taste-name) ?

(Answer) *Rasa-nama* (taste-name) is of five types—(1) *Tikta Rasa-nama* (bitter taste-name), (2) *Katuk Rasa-nama* (pungent taste-name), (3) *Kashaya Rasa-nama* (astringent taste-name), (4) *Amla Rasa-nama* (sour taste), and (5) *Madhura Rasa-nama* (sweet taste-name).

This concludes the description of *Rasa-nama* (taste-name).

स्पर्शनाम

२२३. से किं तं फासणामे ?

फासणामे अट्ठविहे पण्णत्ते। तं जहा–(१) कक्खडफासणामे, (२) मउयफासणामे, (३) गरुयफासणामे, (४) लहुयफासणामे, (५) सीतफासणामे, (६) उसिणफासणामे, (७) णिद्धफासणामे, (८) लुक्खफासणामे। से तं फासणामे।

२२३. **(प्रश्न)** स्पर्श नाम क्या है ?

(उत्तर) स्पर्श नाम के आठ प्रकार हैं–(१) कर्कशस्पर्शनाम, (२) मृदुस्पर्शनाम, (३) गुरुस्पर्शनाम, (४) लघुस्पर्शनाम, (५) शीतस्पर्शनाम, (६) उष्णस्पर्शनाम, (७) स्निग्धस्पर्शनाम, (८) रूक्षस्पर्शनाम। यह स्पर्शनाम का स्वरूप है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

SPARSH-NAMA

223. (Question) What is this *Sparsh-nama* (touch-name) ?

(Answer) *Sparsh-nama* (touch-name) is of eight types—(1) *Karkash Sparsh-nama* (hard touch-name), (2) *Mridu Sparsh-nama* (soft touch-name), (3) *Guru Sparsh-nama* (heavy touch-name), (4) *Laghu Sparsh-nama* (light touch-name), (5) *Sheet Sparsh-nama* (cold touch-name), 6) *Ushna Sparsh-nama* (hot touch-name), (7) *Snigdha Sparsh-nama* (smooth touch-name), and (8) *Ruksh Sparsh-nama* (coarse or dry touch-name).

This concludes the description of *Sparsh-nama* (touch-name).

संस्थाननाम

२२४. से किं तं संठाणणामे ?

संठाणणामे पंचविहे पण्णत्ते। तं जहा–(१) परिमंडलसंठाणणामे, (२) वट्टसंठाणणामे, (३) तंससंठाणणामे, (४) चउरंससंठाणणामे, (५) आयतसंठाणणामे। से तं संठाणणामे। से तं गुणणामे।

२२४. (प्रश्न) संस्थाननाम क्या है ?

(उत्तर) संस्थाननाम के पाँच प्रकार कहे हैं। यथा–(१) परिमण्डल–संस्थाननाम, (२) वृत्तसंस्थाननाम, (३) त्र्यस्रसंस्थाननाम, (४) चतुरस्रसंस्थाननाम, (५) आयतसंस्थाननाम। यह संस्थाननाम का स्वरूप है। यह गुणनाम की व्याख्या समाप्त हुई।

SAMSTHANA-NAME (STRUCTURE-NAME)

224. (Question) What is this *Samsthana-nama* (structure-name) ?

(Answer) *Samsthana-nama* (structure-name) is of five types—(1) *Parimandal Samsthana-nama* (circular-plate structure-name), (2) *Vritta Samsthana-nama* (circular-ring

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अजीव संस्थान के पाँच प्रकार

FIVE SHAPES OF AJEEV (MATERIAL BODIES)

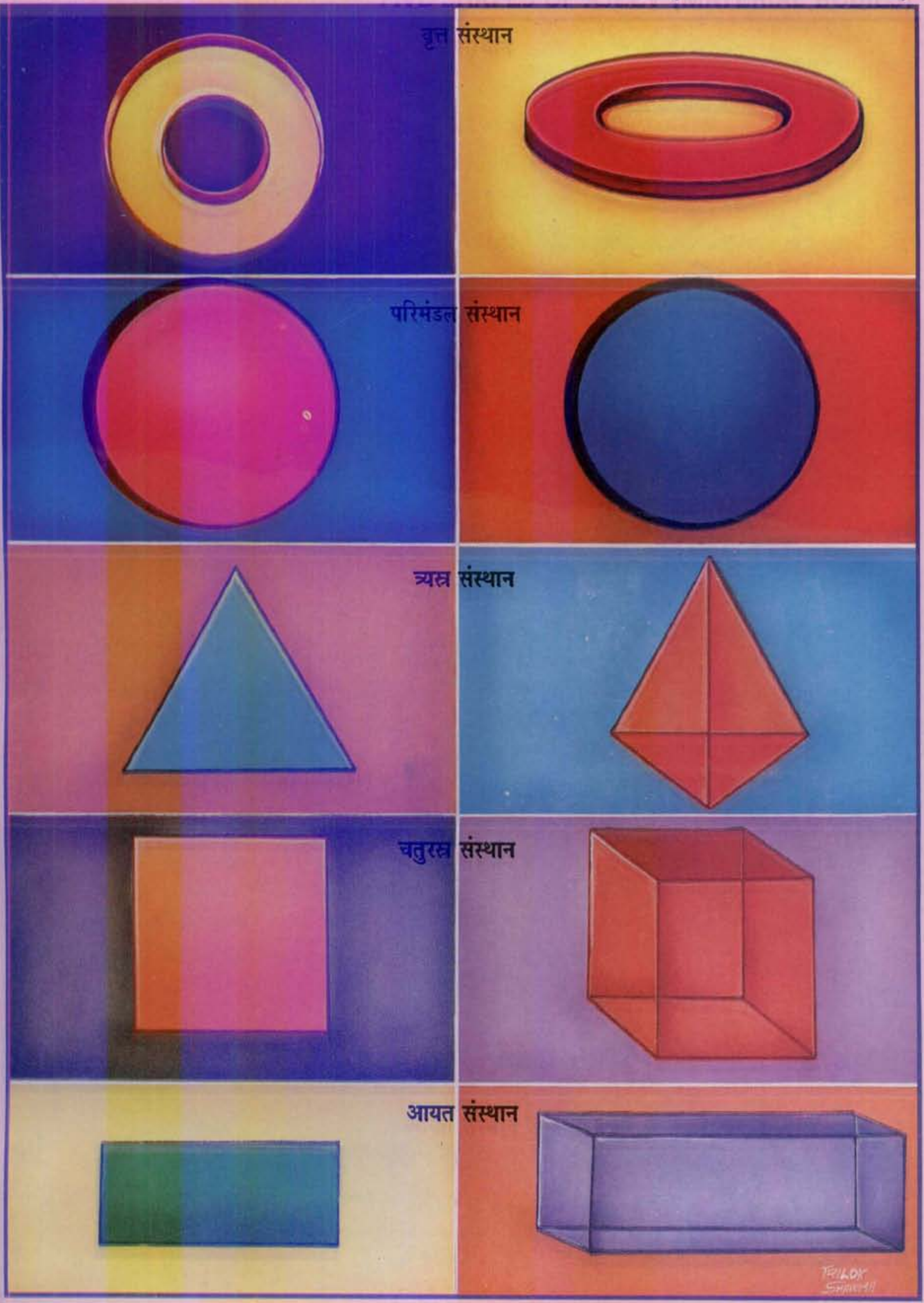

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्र परिचय १५

Illustration No. 15

अजीव के पाँच संस्थान

वस्तु की आकृति को भी संस्थान कहा गया है। अजीव संस्थान छह प्रकार का होता है–

(१) **वृत्त संस्थान**–चूड़ी के आकार की गोलाई जैसा, परन्तु बीच में स्थान खाली (पोल) हो।

(२) **परिमंडल संस्थान**–थाली, सूर्य मंडल, कुम्हार का चाक या चन्द्र मंडल के समान गोल आकार। इनके बीच में स्थान खाली नहीं रहता।

(३) **त्र्यस्र संस्थान (त्रिकोण)**–सिंघाड़ा या त्रिभुज की आकृति के तीन कोनों की लम्बाई, चौड़ाई की भिन्नता के कारण यह अनेक प्रकार का हो सकता है।

(४) **चतुरस्र संस्थान**–जिसके चारों कोने समान हों। यह भी कई चौकी आदि आकृतियों में बनता है।

(५) **आयत संस्थान**–चारों कोण समान होने पर भी जिसकी लम्बाई अधिक हो और चौड़ाई कम हो जैसे दंडाकृति।

(६) **अनित्य संस्थान**–उक्त पाँचों से भिन्न किसी भी प्रकार का संस्थान।

–सूत्र २२४

(प्रज्ञापना पद १, भगवती शतक २५ उ. ३ में भी इसका वर्णन है)

FIVE SAMSTHANA OF AJIVA

Shape of a thing is also called *samsthana*. Shapes of non-living things are also of six kinds—

(1) Vritta Samsthana—circular structure with a gap in the middle such as a ring.

(2) Parimandal Samsthana—circular-plate like structure that is round like a dish without any gap in the middle.

(3) Tryasra Samsthana—a three cornered structure like a triangle or *Singhada* (water-chestnut). With variations in the length of three sides such structure can be of many different types.

(4) Chaturasra Samsthana—a four sided structure with all the angles and sides of same proportion like a square.

(5) Ayat Samsthana—a four sided structure with all angles equal but two sides longer then the other two like a rectangle.

(6) Anitya—any irregular structure other than the aforesaid five.

—Sutra : 224

(*Prajnapana,* verse-1; *Bhagavati Shatak* 25/3)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

structure-name), (3) *Tryasra Samsthana-nama* (triangular structure-name), (4) *Chaturasra Samsthana-nama* (square structure-name), and (5) *Ayat Samsthana-nama* (rectangular structure-name).

This concludes the description of Samsthana-nama (structure-name). This also concludes the description of *Guna-nama* (attribute-name).

विवेचन–संस्थान के पाँच भेदों का स्वरूप प्रसिद्ध है। जो थाली के समान गोल हो, बीच में किंचिन्मात्र भी खाली स्थान न हो, ऐसा संस्थान **परिमण्डलसंस्थान** है। जबकि **वृत्तसंस्थान** चूड़ी के समान (बीच में खाली) गोल होता है। तीन कोण (कोणे) वाले संस्थान को **त्र्यस्र–त्रिभुज** या तिकोना संस्थान कहते हैं। तीनों भुजाओं की लम्बाई चौड़ाई की भिन्नता से यह संस्थान अनेक प्रकार का हो सकता है। **चतुरस्रसंस्थान** में चारों कोण एवं लम्बाई–चौड़ाई समान होती है, जबकि **आयतसंस्थान** में चारों कोण समान होने पर भी लम्बाई अधिक और चौड़ाई कम होती है।

Elaboration—These are five popular kinds of structural shapes. *Parimandal Samsthana* is circular plate-like structure that is round like a dish without any gap in the middle. *Vritta Samsthana* is circular structure with a gap in the middle such as a ring. *Tryasra Samsthana* is a three cornered structure like a triangle. With variations in the length of three sides such structure can be of many different types. *Chaturasra Samsthana* is a four sided structure with all the angles and sides of same proportion like a square. *Ayat Samsthana* is also a four sided structure with all angles equal but two sides longer then the other two like a rectangle.

(ग) पर्यायनाम

२२५. से किं तं पज्जवनामे ?

पज्जवनामे अणेगविहे पण्णत्ते। तं जहा–एगगुणकालए दुगुणकालए जाव अणंतगुणकालए। एगगुणनीलए दुगुणनीलए जाव अणंतगुणनीलए। एवं लोहिय–हालिद्द–सुक्किला वि भाणियव्वा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगगुणसुरभिगंधे दुगुणसुरभिगंधे जाव अणंतगुणसुरभिगंधे एवं दुरभिगंधो वि भाणियव्वो।

एगगुणतित्ते दुगुणतित्ते जाव अणंतगुणतित्ते, एवं कडुय–कसाय–अंबिल–महुरा वि भाणियव्वा

एगगुणकक्खडे दुगुणकक्खडे जाव अणंत गुणकक्खडे, एवं मउय–गरु–लहुय–सीत–उसिण–णिद्धलुक्खा वि भाणियव्वा। से तं पज्जवणामे।

२२५. (प्रश्न) पर्यायनाम क्या है ?

(उत्तर) पर्यायनाम के अनेक प्रकार हैं। यथा–एकगुण (अंश) काला, द्विगुणकाला यावत् अनन्तगुणकाला, एकगुणनीला, द्विगुणनीला यावत् अनन्तगुणनीला तथा इसी प्रकार लोहित (रक्त), हारिद्र (पीत) और शुक्लवर्ण की पर्यायों के नाम भी कहना चाहिए।

एकगुणसुरभिगंध, द्विगुणसुरभिगंध यावत् अनन्तगुणसुरभिगंध, इसी प्रकार दुरभिगंध के विषय में भी कहना चाहिए।

एकगुणतिक्त, द्विगुणतिक्त यावत् अनन्तगुणतिक्त, इसी प्रकार कटुक, कषाय, अम्ल एवं मधुर रस की पर्यायों के विषय में भी कहना चाहिए।

एकगुणकर्कश, द्विगुणकर्कश यावत् अनन्तगुणकर्कश, इसी प्रकार मृदु, गुरु, लघु, शीत, उष्ण, स्निग्ध, रूक्ष स्पर्श की पर्यायों की वक्तव्यता है।

(C) PARYAYA-NAMA

225. (Question) What is this *Paryaya-nama* (mode-name)?

(Answer) *Paryaya-nama* (mode-name) is of many types—One unit black (minimum), two unit black (twice as black as the earlier one), and so on up to infinite unit black. One unit blue (minimum), two unit blue (twice as blue as the earlier one), and so on up to infinite unit blue. Same statement goes for modes of red, yellow, and white colours also.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

One unit good smell (minimum), two unit good smell (twice as good smell as the earlier one), and so on up to infinite unit good smell. Same statement goes for modes of bad smell also.

One unit bitter taste (minimum), two unit bitter taste (twice as bitter taste as the earlier one), and so on up to infinite unit bitter taste. Same statement goes for modes of pungent taste, astringent taste, sour taste, and sweet taste also.

One unit hard touch (minimum), two unit hard touch (twice as hard touch as the earlier one), and so on up to infinite unit hard touch. Same statement goes for modes of soft touch, heavy touch, light touch, cold and hot touch, smooth touch, and coarse or dry touch also.

विवेचन–प्रस्तुत सूत्र में गुणों को माध्यम बनाकर पर्याय का स्वरूप बताया है। पर्याय एक गुण (अंश) कृष्ण आदि रूप हैं। अर्थात् जिस परमाणु आदि द्रव्य में कृष्ण गुण का एक अंश हो वह परमाणु आदि द्रव्य एकगुण कृष्णवर्ण आदि वाला है। इसी प्रकार दो आदि अंश से लेकर अनन्त अंशों तक के लिए जानना चाहिए।

पुद्गलास्तिकाय के दो भेद हैं–अणु और स्कन्ध। स्कन्धों में तो पाँच वर्ण, दो गंध, पाँच रस और आठ स्पर्श कुल मिलाकर बीस गुण होता है। परमाणुओं में कर्कश, मृदु, गुरु, लघु ये चार स्पर्श नहीं होने से कुल सोलह गुण पाये जाते हैं तथा एक परमाणु में शेष रहे शीत–उष्ण, स्निग्ध–रुक्ष इन चार स्पर्शों में से भी एक समय में अविरोधी दो स्पर्श ही होते हैं। अर्थात् (१) शीत हो तो उष्ण नहीं, (२) रुक्ष हो तो स्निग्ध नहीं तथा (३) एक वर्ण, (४) एक गंध, (५) एक रस, इस प्रकार कुल पाँच गुण और उनके पर्याय सम्भव हैं।

ये वर्ण आदि गुण मूर्त वस्तु–पुद्गल से कभी अलग नहीं होते हैं किन्तु इनके एक, दो आदि रूप अंश रूपान्तरित होते रहते हैं। तभी द्रव्य के अवस्थान्तर होने का बोध होता है।

Elaboration—In this aphorism modes have been explained with the help of *Guna* or attributes. Mode is one unit black (fractionally black) and so on. This means that the *paramanu* (ultimate-particle) or substance that has only one unit of the attribute that is black colour is called one unit black *paramanu*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(ultimate-particle) or substance. The same goes for two and more units (up to infinite) of the specific colour or other attribute.

Pudgalastikaya (matter entity) has two basic kinds—*paramanu* (ultimate-particle) and *skandh* (aggregate). There are twenty attributes applicable to *Skandhs*—five *Varna* (appearance), two *Gandh* (smell), five *Rasa* (taste), and eight *Sparsh* (touch). As four attributes of touch, namely hard, soft, heavy, and light are not applicable to *paramanu* (ultimate-particle), only sixteen attributes are applicable to *paramanus.* In a single *paramanu* (ultimate-particle) there can only be two out of the remaining four attributes of touch that are not mutually contradictory; one out of hot and cold, and one out of smooth and coarse/dry. Thus a single *paramanu* has only five attributes and their modes—(1) either hot or cold, (2) either smooth or coarse/dry, (3) one kind of appearance, (4) one kind of smell, and (5) one kind of taste.

Matter or a tangible thing is never devoid of all these attributes including appearance. However, the modes keep on changing and that becomes evident as transformation.

त्रिनाम का दूसरा प्रकार

२२६. तं पुण णामं तिविहं, (१) इत्थी, (२) पुरिसं, (३) णपुंसगं चेव।

एएसिं तिण्हं पि य अंतम्मि परूवणं वोच्छं॥१८॥

तत्थ पुरिसस्स अंता आ ई ऊ ओ य होंति चत्तारि।

ते चेव इत्थियाए हवंति ओकारपरिहीणा॥१९॥

अं ति य इं ति य उं ति य अंता उ णपुंसगस्स बोद्धव्वा।

एतेसिं तिण्हं पि य वोच्छामि निदंसणे एत्तो॥२०॥

आकारंतो राया ईकारंतो गिरी य सिहरी य।

ऊकारंतो विण्हू दुमो ओअंताओ पुरिसाणं॥२१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आकारंता माला ईकारंता सिरी य लच्छी य।
ऊकारंता जंबू वहू य अंता उ इत्थीणं॥२२॥
अंकारंतं धन्नं इंकारंतं नपुंसकं अच्छिं।
उंकारंतं पीलूं महुं च अंता णपुंसाणं॥२३॥

से तं तिणामे।

२२६. त्रिनाम के पुनः तीन प्रकार हैं। जैसे-(१) स्त्रीनाम, (२) पुरुषनाम, और (३) नपुंसकनाम। इन तीनों प्रकार के नामों का बोध उनके अन्त्याक्षरों द्वारा होता है॥१८॥ जैसे-

पुल्लिंगवाची नामों के अन्त में 'आ, ई, ऊ, ओ' इन चार में से कोई एक वर्ण (प्रत्यय) होता है तथा स्त्री लिंगवाची नामों के अन्त में 'ओ' को छोड़कर शेष तीन (आ, ई, ऊ) वर्ण होते हैं॥१९॥

नपुंसकलिंग वाची शब्दों के अन्त में अं, इं या उं वर्ण जानना चाहिए। अब इन तीनों के उदाहरण कहता हूँ॥२०॥

पुल्लिंगवाची आकारान्त नाम का उदाहरण **राया** (राजा) है। ईकारान्त का उदाहरण-**गिरी** (गिरि) तथा **सिहरी** (शिखरी) हैं ऊकारान्त का उदाहरण **विण्हू** (विष्णु) और ओकारान्त का **दुमो** (द्रुमो-वृक्ष) है॥२१॥

स्त्रीलिंगवाची नाम में-'**माला**' यह आकारान्त का, **सिरी** (श्री) और **लच्छी** (लक्ष्मी) ईकारान्त, **जम्बू** (जामुन वृक्ष), **बहू**, (वधू) ऊकारान्त नारी जाति के (नामों के) उदाहरण हैं॥२२॥

नपुंसकलिंगवाची नाम का उदाहरण है। **धन्नं** (धान्य) यह अंकारान्त। **अच्छिं** (अक्षि) यह इंकारान्त तथा **पीलुं** (पीलु-वृक्ष विशेष) **महुं** (मधु) ये उंकारान्त नपुंसकनाम के पद हैं॥२३॥

इस प्रकार यह त्रिनाम का स्वरूप है।

ANOTHER TYPE OF TRINAMA

226. Also there are another three types of *Trinama* (tri-name)—(1) *Stree-nama* (feminine-name), (2) *Purush-*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

nama (masculine-name), and (3) *Napumsak-nama* (neuter-name). The word endings give the indication about these three kinds of names. (18)

Masculine gender names end with any of the four vowels '*a*', '*i*', '*u*', or '*o*'. Leaving aside '*o*' feminine gender names end with any of the three remaining vowels ('*a*', '*i*', '*u*'). (19)

Neuter gender names end with any of the three vowels '*am*', '*im*', or '*um*'. Now I will give examples of these three. (20)

The example of masculine name ending with '*a*' is *raya* (*raja* or *king*). That ending with '*i*' is *giri* (giri or hill) and *sihari* (*shikhari* or hilltop), that ending with '*u*' is *Vinhu* (*Vishnu*), and that ending with '*o*' is *dumo* (*drumo* or tree). (21).

The example of feminine name ending with '*a*' is *mala* (*mala* or garland). That ending with '*i*' is *Siri* (*Shri*) and *Lachhi* (*Lakshmi*), and that ending with '*u*' is *jambu* (*jamun* or rose apple) and *bahu* (*vadhu* or bride). (22).

The example of neuter name ending with '*am*' is *dhannam* (*dhaanya* or grains). That ending with '*im*' is *achhim* (*akshi* or eye), and that ending with '*um*' is *pilum* (*pilu* or name of a tree) and *mahum* (*madhu* or honey). (23).

This concludes the description of *Trinama* (tri-name)

(४) चतुर्नाम

२२७. से किं तं चतुणामे ?

चतुणामे चउव्विहे पण्णत्ते। तं जहा–(१) आगमेणं, (२) लोवेणं, (३) पयईए, (४) विगारेणं।

२२७. (प्रश्न) चतुर्नाम क्या है ?

(उत्तर) चतुर्नाम के चार प्रकार हैं। यथा–(१) आगम से होने वाला नाम, (२) लोप से होने वाले नाम, (३) प्रकृति से होने वाला नाम, (४) विकार से होने वाला नाम।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(4) CHATURNAMA (FOUR-NAMED)

227. (Question) What is this *Chaturnama* (Four-named)?

(Answer) *Chaturnama* (Four-named) is of four types—(1) name made by *Agam* (adding a letter), (2) name made by *Lope* (dropping a letter), (3) name made by *Prakriti* (maintaining the natural or original form), and (4) name made by *Vikar* (distortion or basic change in the natural form).

२२८. से किं तं आगमेणं ?

आगमेणं पद्मानि पयांसि कुण्डानि। से तं आगमेणं।

२२८. **(प्रश्न)** आगम से होने वाला नाम क्या है ?

(उत्तर) पद्मानि, पयांसि, कुण्डानि आदि ये सब आगमनिष्पन्ननाम के उदाहरण हैं।

228. (Question) What is this name made by *Agam* (adding a letter)?

(Answer) Examples of name made by *Agam* (adding a letter) are—*padmani* (this is made by adding *ni* to *padma* and similar suffixes in other examples according to Sanskrit grammar), *payamsi, Kundani,* etc.

२२९. से किं तं लोवेणं ?

लोवेणं ते अत्र = तेऽत्र, पटोअत्र = पटोऽत्र, घटो अत्र = घटोऽत्र, रथो अत्र = रथोऽत्र। से तं लोवेणं।

२२९. **(प्रश्न)** लोप से होने वाला नाम क्या है ?

(उत्तर) ते + अत्र = तेऽत्र, पटो + अत्र = पटोऽत्र, घटो + अत्र = घटोऽत्र, रथो + अत्र = रथोऽत्र, ये लोपनिष्पन्ननाम हैं।

229. (Question) What is this name made by *Lope* (dropping a letter)?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(Answer) Examples of name made by *Lope* (dropping a letter) are—*te* + *atra* = *tetra* (*a* from atra is dropped here), similarly *patotra*, *ghatotra*, and *rathotra*.

२३०. से किं तं पगतीए ?

अग्नी एतौ, पटू इमौ, शाले एते, माले इमे। से तं पगतीए।

२३०. (प्रश्न) प्रकृति से होने वाला नाम क्या है ?

(उत्तर) अग्नी एतौ, पटू इमौ, शाले एते, माले इमे इत्यादि प्रयोग प्रकृतिनिष्पन्न नाम हैं।

230. (Question) What is this name made by *Prakriti* (maintaining the natural or original form) ?

(Answer) Examples of name made by *Prakriti* (maintaining the natural or original form) are—*agni etao* (both these words are in their natural form without making any change to combine them), *patu imao, male ime*, etc.

२३१. से किं तं विकारेणं ?

विकारेणं दण्डस्य अग्रं दण्डाग्रम्, सा आगता साऽऽगता, दधि इदं दधीदम्, नदी ईहते नदीहते, मधु उदकं मधूदकम्, बहु ऊहते बहूहते। से तं विकारेणं। से तं चउणामे।

२३१. (प्रश्न) विकार से होने वाला नाम क्या है ?

(उत्तर) दण्डस्स + अग्रं–दण्डाग्रम्, सा + आगता–साऽऽगता, दधि + इदं–दधीदं, नदी + ईहते–नदीहते, मधु + उदकं–मधूदकं,बहु + ऊहते–बहूहते, ये सब विकारनिष्पन्ननाम हैं।

यह चतुर्नाम का स्वरूप है।

[सूत्र २२६ से २३१ तक के सूत्रों पर व्याकरण अर्थात् शब्द शास्त्र की दृष्टि से विस्तार पूर्ण विवेचन के लिए ज्ञान मुनिकृत हिन्दी टीका. भाग २ पृष्ठ ६४ से ८० तक देखें।]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

231. (Question) What is this name made by *Vikar* (distortion or basic change in the natural form) ?

(Answer) Examples of name made by *Vikar* (distortion or basic change in the natural form) are—*dandassa + agram = dandagram* (here the natural form of *dandassa* has been changed to *danda*), *sa + agata = sagata, dadhi + idam = dadheedam, nadi + eehate = nadihate, madhu + udakam = madhoodakam, bahu + oohate = bahoohate*, etc.

This concludes the description of *Chaturnama* (four named).

[Aphorisms 226 to 231 relate to Sanskrit grammar. For details refer to *Anuyogadvar a Hindi Tika* part-2 by Jnana Muni p. 64-80]

(५) पंचनाम

२३२. से किं तं पंचनामे।

पंचनामे पंचविहे पण्णत्ते। तं जहा-(१) नामिकं, (२) नैपातिकं, (३) आख्यातिकं, (४) औपसर्गिकं, (५) मिश्रं च। अश्व इति नामिकम्, खल्विति नैपातिकम्, धावतीत्याख्यातिकम्। परि इत्यौपसर्गिकम्। संयत इति मिश्रम्। से तं पंचनामे।

२३२. (प्रश्न) पंचनाम क्या है ?

(उत्तर) पंचनाम पाँच प्रकार का है। जैसे-(१) नामिक, (२) नैपातिक, (३) आख्यातिक, (४) औपसर्गिक, और (५) मिश्र। जैसे 'अश्व' यह नामिकनाम का, 'खलु' नैपातिकनाम का 'धावति' आख्यातिकनाम का, 'परि' औपसर्गिक नाम और 'संयत' यह मिश्रनाम का उदाहरण है।

(5) PANCH NAMA (FIVE-NAMED)

232. (Question) What is this *Panch nama* (Five-named) ?

(Answer) *Panch nama* (Five-named) is of five types—(1) *Namik*, (2) *Naipatik*, (3) *Akhyatik*, (4) *Aupasargik*, and

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(5) *Mishra*. For example *ashva* (horse) is *Namik nama* (name or noun), *khalu* is *Naipatik nama* (indeclinable), *dhavati* is *akhyatik nama* (verb), *pari* is *Aupasargik nama* (prefix), and *smayat* is *Mishra nama* (mixed).

विवेचन–व्याकरण के नियमानुसार नाम पाँच प्रकार कहे हैं–

(१) **नामिक**–कोई भी अर्थवान शब्द नाम कहलाता है–जैसे अश्व।

(२) **नैपातिक**–कुछ विशेष अर्थों को व्यक्त करने के लिए निश्चित किये गये वे 'पद' जो सब लिंगों और विभक्तियों में समान होते हैं–जैसे 'च' 'खलु' 'वा' आदि।

(३) **आख्यातिक**–धातु (क्रिया पद) के आगे प्रत्यय लगाकर जो धातु रूप बनता है, वह आख्यातिक जैसे–धावति, भवति।

(४) **औपसर्गिक**–'प्र', 'परा', 'परि' आदि उपसर्गों से बनने वाले शब्द जैसे 'प्रहार', 'पराभूत', 'परिष्कार' आदि।

(५) **मिश्र**–उपसर्ग, धातु और प्रत्यय आदि के मिश्रण-योग से बने शब्द जैसे–संयत, सुदर्शन आदि।

(–विस्तार के लिए देखें हिन्दी टीका भाग २ पृ. ८०–८२)

Elaboration—According to Sanskrit grammar there are five types of name :

Namik—noun.

Naipatik—indeclinable.

Akhyatik—verb.

Aupasargik—prefix.

Mishra—of mixed nature.

(For details refer to *Anuyogadvar Hindi* Tika part-2 by Jnana Muni p. 80-82)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भाव प्रकरण
THE DISCUSSION ON BHAAVA

भाव वर्णन : छह नाम

२३३. से किं तं छनामे ?

छनामे छव्विहे पण्णत्ते। तं जहा–(१) उदइए, (२) उवसमिए, (३) खइए, (४) खओवसमिए, (५) पारिणामिए, (६) सन्निवातिए।

२३३. (प्रश्न) छह नाम क्या है ?

(उत्तर) छह नाम के छह प्रकार कहे हैं–(१) औदयिक, (२) औपशमिक, (३) क्षायिक, (४) क्षायोपशमिक, (५) पारिणामिक, और (६) सान्निपातिक।

CHHAHA NAMA (SIX-NAMED)

233. (Question) What is this *Chhaha nama* (Six-named) ?

(Answer) *Chhaha nama* (Six-named) is of six types—(1) *audayik,* (2) *aupashamik,* (3) *kshayik,* (4) *kshayopashamik*, (5) *parinamik*, and (6) *sannipatik.*

विवेचन–भाव जीव का गुण भी है, और पर्याय भी है। जीव का समग्र स्वरूप समझने के लिए उसकी विभिन्न पर्यायों को जानना आवश्यक है। कर्मों के उदय, उपशम आदि से होने वाला जीव का स्पन्दन या स्वरूप भाव है। भाव के छह प्रकार हैं–

(१) **औदयिकभाव**–ज्ञानावरण आदि आठ प्रकार के कर्मों के विपाक–फल का अनुभव करने को उदय कहते हैं। इस उदय का अथवा उदय से निष्पन्नभाव पर्याय (उदयोप्राप्त अवस्था) का नाम औदयिकभाव है। संसारी जीव को कर्म का उदय निरन्तर होता रहता है। नरक–मनुष्य आदि अवस्थाएँ उदय निष्पन्न भाव हैं।

(२) **औपशमिकभाव**–सत्ता में रहते हुए भी कर्मों का उदय में नहीं रहना अर्थात् आत्मा में कर्म की निज शक्ति का कारणवश प्रकट न होना या प्रदेश और विपाक दोनों प्रकार के कर्मोदय का रुक जाना उपशम है, जैसे राख से आच्छादित अग्नि छिपी रहती है, उसी प्रकार इस उपशम अवस्था में कर्मों का उदय नहीं होता है, किन्तु वे सत्ता में रहते हैं। जैसे मिट्टी युक्त जल की मिट्टी नीचे दब जाने पर ऊपर जल स्वच्छ दिखाई देता है। मिट्टी नीचे दबी रहती है। इस उपशम से निष्पन्न भाव को औपशमिकभाव कहते हैं। यह भाव सादि–सान्त है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आठ कर्मों में चार अघाति कर्मों का उपशम नहीं होता। जैसे आयुष्य कर्म निरन्तर भोगा जाता है। साता-असाता के रूप में वेदनीय कर्म भी निरन्तर भोगा जा रहा है। घाति कर्मों में ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय तथा अन्तराय कर्म का उपशम नहीं होता। केवल एक मोहनीय कर्म का उपशम होता है, क्योंकि मोहनीय कर्म की प्रकृतियाँ संवेगात्मक और विकारक होती हैं।

नीरस किये हुए कर्म दलिकों का वेदन प्रदेशोदय तथा रसयुक्त कर्म दलिकों का फल भोग-विपाकोदय है।

(३) **क्षायिक भाव**—कर्म के पूर्ण विनाश को क्षय कहते हैं। क्षय से जो भाव प्राप्त होता है वह क्षायिकभाव है। यह भाव सादि-अनन्त है। जैसे जीव की अरिहंत सिद्ध आदि अवस्थाएँ।

(४) **क्षायोपशमिकभाव**—कर्मों का क्षय और उपशम होना क्षयोपशम है। क्षयोपशम से उत्पन्न क्षायोपशमिकभाव है। यह भाव कुछ बुझी हुई और कुछ नहीं बुझी हुई अग्नि के समान जानना चाहिए।

क्षयोपशम की प्रक्रिया में उदयावलिका प्राप्त अथवा उदीर्ण दलिकों का क्षय होता रहता है। सत्ता में रहते हुए भी जो दलिक उदय में आने योग्य नहीं है उन अनुदीर्ण दलिकों का उपशम होता रहता है।

इसके दो रूप बनते हैं-(१) उदय में आने योग्य कर्म दलिकों को विपाकोदय को अयोग्य बना देना।

(२) तीव्र रस को मंद रस में परिणत करना। क्षयोपशम केवल चार घाति कर्म का ही होता है। अघाति कर्म का क्षयोपशम नहीं होता।

घातिकर्म आत्मा के ज्ञान, दर्शन, आदि चार मौलिक गुणों को आवृत तथा विकृत करते हैं, किन्तु उनका सर्वथा नाश नहीं करते इसलिए उनका क्षयोपशम होता है।

(५) **पारिणामिकभाव**—परिणाम का अर्थ है-नये-नये पर्यायों में जाना। यह दो प्रकार का होता है-स्वाभाविक तथा प्रयोगजनित। यह परिणाम ही पारिणामिकभाव है। अथवा जिसके कारण मूल वस्तु में किसी प्रकार का परिवर्तन न हो, वस्तु की स्वभाव में ही परिणति होते रहना पारिणामिक भाव है।

(६) **सान्निपातिकभाव**—इन पाँचों भावों में से दो-तीन आदि भावों का मिलना सन्निपात है, यह सन्निपात ही सान्निपातिक भाव कहलाता है। इन भावों का विस्तारपूर्वक स्वरूप निरूपण आगे किया जाता है।

Elaboration—*Bhaava* is both attribute as well as mode of beings. In order to understand a being or soul fully it is necessary to understand its various modes. The form or activity of soul

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाँच भाव

FIVE TYPES OF THOUGHT-ACTIVITY

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्र परिचय १६

Illustration No. 16

पाँच भाव

(१) **उदय भाव**–कर्मों का फल–विपाक देने की स्थिति में आना। जैसे–बीज वृक्ष बनकर फल देने की स्थिति में आ गया है। (१) **उदय निष्पन्न भाव**–मनुष्य, पशु आदि योनियाँ।

(२) **उपशम भाव**–भीतर कर्मों की सत्ता रहते हुए भी ऊपर से अनुदय की स्थिति। जैसे–राख से दबी आग या मिट्टी से नितरा हुआ पानी। (२) **उपशम निष्पन्न भाव** में आत्मा के क्रोध आदि कषाय शान्त रहते हैं।

(३) **क्षय भाव**–चार घाति या आठों कर्मों का सम्पूर्ण क्षय होना। जैसे–चित्र में बताया है मिट्टी हट जाने से पानी बिलकुल स्वच्छ हो गया है। कर्मरूपी अंकुर पूर्ण रूप से जलकर राख हो गये हैं। (३) **क्षय निष्पन्न भाव** में अरिहंत तथा सिद्ध अवस्था प्राप्त होती है।

(४) **क्षयोपशम भाव**–उदय प्राप्त कर्मों का क्षय तथा अनुदीर्ण कर्मों का उपशम होना। जैसे–पानी का कुछ भाग पूर्णतः स्वच्छ है तथा कुछ भाग की मिट्टी नीचे जम जाने से ऊपर पानी स्वच्छ दीखता है। (४) **क्षायोपशम निष्पन्न भाव**–जैसे आचार्य हेमचन्द्र सूरि श्रुत ज्ञानावरण का विशेष क्षयोपशम होने से विपुल साहित्य का निर्माण कर सके।

(५) **पारिणामिक भाव**–प्रतिक्षण नये–नये पर्यायों में जाना। इसके दो भेद हैं–(१) **सादि पारिणामिक**। जैसे–वृक्ष, पर्वत, बादल गुड़, घी आदि। (२) **अनादि पारिणामिक** जैसे–लोक, अलोक आदि।

–सूत्र २३५–२५९

FIVE BHAAVA (STATES)

(1) Udaya bhaava—Maturing of *karmas* to the stage of fruition. For example a seed has grown into a tree and come to the stage of giving fruits. (1) *Udaya nishpanna bhaava*—Genuses like human, animal etc.

(2) Upasham bhaava—In spite of being in existence the *karmas* do not come to fruition, they remain dormant. For example a cinder covered with ash or water with settled impurities. (2) *Upasham nishpanna bhaava*—The passions like anger remain in pacified state.

(3) Kshaya Bhaava—Complete destruction of four vitiating *karmas* or all the eight *karmas*. For example water becomes clean by removing all impurities. All the *karmas* in form of sprouts are burnt to ash. (3) *Kshaya nishpanna bhaava*—Attainment of the state of *Arihant* and *Siddha*.

(4) Kshayopasham bhaava—The destruction of *karmas* coming to fruition and pacification of non-fruiting *karmas*. For example one part of the water is absolutely pure and another appears clean due to settled impurities. (4) *Kshayopasham nishpanna bhaava*—For example Acharya Hemchandra could write vast literature because of the extreme destruction-cum-pacification of *Shrut jnanavaran karma*.

(5) Parinamik—To undergo transformation every moment. It has two kinds—(i) *Sadi-parinamik* like tree, hill, clouds, jaggery, butter, etc. (ii) *Anadi-parinamik* like universe, space, etc.

—Sutra : 235-259

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

inspired or caused by fruition or precipitation, pacification, etc. of *karmas* is called *bhaava*, which are of six kinds—

(1) Audayik-bhaava (culminated state)—To experience the fruits or consequences of the maturing or precipitating of *karmas* (the eight kinds including *Jnananvaraniya* or knowledge obscuring) from their dormant state is called *udaya* or *culmination*. The state caused by this culmination is called *audayik-bhaava* (culminated state). A worldly being or soul continuously experiences the culmination or precipitation of *karmas*. States like human beings, hell-beings are culminated states.

(2) Aupashamik-bhaava (pacified state)—The state where the *karmas* are not active, although they exist, is called *Upasham*. In other words the energy of *karmas* attached to a soul is in a dormant and not active state. In this state *karmas* remain pacified and partial or complete fruition does not take place. Like a cinder covered in ash, *karmas* do not precipitate or come into action but they still exist. As when dissolved impurities precipitate and settle down, water appears clean and pure. This pacified state is called *Aupashamik-bhaava* (pacified state). It is with a beginning as well as an end.

Of the eight *karmas* the four non-vitiating ones cannot be pacified. For example the age determining *karma* is always active or in state of fruition. As pleasure or pain the *Vedaniya karma* is also always active. Of the vitiating *karmas Jnanavaraniya, Darshanavaraniya* and *Antaraya* also cannot be pacified. Only *Mohaniya karmas* can be pacified because its consequences are intense and maligning.

The suffering caused by pacified or less potent *karmas* is called *pradeshodaya* or partial fruition and that caused by potent *karmas* is called *vipakodaya* or mature fruition.

(3) Kshayik-bhaava (extinct state)—The destruction of *karma* is called *kshaya*. The state produced by destruction of karma is called *Kshayik-bhaava*. It is also with a beginning as well as an end. For example Arihant and Siddha states of a being.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(4) Kshayopashamik-bhaava (state of extinction-cum-pacification)—Destruction-cum-pacification of *karmas* is called *kshayopasham.* The state produced by destruction-cum-pacification is called *Kshayopashamik-bhaava*. This state is like a fire partly live and partly extinguished. In this state the *karma* particles attaining maturity get destroyed and those still dormant get pacified.

This has two categories—(1) To diffuse the mature *karma* particles that are about to come to fruition. (2) To reduce the potency of *karma* particles. The process of extinction-cum-pacification is applicable only to vitiating *karmas* and not non-vitiating *karmas*. The vitiating *karmas* only obscure and distort the four basic attributes of soul (Knowledge, perception, etc.) they cannot completely destroy these. That is why they can have extinction-cum-pacification.

(5) Parinamik-bhaava (transformed state)—*Parinam* means to get transformed into new modes. This is of two kinds—natural and enforced. This transformed state is called *Parinamik-bhaava*. In other words that which causes modal changes only and not basic changes in a thing is called *Parinamik-bhaava*.

(6) Sannipatik-bhaava (mixed state)—The combination of any two or more of the aforesaid states is called *sannipat*. This combination is called *Sannipatik-bhaava*. More details of these states will be discussed in following aphorisms.

(१) औदयिक भाव

२३४. से किं तं उदए ?

उदए दुविहे पण्णत्ते। तं जहा–(१) उदए य, (२) उदयनिप्फण्णे य।

२३४. (प्रश्न) औदयिकभाव क्या है ?

(उत्तर) औदयकिभाव दो प्रकार का कहा है–(१) उदय, और (२) उदयनिष्पन्न।

(1) AUDAYIK BHAVA

234. (Question) What is this *Audayik-bhaava* (culminated state) ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(Answer) *Audayik-bhaava* (culminated state) is of two types—(1) *Udaya* and (2) *Udayanishpanna.*

२३५. से किं तं उदए ?

उदए अट्ठण्हं कम्मपगडीणं उदएणं।

२३५. (प्रश्न) उदय क्या है ?

(उत्तर) ज्ञानावरणादिक आठ कर्मप्रकृतियों का उदय होता है। उदय से होने वाला औदयिकभाव है।

235. (Question) What is this *Udaya* (culmination) ?

(Answer) *Jnanavaran* and other seven natures of *karma* undergo fruition. The state produced by this fruition is called *Audayik-bhaava.*

२३६. से किं तं उदयनिप्फण्णे ?

उदयनिप्फण्णे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा-(१) जीवोदयनिप्फन्ने य, (२) अजीवोदयनिप्फन्ने य।

२३६. (प्रश्न) उदयनिष्पन्न औदयिकभाव क्या है ?

(उत्तर) उदय निष्पन्न औदयिकभाव के दो प्रकार हैं-(१) जीवोदयनिष्पन्न, (२) अजीवोदयनिष्पन्न।

236. (Question) What is this *Udayanishpanna Audayik-bhaava* (culminated state caused by fruition) ?

(Answer) *Udayanishpanna Audayik-bhaava* (culminated state caused by fruition) is of two types—(1) *Jivodaya-nishpanna* (culminated state manifesting directly in soul) and (2) *Ajivodaya-nishpanna* (culminated state caused by non-being).

विवेचन-ये तीन सूत्र औदयिकभाव निरूपण की भूमिका हैं। ज्ञानावरणादि आठ कर्मों का उदय और कर्मों के उदय से होने वाला भाव-अवस्थाएँ-पर्याय औदयिकभाव है जो उदय में आकर किसी अन्य पर्याय को जन्म देता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उदयनिष्पन्न के जीवोदयनिष्पन्न और अजीवोदयनिष्पन्न भेद मानने का कारण यह है कि कर्मोदयजन्य जो अवस्थाएँ साक्षात् जीव को प्रभावित करती हैं अथवा कर्म के उदय से जो पर्यायें जीव में निष्पन्न होती हैं, वे जीवोदयनिष्पन्न और अजीव अर्थात् पुद्गल के योग से जीव में जिन अवस्थाओं का उदय होता है, वे अजीवोदयनिष्पन्न औदयिकभाव हैं।

Elaboration—These three aphorisms give outline of *Audayik-bhaava* (culminated state). The fruition of *karmas* (*Jnanavaraniya*, etc.) and the states or modes caused by this fruition are called *Audayik-bhaava* (culminated state) which on fruition give rise to some other mode.

The two categories of *Udayanishpanna Audayik-bhaava* (culminated state caused by fruition), namely *Jivodaya-nishpanna* and *Ajivodaya-nishpanna* are explained as—the conditions caused by fruition of *karma* directly influencing soul are called *Jivodaya-nishpanna*. In other words the modes manifested in soul due to fruition of *karmas* is called *Jivodaya-nishpanna*. The modes manifested in soul due to its contact with matter or non-being are called *Ajivodaya-nishpanna Audayik-bhaava* (culminated state caused by non-being).

जीवोदयनिष्पन्न औदयिकभाव का स्वरूप

२३७. से किं तं जीवोदयनिप्फन्ने ?

जीवोदयनिप्फन्ने अणेगविहे पण्णत्ते। तं जहा—णेरइए तिरिक्खजोणिए मणुस्से देवे, पुढविकाइए जाव वणस्सइकाइए, तसकाइए, कोहकसायी जाव लोहकसायी, इत्थीवेदए पुरिसवेदए णपुंसगवेदए, कण्हलेसे एवं नील. काउ. तेउ. पम्ह. सुक्कलेसे, मिच्छादिट्ठी अविरए अण्णाणी आहारए छउमत्थे सजोगी संसारत्थे असिद्धे। से तं जीवोदयनिप्फन्ने।

२३७. (प्रश्न) जीवोदयनिष्पन्न औदयिकभाव क्या है?

(उत्तर) जीवोदयनिष्पन्न औदयिकभाव अनेक प्रकार का है। यथा—नैरयिक, तिर्यंचयोनिक, मनुष्य, देव, पृथ्वीकायिक यावत् वनस्पतिकायिक, त्रसकायिक, क्रोधकषायी यावत् लोभकषायी, स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी, नपुंसकवेदी, कृष्णलेश्यी,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नील-कापोत-तेज-पद्म-शुक्ललेश्यी, मिथ्यादृष्टि, अविरत, अज्ञानी, आहारक, छद्मस्थ, सयोगी, संसारस्थ, असिद्ध। यह जीवोदयनिष्पन्न औदयिकभाव है।

[ये आत्मशुद्धि के स्तरानुसार जीव के विभिन्न भावों के नाम हैं। प्रत्येक नाम की विस्तृत परिभाषा भाग-2 में परिशिष्ट में दी जा रही है।]

JIVODAYA-NISHPANNA AUDAYIK-BHAAVA

237. (Question) What is this *Jivodaya-nishpanna Audayik-bhaava* (culminated state manifesting directly in soul)?

(Answer) Jivodaya-nishpanna Audayik-bhaava (culminated state manifesting directly in soul) is of many types—*Nairayik, Tiryanch-yonik, Manushya, Deva, Prithvikiyik to Vanaspatikayik, Traskayik, Krodh-kashayi to Lobh-kashayi, Stri-vedi, Purush-vedi, Napumsak-vedi, Krishna-leshyi, Neel-Kapot-Teja-Padma-Shukla-leshyi, Mithydrishti, Avirat, Ajnani, Aharak, Chhadmasth, Sayogi, Samsarasth, Asiddha*, etc.

[These are names of various states (in terms of disposition and attitude) of a being based on levels of purity of soul. Detailed description of these names is given in appendix in vol-2]

This concludes the description of Jivodaya-nishpanna Audayik-bhaava.

अजीवोदयनिष्पन्न औदयिकभाव का स्वरूप

२३८. से किं तम अजीवोदयनिप्फन्ने ?

अजीवोदयनिप्फन्ने चोद्दसविहे पण्णत्ते। तं जहा-(१) ओरालियं वा सरीरं, (२) ओरालियसरीरपयोगपरिणामियं वा दव्वं, (३) वेउव्वियं वा सरीरं, (४) वेउव्वियसरीरपयोगपरिणामियं वा दव्वं, (५-६) एवं आहारगं सरीरं, (७-८) तेयगं सरीरं, (९-१०) कम्मगं सरीरं च भाणियव्वं, (११) पयोगपरिणामिए वण्णे, (१२) गंधे, (१३) रसे, (१४) फासे। से तं अजीवोदयनिप्फण्णे। से तं उदयनिप्फण्णे। से तं उदए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२३८. (प्रश्न) अजीवोदयनिष्पन्न औदयिकभाव क्या है?

(उत्तर) अजीवोदयनिष्पन्न औदयिकभाव चौदह प्रकार का है। यथा– (१) औदारिकशरीर, (२) औदारिकशरीर के प्रयोग से परिणामित (बनाया हुआ) पुद्‌गल द्रव्य, (३) वैक्रियशरीर, (४) वैयिक्रशरीर के प्रयोग से परिणामित द्रव्य, इसी प्रकार (५-६) आहारक शरीर और आहारकशरीर के प्रयोग द्वारा परिणामित द्रव्य, (७-८) तैजसशरीर और तैजसशरीर के प्रयोग से परिणामित द्रव्य, (९-१०) कार्मणशरीर और कार्मणशरीर के प्रयोग से परिणामित द्रव्य तथा (११-१४) पांचों शरीरों के व्यापार से परिणामित वर्ण, गंध, रस, स्पर्श-द्रव्य।

यह अजीवोदयनिष्पन्न उदयभाव तथा उदयनिष्पन्न और औदयिक दोनों प्रकार के औदयिकभावों की प्ररूपणा है।

AJIVODAYA-NISHPANNA AUDAYIK BHAAVA

238. (Question) What is this *Ajivodaya-nishpanna* (culminated state caused by non-being)?

(Answer) *Ajivodaya-nishpanna Audayik Bhaava* (culminated state caused by non-being) is of fourteen types—(1) *Audarik Sharir,* (2) Substance produced by action of *Audarik Sharir,* (3) *Vaikriya Sharir,* (4) Substance produced by action of *Vaikriya Sharir,* (5) *Aharak Sharir,* (6) Substance produced by action of *Aharak Sharir,* (7) *Taijas Sharir,* (8) Substance produced by action of *Taijas Sharir,* (9) *Karman Sharir,* (10) Substance produced by action of *Karman Sharir,* (11) Substance produced by action of these five types of *Sharir* and responsible for attributes of *Varna* (appearance) (12) that of *Gandh* (smell), (13) that of *Rasa* (taste), and (14) that of *Sparsh* (touch).

This concludes the description of *Ajivodaya-Nishpanna Audayik Bhaava* (culminated state caused by non-being). This also concludes the description of *Udai-Nishpanna* (culminated state caused by fruition) and *Udaya* (culmination).

[These are names of various types of bodies of beings and substances produced by their action. Detailed description of these names is given in appendix in vol-2].

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवेचन–जीवोदयनिष्पन्न औदयिकभाव में नारक आदि चार गतियाँ, क्रोधादि चार कषाय, तीन वेद, मिथ्यादर्शन, अज्ञान, छह लेश्यायें, असंयम, संसारित्व, असिद्धत्व आदि परिगणित किये गये हैं, क्योंकि ये सब भाव कर्म के उदय से जीव में ही निष्पन्न होते हैं। जैसे कि गतिनामकर्म के उदय से मनुष्यगति आदि। इसी प्रकार क्रोधादि चारों कषायों का उदय कषायचारित्र मोहनीयकर्मजन्य है तथा नोकषायचारित्रमोहनीय का उदय होने पर स्त्री आदि वेदत्रिक, हास्यादि नोकषाय निष्पन्न होते हैं। इस प्रकार जो भी जीव के स्वाभाविक गुणों के घातक कर्म हैं, उन सबके उदय से उत्पन्न पर्यायों को जीवोदयनिष्पन्न औदयिक भावरूप समझना चाहिए।

अजीवोदयनिष्पन्न औदयिकभाव के भी अनेक प्रकार बताये हैं। जैसे औदारिक आदि शरीर। औदारिक आदि शरीरनामकर्मों का विपाक मुख्यतया शरीर रूप परिणत पुद्गलों में होने से इन्हें पुद्गलविपाकी प्रकृतियों में परिगणित किया है और पुद्गल अजीव है। अतः इनको अजीवोदयनिष्पन्न औदयिकभाव रूप माना जाता है।

Elaboration—*Jivodaya - nishpanna Audayik - bhaava* (culminated state manifesting directly in soul) includes four *Gatis* (dimension or realm of birth) such as *Narak* (hell), four *kashayas* (passions) such as anger, three *vedas* (genders), *mithyadarshan* (false perception), *ajnana* (ignorance), six *leshyas* (complexion of soul), *asamyam* (indiscipline), *samsaritva* (mundane state), *Asiddhatva* (absence of ultimate purity), etc. This is because all these states and attitudes manifest within the soul due to fruition of *karmas*. For example *Gati-nama-karma* causes birth as a human being, etc. In the same way passions like *krodh* (anger) are caused by precipitation of *Kashaya-charitra-mohaniya karma; veda* (gender) and *nokashaya* (sub-passions) are caused by *Nokashaya-charitra-mohaniya karma*. Thus the modes or changes caused by *karmas* vitiating natural attributes of soul should be considered *Jivodaya-nishpanna Audayik-bhaava* (culminated state manifesting directly in soul).

Ajivodaya-nishpanna Audayik-bhaava (culminated state caused by non-being) are also said to be of many types such as *Audarik- sharir*. As the fruition of *Sharira-nama karmas* such as *audarik* mainly manifests as aggregates of matter particles forming the body these have been classified as matter-manifesting *karma* categories. And matter is a non-being, therefore they are considered to be *Ajivodaya-nishpanna Audayik-bhaava* (culminated state caused by non-being).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(२) औपशमिकभाव का स्वरूप

२३९. से किं तं उवसमिए ?

उवसमिए दुविहे पण्णत्ते। तं जहा—(१) उवसमे य, (२) उवसमनिष्फण्णे य।

२३९. (प्रश्न) औपशमिकभाव क्या है ?

(उत्तर) औपशमिक भाव दो प्रकार का है। यथा—(१) उपशम, और (२) उपशमनिष्पन्न।

AUPASHAMIK-BHAAVA

239. (Question) What is this *Aupashamik-bhaava* (pacified state)?

(Answer) *Aupashamik-bhaava* (pacified state) is of two types—(1) *Upasham* and (2) *Upasham-nishpanna.*

२४०. से किं तं उवसमे ?

उवसमे मोहणिज्जस्स कम्मस्स उवसमेणं। से तं उवसमे।

२४०. (प्रश्न) उपशम भाव क्या है ?

(उत्तर) मोहनीयकर्म के उपशम से होने वाले भाव को उपशम (औपशमिक) भाव कहते हैं।

240. (Question) What is this *Upasham bhaava* (state of pacification)?

(Answer) The state caused by *upasham* (pacification) of *Mohaniya Karma* (deluding *karma*) is called *Upasham* or *Aupashamik bhaava* (state of pacification).

This concludes the description of Aupashamik-bhaava (pacified state).

२४१. से किं तं उवसमनिप्फण्णे ?

उवसमनिप्फण्णे अणेगविहे पण्णत्ते। तं जहा—उवसंतकोहे जाव उवसंतलोभे उवसंतपेज्जे उवसंतदोसे उवसंतदंसणमोहणिज्जे उवसंतचरित्तमोहणिज्जे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवसंतमोहणिज्जे उवसमिया सम्मत्तलद्धी उवसमिया चरित्तलद्धी उवसंतकसायछउमत्थवीतरागे। से तं उवसमनिप्फण्णे। से तं उवसमिए।

२४१. (प्रश्न) उपशमनिष्पन्न औपशमिकभाव क्या है?

(उत्तर) उपशमनिष्पन्न औपशमिकभाव के अनेक प्रकार हैं। जैसे कि उपशांतक्रोध यावत् उपशान्तलोभ, उपशान्तराग, उपशांतद्वेष, उपशांतदर्शनमोहनीय, उपशांतचारित्र मोहनीय, उपशांतमोहनीय, औपशमिक सम्यक्त्वलब्धि, औपशमिक चारित्रलब्धि, उपशान्तकषाय छद्मस्थवीतराग आदि उपशमनिष्पन्न औपशमिकभाव हैं।

यह औपशमिकभाव का स्वरूप है।

241. (Question) What is this *Upasham-nishpanna Aupashamik bhaava* (pacified state produced by pacification of *karmas*)?

(Answer) *Upasham-nishpanna Aupashamik bhaava* (pacified state produced by pacification of *karmas*) is of many types—*Upashanta krodh* to *Upashanta lobha, Upashanta raga, Upashanta dvesh, Upashanta Darshan mohaniya, Upashanta Charitra mohaniya, Upashanta mohaniya, Aupashamik Samyaktva-labdhi, Aupashamik Charitra-labdhi, Upashanta-kashaya Chhadmasth-vitarag,* etc.

This concludes the description of *Upasham-nishpanna Aupashamik bhaava* (pacified state produced by pacification of *karmas*). This also concludes *Aupashamik-bhaava* (pacified state).

विवेचन–मोहनीयकर्म के दो भेद हैं, दर्शनमोहनीय और चारित्रमोहनीय। दर्शनमोहनीय के उदय से जीव आत्म-स्वरूप का दर्शन, श्रद्धान करने में असमर्थ रहता है और चारित्रमोहनीय के उदय से जीव आत्मस्वरूप में स्थिर नहीं हो पाता है। दर्शनमोहनीय के तीन भेदों और चारित्रमोहनीय के पच्चीस भेदों को मिलाने से मोहनीयकर्म के अट्ठाईस भेद हैं। मोहनीयकर्म का पूर्ण उपशम ग्यारहवें गुणस्थान में होता है।

दर्शनमोहनीय के उपशम से सम्यक्त्वलब्धि की और चारित्रमोहनीय के उपशम से चारित्रलब्धि की प्राप्ति होती है। (विशेष विस्तार के लिए देखें भाग-२ में परिशिष्ट।)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Elaboration—There are two categories of *Mohaniya Karma* (deluding *karma*)—*Darshan* (perception) *Mohaniya* and *Charitra* (conduct) *Mohaniya*. A soul or being is incapable of perceiving and having faith in the real form of soul due to fruition of *Darshan Mohaniya karma* (perception deluding *karma*). Due to the fruition of *Charitra Mohaniya* (conduct deluding *karma*) the soul becomes incapable of stabilization in the real form of soul. There are twenty eight categories of *Mohaniya karma* including three of *Darshan Mohaniya karma* (perception deluding *karma*) and twenty five of *Charitra Mohaniya* (conduct deluding *karma*). Complete pacification of *Mohaniya karma* is attained at the eleventh *Gunasthana*. (the Jain system of levels of purity of soul)

The pacification of *Darshan Mohaniya karma* (perception deluding *karma*) results in *Samyaktva-labdhi* (attaining righteousness) and that of *Charitra Mohaniya* (conduct deluding *karma*) in *Charitra-labdhi* (attaining purity of conduct). (for more details see appendix in part-2.)

(३) क्षायिक भाव का स्वरूप

२४२. से किं तं खइए ?

खइए दुविहे पण्णत्ते। तं जहा–(१) खए य, (२) खयनिप्फण्णे य।

२४२. (प्रश्न) क्षायिकभाव क्या है ?

(उत्तर) क्षायिकभाव दो प्रकार का है। यथा–(१) क्षय, और (२) क्षयनिष्पन्न।

(3) KSHAYIK-BHAAVA (EXTINCT STATE)

242. (Question) What is this *Kshayik-bhaava* (extinct state) ?

(Answer) *Kshayik-bhaava* (extinct state) is of two types—(1) *Kshaya* (state of extinction) and (2) *kshaya-nishpanna* (produced by extinction).

२४३. से किं तं खए ?

खए अट्ठण्हं कम्मपगडीणं खएणं। से तं खए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२४३. (प्रश्न) क्षय किसे कहते हैं ?

(उत्तर) आठ कर्मप्रकृतियों के क्षय से होने वाला भाव क्षायिक है।

243. (Question) What is this *Kshaya* (state of extinction of karmas) ?

(Answer) The process of extinction of eight categories of *karma* particles is called *Kshaya* (state of extinction).

२४४. से किं तं खयनिप्फण्णे ?

(१) खयनिप्फण्णे अणेगविहे पण्णत्ते। तं जहा—उप्पण्णणाणदंसणधरे—अरहा जिणे केवली, खीण—आभिणिबोहियणाणावरणे खीणसुयणाणावरणे खीणओहिणाणावरणे खीणमणपज्जवणाणावरणे खीणकेवलणाणावरणे अणावरणे णिरावरणे खीणावरणे णाणावरणिज्जकम्मविप्पमुक्के।

(२) केवलदंसी सव्वदंसी खीणनिद्दे खीणनिद्दानिद्दे खीणपयले खीणपयलापयले खीणथीणगिद्धे खीणचक्खुदंसणावरणे खीणअचक्खुदंसणावरणे खीणओहिदंसणावरणे खीणकेवलदंसणावरणे अणावरणे निरावरणे खीणावरणे दरिसणावरणिज्जकम्मविप्पमुक्के।

(३) खीणसायवेयणिज्जे खीणअसायवेयणिज्जे अवेयणे निव्वेयणे खीणवेयणे सुभाऽसुभवेयणिज्जकम्मविप्पमुक्के।

(४) खीणकोहे जाव खीणलोभे खीणपेज्जे खीणदोसे खीणदंसणमोहणिज्जे खीणचरित्तमोहणिज्जे अमोहे निम्मोहे खीणमोहे मोहणिज्जकम्मविप्पमुक्के।

(५) खीणणेरइयाउए खीणतिरिक्खजोणियाउए खीणमणुस्साउए खीणदेवाउए अणाउए निराउए खीणाउए आउयकम्मविप्पमुक्के।

(६) गति - जाति - सरीरंगोवंग - बंधण - संघात - संघयण - अणेगबोंदिविंदसंघायविप्पमुक, खीणसुभनामे खीणासुभणामे अणामे निण्णामे खीणनामे सुभाऽसुभणामकम्मविप्पमुक्के।

(७) खीणउच्चागोए खीणणीयागोए अगोए निग्गोए खीणगोए सुभाऽसुभगोत्तकम्मविप्पमुक्के।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(८) खीणदाणंतराए खीणलाभंतराए खीणभोगंतराए खीणुवभोगंतराए खीणविरियंतराए अणंतराए णिरंतराए खीणंतराए अंतराइयकम्मविप्पुमुक्के।

सिद्धे बुद्धे मुत्ते परिणिव्वुए अन्तगडे सव्वदुक्खप्पहीणे। से तं खयनिप्फण्णे। से तं खइए।

२४४. (प्रश्न) क्षय से होने वाला भाव क्या है?

(उत्तर) (१) क्षयनिष्पन्न क्षायिकभाव अनेक प्रकार का है। यथा–उत्पन्नज्ञानदर्शनधारी, अर्हत्, जिन, केवली, क्षीणआभिनिबोधिकज्ञानावरणवाला, क्षीणश्रुतज्ञानावरणवाला, क्षीणअवधिज्ञानावरणवाला, क्षीणमनः पर्ययज्ञानावरणवाला, क्षीणकेवलज्ञानावरण, अविद्यमान आवरण, निरावरणवाला, क्षीणावरण, **ज्ञानावरणीयकर्मविप्रमुक्त**।

(२) केवलदर्शी, सर्वदर्शी, क्षीणनिद्र, क्षीणनिद्रानिद्र, क्षीणप्रचलावाला, क्षीणप्रचलाप्रचलावाला, क्षीणस्त्यानगद्धि, क्षीणचक्षुदर्शनावरणवाला, क्षीणअचक्षुदर्शनावरणवाला, क्षीणअवधिदर्शनावरणवाला, क्षीणकेवलदर्शनावरणवाला, अनावरण, निरावण, क्षीणावरण, **दर्शनावरणीयकर्मविप्रमुक्त**।

(३) क्षीणसातावेदनीय, क्षीणअसातावेदनीय, अवेदन, निर्वेदन, क्षीणवेदन, शुभाशुभ–**वेदनीयकर्मविप्रमुक्त**।

(४) क्षीणक्रोध यावत् क्षीणलोभ, क्षीणराग, क्षीणद्वेष, क्षीणदर्शनमोहनीय, क्षीणचारित्रमोहनीय, अमोह, निर्मोह, क्षीणमोह, **मोहनीयकर्मविप्रमुक्त**।

(५) क्षीणनरकायुष्क, क्षीणतिर्यंचायुष्क, क्षीणमनुष्यायुष्क, क्षीणदेवायुष्क, अनायुष्क, निरायुष्क, क्षीणायुष्क, **आयुकर्मविप्रमुक्त**।

(६) गति–जाति–शरीर–अंगोपांग–बंधन–संघात–संहनन–अनेक शरीरवृन्दसंघात से विप्रमुक्त, क्षीण–शुभनाम, क्षीण–अशुभनाम, अनाम, निर्नाम, क्षीणनाम, शुभाशुभ **नामकर्मविप्रमुक्त**।

(७) क्षीण–उच्चगोत्र, क्षीण–नीचगोत्र, अगोत्र, निर्गोत्र, क्षीणगोत्र, **शुभाशुभगोत्रकर्म** से विप्रमुक्त।

(८) क्षीण–दानान्तराय, क्षीण–लाभान्तराय, क्षीण–भोगान्तराय, क्षीण–उपभोगान्तराय, क्षीणवीर्यान्तराय, अनन्तराय, निरन्तराय, क्षीणान्तराय, **अन्तरायकर्म से विप्रमुक्त**।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, परिनिर्वृत्त, अन्तकृत, सर्वदुःखप्रहीण।

यह क्षयनिष्पन्न क्षायिकभाव का स्वरूप है।

(विस्तार हेतु देखें ज्ञान मुनि कृत हिन्दी टीका भाग-२, पृ. ११४-१४० तथा सचित्र अनुयोगद्वार सूत्र के भाग-२ में परिशिष्ट।)

244. (Question) What is this *kshaya-nishpanna* (produced by extinction)?

(Answer) (1) *Kshaya-nishpanna* (produced by extinction) *Kshayik-bhaava* (extinct state) is of many types—*Utpanna-jnana-darshan-dhari, Arhat, Jina, Kevali,* having *Ksheena-abhinibodhik-janavarana,* having *Ksheena-shruta-janavarana,* having *Ksheena-avadhi-janavarana,* having *Ksheena-manahparyava-janavarana,* having *Ksheena-Keval-janavarana,* having *avidyaman-janavarana,* having no *avarana,* having *Ksheena-avarana,* and *Jnanavaraniya-karma-vipramukta.*

(2) *Keval-darshi, Sarva-darshi,* having *Ksheena-nidra,* having *Ksheena-nidranidra,* having *Ksheena-prachala,* having *Ksheena-prachalaprachala,* having *Ksheena-styanagriddhi,* having *Ksheena-chakshu-darshan-avarana,* having *Ksheena-achakshu-darshan-avarana,* having *Ksheena-avadhi-darshan-avarana,* having *Ksheena-Kevala-darshan-avarana,* having *avidyaman-darshanavarana,* having no *avarana,* having *Ksheena-avarana,* and *Darshanavaraniya-karma-vipramukta.*

(3) *Ksheena-sata-vedaniya, Ksheena-asata-vedaniya,* having *avidyaman-vedaniya*, having no *vedana,* having *Ksheena-vedana,* and *Shubh-ashubh-Vedaniya-karma-vipramukta.*

(4) *Ksheena-krodh* to *Ksheena-lobha, Ksheena-raga, Ksheena-dvesh, Ksheena-darshan-mohaniya, Ksheena-charitra-mohaniya,* having *avidyaman-mohaniya*, having no *moha,* having *Ksheena-moha,* and *Mohaniya-karma-vipramukta.*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(4) *Ksheena-narak-ayushk, Ksheena-tiryanch-ayushk, Ksheena-manushya-ayushk, Ksheena-deva-ayushk,* having *avidyaman-ayushk,* having no *ayush,* having *Ksheena-ayush,* and *Ayush-karma-vipramukta.*

(5) *Gati-Jati-Sharira-Angopanga-Bandhan-Sanghat-Samhanan-Anekashariravrindasamghata Vipramukta, Ksheena-shubh-nama, Ksheena-ashubha-nama,* having *avidyaman-nama*, having no *nama,* having *Ksheena-nama,* and *Shubh-ashubh-Nama-karma-vipramukta.*

(6) *Ksheena-uchcha-gotra, Ksheena-nicha-gotra,* having *avidyaman-gotra,* having no *gotra,* having *Ksheena-gotra,* and *Shubh-ashubh-Gotra-karma-vipramukta.*

(7) *Ksheena-dana-antaraya, Ksheena-labha-antaraya, Ksheena-bhoga-antaraya, Ksheena-upabhoga-antaraya, Ksheena-virya-antaraya,* having *avidyaman-antaraya,* having no *antaraya,* having *Ksheena-antaraya,* and *Antaraya-karma-vipramukta.*

(8) *Siddha, Buddha, Mukta, Parinirvitta, Antakrit, Sarvaduhkhapahina.*

This concludes the description of *Kshaya-nishpanna* (produced by extinction) and also of *Kshayik-bhaava* (extinct state).

(for more details see Hindi Tika part-2 by Jnana Muni p 114-140 and also Illustrted Anuyogadvar Sutra Part-2, Appendix)

विशेष शब्दों के अर्थ–उत्पन्न ज्ञान–दर्शन धर–ज्ञानावरणीय कर्म के सम्पूर्ण क्षय से उत्पन्न केवलज्ञान, केवलदर्शन को धारण करने वाले।

अर्हत्–जगत के पूजनीय अथवा जिनसे कोई रहस्य अज्ञात नहीं है।

जिन–कर्म शत्रु के विजेता (चूर्णि) राग–द्वेष को जीतने वाले (हरिभद्रसूरि) आवरण शत्रु को जीतने वाले (मल. हेमचन्द्र)

अनावरण–आवरणों से मुक्त–जैसे निर्मल आकाश में चन्द्र का बिम्ब।

निरावरण–भविष्य में आने वाले आवरणों से मुक्त, जैसे राहु से चन्द्रमा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्षीणावरण–जिनके समस्त आवरण क्षीण हो गये। आवरण का बीज नष्ट हो चुका है।

अवेदन–वेदनारहित। वेदना का अभाव।

निर्वेदन–बाहर से आने वाले वेदना के हेतुओं से अप्रभावित।

क्षीण वेदन–भविष्य में आने वाली वेदना की सम्भावना से मुक्त। (चूर्णि एवं टीका की व्याख्याओं के अनुसार)

Technical Terms—Utpanna-jnana-darshan-dhar—One who has *Keval-jnana* (omniscience) and *Keval-darshan* (ultimate-perception) caused by complete extinction of *Jananavaraniya karma* (knowledge obscuring *karma*).

Arhat—Revered by the whole world; those for whom no secret is unknown.

Jina—The victors of the enemy in the form of *karma* (*Churni*); The victors of attachment and aversion (Haribhadra Suri); The victors over the enemy in the form of *avarana* (veil) (Maladhari Hemachandra).

Anavarana—Those who have removed the veil; like moon in clear sky.

Niravarana—Without a veil; those who are free also of impending veils; like moon from eclipse.

Ksheen-avarana—Those who have weakened their veils having destroyed the source of veils.

Avedan—Free of sufferings; absence of sufferings.

Nirvedan—Not effected by afflictions and their sources.

Ksheen-vedana—Free of future possibilities of sufferings.

(These explanations are based on *Churni* and *Tika*)

(४) क्षायोपशमिकभाव का वर्णन

२४५. से किं तं खओवसमिए ?

खओवसमिए दुविहे पन्नत्ते। तं जहा–(१) खओवसमे य, (२) खओवसमनिप्फन्ने य।

२४५. (प्रश्न) क्षायोपशमिकभाव क्या है ?

(उत्तर) क्षायोपशमिकभाव दो प्रकार का है। यथा–(१) क्षयोपशम, और (२) क्षयोपशनिष्पन्न।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(4) KSHAYOPASHAMIK-BHAAVA

245. (Question) What is this *Kshayopashamik-bhaava* (state of extinction-cum-pacification)?

(Answer) *Kshayopashamik-bhaava* (state of extinction-cum-pacification) is of two types—(1) *Kshayopasham* (extinction-cum-pacification) and (2) *Kshayopasham-nishpanna* (produced by extinction-cum-pacification).

२४६. से किं तं खओवसमे ?

खओवसमे चउण्हं घाइकम्माणं खओवसमेणं। तं जहा–(१) णाणावरणिज्जस्स, (२) दंसणावरणिज्जस्स, (३) मोहणिज्जस्स, (४) अंतराइयस्स। से तं खओवसमे।

२४६. (प्रश्न) क्षयोपशम क्या है ?

(उत्तर) (१) ज्ञानावरणीय, (२) दर्शनावरणीय, (३) मोहनीय, और (४) अन्तराय, इन चार घातिकर्मों के क्षयोपशम को क्षयोपशमभाव कहते हैं।

246. (Question) What is this *Kshayopasham* (extinction-cum-pacification)?

(Answer) The process of extinction-cum-pacification of the four vitiating *karmas*—(1) *Jananavaraniya*, (2) *Darshanavaraniya*, (3) *Mohaniya*, and (4) *Antaraya*—is called *Kshayopasham* (extinction-cum-pacification).

२४७. से किं तं खओवसमनिप्फन्ने ?

खओवसमनिप्फन्ने अणेगविहे पण्णत्ते। तं जहा–खओवसमिया आभिणिबोहियणाणलद्धी जाव खओवसमिया मणपज्जवणाणलद्धी, खओवसमिया मतिअण्णाण लद्धी खओवसमिया सुयअण्णाणलद्धी खओवसमिया विभंगणाणलद्धी,

खओवसमिया चक्खुदंसणलद्धी एवमचक्खुदंसणलद्धी, एवं सम्मद्दंसणलद्धी मिच्छादंसणलद्धी सम्मामिच्छादंसणलद्धी,

खओवसमिया सामाइयचरित्तलद्धी एवं छेदोवट्ठावणलद्धी खपरिहारविसुद्धियलद्धी सुहुमसंपराइयलद्धी एवं चरित्ताचरित्तलद्धी,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खओवसमिया दाणलद्धी एवं लाभ. भोग. उवभोग. खओवसमिया वीरियलद्धी एवं पंडियवीरियलद्धी बालवीरियलद्धी बालपंडियवीरियलद्धी, खओवसमिया सोइंदियलद्धी जाव खओवसमिया फासिंदियलद्धी,

खओवसमिए आयारधरे एवं सूयगडधरे ठाणधरे समवायधरे विवाहपण्णत्तिधरे एवं नायाधम्मकहा. उवासदगदसा. अंतगडदसा अणुत्तरोववाइयदसा. पण्हावागरण. खओवसमिए विवागसुयधरे खओवसमिए दिट्ठिवायधरे, खओवसमिए णवपुव्वी जाव चोद्दसपुव्वी, खओवसमिए गणी, खओवसमिए वायए। से तं खओवसमनिप्फण्णे। से तं खओवसमिए।

२४७. **(प्रश्न)** क्षयोपशमनिष्पन्न क्षायोपशमिकभाव का क्या स्वरूप है ?

(उत्तर) क्षयोपशमनिष्पन्न क्षायोपशमिकभाव अनेक प्रकार का है। यथा–क्षायोपशमिकी आभिनिबोधिकज्ञानलब्धि यावत् क्षायोपशमिकी मनःपर्यायज्ञानलब्धि, क्षायोपशमिकी मति–अज्ञानलब्धि, क्षायोपशमिकी श्रुत–अज्ञानलब्धि, क्षायोपशमिकी विभंगज्ञानलब्धि, क्षायोपशमिकी चक्षुदर्शनलब्धि, इसी प्रकार अचक्षुदर्शनलब्धि, अवधिदर्शनलब्धि, सम्यग्दर्शनलब्धि, मिथ्यादर्शनलब्धि, सम्यग्मिथ्यादर्शनलब्धि, क्षायोपशमिकी सामायिकचारित्रलब्धि, छेदोपस्थापनालब्धि, परिहार–विशुद्धिलब्धि, सूक्ष्मसंपरायिकलब्धि, चारित्राचारित्रलब्धि, क्षायोपशमिकी दान–लाभ–भोग–उपभोगलब्धि, क्षायोपशमिकी वीर्यलब्धि, पण्डितवीर्यलब्धि, बालवीर्यलब्धि, बालपण्डितवीर्यलब्धि, क्षायोपशमिकी श्रोत्रेन्द्रियलब्धि यावत् क्षायोपशमिकी स्पर्शनेन्द्रियलब्धि, क्षायोपशमिक आचारांगधारी, सूत्रकृतांगधारी, स्थानांगधारी समवायांगधारी, व्याख्याप्रज्ञप्तिधारी, ज्ञाताधर्मकथांगधारी, उपासकदशांगधारी, अन्तकृद्दशांगधारी, अनुत्तरोपपातिकदशांगधारी, प्रश्नव्याकरणधारी, क्षायोपशमिक विपाकश्रुतधरी, क्षायोपशमिक दृष्टिवादधारी, क्षायोपशमिक नवपूर्वधारी यावत् चौदहपूर्वधारी, क्षायोपशमिक गणी, क्षायोपशमिक वाचक। ये सब क्षयोपशमनिष्पन्नभाव हैं।

(यह विभिन्न कर्मों के क्षयोपशम से निष्पन्न उपलब्धियों की सूची है। इसका विस्तार भाग–२ में परिशिष्ट में दिया जा रहा है।)

यह क्षायोपशमिकभाव का स्वरूप है।

247. (Question) What is this *Kshayopasham-nishpanna Kshayopashamik-bhaava* (state of extinction-cum-pacification caused by extinction-cum-pacification) ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(Answer) *Kshayopasham-nishpanna Kshayopashamik-bhaava* (state of extinction-cum-pacification caused by extinction-cum-pacification) is of many types—*Kshayopashamiki-Abhinibodhik-jnana-labdhi* to *Kshayopashamiki-Manahparyava-jnana-labdhi, Kshayopashamiki-Mati-ajnana-labdhi, Kshayopashamiki-Shrut-ajnana-labdhi, Kshayopashamiki-Vibhanga-jnana-labdhi, Kshayopashamiki-Chakshu-darshan-labdhi, Kshayopashamiki-Achakshu-darshan-labdhi, Kshayopashamiki-Avadhi-darshan-labdhi, Kshayopashamiki-Samyak-darshan-labdhi, Kshayopashamiki-Mithya-darshan-labdhi, Kshayopashamiki-Samyagmithya-darshan-labdhi, Kshayopashamiki-Samayik-charitra-labdhi, Kshayopashamiki-Chedopasthapana-labdhi, Kshayopashamiki-Parihara-vishuddhi-labdhi, Kshayopashamiki-Sukshma-samparayik-labdhi, Kshayopashamiki-Charitracharitra-labdhi, Kshayopashamiki-Dana-Labha-Bhoga-upabhoga-labdhi, Kshayopashamiki-Virya-labdhi, Kshayopashamiki-Pandit-Virya-labdhi, Kshayopashamiki-Baal-Virya-labdhi, Kshayopashamiki-Baal-Pandit-Virya-labdhi, Kshayopashamiki-Shrotrendriya-labdhi* to *Kshayopashamiki-Sparshanendriya-labdhi, Kshayopashamiki-Acharanga-dhari, Kshayopashamiki-Sutrakritanga-dhari, Kshayopashamiki-Sthananga-dhari, Kshayopashamiki-Samvayanga-dhari, Kshayopashamiki-Vyakhyaprajnapti-dhari, Kshayopashamiki-Jnatadharmakathanga-dhari, Kshayopashamiki-Upasakadashanga-dhari, Kshayopashamiki-Antakriddashanga-dhari, Kshayopashamiki-Anutaraupapatikadashanga-dhari, Kshayopashamiki-Prashnavyakaran-dhari, Kshayopashamiki-Vipakashrut-dhari, Kshayopashamiki-Drishtivada-dhari, Kshayopashamiki-Navapurva-dhari* to *Chaturdashpurva-dhari, Kshayopashamiki-Gani, Kshayopashamiki-Vachak.*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(This is the list of attainments caused by extinction-cum-pacification of various Rarmas. Details of these are included in Part-2, Appendix.)

This concludes the description of *Kshayopasham-nishpanna Kshayopashamik-bhaava* (state of extinction-cum-pacification caused by extinction-cum-pacification). This also concludes the description of *Kshayopashamik-bhaava* (state of extinction-cum-pacification).

(५) पारिणामिकभाव

२४८. से किं तं पारिणामिए ?

पारिणामिए दुविहे पण्णत्ते। तं जहा-(१) सादिपारिणामिए य, (२) अणादिपारिणामिए य।

२४८. (प्रश्न) पारिणामिकभाव किसे कहते हैं ?

(उत्तर) पारिणामिकभाव के दो प्रकार हैं। यथा-(१) सादिपारिणामिक, (२) अनादिपारिणामिक। [विस्तार के लिए देखें सूत्र ११३(२)]

(5) PARINAMIK BHAAVA

248. (Question) What is this *Parinamik-bhaava* (transformed state)?

(Answer) *Parinamik-bhaava* (transformed state) is of two types—(1) *Sadi-parinamik* (transformative state with a beginning) and (2) *Anadi-parinamik* (transformative state without a beginning). [for details refer to aphorism 113 (2)]

२४९. से किं तं सादिपारिणामिए ?

सादिपारिणामिए अणेगविहे पण्णत्ते। तं जहा–

जुण्णसुरा जुण्णगुलो जुण्णघयं जुण्णतंदुला चेव।

अब्भा य अब्भरुक्खा संझा गंधव्वणगरा य॥२४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उक्कावाया दिसादाघा गज्जियं विज्जू णिग्घाया जूवया जक्खादित्ता धूमिया महिया रयुग्घाओ चंदोवरागा सूरोवरागा चंदपरिवेसा सूरपरिवेसा पडिचंदया पडिसूरया इंदधणू उदगमच्छा कविहसिया अमोहा वासा वासधरा गामा णगरा घरा पव्वता पायाला भवणा निरया रयणप्पभा सक्करप्पभा वालुयप्पभा पंकप्पभा धूमप्पभा तमा तमतमा सोहम्मे ईसाणे जाव आणए पाणए आरणे अच्चुए गेवेज्जे अणुत्तरोववाइया ईसीपब्भारा परमाणुपोग्गले दुपदेसिए जाव अणंतपदेसिए। से तं सादिपारिणामिए।

२४९. (प्रश्न) सादिपारिणामिकभाव क्या है ?

(उत्तर) सादिपारिणामिकभाव के अनेक प्रकार हैं। जैसे–

जीर्ण सुरा, जीर्ण गुड़, जीर्ण घी, जीर्ण तंदुल, अभ्र, अभ्रवृक्ष, संध्या, गंधर्वनगर ॥२४॥

तथा–उल्कापात, दिग्दाह, मेघगर्जना, विद्युत, निर्घात, यूपक, यक्षादिप्त, धूमिका, महिका, रजोद्‌घात, चन्द्रग्रहण, सूर्यग्रहण, चन्द्रपरिवेष, सूर्यपरिवेष, प्रतिचन्द्र, प्रतिसूर्य, इन्द्रधनुष, उदकमत्स्य, कपिहसित, अमोघ, वर्ष (भरतादि क्षेत्र), वर्षधर (हिमवानादि पर्वत), ग्राम, नगर, घर, पर्वत, पातालकलश, भवन, नरक, रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, बालुकाप्रभा, पंकप्रभा, धूमप्रभा, तमःप्रभा, तमस्तमःप्रभा, सौधर्म, ईशान, यावत् आनत, प्राणत, आरण, अच्युत, ग्रैवेयक, अनुत्तरोपपातिक देवविमान, ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी, परमाणुपुद्‌गल, द्विप्रदेशिक स्कन्धसे लेकर अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध सादिपारिणामिकभाव रूप हैं।

249. (Question) What is this *Sadi-parinamik Bhaava* (transformative state with a beginning) ?

(Answer) *Sadi-parinamik Bhaava* (transformative state with a beginning) is of many types—*Jirna Sura* (stale wine), *Jirna Gud* (stale jaggery), *Jirna Ghee* (stale butter), *Jirna Tandul* (stale rice), *Abhra* (clouds), *Abhra Vriksha* (cloud-trees), *Sandhya* (evening), *Gandharva Nagar* (castle in the air). (24)

Also—*Ulkapat* (falling of meteor), *Digdaha* (conflagration in certain direction), *Meghagarjana* (thunder), *Vidyut* (lightening), *Nirghat* (thunder storm), *Yupak* (mixing of lights of sun and moon at dusk specially during the first

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

three days of the bright half of a month), *Yakshadipt* (demonic glow), *Dhoomika* (mist), *Mahika* (frost), *Rajodghat* (sandstorm), *Chandragrahan* (lunar eclipse), *Suryagrahan* (solar eclipse), *Chandra-parivesh* (halo of the moon), *Surya-parivesh* (halo of the sun), *Pratichandra* (double moon), *Pratisurya* (double moon), *Indradhanush* (rainbow), *Udak-matsya* (portion of a rainbow), *Kapihasit* (laugh of a monkey), *Amogh* (lines appearing around the solar disc after sunrise and before sunset), *Varsh* (countries like Bharat), *Varshdhar* (mountains like Himavan), *Gram* (village), *Nagar* (city), *Ghar* (house), *Parvat* (mountain), *Patal-kalash* (subterranean regions), *Bhavan* (abodes of gods), *Narak* (hells)—*Ratnaprabha, Sharkaraprabha, Balukaprabha, Pankaprabha, Dhoom-prabha, Tamah-prabha, Tamastamah-prabha*; (abodes of gods—) *Saudharma, Ishan to Anat, Pranat, Arana, Achyut, Graveyak, Anuttaraupapatik, Ishatpragbharaprithvi; paramanu-pudgal* (ultimate-particle of matter), aggregates of two to infinite *paramanu* (ultimate-particle).

This concludes the description of *Sadi-parinamik Bhaava* (transformative state with a beginning).

२५०. से किं अणादिपारिणामिए ?

अणादिपारिणामिए धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए जीवत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए अद्धासमए लोए अलोए भवसिद्धिया अभवसिद्धिया। से तं अणादिपारिणामिए। से तं पारिणामिए।

२५०. (प्रश्न) अनादिपारिणामिकभाव क्या है ?

२५०. धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, जीवास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय, अद्धासमय, (काल) लोक, अलोक, भवसिद्धिक, अभवसिद्धिक ये अनादि पारिणामिक हैं।

यह पारिणामिकभाव का स्वरूप है।

250. (Question) What is this *Anadi-parinamik* (transformative state without a beginning) ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(Answer) *Anadi-parinamik Bhaava* (transformative state without a beginning) is—*Dharmastikaya* (motion entity), *Adharmastikaya* (rest entity), *Akashastikaya* (space entity), *Jivastikaya* (life entity), *Pudgalastikaya* (matter entity), *Addhakala* (time), *Loka* (occupied space), *Aloka* (space beyond or unoccupied space), *Bhava-siddhik* (soul worthy of liberation), and *Abhava-siddhik* (soul unworthy of liberation).

This concludes the description of *Anadi-parinamik* (transformative state without a beginning). This also concludes the description of *Parinamik* (transformative state).

विवेचन–पारिणामिकभाव का लक्षण व विशेषता–द्रव्य के मूल स्वभाव में रहते हुए पूर्व अवस्था का विनाश तथा उत्तर अवस्था की उत्पत्ति होती रहना परिणमन–परिणाम है।

क्या भरतादि क्षेत्र सादिपारिणामिक है?–भरतादि क्षेत्र, हिमवान् आदि वर्षधर पर्वत, नरक–भूमियाँ एवं देवविमान अपने आकार मात्र से अवस्थित रहने के कारण शाश्वत अवश्य हैं किन्तु वे पौद्गलिक हैं और पुद्गलद्रव्य परिणमनशील होने से जघन्य एक समय और उत्कृष्ट असंख्यात काल बाद उसमें अवश्य परिणमन होता है। तब विलग हुए उन पुद्गलस्कन्धों के स्थान में दूसरे–दूसरे स्कन्ध मिलकर उस–उस रूप में परिणत हो जाते हैं। इसलिए वर्षधरादिकों को सादिपारिणामिकता के रूप में उदाहृत किया है। मेघ आदि तो कुछ काल पर्यन्त ही रहते हैं, अतः सादिरूपता स्वयंसिद्ध है।

धर्मास्तिकाय आदि षड्द्रव्य, लोक, अलोक, भवसिद्धिक, अभवसिद्धिक आदि अनादिपारिणामिकभाव–इसलिए है कि वे स्वभावतः अनादि काल से उस–उस रूप से परिणत हैं और अनन्तकाल तक रहेंगे।

Elaboration—Definition of transformative state is—The basic nature of a substance remaining same, the destruction of present state and creation of a new state is called *parinaman* or transformation. The state arrived at through this process is *called transformative state.*

Are areas like Bharat examples of transformative state ?—Countries like Bharat, mountains like Himavan, infernal worlds, and divine worlds apparently maintain their existing form, and

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

in that context they are eternal. But they still are of material origin. Matter being a continuously transforming substance essentially undergoes transformation within a minimum of one *samaya* and maximum of inexpressible time. In this process aggregates of *paramanus* (ultimate-particles) get exchanged with other aggregates even though the resulting apparent form remains the same. That is why all these have been included in the list of transformative substances with a beginning. Clouds and other such things have evident transformation during much shorter span of time, thus they naturally fall in this category.

Dharmastikaya and other things of the second list exist since time immemorial and will continue to do so, thus they are transformative without a beginning.

कठिन शब्दों के अर्थ–**अब्भा**–अभ्र, मेघ। **अब्भरुक्खा**–अभ्रवृक्ष–वृक्षाकार में परिणत हुए मेघ। **संझा**–संध्या–दिनरात्रि का संधिकाल। **गंधव्वणगरा**–गंधर्वनगर–उत्तम प्रासाद से शोभित नगर की आकृति जैसे आकाश में बने हुए पुद्‌गलों का परिणमन। **उक्कावाया**–उल्कापात–आकाशप्रदेश से गिरता हुआ तेजपुंज। **दिसादाघा**–दिग्दाह–किसी एक दिशा की ओर आकाश में जलती हुई अग्नि का आभास होना–दिखाई देना। **णिग्घाया**–निर्घात–गाज युक्त बिजली कौंधना अथवा गिरना। **जूवया**–यूपक–शुक्लपक्ष सम्बन्धी प्रथम तीन दिन का बाल चन्द्र/संध्या की प्रभा तथा चन्द्रमा की प्रभा का मिश्रण। **जक्खादित्ता**–यक्षादीप्त–आकाश में दिखाई देती हुई पिशाचाकृतिमय अग्नि। **धूमिया**–धूमिका–आकाश में रूक्ष और विरल दिखाई पड़ती हुई धुएँ जैसी एक प्रकार की धूमस/कुहासा। **महिया**–महिका–जलकणयुक्त धूमस। **रयुग्घाओ**–रजोद्‌घात–आकाश में धूलि का उड़ना, आँधी। **चंदोवराग सूरोवराग**–चन्दोपराग, सूर्योपराग–चन्द्रग्रहण और सूर्यग्रहण। **चंदपरिवेसा सूरपरिवेसा**–चन्द्रपरिवेश, सूर्यपरिवेश–चन्द्र और सूर्य के चारों ओर गोलाकार में परिणत हुए पुद्‌गल परमाणुओं का मण्डल। **पडिचंदया, पडिसूरया**–प्रतिचन्द्र, प्रतिसूर्य–उत्पात आदि का सूचक द्वितीय चन्द्र और द्वितीय सूर्य का दिखाई पड़ना। **इंदधणु**–इन्द्रधनुष–आकाश में नील–पीत आदि वर्ण विशिष्ट धनुषाकार आकृति। **उदगमच्छ**–उदकमत्स्य–इन्द्रधनुष के खण्ड, टुकड़े। **कविहसिया**–कपिहसिता–कभी–कभी आकाश से सुनाई पड़ने वाली अति कर्णकटु ध्वनि। **अमोहा**–अमोघ–उदय और अस्त के समय सूर्य की किरणों द्वारा उत्पन्न लम्बी–लम्बी काली रेखा विशेष।

Technical Terms—Abbha—*abhra*; clouds. **Abbharukkha**—*abhra-vriksha*; clouds in the shape of a tree. **Sanjjha**—*sandhya*; conjunction (*sandhi*) of day and night; dusk.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Gandhavvanagara—*Gandharva-nagar*; clouds taking form of a beautiful city; imaginary city in sky; castle in the air. **Ukkavaya**—*Ulkapat*; falling of meteor. **Disadagha**—*Digdaha*; conflagration in certain direction. **Nigghaya**—*Nirghat*; thunder storm. **Juvaya**—*Yupak*; mixing of the glow of the sun and that of the moon at dusk specially during the first three days of the bright half of a month. **Jakkhaditta**—*Yakshadipt*; fiery glow in demonic form seen in the skies. **Dhoomia**—*Dhoomika*; mist. **Mahiya**—*Mahika*; frost. **Rayugghao**—*Rajodghat*; rising of dust; sandstorm. **Chandovarag**—*Chandroparag* or *Chandragrahan*; lunar eclipse. **Surovarag**—*Suryoparag* or *Suryagrahan*; solar eclipse. **Chandaparivesa**—*Chandra-parivesh*; halo of the moon. **Suraparivesa**—*Surya-parivesh*; halo of the sun. **Padichandaya**—*Pratichandra*; to see double moon, a bad omen. **Padisuraya**—*Pratisurya*; to see double sun, a bad omen. **Indadhanu**—*Indradhanush*; rainbow. **Udagamachha**—*Udak-matsya*; portions of a rainbow. **Kavihasiya**—*Kapihasit*; an ominous sound like laughter of a monkey sometimes appearing to come from nowhere; laugh of a monkey. **Amoha**—*Amogh*; black lines appearing around the solar disc immediately after sunrise and just before sunset.

(६) सान्निपातिक भाव

२५१. से किं तं सण्णिवाइए ?

सण्णिवाइए एतेसिं चेव उदइय-उवसमिय-खइय-खओवसमिय-पारिणामियाणं भावाणं दुयसंजोएणं तियसंजोएणं चउक्कसंजोएणं पंचगसंजोएणं जे निप्पज्जंति सव्वे से सन्निवाइए नामे। तत्थ णं दस दुगसंजोगा, दस तिगसंजोगा, पंच चउक्कसंजोगा, एक्के पंचगसंजोगे।

२५१. (प्रश्न) सान्निपातिक (नाम) क्या है ?

(उत्तर) औदयिक, औपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक और पारिणामिक, इन पाँचों भावों के द्विकसंयोग, त्रिकसंयोग, चतुःसंयोग और पंचसंयोग से जो भाव निष्पन्न होते हैं वे सब सान्निपातिकभाव नाम हैं।

उनमें से द्विकसंयोगज दस, त्रिकसंयोगज दस, चतुःसंयोगज पाँच और पंचसंयोगज एक भाव हैं। इस प्रकार सब मिलाकर ये छब्बीस सान्निपातिकभाव हैं।

(6) SANNIPATIK-BHAAVA

251. (Question) What is this *Sannipatik-bhaava* (mixed state)?

251. Various permutations and combinations arrived at by mixing two, three, four or five of the five states called *audayik, aupashamik, kshayik, kshayopashamik,* and *parinamik* are called *Sannipatik-bhaava* (mixed state).

Of these there are ten alternatives of the combination of two, ten of the combination of three, five of the combination of four and one of the combination of five. Thus in total there are 26 mixed states.

विवेचन-अनेक भावों के संयोग से होने वाला भाव सान्निपातिक भाव है। उसके छब्बीस भेदों का वर्णन अगले सूत्रों में किया जा रहा है। आचार्यों का कथन है कि-जीव की भिन्न-भिन्न पर्याय को ही यहाँ 'भाव' कहा है। वे मुख्यतः पाँच ही होती हैं, जिनका वर्णन पूर्व में किया जा चुका है। यह छठा सान्निपातिक भाव उन सबके संयोग से होता है। अतः यह मूल भाव नहीं होकर संयोगज भाव है।

Elaboration—The state resulting from combination of many states is called *Sannipatik-bhaava* (mixed state). Its twenty six alternatives or types will be discussed now. *Acharyas* state that—Different *paryayas* (modes; the form in which a thing or one of its attributes manifests itself) of beings are called states here. Mainly they are five as already described. This sixth state is the result of their combinations. Thus it is a coincidental state and not basic.

द्विकसंयोगज दस सान्निपातिक भाव नाम

२५२. तत्थ णं जे से दस दुगसंजोगा ते णं इमे-(१) अत्थि णामे उदइए उवसमनिप्पण्णे, (२) अत्थि णामे उदइए खयनिप्पण्णे, (३) अत्थि णामे उदइए खओवसमनिप्पण्णे, (४) अत्थि णामे उदइए पारिणामियनिप्पण्णे, (५) अत्थि णामे उवसमिए खयनिप्पण्णे, (६) अत्थि णामे उवसमिए खओवसमनिप्पण्णे, (७) अत्थि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णामे उवसमिए पारिणामियनिप्पन्ने, (८) अत्थि णामे खइए खओवसमनिप्पन्ने, (९) अत्थि णामे खइए पारिणामियनिप्पन्ने, (१०) अत्थि णामे खवओवसमिए पारिणामियनिप्पन्ने।

२५२. दो-दो के संयोग से निष्पन्न दस भंगों के नाम इस प्रकार हैं-

(१) औदयिक-औपशमिक के संयोग से निष्पन्न, (२) औदयिक-क्षायिक के संयोग से निष्पन्न, (३) औदयिक-क्षायोपशमिक के संयोग से निष्पन्न, (४) औदयिक-पारिणामिक के संयोग से निष्पन्न, (५) औपशमिक-क्षायिक के संयोग से निष्पन्न, (६) औपशमिक-क्षायोपशमिक के संयोग से निष्पन्न, (७) औपशमिक-पारिणामिक के संयोग से निष्पन्न, (८) क्षायिक-क्षायोपशमिक के संयोग से निष्पन्न, (९) क्षायिक-पारिणामिक के संयोग से निष्पन्न तथा (१०) क्षायोपशमिक-पारिणामिक के संयोग से निष्पन्न भाव।

SANNIPATIK-BHAAVA WITH A COMBINATION OF TWO

252. The names of the ten *bhangs* (types) of *Sannipatik-bhaava* (mixed state) produced by combination of two are as follows—

(1) produced by combination of *audayik-bhaava* (culminated state) and *aupashamik-bhaava* (pacified state), (2) produced by combination of *audayik-bhaava* and *kshayik-bhaava* (extinct state), (3) produced by combination of *audayik-bhaava* and *kshayopashamik-bhaava* (state of extinction-cum-pacification), (4) produced by combination of *audayik-bhaava* and *parinamik-bhaava* (transformed state), (5) produced by combination of *aupashamik-bhaava* and *kshayik-bhaava*, (6) produced by combination of *aupashamik-bhaava* and *kshayopashamik-bhaava*, (7) produced by combination of *aupashamik-bhaava* and *parinamik-bhaava*, (8) produced by combination of *kshayik-bhaava* and *kshayopashamik-bhaava*, (9) produced by combination of *kshayik-bhaava* and *parinamik-bhaava*, (10) produced by combination of *kshayopashamik-bhaava* and *parinamik-bhaava*.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२५३. कयरे से नामे उदइए उवसमनिप्पन्ने ?

(१) उदए त्ति मणूसे उवसंता कसाया, एस णं से णामे उदइए उवसमनिप्पन्ने।

(२) कयरे से नाम उदइए खयनिप्पन्ने ?

उदए त्ति मणूसे खइयं सम्मत्तं, एस णं से नामे उदइए खयनिप्पन्ने।

(३) कयरे से णामे उदइए खओवसमनिप्पन्ने ?

उदए त्ति मणूसे खओवसमियाइं इंदियाइं, एस णं से णामे उदइए खओवसमनिप्पन्ने।

(४) कयरे से णामे उदइए पारिणामियनिप्पन्ने ?

उदए त्ति मणूसे पारिणामिए जीवे, एस णं से णामे उदइए पारिणामियनिप्पन्ने।

(५) कयरे से णामे उवसमिए खयनिप्पन्ने ?

उवसंता कसाया, खइयं सम्मत्तं, एस णं से णामे उवसमिए खयनिप्पन्ने।

(६) कयरे से णामे उवसमिए खओवसमनिप्पण्णे ?

उवसंता कसाया खओवसमियाइं इंदियाइं, एस णं से णामे उवसमिए खओवसमनिप्पन्ने।

(७) कयरे से णामे उवसमिए पारिणामियनिप्पन्ने ?

उवसंता कसाया पारिणामिए जीवे, एस णं से णामे उवसमिए पारिणामियनिप्पन्ने।

(८) कयरे से णामे खइए खओवसमिय निप्पन्ने ?

खइयं सम्मत्तं खओवसमियाइं इंदियाइं, एस णं से णामे खइए खओवसमनिप्पन्ने।

(९) कयरे से णामे खइए पारिणामियनिप्पन्ने ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खइयं सम्मत्तं पारिणामिए जीवे, एस णं से णामे खइए पारिणामियनिप्पन्ने।

(१०) **कयरे से णामे खओवसमिए पारिणामियनिप्पन्ने ?**

खओवसमियाइं इंदियाइं पारिणामिए जीवे, एस णं से णामे खओवसमिए पारिणामिय निप्पन्ने।

२५३. (प्रश्न १) औदयिक उपशम निष्पन्न भाव कौन-सा है ?

(उत्तर) औदयिकभाव में मनुष्यगति और औपशमिकभाव में उपशांतकषाय औदयिक-औपशमिकभाव है।

(प्रश्न २) औदयिक क्षयनिष्पन्नभाव कौन-सा है ?

(उत्तर) औदयिकभाव में मनुष्यगति और क्षायिकभाव में क्षायिक सम्यक्त्व यह औदयिक-क्षायिकभाव है।

(प्रश्न ३) औदयिक-क्षयोपशमनिष्पन्नभाव क्या है ?

(उत्तर) औदयिकभाव में मनुष्यगति और क्षयोपशमनिष्पन्न भाव में इन्द्रियाँ हैं। यह औदयिक-क्षायोपशमिकभाव है।

(प्रश्न ४) औदयिक-पारिणामिक निष्पन्न भाव कौन-सा है।

(उत्तर) औदयिकभाव में मनुष्यगति और पारिणामिकभाव में जीव यह औदयिक-पारिणामिक भाव है।

(प्रश्न ५) औपशमिक-क्षयनिष्पन्नभाव क्या है ?

(उत्तर) उपशान्तकषाय और क्षायिक सम्यक्त्व यह औपशमिक-क्षायिक भाव है।

(प्रश्न ६) औपशमिक-क्षयोपशमनिष्पन्नभाव क्या है ?

(उत्तर) औपशमिकभाव में उपशांतकषाय और क्षयोपशमनिष्पन्न में इन्द्रियाँ यह औपशमिक-क्षयोपशमनिष्पन्नभाव है।

(प्रश्न ७) औपशमिक-पारिणामिकसंयोगनिष्पन्नभाव कौन-सा है ?

(उत्तर) औपशमिकभाव में उपशान्तकषाय और पारिणामिकभाव में जीवत्व यह औपशमिक-पारिणामिकनिष्पन्नभाव है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(प्रश्न ८) क्षायिक और क्षयोपशमनिष्पन्नभाव कौन-सा है ?

(उत्तर) क्षायिक सम्यक्त्व और क्षायोपशमिक इन्द्रियाँ यह क्षायिक-क्षयोपशमिक निष्पन्नभाव है।

(प्रश्न ९) क्षायिक और पारिणामिकनिष्पन्न क्या है ?

(उत्तर) क्षायिकभाव में क्षायिक सम्यक्त्व और पारिणामिकभाव में जीव, यह क्षायिक-पारिणामिकनिष्पन्नभाव है।

(प्रश्न १०) क्षायोपशमिक-पारिणामिकभाव क्या है ?

(उत्तर) क्षायोपशमिकभाव में इन्द्रियाँ और पारिणामिकभाव में जीव यह क्षायोपशमिक-पारिणामिकभाव है।

इस प्रकार से यह द्विकसंयोगी सान्निपातिक भाव के दस नामों का स्वरूप है।

253. (Question 1) Which is this state produced by combination of *audayik-bhaava* and *aupashamik-bhaava* ?

(Answer) Birth as a human being is (a consequence of) *audayik-bhaava* and *upashant-kashaya* (pacified passions) is (a consequence of) *aupashamik-bhaava*. This is *audayik-aupashamik-bhaava* (culminated and pacified state).

(Question 2) Which is this state produced by combination of *audayik-bhaava* and *kshayik-bhaava* ?

(Answer) Birth as a human being is (a consequence of) *audayik-bhaava* and *kshayik samyaktva* (righteousness produced by extinction of *karma*) is (a consequence of) *kshayik-bhaava*. This is *audayik-kshayik-bhaava* (culminated and extinct state).

(Question 3) Which is this state produced by combination of *audayik-bhaava* and *kshayopashamik-bhaava* ?

(Answer) Birth as a human being is (a consequence of) *audayik-bhaava* and sense organs are (a consequence of)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

kshayopashamik-bhaava. This is *audayik-kshayopashamik-bhaava* (culminated and extinct-cum-pacified state).

(Question 4) Which is this state produced by combination of *audayik-bhaava* and *parinamik-bhaava* ?

(Answer) Birth as a human being is (a consequence of) *audayik-bhaava* and soul is (a consequence of) *parinamik-bhaava*. This is *audayik-parinamik-bhaava* (culminated and transformed).

(Question 5) Which is this state produced by combination of *aupashamik-bhaava* and *kshayik-bhaava* ?

(Answer) *Upashant-kashaya* (pacified passions) is (a consequence of) *aupashamik-bhaava* and *kshayik samyaktva* (righteousness produced by extinction of *karma*) is (a consequence of) kshayik-bhaava. This is aupashamik-*kshayik-bhaava* (pacified and extinct state).

(Question 6) Which is this state produced by combination of *aupashamik-bhaava* and *kshayopashamik-bhaava* ?

(Answer) *Upashant-kashaya* (pacified passions) is (a consequence of) *aupashamik-bhaava* and sense organs are (a consequence of) *kshayopashamik-bhaava*. This is *aupashamik-kshayopashamik-bhaava* (pacified and extinct-cum-pacified state).

(Question 7) Which is this state produced by combination of *aupashamik-bhaava* and *parinamik-bhaava* ?

(Answer) *Upashant-kashaya* (pacified passions) is (a consequence of) *aupashamik-bhaava* and soul is (a consequence of) *parinamik-bhaava*. This is *aupashamik-parinamik-bhaava* (pacified and transformed state).

(Question 8) Which is this state produced by combination of *kshayik-bhaava* and *kshayopashamik-bhaava* ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(Answer) *Kshayik samyaktva* (righteousness produced by extinction of *karma*) is (a consequence of) *kshayik-bhaava* and sense organs are (a consequence of) *kshayopashamik-bhaava*. This is *kshayik-kshayopashamik-bhaava* (extinct and extinct-cum-pacified state).

(Question 9) Which is this state produced by combination of *kshayik-bhaava* and *parinamik-bhaava* ?

(Answer) *Kshayik samyaktva* (righteousness produced by extinction of *karma*) is (a consequence of) *kshayik-bhaava* and soul is (a consequence of) *parinamik-bhaava*. This is *kshayik-parinamik-bhaava* (extinct and transformed state).

(Question 10) Which is this state produced by combination of *kshayopashamik-bhaava* and *parinamik-bhaava* ?

(Answer) Sense organs are (a consequence of) *kshayopashamik-bhaava* and soul is (a consequence of) *parinamik-bhaava*. This is *kshayopashamik-parinamik-bhaava* (extinct-cum-pacified and transformed state).

This concludes the description of the names of the ten *bhangs* (types) of *Sannipatik-bhaava* (mixed state) produced by combination of two.

त्रिकसंयोगज दस सान्निपातिकभाव

२५४. तत्थ णं जे ते दस तिगसंजोगा ते णं इमे–

(१) अत्थि णामे उदइए उवसमिए खयनिप्पन्ने, (२) अत्थि णामे उदइए उवसमिए खओवसमनिप्पन्ने, (३) अत्थि णामे उदइए उवसमिए पारिणामियनिप्पन्ने, (४) अत्थि णामे उदइए खइए खओवसमनिप्पन्ने, (५) अत्थि णामे उदइए खइए पारिणामियनिप्पन्ने, (६) अत्थि णामे उदइए खओवसमिए पारिणामियनिप्पन्ने, (७) अत्थि णामे उवसमिए खइए खओवसमनिप्पन्ने, (८) अत्थि णामे उवसमिए

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खइए पारिणामियनिप्फन्ने, (९) अत्थि णामे उवसमिए खओवसमिए पारिणामियनिप्फन्ने, (१०) अत्थि णामे खइए खओवसमिए पारिणामियनिप्फन्ने।

२५४. यहाँ त्रिकसंयोगज दस नाम इस प्रकार हैं—(१) औदयिक-औपशमिक क्षयनिष्पन्नभाव, (२) औदयिक-औपशमिक-क्षयोपशमनिष्पन्नभाव, (३) औदयिक-औपशमिक-पारिणामिकनिष्पन्नभाव, (४) औदयिक-क्षायिक-क्षयोपशमनिष्पन्नभाव, (५) औदयिक-क्षायिक-पारिणामिकनिष्पन्नभाव, (६) औदयिक-क्षायोपशमिक-पारिणामिकनिष्पन्नभाव, (७) औपशमिक-क्षायिक-क्षायोपशमिकभाव, (८) औपशमिक-क्षायिक-पारिणामिकनिष्पन्नभाव, (९) औपशमिक-क्षायोपशमिक-पारिणामिकनिष्पन्नभाव, (१०) क्षायिक-क्षायोपशमिक-पारिणामिकनिष्पन्नभाव।

SANNIPATIK-BHAAVA WITH A COMBINATION OF THREE

254. The names of the ten names of *Sannipatik-bhaava* (mixed state) produced by combination of three are as follows—

(1) produced by combination of *audayik-bhaava* (culminated state), *aupashamik-bhaava* (pacified state), and *kshayik-bhaava* (extinct state), (2) produced by combination of *audayik-bhaava, aupashamik-bhaava,* and *kshayopashamik-bhaava* (state of extinction-cum-pacification), (3) produced by combination of *audayik-bhaava, aupashamik-bhaava,* and *parinamik-bhaava* (transformed state), (4) produced by combination of *audayik-bhaava, kshayik-bhaava,* and *kshayopashamik-bhaava,* (5) produced by combination of *audayik-bhaava, kshayik-bhaava,* and *parinamik-bhaava,* (6) produced by combination of *audayik-bhaava, kshayopashamik-bhaava,* and *parinamik-bhaava,* (7) produced by combination of *aupashamik-bhaava, kshayik-bhaava* and *kshayopashamik-bhaava,* (8) produced by combination of *aupashamik-bhaava, kshayik-bhaava* and *parinamik-bhaava,* (9) produced by combination of *aupashamik-bhaava, kshayopashamik-bhaava* and *parinamik-bhaava,* (10) produced by

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

combination of *kshayik-bhaava, kshayopashamik-bhaava* and *parinamik-bhaava.*

२५५. (१) कयरे से णामे उदइए उवसमिए खयनिप्पन्ने ?

उदए त्ति मणूसे उवसंता कसाया खइयं सम्मत्तं एस णं से णामे उदइए, उवमिए खयनिप्पन्ने।

२५५. (प्रश्न १) औदयिक-औपशमिक-क्षयनिष्पन्न भाव कौन सा है ?

(उत्तर) मनुष्यगति औदयिकभाव, उपशान्तकषाय औपशमिकभाव और क्षायिकसम्यक्त्व क्षायिकभाव यह औदयिक-औपशमिक क्षय निष्पन्नभाव है।

255. (Question 1) Which is this state produced by combination of *audayik-bhaava* (culminated state), *aupashamik-bhaava* (pacified state), and *kshayik-bhaava* (extinct state) ?

(Answer) Birth as a human being is (a consequence of) *audayik-bhaava* (culminated state), *upashant-kashaya* (pacified passions) is (a consequence of) *aupashamik-bhaava* (pacified state), and *kshayik samyaktva* (righteousness produced by extinction of *karma*) is (a consequence of) *kshayik-bhaava* (extinct state). This is *audayik-aupashamik-kshayik-bhaava* (culminated, pacified and extinct state).

(२) कयरे से णामे उदइए उवसमिए खओवसमनिप्पन्ने ?

उदए त्ति मणूसे उवसंता कसाया खओवसमियाइं इंदियाइं, एस णं से णामे उदइए उवसमिए खओवसमनिप्पन्ने।

२५५. (प्रश्न २) औदयिक-औपशमिक-क्षयोपशमिकनिष्पन्नभाव क्या है ?

(उत्तर) मनुष्यगति औदयिकभाव, उपशांतकषाय औपशमिक और इन्द्रियाँ क्षायोपशमिकभाव, यह औदयिक-औपशमिक-क्षयोपशमनिष्पन्नभाव है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(Question 2) Which is this state produced by combination of *audayik-bhaava, aupashamik-bhaava,* and *kshayopashamik-bhaava* (state of extinction-cum-pacification)?

(Answer) Birth as a human being is (a consequence of) *audayik-bhaava, upashant-kashaya* (pacified passions) is (a consequence of) *aupashamik-bhaava,* and sense organs are (a consequence of) *kshayopashamik-bhaava.* This is *audayik-aupashamik-kshayopashamik-bhaava* (culminated, pacified and extinct-cum-pacified state).

(३) कयरे से णामे उदइए उवसमिए पारिणामियनिप्पन्ने ?

उदए त्ति मणूसे उवसंता कसाया पारिणामिए जीवे, एस णं से णामे उदइए उवसमिए पारिणामियनिप्पन्ने।

२५५. (प्रश्न ३) औदयिक-औपशमिक-पारिणामिकनिष्पन्नभाव क्या है?

(उत्तर) मनुष्यगति औदयिक, उपशांतकषाय औपशमिक और जीवत्व पारिणामिक भाव इस प्रकार औदयिक-औपशमिक-पारिणामिकनिष्पन्नभाव है।

(Question 3) Which is this state produced by combination of *audayik-bhaava, aupashamik-bhaava,* and *parinamik-bhaava*?

(Answer) Birth as a human being is (a consequence of) *audayik-bhaava, upashant-kashaya* (pacified passions) is (a consequence of) *aupashamik-bhaava,* and soul is (a consequence of) *parinamik-bhaava.* This is *audayik-aupashamik-parinamik-bhaava* (culminated, pacified and transformed state).

(४) कयरे से णामे उदइए खइए खओवसमनिप्पन्ने ?

उदए त्ति मणूसे खइयं सम्मत्तं खओवसमियाइं इंदियाइं एस णं से णामे उदइए खइए खओवसमनिप्पन्ने।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२५५. (प्रश्न ४) औदयिक-क्षायिक-क्षयोपशमनिष्पन्न भाव क्या है?

(उत्तर) मनुष्यगति औदयिक, क्षायिक सम्यक्त्व क्षायिकभाव और इन्द्रियाँ क्षायोपशमिकभाव यह औदयिक-क्षायिक-क्षायोपशमिकनिष्पन्न भाव है।

(Question 4) Which is this state produced by combination of *audayik-bhaava, kshayik-bhaava*, and *kshayopashamik-bhaava* ?

(Answer) Birth as a human being is (a consequence of) *audayik-bhaava, kshayik samyaktva* is (a consequence of) *kshayik-bhaava*, and sense organs are (a consequence of) *kshayopashamik-bhaava.* This is *audayik-kshayik-kshayopashamik-bhaava* (culminated, extinct and extinct-cum-pacified state).

(५) कयरे से णामे उदइए खइए पारिणामियनिप्पन्ने ?

उदए त्ति मणूसे खइयं सम्मत्तं पारिणामिए जीवे, एस णं से नामे उदइए खइए पारिणामियनिप्पन्ने।

२५५. (प्रश्न ५) औदयिक-क्षायिक-पारिणामिकनिष्पन्न भाव क्या है?

(उत्तर) मनुष्यगति औदयिकभाव, क्षायिक सम्यक्त्व क्षायिकभाव और जीवत्व पारिणामिकभाव इस प्रकार औदयिक-क्षायिक-पारिणामिकनिष्पन्न भाव का स्वरूप है।

(Question 5) Which is this state produced by combination of *audayik-bhaava, kshayik-bhaava*, and *parinamik-bhaava* ?

(Answer) Birth as a human being is (a consequence of) *audayik-bhaava, kshayik samyaktva* is (a consequence of) *kshayik-bhaava*, and soul is (a consequence of) *parinamik-bhaava.* This is *audayik-kshayik-parinamik-bhaava* (culminated, extinct and transformed state).

(६) कयरे से णामे उदइए खओवसमिए पारिणामियनिप्पन्ने ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उदए त्ति मणूसे खओवसमियाइं इंदियाइं पारिणामिए जीवे, एस णं से णामे उदइए खओवसमिए पारिणामियनिप्पन्ने।

२५५. (प्रश्न ६) औदयिक-क्षायोपशमिक-पारिणामिकनिष्पन्नभाव क्या है?

(उत्तर) मनुष्यगति औदयिक, इन्द्रियाँ क्षायोपशमिक और जीव पारिणामिक, यह औदयिक-क्षायोपशमिक-पारिणामिकनिष्पन्न भाव है।

(Question 6) Which is this state produced by combination of *audayik-bhaava, kshayopashamik-bhaava,* and *parinamik-bhaava* ?

(Answer) Birth as a human being is (a consequence of) *audayik-bhaava*, sense organs are (a consequence of) *kshayopashamik-bhaava*, and soul is (a consequence of) *parinamik-bhaava*. This is *audayik-kshayopashamik-parinamik-bhaava* (culminated, extinct-cum-pacified and transformed state).

(७) कयरे से णामे उवसमिए खइए खओवसमनिप्पन्ने ?

उवसंता कसाया खइयं सम्मत्तं खओवसमियाइं इंदियाइं एस णं से णामे उवसमिए खइए खओवसमनिप्पन्ने।

२५५. (प्रश्न ७) औपशमिक-क्षायिक-क्षयोपशमनिष्पन्नभाव क्या है?

(उत्तर) उपशांतकषाय औपशमिकभाव, क्षायिकसम्यक्त्व क्षायिकभाव, इन्द्रियाँ क्षायोपशमिकभाव, यह औपशमिक-क्षायिक-क्षयोपशमनिष्पन्न भाव है।

(Question 7) Which is this state produced by combination of *aupashamik-bhaava, kshayik-bhaava* and *kshayopashamik-bhaava* ?

(Answer) *Upashant-kashaya* (pacified passions) is (a consequence of) *aupashamik-bhaava, kshayik samyaktva* is (a consequence of) *kshayik-bhaava* and sense organs are (a consequence of) *kshayopashamik-bhaava.* This is *aupashamik-kshayik-kshayopashamik-bhaava* (pacified, extinct and extinct-cum-pacified state).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(८) कयरे से णामे उवसमिए खइए पारिणामियनिप्पन्ने ?

उवसंता कसाया, खइयं सम्मत्तं पारिणामिए जीवे, एस णं से णामे उवसमिए खइए पारिणामियनिप्पन्ने।

२५५. (प्रश्न ८) औपशमिक-क्षायिक-पारिणामिकनिष्पन्न भाव क्या है ?

(उत्तर) उपशांतकषाय औपशमिकभाव, क्षायिकसम्यक्त्व क्षायिकभाव, जीवत्व पारिणामिकभाव यह औपशमिक-क्षायिक-पारिणामिकनिष्पन्न भाव है।

(Question 8) Which is this state produced by combination of *aupashamik-bhaava, kshayik-bhaava* and *parinamik-bhaava* ?

(Answer) *Upashant-kashaya* (pacified passions) is (a consequence of) *aupashamik-bhaava, kshayik samyaktva* is (a consequence of) *kshayik-bhaava* and soul is (a consequence of) *parinamik-bhaava*. This is *aupashamik-kshayik-parinamik-bhaava* (pacified state, extinct and transformed state).

(९) कयरे से णामे उवसमिए खओवसमिए पारिणामियनिप्पन्ने ?

उवसंता कसाया खओवसमियाइं इंदियाइं पारिणामिए जीवे, एस णं से णामे उवसमिए खओवसमिए पारिणामियनिप्पन्ने।

२५५. (प्रश्न ९) औपशमिक-क्षायोपशमिक-पारिणामिकनिष्पन्न भाव क्या है ?

(उत्तर) उपशान्तकषाय औपशमिकभाव, इन्द्रियाँ क्षायोपशमिक और जीवत्व पारिणामिक, इस प्रकार यह औपशमिक-क्षायोपशमिक-पारिणामिकभावनिष्पन्ननाम का स्वरूप है ?

(Question 9) Which is this state produced by combination of *aupashamik-bhaava, kshayopashamik-bhaava* and *parinamik-bhaava* ?

(Answer) *Upashant-kashaya* (pacified passions) is (a consequence of) *aupashamik-bhaava*, sense organs are (a consequence of) *kshayopashamik-bhaava* and soul is

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(a consequence of) *parinamik-bhaava*. This is *aupashamik-kshayopashamik-parinamik-bhaava* (pacified, extinct-cum-pacified and transformed state).

(१०) कयरे से णामे खइए खओवसमिए पारिणामियनिप्पन्ने ?

खइयं सम्मत्तं खओवसमियाइं इंदियाइं पारिणामिए जीवे, एस णं से णामे खइए खओवसमिए पारिणामियनिप्पन्ने।

२५५. (प्रश्न १०) क्षायिक-क्षायोपशमिक-पारिणामिकनिष्पन्नभाव कौन-सा है ?

(उत्तर) क्षायिकसम्यक्त्व क्षायिकभाव, इन्द्रियाँ क्षायोपशमिकभाव और जीवत्व पारिणामिकभाव, इस प्रकार क्षायिक-क्षायोपशमिक-पारिणामिकभावनिष्पन्न नाम है।

(Question 10) Which is this state produced by combination of *kshayik-bhaava, kshayopashamik-bhaava* and *parinamik-bhaava*.

(Answer) *Kshayik samyaktva* is (a consequence of) *kshayik-bhaava,* sense organs are (a consequence of) *kshayopashamik-bhaava* and soul is (a consequence of) *parinamik-bhaava.* This is *kshayik-kshayopashamik-parinamik-bhaava* (extinct, extinct-cum-pacified and transformed state).

विवेचन-इन दस संयोगज भंगों में से पाँचवां और छठा भंग जीवों में पाया जाता है। यथा-औदयिक क्षायोपशमिक-पारिणामिकभावों के संयोग से निष्पन्न छठा सान्निपातिकभाव मनुष्यगति में पाया जाता है। औदयिक, ज्ञान-दर्शन-चारित्र क्षायिक और जीवत्व पारिणामिक रूप होने से पाँचवाँ भंग केवलियों में घटित होता है। इन तीन भावों के अतिरिक्त अन्य भाव केवली में नहीं हैं। क्योंकि उपशम मोहनीयकर्म का होता है और वे मोहनीयकर्म का सर्वथा क्षय कर चुके हैं तथा केवलियों का ज्ञान इन्द्रियातीत-अतीतिन्द्रय होने से उनमें क्षायोपशमिकभाव भी नहीं है।

Elaboration—Of these ten coincidental states only fifth and sixth are applicable to human beings. The sixth *Sannipatik-bhaava* (mixed state) produced by combination of *audayik-bhaava, kshayopashamik-bhaava,* and *parinamik-bhaava* is applicable to normal human beings. The fifth one produced by

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

combination of *audayik-bhaava* (birth as human being), *kshayik-bhaava* (extinction of *karmas* resulting in right knowledge, perception, and conduct) and *parinamik-bhaava* (pure soul) is applicable only to *Kevalis* (omniscients). Besides these three states other states are not applicable to a Kevali. This is because *Upasham* (pacification) is of *Mohaniya* (deluding) *karmas* which have already been made extinct by a *Kevali.* Also, as the knowledge of a *Kevali* is para-sensual the *kshayopashamik* state is also not applicable to him.

चतुःसंयोगज सान्निपातिकभाव

२५६. तत्थ णं जे ते पंच चउक्कसंयोगा ते णं इमे–(१) अत्थि णामे उदइए उवसमिए खइए खओवसमनिप्पन्ने, (२) अत्थि णामे उदइए उवसमिए खइए पारिणामियनिप्पन्ने, (३) अत्थि णामे उदइए उवसमिए खओवसमिए पारिणामियनिप्पन्ने, (४) अत्थि णामे उदइए खइए खओवसमिए पारिणामियनिप्पन्ने, (५) अत्थि णामे उवसमिए खइए खओवसमिए पारिणामियनिप्पन्ने।

२५६. चार भावों के संयोग से निष्पन्न पाँच भंगों के नाम इस प्रकार हैं– (१) औदयिक-औपशमिक-क्षायिक-क्षायोपशमिकनिष्पन्नभाव, (२) औदयिक-औपशमिक-क्षायिक-पारिणामिकनिष्पन्नभाव, (३) औदयिक-औपशमिक-क्षायोपशमिक-पारिणामिकनिष्पन्नभाव, (४) औदयिक-क्षायिक-क्षायोपशमिक-पारिणामिकनिष्पन्नभाव, (५) औपशमिक-क्षायिक-क्षायोपशमिक-पारिणामिकनिष्पन्नभाव।

SANNIPATIK-BHAAVA WITH A COMBINATION OF FOUR

256. The names of the five *bhangs* (types) of *Sannipatik-bhaava* (mixed state) produced by combination of four are as follows—

(1) produced by combination of *audayik-bhaava* (culminated state), *aupashamik-bhaava* (pacified state), *kshayik-bhaava* (extinct state), and *kshayopashamik-bhaava* (state of extinction-cum-pacification), (2) produced by combination of *audayik-bhaava, aupashamik-bhaava, kshayik-bhaava,* and *parinamik-bhaava*, (3) produced by

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

combination of *audayik-bhaava, aupashamik-bhaava, kshayopashamik-bhaava,* and *parinamik-bhaava,* (4) produced by combination of *audayik-bhaava, kshayik-bhaava, kshayopashamik-bhaava,* and *parinamik-bhaava,* (5) produced by combination of *aupashamik-bhaava, kshayik-bhaava, kshayopashamik-bhaava,* and *parinamik-bhaava.*

२५७. (१) कयरे से णामे उदइए उवसमिए खइए खओवसमनिप्पन्ने ?

उदए त्ति मणू से, उवसंता कसाया, खइयं सम्मत्तं, खओवसमियाइं इंदियाइं, एस णं से णामे उदइए उवसमिए खइए खओवसमनिप्पन्ने ।

२५७. (प्रश्न १) औदयिक-औपशमिक-क्षायिक-क्षयोपशमनिष्पन्नभाव क्या है ?

(उत्तर) औदयिकभाव में मनुष्य, औपशमिकभाव में उपशांतकषाय, क्षायिकभाव में क्षायिकसम्यक्त्व और क्षायोपशमिकभाव में इन्द्रियाँ, यह औदयिक-औपशमिक-क्षायिक-क्षयोपशमभावनिष्पन्न का स्वरूप है।

257. (Question 1) Which is this state produced by combination of *audayik-bhaava* (culminated state), *aupashamik-bhaava* (pacified state), *kshayik-bhaava* (extinct state), and *kshayopashamik-bhaava* (state of extinction-cum-pacification) ?

(Answer) Birth as a human being is (a consequence of) *audayik-bhaava* (culminated state), *upashant-kashaya* (pacified passions) is (a consequence of) *aupashamik-bhaava* (pacified state), *kshayik samyaktva* is (a consequence of) *kshayik-bhaava* (extinct state), and sense organs are (a consequence of) *kshayopashamik-bhaava* (state of extinction-cum-pacification). This is *audayik-aupashamik-kshayik-kshayopashamik-bhaava* (culminated, pacified, extinct and extinct-cum-pacified state).

(२) कयरे से नामे उदइए उवसमिए खइए पारिणामियनिप्पन्ने ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उदए त्ति मणूसे, उवसंता कसाया, खइयं सम्मत्तं, पारिणामिए जीवे, एस णं से णामे उदइए उवसमिए खइए पारिणामियनिप्पन्ने।

२५७. (प्रश्न २) औदयिक-औपशमिक-क्षायिक-पारिणामिकभावनिष्पन्न भाव क्या है?

(उत्तर) औदयिकभाव में मनुष्यगति, औपशमिकभाव में उपशांतकषाय, क्षायिकभाव में क्षायिकसम्यक्त्व और पारिणामिकभाव में जीवत्व, यह औदयिक-औपशमिक-क्षायिक-पारिणामिकभावनिष्पन्न है।

257. (Question 2) Which is this state produced by combination of *audayik-bhaava, aupashamik-bhaava, kshayik-bhaava*, and *parinamik-bhaava* ?

(Answer) Birth as a human being is (a consequence of) *audayik-bhaava, upashant-kashaya* (pacified passions) is (a consequence of) *aupashamik-bhaava, kshayik samyaktva* is (a consequence of) *kshayik-bhaava,* and soul is (a consequence of) *parinamik-bhaava.* This is *audayik-aupashamik-kshayik-parinamik-bhaava* (culminated, pacified, extinct and transformed state).

(३) कयरे से णामे उदइए उवसमिए खओवसमिए पारिणामियनिप्पन्ने ?

उदए त्ति मणूसे उवसंता कसाया खओवसमियाइं इंदियाइं पारिणामिए जीवे, एस णं से णामे उदइए उवसमिए खओवसमिए पारिणामियनिप्पन्ने।

२५७. (प्रश्न ३) औदयिक-औपशमिक-क्षायोपशमिक-पारिणामिकनिष्पन्नभाव क्या है?

(उत्तर) औदयिकभाव में मनुष्यगति, औपशमिकभाव में उपशांतकषाय, क्षायोपशमिकभाव में इन्द्रियाँ और पारिणामिकभाव में जीवत्व, इस प्रकार से औदयिक-औपशमिक-क्षायोपशमिक-पारिणामिकभावनिष्पन्न का स्वरूप है।

257. (Question 3) Which is this state produced by combination of *audayik-bhaava, aupashamik-bhaava, kshayopashamik-bhaava, and parinamik-bhaava* ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(Answer) Birth as a human being is (a consequence of) *audayik-bhaava, upashant-kashaya* (pacified passions) is (a consequence of) *aupashamik-bhaava,* sense organs are (a consequence of) *kshayopashamik-bhaava,* and soul is (a consequence of) *parinamik-bhaava.* This is *audayik-aupashamik-kshayopashamik-parinamik-bhaava* (culminated, pacified, extinct-cum-pacified and transformed state).

(४) कयरे से णामे उदइए खइए खओवसमिए पारिणामियनिप्पन्ने ?

उदइ त्ति मणूसे खइयं सम्मत्तं खओवसमियाइं इंदियाइं पारिणामिए जीवे, एस णं से नामे उदइए खइए खओवसमिए पारिणामियनिप्पन्ने।

२५७. (प्रश्न ४) औदयिक-क्षायिक-क्षायोपशमिक-पारिणामिकभावनिष्पन्ननाम क्या हैं ?

(उत्तर) औदयिकभाव में मनुष्यगति, क्षायिकभाव में क्षायिकसम्यक्त्व, क्षायोपशमिकभाव में इन्द्रियाँ और पारिणामिकभाव में जीवत्व, यह औदयिक-क्षायिक-क्षायोपशमिक-पारिणामिकभावनिष्पन्न नाम है।

257. (Question 4) Which is this state produced by combination of *audayik-bhaava, kshayik-bhaava, kshayopashamik-bhaava,* and *parinamik-bhaava* ?

(Answer) Birth as a human being is (a consequence of) *audayik-bhaava, kshayik samyaktva* is (a consequence of) *kshayik-bhaava,* sense organs are (a consequence of) *kshayopashamik-bhaava*, and soul is (a consequence of) *parinamik-bhaava.* This is *audayik-kshayik-kshayopashamik-parinamik-bhaava* (culminated, extinct, extinct-cum-pacified and transformed state).

(५) कयरे से णामे उवसमिए खइए खओवसमिए पारिणामियनिप्पन्ने ?

उवसंता कसाया खइयं सम्मत्तं खओवसमियाइं इंदियाइं पारिणामिए जीवे, एस णं से नामे उवसमिए खइए खओवसमिए पारिणामियनिप्पन्ने।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२५७. (प्रश्न ५) औपशमिक-क्षायिक-क्षायोपशमिक-पारिणामिकनिष्पन्न भाव क्या है ?

(उत्तर) औपशमिकभाव में उपशांतकषाय, क्षायिकभाव मे क्षायिक-सम्यक्त्व, क्षायोपशमिकभाव में इन्द्रियाँ और पारिणामिकभाव में जीवत्व, यह औपशमिक-क्षायिक-क्षायोपशमिक-पारिणामिकनिष्पन्न भाव का स्वरूप है।

257. (Question 5) Which is this state produced by combination of *aupashamik-bhaava, kshayik-bhaava, kshayopashamik-bhaava*, and *parinamik-bhaava.*

(Answer) *Upashant-kashaya* (pacified passions) is (a consequence of) *aupashamik-bhaava, kshayik samyaktva* is (a consequence of) *kshayik-bhaava,* sense organs are (a consequence of) *kshayopashamik-bhaava,* and soul is (a consequence of) *parinamik-bhaava*. This is *aupashamik-kshayik-kshayopashamik-parinamik-bhaava* (pacified state, extinct, extinct-cum-pacified and transformed state).

विवेचन-इन पाँचों भंगों में से तीसरा और चौथा ये दो भंग ही जीव में घटित होते हैं, शेष तीन नहीं। घटित होने वाले भंगों का स्पष्टीकरण इस प्रकार है-

औदयिक-औपशमिक-क्षायोपशमिक और पारिणामिक इन चार भावों के संयोग से निष्पन्न तृतीय भंग नारक आदि चारों गतियों में होता है। क्योंकि गति औदयिकी है तथा प्रथम सम्यक्त्व के लाभकाल में उपशमभाव होने से और मनुष्यगति में उपशम-श्रेणी में भी औपशमिक सम्यक्त्व होने से औपशमिकभाव है। इन्द्रियाँ क्षायोपशमिकभाव और जीवत्व पारिणामिकभाव रूप हैं। इस प्रकार यह तृतीय भंग सभी गतियों में पाया जाता है।

चौथा भंग भी तृतीय भंग की तरह नरकादि चारों गतियों में सम्भव है। परन्तु विशेषता यह है कि तृतीय उपशमसम्यक्त्व के स्थान पर यहाँ क्षायिक सम्यक्त्व समझना चाहिए।

Elaboration—Of these five *bhangs* (types) only third and fourth are applicable to beings, remaining three are not. The applicable *bhangs* (types) are explained as follows—

The third type produced by combination of *audayik-bhaava, aupashamik-bhaava, kshayopashamik-bhaava*, and *parinamik-bhaava* is applicable to all the four realms including hell. This is

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

because birth in any realm is the sign of *audayik-bhaava*, the first step in the direction of righteousness in any realm and the progressive pacification in human realm are signs of *aupashamik-bhaava*, sense organs are signs of *kshayopashamik-bhaava*, and soul is the sign of *parinamik-bhaava*. Thus this third type is applicable to all beings in all realms.

In the same way the fourth type is also applicable to all beings in all realms, the only difference being that instead of *aupashamik-bhaava* it is *kshayik-bhaava*.

पंचसंयोगी भाव

२५८. तत्थ णं जे से एक्के पंचकसंजोगे से णं इमे–अत्थि नामे उदइए उवसमिए खइए खओवसमिए पारिणामियनिप्पन्ने।

२५८. पंचसंयोगज भाव का एक भंग इस प्रकार है–औदयिक–औपशमिक–क्षायिक–क्षायोपशमिक–पारिणामिकनिष्पन्नभाव।

SANNIPATIK-BHAAVA WITH A COMBINATION OF FIVE

258. The name of the single *bhang* (type) of *Sannipatik-bhaava* (mixed state) produced by combination of five is as follows—

(1) Produced by combination of *audayik-bhaava* (culminated state), *aupashamik-bhaava* (pacified state), *kshayik-bhaava* (extinct state), *kshayopashamik-bhaava* (state of extinction-cum-pacification), and *parinamik-bhaava* (transformed state).

२५९. कयरे से नामे उदइए उवसमिए खइए खओवसमिए पारिणामियनिप्पन्ने ?

उदए त्ति मणूसे उवसंता कसाया खइयं सम्मत्तं खओवसमियाइं इंदियाइं पारिणामिए जीवे, एस णं से णामे उदइए उवसमिए खइए खओवसमिए पारिणामियनिप्पन्ने। से तं सन्निवाइए। से तं छण्णामे।

२५९. **(प्रश्न)** औदयिक-औपशमिक-क्षायिक-क्षायोपशमिक-पारिणामिकनिष्पन्नभाव कौन-सा है ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(उत्तर) औदयिकभाव में मनुष्यगति, औपशमिकभाव में उपशांतकषाय, क्षायिकभाव में क्षायिकसम्यक्त्व, क्षायोपशमिकभाव में इन्द्रियाँ और पारिणामिकभाव में जीवत्व, यह औदयिक-औपशमिक-क्षायिक-क्षायोपशमिक-पारिणामिकभावनिष्पन्न सान्निपातिक भाव का स्वरूप है।

259. (Question) Which is this state produced by combination of *audayik-bhaava, aupashamik-bhaava, kshayik-bhaava, kshayopashamik-bhaava,* and *parinamik-bhaava.*

(Answer) Birth as a human being is (a consequence of) *audayik-bhaava, upashant-kashaya* (pacified passions) is (a consequence of) *aupashamik-bhaava, kshayik samyaktva* is (a consequence of) *kshayik-bhaava,* sense organs are (a consequence of) *kshayopashamik-bhaava,* and soul is (a consequence of) *parinamik-bhaava.* This is *audayik-aupashamik-kshayik-kshayopashamik-parinamik-bhaava* (culminated, extinct, pacified, extinct-cum-pacified and transformed state).

This concludes the description of *Sannipatik-bhaava* (mixed state). This also concludes the description of *Chhaha nama* (Six-named).

विवेचन–औदयिक आदि पाँच मूल भावों के संयोग से निष्पन्न सान्निपातिकभाव के द्विकसंयोगी दस, त्रिकसंयोगी दस, चतुष्कसंयोगी पाँच और पंचसंयोगी एक–कुल छब्बीस भंगों में से जीवों में सिर्फ द्विकसंयोगी एक, त्रिकसंयोगी दो, चतुष्क संयोगी दो और पंचसंयोगी एक, इस प्रकार छह भंग पाये जाते हैं। शेष भंग प्ररूपणामात्र के लिए समझना चाहिए।

Elaboration—The total number of *Sannipatik-bhaavas* (mixed states) produced by combination of five basic states in various combinations of two (10), three (10), four (5), and five (1), are twenty six. Out of these only six are applicable to beings—one out of the combinations of two, two each out of the combinations of three and four, and the only one with combination of five. All the remaining types are purely academic.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्वर-मण्डल प्रकरण
THE DISCUSSION ON SVAR

सप्तनाम निरूपण

२६०. (१) से किं तं सत्तनामे ?

सत्तनामे सत्त सरा पण्णत्ता। तं जहा–

(१) सज्जे, (२) रिसभे, (३) गंधारे, (४) मज्झिमे, (५) पंचमे सरे।

(६) धेवए चेव, (७) णेसाए, सरा सत्त वियाहिया॥२५॥

२६०. (प्रश्न १) सप्तनाम क्या है ?

(उत्तर) सप्तनाम सात प्रकार के स्वर रूप है। स्वरों के नाम इस प्रकार हैं– (१) षड्ज, (२) ऋषभ, (३) गांधार, (४) मध्यम, (५) पंचम, (६) धैवत, और (७) निषाद; ये सात स्वर कहे गये हैं॥२५॥

SAAT NAMA (SEVEN-NAMED)

260. (Question 1) What is this *Saat nama* (Seven-named)?

(Answer) *Saat nama* (Seven-named) is the seven types of *Svar* (musical notes). There names are—(1) *Shadj*, (2) *Rishabh*, (3) *Gandhar*, (4) *Madhyam*, (5) *Pancham*, (6) *Dhaivat*, and (7) *Nishad*. These are said to be the seven *svars* (musical notes). (25)

विवेचन–सप्तनाम के प्रकरण में यहाँ सात स्वरों का वर्णन किया है। स्वर के अनेक अर्थों में यहाँ पर 'ध्वनि' या 'नाद' अर्थ लिया गया है। ध्वनि संगीत का विषय है। संगीत शास्त्र के अनुसार–जिसमें मर्यादित कम्पन हो, आरोह, अवरोह युक्त हो, जो स्निग्ध हो, श्रुति मधुर हो, उच्चारण के बाद जिसमें गुंजन (रणन) हो, वह स्वर है। 'स्वर' के षड्ज आदि सात भेद हैं। संगीत शास्त्र में **सा रे ग म प ध नी** इनके संकेत हैं। अंग्रेजी में इन्हें क्रमशः Do, Re, Mi, Fa, Soh, La, Si कहते हैं इनके संकेत हैं, C. D. S. F. G. A. B.। सात स्वरों की २२ श्रुतियाँ–छोटी–छोटी सुरीली ध्वनियाँ भी है। सात स्वरों के लक्षण इस प्रकार हैं–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(१) **षड्ज**–कण्ठ,वक्षस्थल, तालु, जिह्वा, दन्त और नासिका इन छह स्थानों के संयोग से उत्पन्न होने वाला स्वर 'षड्ज' कहा जाता है।

(२) **ऋषभ**–ऋषभ का अर्थ बैल है। नाभि से उठकर और कण्ठ एवं शिर से टकराकर बैल (ऋषभ) के समान गर्जना रूप नाद या ध्वनि के समान स्वर।

(३) **गांधार**–नाभि से समुत्थित एवं कंठ व हृदय से टकराकर तथा नाना प्रकार की गंधों का वाहक स्वर गांधार कहलाता है।

(४) **मध्यम**–शरीर के मध्यभाग–नाभिप्रदेश में उत्पन्न हुई और उरस् एवं हृदय से टकराकर पुनः नाभिस्थान में आई हुई वायु द्वारा जो उच्चनाद होता है, वह 'मध्यम' स्वर है।

(५) **पंचम**–जिस स्वर में नाभिस्थान से उत्पन्न वायु वक्षस्थल, हृदय, कंठ और मस्तक में व्याप्त होकर स्वर रूप में परिणत हो, उसे पंचम स्वर कहते हैं।

(६) **धैवत**–पूर्वोक्त सभी स्वरों का अनुसंधान करने वाला उनके पीछे दौड़ने वाला स्वर धैवत कहलाता है।

(७) **निषाद**–सभी स्वरों का अभिभव/पराभव करने वाला स्वर। यह तेजस्वी होने के कारण अन्य स्वरों को दबा देता है। आदित्य (सूर्य) इसका स्वामी है।

ये सातों स्वर जीव और अजीव दोनों पर आश्रित हैं। अर्थात् जीव और अजीव के माध्यम से इनका प्रादुर्भाव हो सकता है।

Elaboration—In this discussion on *Saat Nama* (seven named) seven *svar* (musical notes) are described. Of many meanings of the word *svar* here *dhvani* (sound) or *naad* (resonating sound) have been chosen. Sound comes under the study of music. According to musicology the definition of *svar* (musical note) is—that which has regulated vibrations, ascending and descending scale (*aaroh* and *avaroh*), softness, melody, and resonance is called *svar* (musical note). Their are seven kinds of *svars* (musical notes) including *Shadj*. In Indian music they are represented by seven symbols—**Sa, Re, Ga, Ma, Pa, Dha,** and **Ni**. In western music these symbols are Do (C), Re (D), Me (S), Fa (F), Soh (G), La (A), Si (B). These seven *svars* (musical notes) have twenty two *shruti* (short melodious sounds). The seven *svars* (musical notes) are defined as follows—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(1) Shadj—This note is produced by the combined activity of six parts of the human body, *i.e.* nose, throat, chest, palate, tongue, and teeth.

(2) Rishabh—*Rishabh* means bull. This note resembles the roaring of a bull and is produced by the wind rising from the navel and striking the upper part of the throat.

(3) Gandhar—This note is so called because it is the carrier of various smells. It is produced by wind which rises from the navel and strikes at the heart and the throat.

(4) Madhyam—A loud note rising from the navel striking at the chest and heart and reflecting back to the navel.

(5) Pancham—This note is produced by the air rising from the navel and producing sound vibrating the chest, heart, throat and head. As five parts of the body are involved it is called *pancham.*

(6) Dhaivat—This note follows or chases all other notes.

(7) Nishad—This note envelops all other notes. As it is sharpest and most vibrant it subdues all other notes. Its guardian is said to be the sun.

These seven notes are based on *jiva* (living) and *ajiva* (non-living). In other words these can be produced by living as well as non-living things.

सात स्वरों के स्वरस्थान

(२) एएसि णं सत्तण्हं सराणं सत्त सरट्ठाणा पण्णत्ता। तं जहा—

(१) सज्जं च अग्गजीहाए, (२) उरेण रिसहं सरं।

(३) कंठुग्गएण गंधारं, (४) मज्झजीहाए मज्झिमं॥२६॥

(५) नासाए पंचमं बूया, (६) दंतोट्ठेण धेवतं।

(७) भमुहक्खेवेण णेसायं, सरट्ठाणा वियाहिया॥२७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(२६०–२) इन सात स्वरों के सात स्वर–(उच्चारण)स्थान कहे गये हैं। वे स्थान इस प्रकार हैं–

(१) जिह्वा के अग्रभाग से षड्जस्वर का उच्चारण होता है।

(२) वक्षस्थल से ऋषभस्वर का

(३) कण्ठ से गांधारस्वर का

(४) जिह्वा के मध्य भाग से मध्यम स्वर का

(५) नासिका से पंचमस्वर का

(६) दाँत और ओठ के संयोग से धैवतस्वर का तथा

(७) मूर्धा (भ्रकुटि तने हुए शिर) से निषाद स्वर का उच्चारण किया जाता है। ये सातों स्वरों के मूल स्थान बतलाये गये हैं ॥२६॥२७॥

PLACES OF ORIGIN OF SEVEN SVARS

260. (2) There are said to be seven *svars* (places of origin) of these seven *svars* (musical notes). They are as follows—

(1) *Shadj* is produced from the tip of the tongue.

(2) *Rishabh* is produced from the chest.

(3) *Gandhar* is produced from the throat.

(4) *Madhyam* is produced from the middle of the tongue.

(5) *Pancham* is produced from the nose.

(6) *Dhaivat* is produced from the teeth and lips.

(7) *Nishad* is produced from raised eyebrows (eyebrows are raised when this note is produced).

This concludes the description of places of origin of *svars* (musical notes).

विवेचन–पिछले विवेचन में संगीत शास्त्र के अनुसार सातों स्वरों के भिन्न-भिन्न स्थान बताये हैं। किन्तु यहाँ पर मूल सूत्र में एक-एक स्वर का एक-एक मूल स्थान बताया है। यह सत्य है कि एक स्वर के उच्चारण में विभिन्न अवयवों पर जोर पड़ता है, किन्तु प्रत्येक स्वर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

के उच्चारण में मुख्य रूप में जिस स्थान की भूमिका रहती है-यहाँ उसी अपेक्षा से उस एक-एक स्थान का उल्लेख किया गया है। किसी-किसी प्रति में निषाद स्वर का उत्पत्ति स्थान **मुद्धाणेणय** णेसा-पाठ द्वारा मूर्धा, मस्तक बताया है। व्यावहारिक दृष्टि से यह पाठ अधिक संगत प्रतीत होता है।

(संगीत सम्बन्धी विस्तृत विवेचन देखें श्री ज्ञानमुनि कृत हिन्दी टीका, भाग २ पृ. २३८-४२ तक)

Elaboration—Earlier we discussed various places in the body connected with seven musical notes. Here a single place of origin of each *svar* (musical notes) is stated. It is true that to produce a particular note various parts of the body are activated but one particular place plays a dominant role in producing a specific note. Here those places have been listed. In some alternative texts the source of *nishad svar* (musical note) is shown as head. Practically speaking the text used here appears to be more logical.

(for more details about music refer to Hindi Tika of *Anuyogadvara Sutra* by Shri Jnana Muni, part-2, p. 238-42)

जीवनिश्रित सप्त स्वर

(३) सत्त सरा जीवणिस्सिया पण्णत्ता। तं जहा-

(१) सज्जं रवइ मयूरो, (२) कुक्कुडो रिसभं रसं।

(३) हंसो रवइ गंधारं, (४) मज्झिमं तु गवेलगा॥२८॥

(५) अह कुसुमसंभवे काले कोइला पंचमं सरं।

(६) छट्ठं च सारसा कुंचा, (७) णेसायं सत्तमं गओ॥२९॥

(२६०-३) जीवनिश्रित-जीवों द्वारा उच्चारित होने वाले सातस्वरों का स्वरूप इस प्रकार है-

(१) मयूर षड्जस्वर में बोलता है।

(२) कुक्कुट (मुर्गा) ऋषभस्वर में

(३) हंस गांधारस्वर में

(४) गवेलक (भेड़-मेमना) मध्यमस्वर में

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सात स्वरों के उत्पत्ति स्थान

THE STARTING PLACE OF SEVEN SOUNDS (SVAR)

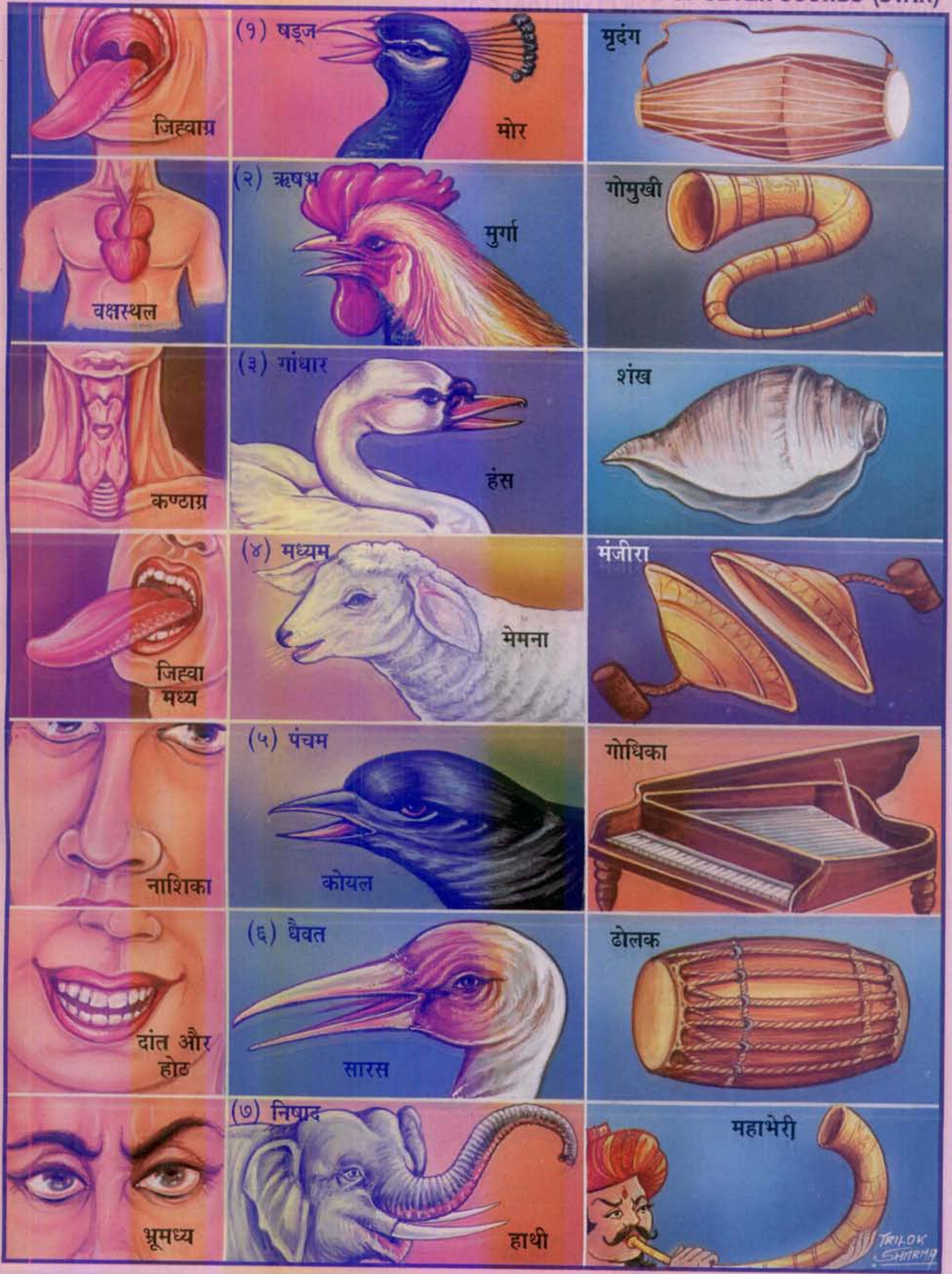

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्र परिचय १७

Illustration No. 17

सप्त स्वरों के उत्पत्ति स्थान

सभी स्वरों का उत्पत्ति स्थान नाभि-प्रदेश हैं। वहाँ से उठकर जिस स्थान पर स्वर में कुछ भिन्न प्रकार की ध्वनि, गुंजन आदि विशेषता उत्पन्न होती है, उसे स्वरों का उत्पत्ति स्थान माना है। जैसे–

(१) **षड्ज स्वर**–यह जीभ के अगले भाग से अर्थात् कण्ठ के पास जहाँ से जिह्वा का प्रारम्भ होता है वहाँ से निःसृत होता है।

(२) **ऋषभ स्वर**–वक्षस्थल (छाती) से, (३) **गांधार स्वर**–कण्ठ के अग्रभाग से, (४) **मध्यमस्वर**–जिह्वा के मध्य भाग से, (५) **पंचम स्वर**–नाशिका से, (६) **धैवत स्वर**–दांत और ओष्ट (होठ) से, (७) **निषाद स्वर**–भोंह को ऊपर उठाने से निकलता है।

जीव–अजीव निश्रित

	स्वर	जीव	अजीव		स्वर	जीव	अजीव
१.	षड्ज	मोर	मृदंग	२.	ऋषभ	मुर्गा	गोमुखी
३.	गांधार	हंस	शंख	४.	मध्यम	मेमना	मंजीरा
५.	पंचम	कोकिल	गोधिका	६.	धैवत	सारस	ढोलक
७.	निषाद	हाथी	महाभेरी				

–सूत्र २६०

PLACES OF ORIGIN OF SEVEN SVARS

Athough all the *svars* (musical notes) originate at the navel in the human body, after rising from there they get specific tone, pitch and other qualities by vibrating at other parts of the body. Therefore these apparent sources of *svar* are said to be the places of origin. They are as follows—

(1) *Shadj* is produced from the beginning of the tongue (at the throat). (2) *Rishabh* is produced from the chest. (3) *Gandhar* is produced from the top of the throat. (4) *Madhyam* is produced from the middle of the tongue. (5) *Pancham* is produced from the nose. (6) *Dhaivat* is produced from the teeth and lips. (7) *Nishad* is produced from raised eyebrows.

SVARS (MUSICAL NOTES) ASSOCIATED WITH BEINGS AND NON-BEINGS

S. No.	Svar	Jiva	Ajiva
1.	*Shadj svar*	Pea-cock	Mridang
2.	*Rishabh svar*	Cock	Gomukhi
3.	*Gandhar svar*	Swan	Conch-shell
4.	*Madhyam svar*	Lamb	Manjira
5.	*Pancham svar*	Cuckoo	Godhika
6.	*Dhaivat svar*	Cranes	Dholak
7.	*Nishad svar*	Elephant	Mahabheri

—*Sutra : 260*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(५) पुष्पोत्पत्तिकाल (वसन्त ऋतु में) कोयल पंचमस्वर में

(६) सारस और क्रौंच पक्षी धैवतस्वर में, तथा

(७) हाथी निषाद स्वर में बोलता है॥२८॥२९॥

SVARS ASSOCIATED WITH BEINGS

260. (3) The seven *svars* (musical notes) associated with beings are as follows—

(1) Pea-cock produces *Shadj svar* (musical note).

(2) Cock produces *Rishabh svar* (musical note).

(3) Swan produces *Gandhar svar* (musical note).

(4) Sheep or ram produces *Madhyam svar* (musical note).

(5) Cuckoo produces *Pancham svar* (musical note) when flowers blossom (in the spring season).

(6) Cranes and curlews (*kraunch*) produce *Dhaivat svar* (musical note).

(7) Elephant produces *Nishad svar* (musical note).

अजीवनिश्रित सप्तस्वर

(४) सत्त सरा अजीवणिस्सिया पण्णत्ता। तं जहा–

(१) सज्जं रवइ मुयंगो, (२) गोमुही रिसहं सरं।

(३) संखो रवइ गंधारं, (४) मज्झिमं पुण झल्लरी॥३०॥

(५) चउचलणपतिट्ठाणा गोहिया पंचमं सरं।

(६) आडंबरो धेवइयं, (७) महाभेरी य सत्तमं॥३१॥

(२६०-४) अजीवनिश्रित सप्तस्वर इस प्रकार हैं–

(१) मृदंग (दोनों ओर चमड़े से मढ़ा हुआ) षड्जस्वर निकालता है।

(२) गोमुखी (तुरही-नरसिंघा) नामक वाद्य) से ऋषभस्वर निकलता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(३) शंख से गांधारस्वर निकलता है।

(४) झालर (झाँझ) से मध्यमस्वर निकलता है।

(५) चार चरणों पर स्थित (चार पायों पर रखी हुई) गोधिका से पंचमस्वर निकलता है।

(६) आडम्बर (नगाड़ा–ढोल) से धैवतस्वर निकलता है।

(७) महाभेरी (विशाल आकार का नगाड़ा) से निषाद स्वर निकलता है ॥३०–३१॥

SVARS ASSOCIATED WITH NON-BEINGS

260. (4) The seven *svars* (musical notes) associated with non-beings are as follows—

(1) *Mridang* produces *Shadj svar* (musical note). (*Mridang* is a type of Indian drum; a hollow barrel like musical instrument covered on both sides with suitable skin or membrane).

(2) *Gomukhi* (*Turuhi* or *Narasingha*; trumpet like musical instrument) produces *Rishabh svar* (musical note).

(3) Conch-shell produces *Gandhar svar* (musical note).

(4) *Jhalar* (*Jhanjh*; Cymbal like musical instrument) produces *Madhyam svar* (musical note). (30)

(5) *Godhika*, fixed on four legs, (a type of musical instrument) produces *Pancham svar* (musical note).

(6) *Adambar* (*Nagara; Dhol;* a percussion instrument like big kettledrum) produces *Dhaivat svar* (musical note).

(7) *Mahabheri* (a huge drum) produces *Nishad svar* (musical note). (31)

विवेचन–सातों स्वरों की उत्पत्ति में विभिन्न पशु–पक्षियों के उदाहरण देने से संगीत शास्त्रीय विद्वानों की यह धारणा पुष्ट होती है कि मनुष्य की अपेक्षा पशु–पक्षी की ध्वनि अधिक संगीतमय होती है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनुसंधान करने वालों का यह मत है कि पशु-पक्षियों में संगीत का विशेष उपयोग होता है, वे निराशा, हर्ष, भय, प्रेम, आनन्द और क्रोध आदि भावों को प्रकट करते हुए विभिन्न स्वरों में बोलते पाये जाते हैं।

कुछ विद्वानों का यह भी मत है कि मनुष्य ने संगीत कला पशु-पक्षियों से ग्रहण की है। (देखें, ध्वनि और संगीत पृ. १४३)

Elaboration—The examples of animals given as sources of seven musical notes affirm the theory given by scholars that sounds produced by animals are more musical as compared to that produced by humans. Researchers opine that animals have greater use of musical sounds. In their effort to convey feelings of despair, joy, fear, love, ecstasy, anger, etc. they are found to use a variety of notes and tones. Some scholars even go to the extant that man has learned music from animals and birds. (*Dhvani aur Sangeet*, p. 143)

समस्वरों के स्वरलक्षण तथा फल

(५) एएसि णं सत्तण्हं सराणं सत्त सरलक्खणा पण्णत्ता। तं जहा—

(१) सज्जेण लहइ वित्तिं कयं च न विणस्सई।

गावो पुत्ता य मित्ता य नारीणं होति वल्लहो ॥३२॥

(२) रिसहेणं तु एसज्जं सेणावच्चं धणाणि य।

वत्थ गंधमलंकारं इत्थीओ सयणाणि य ॥३३॥

(३) गंधारे गीतजुत्तिण्णा वज्जवित्ती कलाहिया।

हवंति कइणो पण्णा जे अण्णे सत्थपारगा ॥३४॥

(४) मज्झिमसरमंता उ हवंति सुहजीविणो।

खायई पियई देई मज्झिमस्सरमस्सिओ ॥३५॥

(५) पंचमस्सरमंता उ हवंती पुहवीपती।

सूरा संगहकत्तारो अणेग णरणायगा ॥३६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(६) धेवयस्सरमंता उ हवंति कलहप्पिया।

साउणिया वग्गुरिया सोयरिया मच्छबंधा य॥३७॥

(७) चंडाला मुट्ठिया मेता, जे यऽण्णे पावकारिणो।

गोघातगा य चोरा य नेसातं सरमस्सिता॥३८॥

(२६०-५) इन सात स्वरों के (फल प्राप्ति के अनुसार) सात स्वर लक्षण कहे गये हैं। जैसे-

(१) षड्जस्वर वाला मनुष्य वृत्ति-आजीविका प्राप्त करता है। उसका प्रयत्न निष्फल नहीं जाता है। उसे गोधन, पुत्र-पौत्रादि और सन्मित्रों का संयोग मिलता है। वह स्त्रियों का प्रिय होता है॥३२॥

(२) ऋषभस्वर वाला मनुष्य ऐश्वर्यशाली होता है। सेनापतित्व, धन-धान्य, वस्त्र, गंध-सुगंधित पदार्थ, आभूषण-अलंकार, स्त्री, शयनासन आदि भोगसाधनों को प्राप्त करता है॥३३॥

(३) गांधारस्वर से गायन करने वाला श्रेष्ठ आजीविका प्राप्त करता है। वादित्रवृत्ति-गाने का शौकीन होता है। कलाविदों में श्रेष्ठ-शिरोमणि माना जाता है। कवि अथवा कर्त्तव्यशील होता है। प्राज्ञ-बुद्धिमान्-चतुर तथा अनेक शास्त्रों में पारंगत होता है॥३४॥

(४) मध्यमस्वर वाले सुखजीवी होते हैं। रुचि के अनुरूप खाते-पीते और सुख से जीते हैं तथा दूसरों को भी खिलाते-पिलाते एवं दान देते हैं॥३५॥

(५) पंचमस्वर वाला व्यक्ति राजा, शूरवीर, संग्राहक और अनेक मनुष्यों का नायक होता है॥३६॥

(६) धैवतस्वर वाला पुरुष कलहप्रिय, शाकुनिक (पक्षियों को मारने वाला-चिड़ीमार), वागुरिक (शिकारी-हिरण आदि पकड़ने-फँसाने वाला), शौकरिक (सूअरों का शिकार करने वाला) और मत्स्यबंधक (मच्छीमार) होता है॥३७॥

(७) निषादस्वर वाला पुरुष चांडाल, वधिक, मुक्केबाज, गोघातक, चोर और इसी प्रकार के दूसरे-दूसरे पाप करने वाला होता है॥३८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

CHARACTERISTICS AND RESULTS OF SEVEN SVARS

260. (5) There are said to be seven characteristics (based on the results or fruits) of these seven *svars* (musical notes). They are as follows—

(1) A person with *Shadj svar* (musical note) easily gains his livelihood. His efforts are never wasted. He is endowed with cattle, sons and grandsons, etc., and enjoys company of good friends. He is popular among women. (32)

(2) A person with *Rishabh svar* (musical note) is endowed with majesty and splendour. He gains the status of a commander (or other such high position) and means of pleasure and comfort including wealth and grains, apparels, perfumes, ornaments, woman, furniture, etc. (33)

(3) A person with *Gandhar svar* (musical note) is endowed with affluence. He is fond of performing musical recitals and gets recognition as accomplished musician. He is an upright person or a poet. He is wise, clever, and scholarly. (34)

(4) A person with *Madhyam svar* (musical note) is a happy-go-lucky man. He eats, drinks, and lives according to his taste and also offers such facilities to others. He is an altruistic person. (35)

(5) A person with *Pancham svar* (musical note) is a king (lord of the land), a brave individual, an acquirer and collector of things, and a leader of men. (36)

(6) A person with *Dhaivat svar* (musical note) is quarrelsome, hunter of birds, killer and catcher of animals, and a killer of pigs and fish. (37)

(7) A person with *Nishad svar* (musical note) is *chandal* (keeper of cremation ground), butcher, boxer, cow-slaughterer, thief and indulges in other such sinful and despicable activities. (38)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(६) एतेसि णं सत्तण्हं सराणं तओ गामा पण्णत्ता। तं जहा–(१) सज्जग्गामे, (२) मज्झिमग्गामे, (३) गंधारग्गामे।

(२६०–६) इन सात स्वरों के तीन ग्राम कहे गये हैं। वे इस प्रकार–

(१) षड्ज ग्राम, (२) मध्यम ग्राम, (३) गांधार ग्राम।

GRAM AND MURCCHANA OF SEVEN SVARS

260. (6) There are said to be three *grams* (scales) of these seven *svars* (musical notes). They are—

(1) *Shadj gram*, (2) *Madhyam gram*, (3) *Gandhar gram*.

(७) सज्जगामस्स णं सत्त मुच्छणाओ पण्णत्ताओ। तं जहा–

मंगी कोरव्वीया हरी य रयणी य सारकंता य।

छट्ठी य सारसी नाम सुद्धसज्जा य सत्तमा॥३९॥

(२६०–७) षड्ज ग्राम की सात मूर्च्छनाएँ कही गई हैं। उनके नाम हैं–

(१) मंगी, (२) कौरवीया, (३) हरित्, (४) रजनी, (५) सारकान्ता, (६) सारसी और (७) शुद्धषड्जा॥३९॥

260. (7) The *Shadj gram* (scale) has seven *Murcchanas* (modulations). They are—

(1) *Mangi*, (2) *Kauraviya*, (3) *Harit*, (4) *Rajani*, (5) *Sarakanta*, (6) *Sarasi*, and (7) *Shuddha Shadja*. (39)

(८) मज्झिमगामस्स णं सत्त मुच्छणाओ पण्णत्ताओ। तं जहा–

उत्तरमंदा रयणी उत्तरा उत्तरायता

अस्सोकंता य सोवीरा अभीरू भवति सत्तमा॥४०॥

(२६०–८) मध्यम ग्राम की सात मूर्च्छनाएँ कही हैं। जैसे–

(१) उत्तरमंदा, (२) रजनी, (३) उत्तरा, (४) उत्तरायता, (५) अश्वक्रान्ता, (६) सौवीरा और (७) अभिरुद्गता॥४०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

260. (8) The *Madhyam gram* (scale) has seven *Murcchanas* (modulations). They are—

(1) *Uttaramanda*, (2) *Rajani,* (3) *Uttara,* (4) *Uttarayata,* (5) *Ashvakranta,* (6) *Sauvira,* and (7) *Abhirudgata.* (40)

(९) गंधारगामस्स णं सत्त मुच्छणाओ पण्णत्ताओ। तं जहा–

नंदी य खुड्डिमा पूरिमा चउथी य सुद्धगंधारा।

उत्तरगंधारा वि य पंचमिया हवइ मुच्छा उ॥४१॥

सुट्‍ठुत्तरमायामा सा छट्ठा नियमसो उ णायव्वा।

अहीउत्तरायता कोडिमा य सा सत्तमी मुच्छा॥४२॥

(२६०–९) गांधार ग्राम की सात मूर्च्छनाएँ कही गई हैं। उनके नाम हैं–

(१) नन्दी, (२) क्षुद्रिका, (३) पूरिमा, (४) शुद्धगांधारा, (५) उत्तरगांधारा, (६) सुष्ठुतर–आयामा और (७) उत्तरायता–कोटिमा॥४१–४२॥

260. (9) The *Gandhar gram* (scale) has seven *Murcchanas* (modulations). They are—

(1) *Nandi,* (2) *Kshudrika,* (3) *Purima,* (4) *Shuddha Gandhara*, (5) *Uttara Gandhara*, (6) *Sushtutar-ayama*, and (7) *Uttarayata-korima*. (41-42)

विवेचन–संगीत शास्त्र के अनुसार मनुष्य का स्वर कभी बहुत ऊँचा और कभी बहुत नीचे तक जाता है। स्वरों के इस उतार–चढ़ाव को आरोह–अवरोह कहा जाता है। यह तीन प्रकार का होता है मंद–मध्य और तार। जिसे सप्तक कहते हैं। स्वरों के इस आरोह–अवरोहात्मक परिवर्तन को ही **ग्राम** कहा जाता है।

एक ग्राम से दूसरे ग्राम तक जाने में स्वरों के क्रमबद्ध उतार–चढ़ाव को **मूर्च्छना** कहा जाता है। प्रत्येक ग्राम में सात मूर्च्छनाएँ होती हैं। इस प्रकार सात स्वरों के तीन ग्राम और इक्कीस मूर्च्छनाओं का यहाँ पर उल्लेख हुआ है।

टीकाकार हेमचन्द्र का कथन है, पूर्वगत 'स्वर प्राभृत' प्रकरण में यह संगीत सम्बन्धी वर्णन था। परन्तु वह वर्तमान में उपलब्ध नहीं है। अतः भरतनाट्य आदि के अनुसार जान लेना चाहिए। *(देखें हिन्दी टीका. भाग २ पृ.२६०)*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Elaboration—According to musicology the pitch of human voice sometimes goes very high and sometimes very low. This rise and fall of the pitch is called *aaroha* or ascending scale and *avaroha* or descending scale. This is of three types *manda* (low), *madhya* (medium), and *taar* (high). This is called *saptak* (musical octave). This variation or rise and fall in the pitch of musical notes is called *gram* (scale).

The progressive shift in changing from one *gram* (scale) to the other is called *murcchana* (modulation). Each *gram* (scale) has seven *murcchanas* (modulations). Thus three *grams* (scales) and twenty one *murcchanas* (modulations) of seven *svars* (musical notes) have been mentioned here.

The commentator (*Tika*), Hemachandra, states that the Svar Prabhrit Chapter of *Purvas* (subtle canons) contained detailed description of musicology. But as it has become extinct, the relevant information should be taken from the *Natya Shastra* of Bharat. (Tika of *Anuyogadvara Sutra* by Shri Jnana Muni, part-2, p. 260)

सप्त स्वरोत्पत्ति विषयक जिज्ञासा : समाधान

(१०. अ) सत्त स्सरा कतो संभवंति? गीयस्स का हवति जोणी ?
कतिसमया ऊसासा? कति वा गीयस्स आगारा॥४३॥
सत्त सरा नाभीओ संभवंति, गीतं च रुन्नजोणीयं।
पायसमा उस्सासा, तिण्णि य गीयस्स आगारा॥४४॥
आइमिउ आरभंता, समुव्वहंता य मज्झगारम्मि।
अवसाणे य झवेंता, तिन्नि वि गीयस्स आगारा॥४५॥

२६०. (१०-अ) (प्रश्न) (१) सप्त स्वर कहाँ से-किससे उत्पन्न होते हैं, (२) गीत की योनि-जाति क्या है? (३) इसके उच्छ्वासकाल का समयप्रमाण कितना है? (४) गीत के कितने आकार (आकृतियाँ) होते हैं?

(उत्तर) (१) सातों स्वर नाभि से उत्पन्न होते हैं। (२) रुदन गीत की योनि-जाति है। (३) पादसम-जितने समय में किसी छन्द का एक चरण गाया जाता है, उतना उसका (गीत का) उच्छ्वासकाल होता है। (४) गीत के तीन आकार होते हैं-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आदि में मृदु, आरोहण करते समय मध्य में तीव्र (तार) और अन्त में मंद। इस प्रकार से गीत के तीन आकार जानने चाहिए॥४३/४४/४५॥

SOME QUERIES ABOUT SEVEN SVARS

260. (10-a) (Question) (1) Where is the origin of seven *svars* (musical notes) ? (2) What is the origin or genus of song ? (3) What is the length of breath (utterance in one breath) (of a song) ? How many are the special tones of a song) ? (43)

(Answer) (1) The place of origin of seven *svars* (musical notes) is navel. (2) Wailing is the origin or genus of song. (3) The length of breath (utterance in one breath) of a song is same as the metrical quarter of a stanza. (4) There are three special tones of a song. (44)

Soft at the beginning, raise to high at the middle, and end with low tone. Thus a song has three special tones. (45)

गीतगायक की योग्यता का निरूपण

(१०. आ) छद्दोसे अट्ठ गुणे तिण्णि य वित्ताणि दोण्णि भणितीओ।

जो णाही सो गाहिति सुसिक्खितो रंगमज्झम्मि॥४६॥

(२६०. १०—आ) संगीत के छह दोषों, आठ गुणों, तीन वृत्तों और दो भणितियाँ—गीत की भाषा को यथावत् जानने वाला सुशिक्षित—गायनकलाकुशल व्यक्ति रंगमंच पर गाता है॥४६॥

ATTRIBUTES OF A SINGER

260. (10-b) There are six faults, eight merits, three meters, and two languages (in singing a song). A well trained performer who knows these can give a stage performance. (46)

गीत के छह दोष

(१०. इ) भीयं दुयमुप्पिच्छं उत्तालं च कमसो मुणेयव्वं।

काकस्सरमणुनासं छ दोसा होंति गीयस्स॥ ४७ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(२६०. १०-इ) गीत के छह दोष इस प्रकार हैं-

(१) **भीतदोष**-भयभीत दशा में डरते हुए गाना।

(२) **द्रुतदोष**-उद्वेगवश जल्दी-जल्दी गाना।

(३) **उत्पिच्छदोष**-श्वास लेते हुए या हाँफते हुए गाना।

(४) **उत्तालदोष**-तालविरुद्ध गाना।

(५) **काकस्वरदोष**-कौए के समान कर्णकटु स्वर में गाना।

(६) **अनुनासदोष**-नाक से स्वरों का उच्चारण करते हुए गाना॥४७॥

SIX FAULTS OF A SINGING

260. (10-c) The six faults of singing are as follows—

(1) ***Bheet dosh***—to sing in a frightened state of mind.

(2) ***Drut dosh***—to sing fast in excitement.

(3) ***Utpatti dosh***—to sing with unstable breathing or getting short of breath while singing.

(4) ***Uttal dosh***—to sing out of beats or rhythm.

(5) ***Kakasvar dosh***—to sing in crow-like harsh or coarse voice.

(6) ***Anunasa dosh***—to sing in nasal voice. (47)

गीत के आठ गुण

(१०. ई) पुण्णं रत्तं च अलंकिय च वत्तं तहेव मविघुट्ठं।

महुरं समं सुललियं अट्ठगुणा होंति गीयस्स॥४८॥

(२६०. १०-ई) गीत के आठ गुण इस प्रकार हैं-

(१) **पूर्णगुण**-स्वर के आरोह-अवरोह आदि से पूर्ण होना।

(२) **रक्तगुण**-गेयराग से युक्त होकर गाना।

(३) **अलंकृतगुण**-विविध शुभ स्वरों से सम्पन्न होकर गाना।

(४) **व्यक्तगुण**-गीत के बोलों-स्वर-व्यंजनों का स्पष्ट रूप से उच्चारण करके गाना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(५) **अविघुष्टगुण**–विकृति और विशृंखलता से रहित नियत और नियमित स्वर से गाना।

(६) **मधुरगुण**–कर्णप्रिय मनोरम स्वर से कोयल की भाँति गाना।

(७) **समगुण**–सुर-ताल-लय आदि से समनुगत-संगत स्वर में गाना।

(८) **सुललितगुण**–स्वरघोलनादि के द्वारा ललित-श्रोत्रेन्द्रियप्रिय सुखदायक स्वर में गाना ॥४८॥

EIGHT MERITS OF SINGING

260. (10-d) Eight merits of singing are as follows—

(1) ***Purna guna***—to sing with perfection rendering all notes in classical order.

(2) ***Rakta Guna***—to sing following proper grammar of the *Raga* (composition).

(3) ***Alankrit Guna***—to sing with selection of melodious notes.

(4) ***Vyakta guna***—to sing with clear rendering of the words of the song with proper pronunciation.

(5) ***Avighusta guna***—to sing without discordance and distortions.

(6) ***Madhur guna***—to sing in sweet and melodious tone like that of a cuckoo.

(7) ***Sama guna***—to sing harmoniously with rhythm and beat.

(8) ***Sulalit guna***—to sing with sweet and enchanting combination of softness and melody.

दूसरी प्रकार से संगीत के आठ गुण–

(१०. उ) उर-कंठ-सिरविसुद्धं च गिज्जते मउय-रिभियपदबद्धं।

समताल पदुक्खेवं सत्तस्सरसीभरं गीयं॥४९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(२६०. १०–उ) गीत के आठ गुण और भी हैं, जो इस प्रकार हैं–

(१) **उरोविशुद्ध**–जो स्वर उरस्थल में विशाल होता है।

(२) **कंठविशुद्ध**–जो स्वर कंठ में नहीं फटता है।

(३) **शिरोविशुद्ध**–जो स्वर शिर से उत्पन्न होकर भी नासिका के स्वर से मिश्रित नहीं होता है।

(४) **मृदुक**–जो राग मृदु–कोमल स्वर में गाया जाता है।

(५) **रिभित**–घोलनाबहुल–आलाप द्वारा खेल सा करते हुए गीत में चमत्कार पैदा करना।

(६) **पदबद्ध**–गीत को विशिष्ट पदरचना से निबद्ध करना।

(७) **समतालपदोत्क्षेप**–जिस गीत में (हस्त) ताल, वाद्य–ध्वनि और नर्तक का पादक्षेप चरण–न्यास सम हो अर्थात् एक दूसरे से मिलते हों।

(८) **सप्तस्वर सीभर**–जिसमें षड्ज आदि सातों स्वर तंत्री आदि वाद्यध्वनियों के अनुरूप हों। अथवा वाद्यध्वनियाँ गीत के स्वरों के समान हों। ४९। (विशेष वर्णन देखें ठाणांग सूत्र स्थान ७)

OTHER EIGHT MERITS OF SINGING

260. (10-e) There are eight other merits of singing. They are as follows—

(1) ***Urovishuddh*—**to sing with a note that rises clear or resounding from the chest.

(2) ***Kanthavishuddh*—**to sing with note that does not get distorted in the throat.

(3) ***Shirovishuddh*—**to sing with a note that originates in the head but does not become nasal.

(4) ***Mriduk*—**to sing with soft and regulated note.

(5) ***Ribhit*—**to sing with fine variations and modulations in notes producing enchanting effects on audience.

(6) ***Padabaddh*—**to sing a song with attractive poetic composition of words.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(7) *Samatalapadokshep*—to sing in perfect harmony and rhythm with beats, instrumental music, and dancing steps.

(8) *Saptasvar Sibhar*—to sing with notes that are in perfect tuning with accompanying notes from musical instruments. (49) (for more details refer to *Sthananga Sutra*, sthan-7)

(१०. ऊ) **अक्खरसमं पयसमं तालसमं लयसमं गहसमं च।**

निस्ससि–उस्ससियासमं संचारसमं सरा सत्त॥५०॥

(२६०. १०–ऊ) सप्तस्वर सीभर की व्याख्या (प्रकारान्तर से) इस प्रकार है–

(१) **अक्षरसम–**ह्रस्व–दीर्घ–प्लुत और सानुनासिक अक्षरों के अनुरूप ह्रस्वादि स्वरयुक्त गीत।

(२) **पदसम–**स्वर के अनुरूप पदों और पदों के अनुरूप स्वरों के अनुसार गाया जाने वाला गीत।

(३) **तालसम–**तालवादन के अनुरूप स्वर में गाया जाने वाला गीत।

(४) **लयसम–**वीणा आदि वाद्यों की धुनों के अनुसार गाया जाने वाला गीत।

(५) **ग्रहसम–**वीणा आदि द्वारा ग्रहीत स्वरों के अनुसार गाया जाने वाला गीत।

(६) **निश्वसितोच्छ्वसितसम–**सांस लेने और छोड़ने के क्रमानुसार गाया जाने वाला गीत।

(७) **संचारसम–**सितार वाद्यों के तारों पर अंगुली के संचार के साथ गाया जाने वाला गीत।

इस प्रकार गीत स्वर, तंत्री आदि के साथ सम्बन्धित होकर सात प्रकार का हो जाता है॥५०॥

260. (10-f) The details about Saptasvar Sibhar are as follows—

(1) *Akshar sam*—there is a harmony with vowels including long, short, protracted, and nasal.

(2) *Pada sam*—there is a harmony with words, stanzas, rhyming, and rendering.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(3) ***Taal sam***—there is a harmony with beats (of percussion instruments).

(4) ***Laya sam***—there is a harmony with rhythm of musical instruments (string, wind, and other).

(5) ***Graha sam***—there is a harmony with the set notes of musical instruments.

(6) ***Nishvasitocchavasit sam***—there is a harmony with inhalation and exhalation.

(7) ***Sanchar sam***—there is a harmony with the (speed of) movement of fingers on musical instruments.

Thus the rendering of a song has seven qualities in consonance with musical instruments. (50)

(१०. ए) निद्दोसं सारवंतं च हेउजुत्तमलंकियं।

उवणीयं सोवयारं च मियं महुरमेव य॥५१॥

(२६०. १०–ए) गेय पदों के आठ गुण इस प्रकार भी हैं–

(१) **निर्दोष**–बत्तीस दोषों से रहित होना।

(२) **सारवंत**–अर्थ से युक्त होना।

(३) **हेतुयुक्त**–हेतु से संयुक्त होना।

(४) **अलंकृत**–उपमा–उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों से युक्त होना।

(५) **उपनीत**–उपसंहार से युक्त होना।

(६) **सोपचार**–अविरुद्ध कोमल अलज्जनीय अर्थ का प्रतिपादन करना।

(७) **मित**–अल्पपद और अल्पअक्षर वाला होना।

(८) **मधुर**–शब्द, अर्थ और प्रतिपादन की अपेक्षा प्रिय होना॥५१॥

260. (10-g) The eight merits of a song are as follows—

(1) *Nirdosh*—It should be free of thirty two faults.

(2) *Saravanta*—It should be meaningful.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(3) ***Hetuyukta***—It should be purposeful.

(4) ***Alamkrit***—It should be embellished with poetic qualities like alliteration.

(5) ***Upanit***—It should be well concluded.

(6) ***Sopachar***—It should be expressive of kind, consistent, and blameless meaning.

(7) ***Mit***—It should be well measured (not tediously long).

(8) ***Madhur***—It should be sweet in terms of word, meaning as well as rendering. (51)

गीत के वृत्त–छन्द

(१०. ऐ) समं अद्धसमं चेव सव्वत्थ विसमं च जं।

तिण्णि वित्तप्पयाराइं चउत्थं नोवलब्भइ॥५२॥

(२६०. १०–ऐ) गीत के वृत्त–छन्द तीन प्रकार के होते हैं–

(१) **सम**–जिसमें गीत के चरण और अक्षर सम हों अर्थात् चार चरण हों और उनमें गुरु–लघु अक्षर भी समान हों।

(२) **अर्धसम**–जिसमें प्रथम और तृतीय तथा द्वितीय और चतुर्थ चरण समान हों।

(३) **सर्वविषम**–जिसमें सभी चरणों में अक्षरों की संख्या विषम हो, जिसके चारों चरणविषम हों।

इनके अतिरिक्त चौथा प्रकार नहीं पाया जाता है॥५२॥

VRITTA OF SONG

260. (10-h) There are three kinds of *vritta* (*chhand* or meter) of a song—

(1) ***Sam***—wherein all the quarter-verses are identical in structure measured in equal number of syllables (long and short).

(2) ***Ardh-sam***—wherein first quarter-verse is identical in structure with third and second with forth.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(3) ***Sarva Visham***—wherein all the four quarter-verses are different in structure.

There is no fourth kind. (52)

गीत की भाषा

(१०. ओ) सक्कया पायया चेव भणिईओ होंति दुण्णि उ।

सरमंडलम्मि गिज्जंते पसत्था इसिभासिया॥५३॥

(२६०. १०–ओ) भणितियाँ–गीत की भाषायें दो प्रकार की कही गई हैं–संस्कृत और प्राकृत। ये दोनों प्रशस्त एवं ऋषिभाषित हैं और स्वरमण्डल में पाई जाती है॥५३॥

LANGUAGE OF A SONG

260. (10-i) There are said to be two languages of songs—Sanskrit and Prakrit. These two languages are exalted and spoken by sages. They are sung in full range of *svars* (musical notes). (53)

गीतगायक के प्रकार

(११. क) केसी गायति महुरं ? केसी गायति खरं च रुक्खं च ?।

केसी गायति चउरं ? केसी य विलंबियं ? दुतं केसी ?

विस्सरं पुण केरिसी ?॥५४॥ (पंचपदी)

सामा गायति महुरं, काली गायति खरं च रुक्खं च।

गोरी गायति चउरं, काणा य विलंबियं, दुतं अंधा,

विस्सरं पुण पिंगला॥५५॥ (पंचपदी)

(२६०. ११–क. प्रश्न) (१) कौन स्त्री मधुर स्वर में गीत गाती है ? (२) परुष और रूक्ष स्वर में कौन गाती है ? (३) चतुराई से कौन गाती है ? (४) विलम्बित स्वर में कौन गाती है ? (५) द्रुत स्वर में कौन गाती है ? तथा (६) विकृत स्वर में कौन गाती है ?

(उत्तर) (१) श्यामा (षोडशी) स्त्री मधुर स्वर में गीत गाती है, (२) काली स्त्री खर (परुष) और रूक्ष स्वर में गाती है, (३) गौरवर्णा स्त्री चतुराई से गीत गाती है, (४) कानी स्त्री विलम्बित (मंद) स्वर में गाती है, (५) अंधी स्त्री शीघ्रता से गाती है, और ६) पिंगला (कपिला) विकृत स्वर में गाती है॥५४/५५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

TYPES OF SINGER

260. (Question 11-a) (1) What sort of woman sings in sweet tone ? (2) What sort of woman sings in rough and harsh tone ? (3) What sort of woman sings with skill ? (4) What sort of woman sings in slow rhythm ? (5) What sort of woman sings in quick rhythm ? (6) What sort of woman sings out of tune ?

(Answer) (1) A young woman sings in sweet tone ? (2) A woman with dark complexion sings in rough and harsh tone ? (3) A woman with fair complexion sings with skill ? (4) A one-eyed woman sings in slow rhythm ? (5) A blind woman sings in quick rhythm? (6) A woman with pale or tawny complexion sings out of tune ? (54-55)

उपसंहार

(११. ख) सत्त सरा तओ गामा मुच्छणा एक्कवीसई।

ताणा एगूणपण्णासं सम्मत्तं सरमंडलं॥५६॥ से तं सत्तनामे ॥

(२६०. ११–ख) इस प्रकार सात स्वर, तीन ग्राम और इक्कीस मूर्च्छनायें होती हैं। प्रत्येक स्वर सात तानों से गाया जाता है, इसलिए उनके (७ × ७ = ४९) उनपचास भेद हो जाते हैं। इस प्रकार स्वरमण्डल का वर्णन समाप्त हुआ॥५६॥

सप्तनाम की वक्तव्यता भी समाप्त हुई।

CONCLUSION

260. (11-b) Thus there are seven *svars* (musical notes), three *grams* (scales), and twenty one *murcchanas* (modulations). Each *svar* (musical note) is sung with seven tones making a total of 49 tones. This concludes the description of the sphere of *svars* (musical notes).

This concludes the description of *Saat nama* (Seven-named).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विभक्ति प्रकरण
THE DISCUSSION ON DECLENSION

२६१. (१) से किं तं अट्ठनामे ?

अट्ठनामे अट्ठविहा वयणविभत्ती पण्णत्ता। तं जहा–

(१) निद्देसे पढमा होति, (२) बितिया उवएसणे।

(३) तइया करणम्मि कया, (४) चउत्थी संपयावणे॥५७॥

(५) पंचमी य अपायाणे, (६) छट्ठी सस्सामिवायणे।

(७) सत्तमी सन्निहणत्थे, (८) अट्ठमाऽऽमंतणी भवे॥५८॥

२६१. (प्रश्न १) वह अष्टनाम क्या है ?

(उत्तर) आठ प्रकार की वचन विभक्तियों को अष्टनाम कहते हैं। वचनविभक्ति के वे आठ प्रकार यह हैं–

(१) निर्देश–अर्थ में प्रथमा विभक्ति होती है।

(२) उपदेश में द्वितीया विभक्ति होती है।

(३) क्रिया के साधकतम करण में तृतीया विभक्ति,

(४) सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है।

(५) अपादान (पृथक्ता) बताने के अर्थ में पंचमी विभक्ति,

(६) स्व–स्वामित्वकथन करने के अर्थ में षष्ठी विभक्ति।

(७) सन्निधान (आधार) का कथन करने के अर्थ में सप्तमी विभक्ति, तथा

(८) आमंत्रण के अर्थ में अष्टमी विभक्ति होती है॥५७, ५८॥

261. (Question 1) What is this *Aath nama* (Eight-named) ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(Answer) The eight kinds of *vachan-vibhaktis* (inflections or case-endings) of words (in Sanskrit grammar) are called *Aath nama* (Eight-named). These *vachan-vibhaktis* (case-endings) are as follows—

(1) The first *vachan-vibhakti* (case-ending) is used for indication (*nirdesh*) of the meaning of the word including its gender and number. (Nominative case)

(2) The second *vachan-vibhakti* (case-ending) is used for advice (*upadesh*). (Accusative case)

(3) The third *vachan-vibhakti* (case-ending) is used for instrument (*karan*). (Instrumental case)

(4) The fourth *vachan-vibhakti* (case-ending) is used for recipient (*sampradan*). (*Dative case*)

(5) The fifth *vachan-vibhakti* (case-ending) is used for the object from which something is separated (*apadan*). (*Ablative* case)

(6) The sixth *vachan-vibhakti* (case-ending) is used to indicate the relation of one's ownership (*sva-svamitva*). (Genitive case)

(7) The seventh *vachan-vibhakti* (case-ending) is used to mean the receptacle of something (*sannidhan*). (Vocative case)

(8) The eighth *vachan-vibhakti* (case-ending) is used in addressing (*amantran*) someone. (57-58)

आठ विभक्तियों के उदाहरण–

(२) तत्थ पढमा विभत्ती निद्देसे सो इमो अहं व त्ति १।
बितिया पुण उवदेसे भण कुणसु इमं व तं व त्ति २ ॥५९॥
ततिया करणम्मि कया भणियं व कयं व तेण व मए वा ३।
हंदि णमो साहाए हवति चउत्थी पयाणम्मि ४ ॥६०॥
अवणय गिण्ह य एत्तो इतो त्ति वा पंचमी अपायाणे ५।
छट्ठी तस्स इमस्स व गयस्स वा सामिसंबंधे ६ ॥६१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हवति पुण सत्तमी तं इमम्मि आधार काल भावे य ७।
आमंतणी भवे अट्ठमी उ जह हे जुवाण ! त्ति ८॥६२॥

से तं अट्ठणामे।

२६१. (२) (१) निर्देश में प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे–**सो**–वह, **इमा**–यह अथवा **अहं**–मैं।

(२) उपदेश में द्वितीया विभक्ति होती है।–जैसे **इमं भण**–इसको कहो, **तं कुणसु**–वह करो आदि।

(३) करण में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे–**तेण भणियं** उसके द्वारा कहा गया अथवा **मए कयं**–मेरे द्वारा किया गया।

(४) सम्प्रदान, (हंदि) नमः तथा स्वाहा अर्थ में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे **विप्राय गां ददाति**–ब्राह्मण को (के लिए) गाय देता है। **नमो जिनाय**–जिनेश्वर के लिए मेरा नमस्कार हो। **अग्नये स्वाहा**–अग्नि देवता को हवि दिया जाता है।

(५) अपादान में पंचमी होती है। जैसे–**एत्तो अपणय**–यहाँ से दूर करो अथवा **इतो गिण्ह**–इससे ले लो।

(६) स्व-स्वामी सम्बन्ध बतलाने में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे–**तस्स इमे वत्थु**–उसकी अथवा इसकी यह वस्तु है।

(७) आधार, काल और भाव में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे **इमम्मि**–(वह) इसमें है।

(८) आमंत्रण अर्थ में अष्टमी विभक्ति होती है। जैसे–**हे जुवाण**–हे युवक ! ॥५९-६२॥

यह आठ विभक्तिरूप अष्टनाम का वर्णन है।

EXAMPLES OF EIGHT VIBHAKTIS

261. (2) (1) The example of the first *vachan-vibhakti* (case-ending) in the sense of indication (nirdesh) is *so* (he), *imo* (this person), or *aham* (I). (Nominative case)

(2) The example of the second *vachan-vibhakti* (case-ending) in the sense of advice (*upadesh*) is *imam bhan* (speak this), *tam kunasu* (do that). (Accusative case)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(3) The example of the third *vachan-vibhakti* (case-ending) in the sense of instrument (*karan*) is *tena bhaniyam* (was spoken by him) or *maye kayam* (was done by me). (Instrumental case)

(**Note :** This is apparently a case of third case-ending in nominative sense. But if the preceptor is the ultimate doer, his disciples are the instruments in learning the scriptures or doing some work ordered by the preceptor. In this way this becomes instrumental.)

(4) The example of the fourth *vachan-vibhakti* (case-ending) in the sense of recipient (*sampradan*) is in the form of *namah* and *svaha* (obeisance and oblation) and the examples are *viprayam gam dadati* (gives cow to the Brahmin); *Namo Jinaya* (I offer obeisance to the *Jina*); and *agnayee svaha* (oblations are offered to the fire god). (Dative case)

(5) The example of the fifth *vachan-vibhakti* (case-ending) in the sense of the object from which something is separated (*apadan*) is *etto apanaya* (take away from here) or *ito ginha* (snatch from him). (Ablative case)

(6) The example of the sixth *vachan-vibhakti* (case-ending) in the sense of indicating the relation of one's ownership (*sva-svamitva*) is *tassa ime vastu* (this thing belongs to him or this person). (Genitive case)

(7) The example of the seventh *vachan-vibhakti* (case-ending) in the sense of the receptacle of something (*sannidhan*) is *imammi* (that thing is in this). (Vocative case)

(8) The example of the eighth *vachan-vibhakti* (case-ending) in the sense of addressing (*amantran*) someone is *Hay juvan* (Oh ! young man). (59-62)

This concludes the description of *Aath nama* (Eight-named).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवेचन–वस्तु का कथन करने वाले पद को 'वचन' कहा जाता है। कर्ता, कर्म, करण आदि के रूप में उसके अलग-अलग भेद करना विभक्ति है। यह वचनों का भेद–'वचन विभक्ति' कही जाती है। नाम से आगे लगने वाली आठ विभक्तियाँ हैं।

प्राचीन व्याकरण के अनुसार 'सम्बोधन' को आठवीं विभक्ति माना गया है। नव्य व्याकरण नियमों के अनुसार सम्बोधन को 'प्रथमा' पहली विभक्ति में सम्मिलित कर लिया है। इसे 'प्रथमा' विभक्ति कहते हैं।

(१) **निर्देश**–'यह' 'वह' आदि क्रिया के कर्ता का उल्लेख करना।

(२) **उपदेश**–क्रिया में प्रवृत्ति की प्रेरणा देना। इसे कर्म या द्वितीया विभक्ति कहते हैं।

(३) **करण**–क्रिया करने में साधक कारण व तृतीया विभक्ति है।

(४) **सम्प्रदान**–निमित्त जिसके लिए या जिसको दिया जाय वह निमित्त या सम्प्रदान चतुर्थी विभक्ति है।

(५) **अपादान**–एक वस्तु को दूसरी वस्तु से अलग करना। जैसे–'से'। यह पंचमी विभक्ति है।

(६) **स्व–स्वामि सम्बन्ध**–'स्व' और 'स्वामि' का परस्पर सम्बन्ध जोड़ना। इसे षष्ठी विभक्ति कहते हैं।

(७) **सन्निधान**–आधार या अधिकरण। यह सप्तमी विभक्ति है।

(८) **आमंत्रणी**–किसी को पुकारना, सम्बोधित करना।

Elaboration : The combination of syllables that represents a thing is called word. To put it into various grammatical categories of subject, object, instruments, etc. is called declension (*Vibhakti*). It is reflected in eight inflectional terminations or case-endings.

Accodring to ancient Sanskrit grammar *sambodhan* (address) is said to be the eighth inflection. In new Sanskrit grammar rules it is taken as the first. The eight inflections are as follows :

(1) Nirdesh (Nominative Case)—Indicates the subject of the verb or pronoun in a sentence. This is the first case-ending.

(2) Updesh (Accusative Case)—Inspires indulgence in activities. This is the second case-ending.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(3) Karan (Instrumental Case)—Instrument in an activity. This is the third case-ending.

(4) Sampradan (Dative Case)—The recipient or the object of an activity. To whom or for whom something is given. This is the fourth case-ending.

(5) Apadan (Ablative Case)—Separating a thing from another, for example *'se'* (from). This is the fifth case-ending.

(6) Sva-svamitva sambandh (Genetive Case)—Establishing relation between self and the owner. This is the sixth case-ending.

(7) Sannidhan (Vocative Case)—Receptacle of something. This is the seventh case-ending.

(8) Amantrani (address)—To call or address someone. This is the eight case-ending.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवरस प्रकरण
THE DISCUSSION ON NINE-SENTIMENTS

नवनाम : काव्य–रस प्रकरण

२६२. (१) से किं तं नवनामे ?

नवनामे णव कव्वरसा पण्णत्ता। तं जहा–

(१) वीरो, (२) सिंगारो, (३) अब्भुओ य, (४) रोद्दो य होइ बोधव्वो।

(५) वेलणओ, (६) बीभच्छो, (७) हासो, (८) कलुणो, (९) पसंतो य॥६३॥

२६२. (प्रश्न १) नवनाम का क्या स्वरूप है ?

(उत्तर) काव्य के नौ रस नवनाम कहलाते हैं। जिनके नाम हैं–

(१) वीररस, (२) शृंगाररस, (३) अद्‌भुतरस, (४) रौद्ररस, (५) व्रीडनकरस, (६) बीभत्सरस, (७) हास्यरस, (८) करुणरस, और (९) प्रशांतरस; ये नवरसों के नाम हैं।॥६३॥

NO NAMA

262. (Question 1) What is this *No nama* (Nine-named)?

(Answer) The *nine rasas* (sentiments) of poetry are called *No nama* (Nine-named). They are—

(1) *Vira-rasa* (heroic sentiment), (2) *Shringar-rasa* (amatory or erotic sentiment), (3) *Adbhut-rasa* (sentiment of wonder), (4) *Raudra-rasa* (sentiment of rage or fury), (5) *Vridanak-rasa* (sentiment of shame or bashfulness), (6) *Vibhatsa-rasa* (sentiment of disgust), (7) *Hasya-rasa (sentiment of humour or comic sentiment), (8) Karun-rasa* (pathos or tragic sentiment of), and (9) *Prashant-rasa* (sentiment of serenity). (63)

विवेचन—नाटक आदि के नव रस इस प्रकार हैं–शृंगार, हास्य., करुणा, रौद्र–वीर–भयानक–बीभत्स–अद्‌भत और शान्त रस।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

काव्य के 'रस' बताने से पहले टीकाकारों ने काव्य का अर्थ करते हुए कहा है—**कवेरभिप्रायः काव्यं**—कवि के कर्म, अभिप्राय या भाव को काव्य कहा जाता है। **रस्यन्ते अन्तरात्मनाऽनुभूयन्ते इति रसाः**—जो अन्तरात्मा के द्वारा अनुभव किये जाते हैं, किसी उक्ति, पद आदि को सुनने या दृश्य को देखने से हृदय में जो भिन्न प्रकार के भाव उत्पन्न होते हैं, उन भावों की अनुभूति अथवा उत्कर्ष–उद्रेक, रस है। काव्य शास्त्र के अनुसार स्थायीभाव जब विभाव, अनुभाव तथा संचारी भावों से परिपक्व होकर देखने, सुनने, पढ़ने वाले के हृदय को तरंगित/भव विभोर कर देते हैं तब वे 'रस' कहलाते हैं। आचार्य हरिभद्र ने चित्त की वृत्तियों को भी रस कहा है। जैसे वेदनीय कर्म के दो रस होते हैं, सुख और दुःख। इसी प्रकार काव्य के भी रस होते हैं।

प्राचीन काल से काव्य के नो रसों की ही मान्यता है। काव्यानुशासन में नो रसों का ही उल्लेख है। इसके पश्चात्वर्ती काल में 'वात्सल्य' और 'भक्ति' दो रसों को जोड़कर ग्यारह रस मानने की चर्चा भी मिलती है। काव्य शास्त्र में और प्रस्तुत आगम में रसों के नामों में कुछ भिन्नता है। जैसे कहा गया है–

शृंगार-हास्य-करुणा-रौद्र-वीर-भयानकाः।
बीभत्सादूभुत शान्ताश्च नव नाट्ये रसाः स्मृताः।।

जैन आचार्यों ने 'भयानक रस' के स्थान पर 'व्रीडनक रस–लज्जारस तथा शान्त रस के स्थान पर 'प्रशान्त रस' यह नाम परिवर्तन किया है। आचार्य मलयगिरि के कथनानुसार भयानक रस का अन्तर्भाव रौद्र रस में कर दिया गया है। काव्य शास्त्र में, व्रीडनकरस को स्वीकार नहीं किया है। आगे सूत्रों में नवरसों के सम्बन्ध में विस्तारपूर्वक वर्णन है।

Elaboration—The nine sentiments in drama or other literary works are—*Shringar-rasa* (amatory or erotic sentiment), *Hasya-rasa* (sentiment of humour or comic sentiment), *Karun-rasa* (pathos or tragic sentiment), *Raudra-rasa* (sentiment of rage or fury), *Vira-rasa* (heroic sentiment), *Bhayanak-rasa* (sentiment of fear or horror), *Vibhatsa-rasa* (sentiment of disgust), *Adbhut-rasa* (sentiment of wonder), and *Shant-rasa* (sentiment of tranquillity).

Before stating the sentiments of poetry the commentators have defined poetry as—the work, intention, or feeling of a poet is called poetry. After that they define *rasa* (sentiment) as that which is experienced by inner-self. The act of experiencing, or enhancement in intensity of, the variety of feelings aroused by listening to some comment, poetic composition, or other statement or by looking at something is called *rasa* (sentiment). According to poetics when expressions; maturing with feelings, gestures, and moods; excite the observer, listener, or reader they

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

are called *rasas* (sentiments). Acharya Haribhadra has also included attitudes of mind in *rasas* (sentiments). As *vedaniya karma* (*karma* that causes feelings of happiness or misery) has two *rasas* (sentiments) of happiness and misery, in the same way poetry has nine *rasas* (sentiments).

Since ancient times it is believed that in poetics and rhetoric there are nine *rasas* (sentiments). *Kavyanushasana* too has a mention of nine *rasas* (sentiments). In later works there are mentions of eleven *rasas* (sentiments) also. It appears that at some point of time *Vatsalya* (parents' love towards progeny) and *Bhakti* (devotion) were also included. There is a slight difference in the lists of *rasas* (sentiments) found in works on poetics and this Agam.

Comparing the two we find that Jain *acharyas* have replaced *Bhayanak-rasa* (sentiment of fear or horror) with *Vridanak-rasa* (sentiment of shame or bashfulness) and *Shant-rasa* (sentiment of tranquillity) with *Prashant-rasa* (sentiment of profound serenity). According to *acharya* Malayagiri *Bhayanak-rasa* (sentiment of fear or horror) has been assimilated into *Raudra-rasa* (sentiment of rage or fury). However, in poetics *Vridanak-rasa* (sentiment of shame or bashfulness) is not accepted as a *rasa* (sentiment). Details of these nine *rasas* (sentiments) will be discussed now.

१. वीररस

(२) तत्थ (१) परिच्चायम्मि य, (२) तव–चरणे, (३) सत्तुजणविणासे य।

अणणुसय–धिति–परक्कमचिण्हो वीरो रसो होइ॥६४॥

२६२. (२) इन नव रसों में (१) परित्याग (दान) करने में अननुशय-गर्व या पश्चात्ताप न होना, (२) तपश्चरण में धृति-धैर्य, और (३) शत्रुओं का विनाश करने में पराक्रम ये तीन वीर रस के लक्षण हैं।॥६४॥

वीरो रसो जहा–

सो णाम महावीरो जो रज्जं पयहिऊण पव्वइओ।

काम–क्कोहमहासत्तुपक्खनिग्घायणं कुणइ॥६५॥

वीररस का बोधक उदाहरण इस प्रकार है–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जो राज्य–वैभव का परित्याग करके दीक्षित हो गया है और दीक्षित होकर काम–क्रोध आदि महाशत्रुओं का निग्रह करता है–उनका दमन तथा विनाश करता है, वह महावीर है।।६५॥

1. VIRA-RASA

262. (2) Of these (nine *rasas*) the characteristics of *Vira-rasa* (heroic sentiment) are (1) absence of pride or repentance in giving charity, (2) patience and perseverance in austerities, and (3) valour in destroying enemies. (64)

The example of *Vira-rasa* (heroic sentiment) is—

He indeed is a great hero (*mahavir*) who, after renouncing his kingdom and becoming an ascetic, subdues and destroys great enemies like lust and anger. (65)

२. *शृंगाररस*

(३) सिंगारो नाम रसो रतिसंजोगाभिलाससंजणणो।

मंडण–विलास–विब्बोय–हास–लीला–रमणलिंगो।।६६॥

२६२. (३) रति और संयोग (मिलन) की अभिलाषा से शृंगार रस उत्पन्न होता है। मंडन (अलंकार), विलास (कामोत्तजक चेष्टाएँ) तथा विब्बोक (काम क्रीड़ा की प्रवृत्ति) हास्य, लीला और रमण ये सभी शृंगाररस के लक्षण हैं।।६६।।

सिंगारो रसो जहा–

महुरं विलासललियं हिययुम्मादणकरं जुवाणाणं।

सामा सद्दुद्दामं दाएती मेहलादामं॥६७॥

शृंगाररस का उदाहरण है–

कोई मनोहर श्यामा (सोलह वर्ष की तरुणी) मधुर विलास से ललित, युवकों के हृदय को उन्मत्त करने वाले अपने घुँघरू के शब्दों से मुखर मेखला सूत्र का प्रदर्शन करती है॥६५॥

2. SHRINGAR-RASA

262. (3) The *Shringar-rasa* (amatory or erotic sentiment) is born out of indulgence and the desire for union with

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

objects of enjoyment. Its characteristics are adornment (with ornaments etc.), erotic gestures, indulgence in the sexual act, laughter, merriment, and amorous dalliance. (66)

The example of *Shringar-rasa* is—

A dark beauty displays her girdle with the sweet and charming sound of its jingling bells (produced with her inviting movements) to evoke passion in the hearts of young men and excite them. (67)

३. अद्‌भुतरस

(४) विम्हयकरो अपुव्वो वऽ भूयपुव्वो व जो रसो होइ।

सो हरिस-विसायुप्पत्तिलक्खणो अब्भुतो नाम॥६८॥

२६२. (४) जिसका कभी पहले अनुभव नहीं किया ऐसा (अभूतपूर्व) तथा विस्मयकारी-आश्चर्यकारक जो 'रस'-भाव उत्पन्न होता है, वह अद्‌भुत रस है। हर्ष और विषाद की उत्पत्ति अद्‌भुतरस का लक्षण है॥६८॥ जैसे-

अब्भुओ रसो जहा-

अब्भुयतरमिह एत्तो अन्नं किं अत्थि जीवलोगम्मि।

जं जिणवयणेणऽत्था तिकालजुत्ता वि णज्जंति ! ॥६९॥

अद्‌भुत रस का उदाहरण-इस जीवलोक में इससे बढ़कर अद्‌भुत और आश्चर्यकारक क्या हो सकता है कि जिनवचन के द्वारा त्रिकाल सम्बन्धी समस्त भाव जान लिए जाते हैं॥६९॥

3. ADBHUT-RASA

262. (4) The *Adbhut-rasa* (sentiment of wonder) is that which causes surprise of novelty (that which was never experienced before). It is characterized by rising of joy and sorrow. (68)

The example of *Adbhut-rasa* (sentiment of wonder) is—

What else could produce greater wonderment than the fact that in the words of the *Jina* are revealed all the objects and states of all the three sections of time (past, present, and future). (69)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आकृति से नवरसों की पहचान RECOGNITION OF NINE RASAS (QUALITIES) FROM THOUGHT-ACTIVITY

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्र परिचय १८

Illustration No. 18

आकृति से नव रसों की पहचान

(१) वीरस रस–दृढ़ता, साहसिकता, धीरता, पराक्रमशीलता आदि भाव वीर रस का लक्षण है।

(२) शृंगार रस–विभूषा, विलास आदि भावों से शृंगार रस की पहचान होती है।

(३) अद्‌भुत रस–नई अद्‌भुत और आश्चर्यजनक वस्तु देखने, सुनने से अद्‌भुत रस की प्रतीति होती है।

(४) रौद्र रस–भयोत्पादक दृश्यों आदि से मन में भय व घृणा का भाव जगना।

(५) व्रीड़नक रस–लज्जा, अपमान व मर्यादा भंग होने पर मन में संकोच का भाव जगना।

(६) बीभत्स रस–घृणास्पद अशुचि पदार्थों के देखने–सुनने से जुगुप्सा भाव पैदा होना।

(७) हास्य रस–विचित्र दृश्य–श्रव्य के कारण विस्मय तथा हँसी आना।

(८) करुण रस–किसी स्नेही आदि के वियोग से मन में शोक, रुदन आदि की अनुभूति।

(९) शान्त रस–इन्द्रिय–संयम व निर्विकार मन युक्त एकाग्रता व शान्ति व समाधि की अनुभूति।

–सूत्र २६२

RECOGNIZING NINE SENTIMENTS FROM APPEARANCES

(1) Vira-rasa—Awakening of the emotions of firmness, bravery, patience, valour etc. is the characteristic of this rasa.

(2) Shringar-rasa—Its characteristics are adornment (with ornaments etc.), erotic gestures, etc.

(3) Adbhut-rasa—It is experienced by seeing and hearing about new, strange, and astonishing things.

(4) Raudra-rasa—It is evoked by thinking and talking about horrendous forms, etc. It is characterized by emotions of fear and revulsion.

(5) Vridanak-rasa—It has its origin in acts of shame, insult, transgressing codes of modest behaviour. It is characterized by shame and apprehension.

(6) Vibhatsa-rasa—It is caused by looking at and smelling the stench of filthy things. It is characterized by feeling of disgust.

(7) Hasya-rasa—It is inspired by paradox or bizarreness. It produces surprise and laughter.

(8) Karun-rasa—It is caused by separation from the beloved. It is characterized by sorrow, lamenting, etc.

(9) Prashant-rasa—It is the experience of tranquillity and inner peace (*samadhi*) with discipline over senses, unblemished mind, and complete concentration.

—*Sutra : 262*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. रौद्ररस

(५) भयजणणरूव–सद्दंधकार–चिंता–कहासमुप्पन्नो।

सम्मोह–संभम–विसाय–मरणलिंगो रसो रोद्दो॥७०॥

(२६२–५) भयंकर रूप, शब्द अथवा अंधकार के चिन्तन और कथन, दर्शन आदि से रौद्ररस उत्पन्न होता है। संमोह (विवेक शून्यता), संभ्रम (व्याकुलता), विषाद (खेद) एवं मरण उसके लक्षण हैं।।७०।।

रोद्दो रसो जहा–

भिउडीविडंबियमुहा ! संदट्ठोट्ठ ! इय रुहिरमोकिण्णा !

हणसि पसुं असुरणिभा ! भीमरसिय ! अतिरोद्द ! रोद्दोऽसि॥७१॥

रौद्र रस का उदाहरण–भृकुटियाँ ऊपर चढ़ने से तेरा मुख विकराल बन गया है, तेरे दाँत होठों को चबा रहे हैं, तेरा शरीर खून से लथपथ हो रहा है, तेरे मुख से भयानक–भयोत्पादक शब्द निकल रहे हैं, जिससे तू राक्षस जैसा डरावना हो गया है। तू पशुओं की हत्या कर रहा है। इसलिए अतिशय रौद्ररूपधारी तू साक्षात रौद्ररस है।।७१।।

4. RAUDRA-RASA

262. (5) The *Raudra-rasa* (sentiment of rage or fury) is evoked by thinking and talking about horrendous forms, sounds, and darkness and witnessing these. It is characterized by perplexity, alarm, sorrow, and death. (70)

The example of *Raudra-rasa* (sentiment of rage or fury) is—

Raised eye-brows have made your face hideous, you are biting your lips, your body is drenched in blood and you are producing fearsome sound. All this makes you awesome like a demon. You are killing animals. Thus O extremely horrendous one, you are fury (*Raudra-rasa*) personified. (71)

५. व्रीडनकरस

(६) विणयोवयार–गुज्झ–गुरुदार–मेरावतिक्कमुप्पण्णो।

वेलणओ नाम रसो लज्जा–संकाकरणलिंगो॥७२।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२६२. (६) (१) विनयोपचार–विनय करने से, (२) गुप्त रहस्यों को प्रकट करने से, तथा (३) गुरुपत्नी आदि के समक्ष मर्यादा का उल्लंघन करने से व्रीडनकरस उत्पन्न होता है। लज्जा और शंका इस रस के लक्षण हैं।।।७२।।

वेलणओ रसो जहा–

किं लोइयकरणीओ लज्जणियतरं ति लज्जिया मोत्ति।
वारिज्जम्मि गुरुजणो परिवंदइ जं वहूपोत्तिं॥७३॥

व्रीडनकरस का उदाहरण–(कोई नव वधू कहती है–) इस लौकिक व्यवहार से अधिक लज्जास्पद और क्या बात हो सकती है–मैं तो इससे बहुत लजाती हूँ–कि वर–वधू का प्रथम समागम होने पर गुरुजन–सास आदि वधू द्वारा पहने वस्त्र की प्रशंसा करते हैं।।७३।।

5. VRIDANAK-RASA

262. (6) The *Vridanak-rasa* (sentiment of shame or bashfulness) has its origin in (1) observing modest behaviour, (2) revealing secrets, and (3) transgressing codes of modest behaviour before wives of guru and other respectable persons. It is characterized by shame and apprehension. (72)

The example of *Vridanak-rasa* (sentiment of shame or bashfulness) is—

Is there anything more shameful than this popular practice of the elders commending the garments worn by a bride on the night of consummation of her marriage. I feel so ashamed ! (73)

विवेचन—लोक मर्यादा तथा आचार मर्यादा के उल्लंघन से व्रीड़नक रस की उत्पत्ति होती है और लज्जा आना एवं आशंकित होना उसके लक्षण हैं। काम करने के बाद सिर झुक जाना, शरीर का संकुचित होना और दोष प्रकट न हो जाए इस आशंका से मन का दोलायमान–डांवा डोल बना रहना लज्जा है।

इस उदाहरण से पता चलता है कि किसी क्षेत्र या किसी काल में ऐसी रूढ़ि या लोकपरम्परा रही होगी कि नववधू को अक्षतयोनि सिद्ध करने के लिए सुहागरात के बाद उसके रक्तरंजित वस्त्रों का प्रदर्शन किया जाता था और कुल के वृद्ध जन उसे देखकर सन्तोष व्यक्त करते थे। इसलिए व्रीडनकरस में इसका उदाहरण दिया है।।७३॥ (हारि. वृत्ति. पृ. ३२४)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवरसों के उदाहरण (१)

EXAMPLES OF NINE RASAS (EXPERIENCES)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्र परिचय १९

Illustration No. 19

नव रसों के उदाहरण
(अनुभूति प्रधान)

१. **वीर रस**–वास्तव में वीर वह है जिसने संसार-सुखों का त्यागकर काम, क्रोध आदि महाशत्रुओं का निग्रह किया है। जैसे भगवान महावीर ने समस्त वैभव त्यागकर दीक्षा ली। मनःसंयमी सच्चा वीर है।

२. **शृंगार रस**–सुन्दर युवतियों का नृत्य देखने, कमर व पाँवों में बँधे घुंघुरुओं की मधुर ध्वनि सुनने से विकारीभाव व विलासीभाव उत्पन्न होना शृंगार रस का उदाहरण है।

३. **अद्‌भुत रस**–अद्‌भुत और कठिन कार्य को देखकर विस्मित होना। भौतिक जगत् में जैसे किसी को बाँस की रस्सी पर हाथों व सिर पर कप-प्लेट रखकर एक चक्के वाली साइकिल चलाते देखकर दर्शकों को विस्मय होता है। आध्यात्मिक दृष्टि में–जिन वाणी सुनकर त्रिकालवर्ती तत्त्वों का ज्ञान हो जाना सबसे बड़ा आश्चर्य है।

४. **रौद्र रस**–किसी जीव की हिंसा/वध करते समय मुख पर अत्यन्त क्रूर भावों का उभरना, तथा पशुओं के रक्त-माँस से सने हाथ आदि देखने से रौद्र रस का परिपाक होता है।

EXAMPLES OF NINE RASAS
(EXPERIENCE BASED)

1. Vira-rasa—He indeed is a great hero (Mahavir) who, after renouncing mundane pleasures, subdues and destroys great enemies like lust and anger. True hero is he who has disciplined his mind.

2. Shringar-rasa—Rising of pervert emotions and passions by seeing dances of beautiful women, and hearing the sweet and charming sound of jingling bells tied to their waist and feet.

3. Adbhut-rasa—To be astonished by witnessing a strange and difficult act. The audience is astonished looking at an acrobat riding one wheeled cycle on a rope tied to two poles, taking cup-plates in hands and on head. From spiritual viewpoint the greatest wonder is the fact that in the words of the Jina are revealed all the objects and states of all the three periods of time. (69)

4. Raudra-rasa—Extremely cruel expressions appear on the face when someone kills or tortures an animal. The emotion further matures when he looks at his hands drenched in blood of that animal.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Elaboration—Transgressing the code of social behaviour and religious conduct produces this sentiment; bashfulness and apprehension are its expressions. Shame produces a feeling of apprehension of an ungainly act getting revealed and is expressed by bowing of head and cringing of the body.

This example reveals that at some place or period the custom of displaying a bride's blood-splotched garments after her honeymoon as the proof of her pre-marital chastity was prevalent. The elders of the family expressed their contentment after this display. That is why this has been included as an example of *Vridanak-rasa* (sentiment of shame or bashfulness).

६. बीभत्सरस

(७) असुइ—कुणव—दुद्दंसणसंजोगब्भासगंधनिप्फण्णो।

निव्वेयऽविहिंसालक्खणो रसो होइ बीभत्सो ॥७४॥

२६२. (७) अशुचि—मल मूत्रादि, कुणप—शव, दुर्दर्शन—लार आदि से व्याप्त घृणित शरीर को बारंबार देखने तथा उसकी दुर्गंध से बीभत्सरस उत्पन्न होता है। निर्वेद, ग्लानि या उदासीनता और अविहिंसा (जीव हिंसा के प्रति अरुचि) बीभत्सरस के लक्षण हैं।।७४।।

बीभत्सो रसो जहा—

असुइमलभरियनिज्झर सभावदुग्गंधि सव्वकालं पि।

धण्णा उ सरीरकलिं बहुमलकलुसं विमुंचंति ॥७५॥

बीभत्सरस का उदाहरण—

अपवित्र मल से भरे हुए झरनों वाला सर्वकाल स्वभाव से दुर्गन्धयुक्त यह शरीर सर्व कलहों का मूल है। यह जानकर जो उसकी मूर्च्छा का त्याग करते हैं, वे धन्य हैं।।७५॥

6. VIBHATSA-RASA

262. (7) The *Vibhatsa-rasa* (sentiment of disgust) is caused by repeatedly looking at and smelling the stench of filth (excreta etc.), corpse, or an obnoxious body covered with filth. It is characterize by feeling of detachment, disgust, and apathy for violence. (74)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

The example of *Vibhatsa-rasa* (sentiment of disgust) is—

Blessed are the men who renounce their fond attachment with the body that abounds in streams filled with filth knowing that it has always been a source of stench and cause of all miseries. (75)

७. हास्यरस

(८) रूव–वय–वेस–भासाविवरीयविलंबणासमुप्पन्नो।

हासो मणप्पहासो पकासलिंगो रसो होति।।७६।।

२६२. (८) रूप–वय (अवस्था) वेष और भाषा की विपरीतता या विचित्रता से हास्य रस की उत्पत्ति होती है। हास्य रस मन को आह्लादित करने वाला है और मुख, नेत्र आदि का खिल जाना उसके लक्षण हैं।।७६।।

हासो रसो जहा–

पासुत्तमसीमंडियपडिबुद्धं देयरं पलोयंती।

ही ! जह थण–भर–कंपण–पणमियमज्झा हसति सामा।।७७।।

हास्य रस का उदाहरण–

स्तन–भार से नीचे झुकी हुई कटि वाली श्यामा स्त्री अपने सोये हुए देवर के मुख को काजल से पोत देती है और जब वह उठता है तब उसे ही देखकर हीं–हीं करती हुई हँसती है।।७७।।

7. HASYA-RASA

262. (8) The *Hasya-rasa* (sentiment of humour or comic sentiment) is inspired by paradox or bizarreness related to form, age, dress, and language. It produces joy and cheer and is characterized by brightening of the face and eyes. (76)

The example of Hasya-rasa (sentiment of humour or comic sentiment) is—

A dark complexioned woman, bent with the weight of her bosoms, smears lamp-black on the cheeks of the sleeping younger brother of her husband. When he wakes up she laughs loudly looking at his face. (77)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

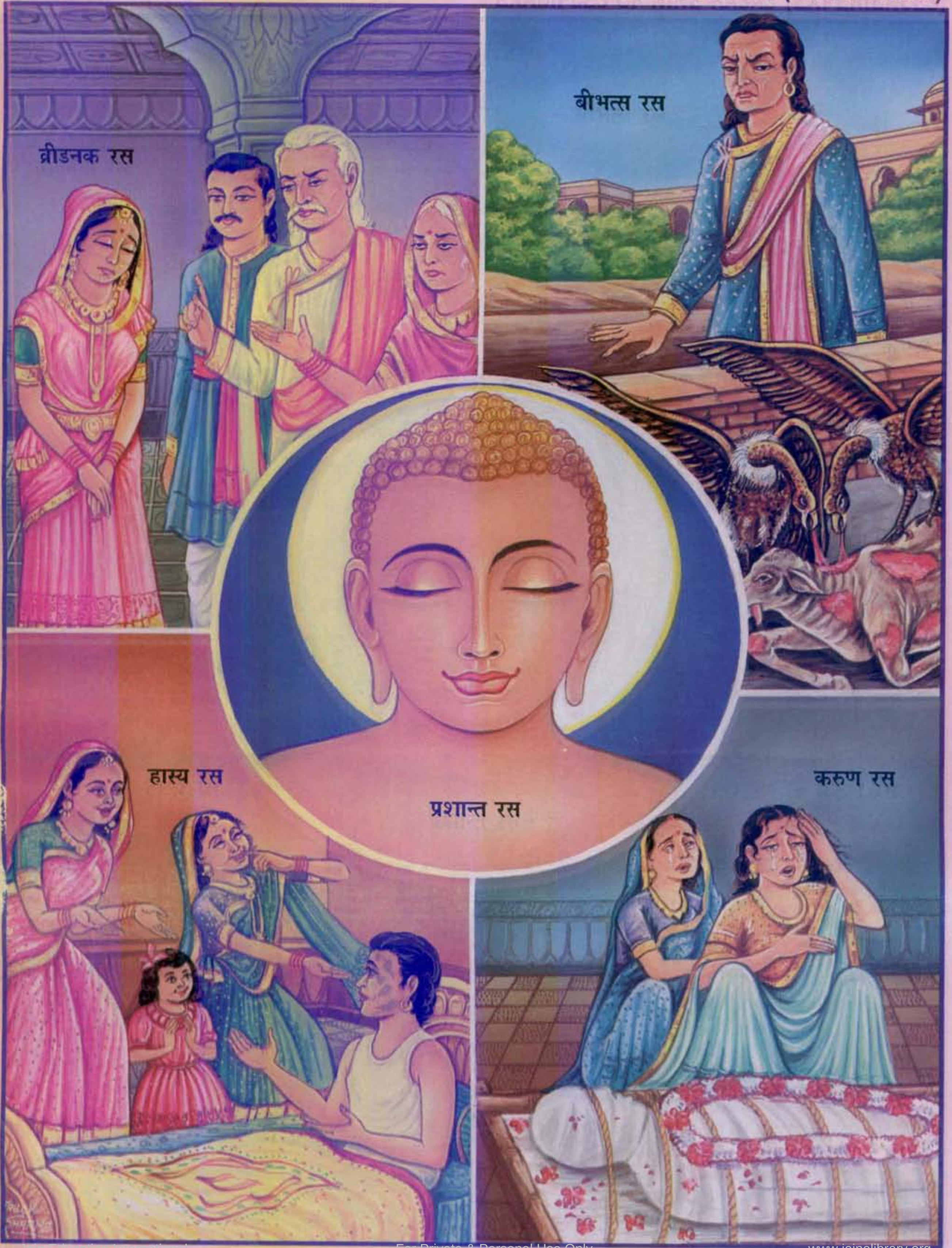

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्र परिचय २०

Illustration No. 20

५. व्रीड़नक–विनय व्यवहार तथा मर्यादा भंग होने तथा गुप्त रहस्य प्रकट होने आदि कारणों से मन में शर्म या संकोच का भाव उठना। जैसे कुल के गुरुजनों के समक्ष, मर्यादा भंग या गुप्त रहस्य प्रकट होने से कुलवधू लज्जा से पानी पानी हो जाती है।

६. बीभत्स रस–घृणास्पद वस्तु को देखने–सुनने से इसकी उत्पत्ति होती है। जैसे पशु के सड़े हुए शव पर गीधों, कौवों को माँस नोंचते देखकर मन घृणा से भर जाता है।

७. हास्य रस–किसी विचित्र बात पर हँसना। जैसे भाभी ने सोये हुए देवर के मुँह पर काजल पोत दिया। जब वह उठा तो उसका काला मुँह देखकर सब ही–ही करके हँसने लगते हैं।

८. करुण रस–प्रियजन के वियोग की पीड़ा से शोक, विलाप रूप वेदना करुणाभाव है। जैसे–युवक की मृत्यु पर पत्नी, माता आदि का विलाप मन में करुणाभाव पैदा करता है।

९. शान्त रस–काम, क्रोध आदि विकारों से मुक्त होकर समाधि भाव में रमण करने पर परम शान्ति की अनुभूति होना जैसे–महायोगी वीतराग भगवान की शान्त, प्रसन्न भाव मुद्रा।

–सूत्र २६२–११

5. Vridanak-rasa—The rising of the emotion of shame or bashfulness when codes of modesty and behaviour are transgressed or a secret is revealed. For example the face of a bride turns red with bashfulness when some very personal matter is revealed before elders.

6. Vibhatsa-rasa—It is evoked when looking at or hearing about an abhorrent thing. For example the scene of vultures pecking at a decaying corpse of an animal fills one with disgust.

7. Hasya-rasa—To laugh at some thing strange and comic. For example a woman, smears lamp-black on the cheeks of the sleeping younger brother of her husband. When he wakes up she laughs loudly looking at his face.

8. Karun-rasa—It is the pain of separation from the loved ones expressed by lamenting or crying. For example on death of a young man the wailing of his wife, mother, and others evokes the emotions of karuna.

9. Prashant-rasa—It is the experience of ultimate peace when one is absorbed in profound meditation (*samadhi*) after freeing himself of passions like lust and anger. For example the serenity and radiance on the face of the detached and great yogi Tirthankar.

—*Sutra : 262-11*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(९) पियविप्पयोग–बंध–वह–वाहि–विणिवाय–संभमुप्पन्नो।

सोइय–विलविय–पव्वाय–रुन्नलिंगो रसो कलुणो॥७८॥

२६२. (९) निर्दोष प्रिय (पति, पुत्र आदि स्वजन) के वियोग, बंध, वध, व्याधि, विनिपात–पुत्रादि के मरण एवं संभ्रम–परचक्रादि के भय आदि के कारण करुणरस उत्पन्न होता है। शोक, विलाप, म्लानता, मुँह सूखना और रुदन आदि करुणरस के लक्षण हैं।।७८॥

कलुणो रसो जहा–

पज्झातकिलामिययं बाहागयपप्पुयच्छियं बहुसो।

तस्स वियोगे पुत्तिय ! दुब्बलयं ते मुहं जायं॥७९॥

करुणरस का उदाहरण–(माता या सास कहती है)–हे पुत्रि ! प्रियतम के वियोग में अत्यधिक चिन्ता से क्लान्त–मुर्झाया हुआ और आँसुओं से भीगी आँखों वाला तेरा मुख दुर्बल हो गया है।।७९॥

8. KARUN-RASA

262. (9) The *Karun-rasa* (pathos or tragic sentiment) is caused by separation from the beloved (husband, son, etc.) confinement, killing, ailment, death (of husband, son, etc.) and fear. It is characterized by sorrow, lamenting, gloom, nervousness, and wailing. (78)

The example of *Karun-rasa* (pathos or sentiment of sorrow) is—

(Mother or an elderly lady says to a young girl—) O daughter ! The fatigue of excessive brooding triggered by separation from the beloved and tear-filled eyes have deprived your face of its healthy glow. (79)

९. प्रशान्त रस

(१०) निद्दोसमण–समाहाणसंभवो जो पसंतभावेणं।

अविकारलक्खणो सो रसो पसंतो त्ति णायव्वो॥८०॥

२६२. (१०) निर्दोष मन की समाधि (स्वस्थता और एकाग्रता) से और प्रशान्त भाव से शान्त रस उत्पन्न होता है। अविकार उसका लक्षण है।।८०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पसंतो रसो जहा–

सब्भावनिव्विकारं उवसंत–पसंत–सोमदिट्ठीयं।

ही ! जह मुणिणो सोहति मुहकमलं पीवरसिरीयं।।८१।।

प्रशान्त रस का उदाहरण–स्वभाव से विकार रहित, प्रशान्त, सौम्य दृष्टि युक्त और पुष्ट कान्ति वाला मुनि का मुख कमल की तरह अतीव सुशोभित हो रहा है।।८१॥

9. PRASHANT-RASA

262. (10) The *Prashant-rasa* (sentiment of serenity) is the consequence of the *samadhi* (profound meditation) of an unblemished mind and absolute serenity. It is characterized by absence of perversion. (80)

The example of *Prashant-rasa* (sentiment of serenity) is—

The radiant face of the sage with pacifying eyes, whose mind is tranquil and free of any aberrations, looks resplendent like a blooming lotus. (81)

(११) एए नव कव्वरसा बत्तीसादोसविहिसमुप्पण्णा।

गाहाहिं मुणेयव्वा हवंति सुद्धा व मीसा वा।।८२॥

से तं नवनामे।

२६२. (११) ये नव काव्यरस अलीक (असत्य), निरर्थक आदि बत्तीस दोष विधियों से उत्पन्न होते हैं, इन्हें उपर्युक्त गाथाओं से जानना चाहिए। ये रस किसी काव्य में कहीं शुद्ध (अमिश्रित) भी होते हैं और किसी में मिश्रित (अनेक रसों के मिश्रण से) भी होते हैं।।८२॥

नवनाम का निरूपण पूर्ण हुआ।

262. (11) These nine sentiments of poetry, which have their origin in thirty two kinds of faults (including falsity and the senseless) are to be known through the aforesaid verses. In some poem they are found to be pure (one single sentiment) and in others mixed (a mixture of more than one sentiment) as well. (82)

This concludes the description of *No nama* (Nine-named).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवेचन–काव्य शास्त्र में नवरसों में प्रत्येक के चार भाव बताये गये हैं। रसों की उत्पत्ति, अनुभूति और अभिव्यक्ति में भाव, विभाव, अनुभाव आदि की विस्तृत चर्चा काव्य ग्रन्थों में मिलती है। जिसकी तालिका इस प्रकार है–

रस	स्थायीभाव	संचारीभाव	विभाव	अनुभाव
(१) शृंगार	रति	जुगुप्सा, आलस्य आदि	ऋतु, माला, आभूषण आदि	मुस्कराहट, मधुरवचन, कटाक्ष आदि
(२) हास्य	हास	लज्जा, निद्रा, असूया आदि	विकृत आकृति, वाणी, वेश आदि	स्मित, हास आदि
(३) करुण	शोक	निर्वेद, मोह, दीनता आदि	इष्ट वियोग, अनिष्ट संयोग आदि	दैवोपलम्भ, निःश्वास, स्वरभेद
(४) रौद्र	क्रोध	उग्रता, मद, चपलता आदि	असाधारण अपमान, कलह, विवाद आदि	नथुने फुलाना, होठ फड़फड़ाना, कनपटी फड़कना आदि
(५) वीर	उत्साह	गर्व, धृति, असूया, अमर्ष आदि	प्रतिनायक का अविनय, शौर्य, त्याग आदि	धैर्य, दानशीलता, वाग्दर्प आदि
(६) भयानक	भय	त्रास, चिन्ता आवेग आदि	गुरु या राजा का अपराध, भयंकर रूप देखना, भयंकर शब्द सुनना आदि	शरीर कम्पन, घबराहट, होठ सूखना कण्ठ सूखना आदि
(७) बीभत्स	जुगुप्सा	अपस्मार, दैन्य, जड़ता	घृणास्पद तथा अरुचिकर वस्तु का दर्शन आदि	अंगसंकोच, थूकना, मुँह फेरना आदि
(८) अद्‌भुत	विस्मय	वितर्क, आवेग, औत्सुक्य आदि	दिव्य वस्तु का दर्शन, देवागमन, माया, इंद्रजाल आदि	नेत्र विस्तार, निर्निमेष दर्शन, भ्रूक्षेप, रोमांच आदि
(९) शान्त	शम	धृति, हर्ष, निर्वेद आदि	वैराग्य, संसारभय, तत्त्वज्ञान आदि	यम–नियम पालन, अध्यात्म–शास्त्र चिन्तन आदि
(१०) वत्सल	वात्सल्य	हर्ष, गर्व, उन्माद आदि	शिशु–दर्शन आदि	स्नेहपूर्वक देखना, हँसना, गोद लेना आदि
(११) भक्ति	ईश्वर-विषयक प्रेम	हर्ष, औत्सुक्य, निर्वेद, आदि	राम, कृष्ण, महावीर आदि	नेत्र विकास, गद्‌गद् वाणी, रोमांच आदि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Elaboration—There are said to be four *bhaavas* (states) of each of these nine sentiments—*sthayi-bhaava* (emotion), *sanchari-bhaava* (transitional state or moods), *vibhaava* (apparent cause), *anubhaava* (gesture). Detailed discussion about rising, experience, and expression of rasas (sentiments) is available in works of poetics. Here the names are given in tabulated form—

rasa (sentiment)	sthayi-bhaava (emotion)	sanchari-bhaava (mood)	vibhaava (apparent cause)	anubhaava (gesture)
(1) *Shringar*	*rati* (erotic)	loathing, lethargy, etc.	season, garland, ornaments, etc.	smile, sweet words, flirtatious glance, etc.
(2) *Hasya*	*hasya* (humour)	bashfulness, sleep, jealousy, etc.	distorted shape, speech, dress, etc.	smile, laughter, etc.
(3) *Karun*	*shoka* (pathos)	detachment, fondness, humility, etc.	distance from the desired, proximity with undesired, etc.	blaming fate, gasp, loss of speech, (etc.)
(4) *Raudra*	*krodh* (rage)	agitation, pride, infirmity, etc.	great insult, quarrel, argument, etc.	flaring of nostrils, trembling of lips, and temples, etc.
(5) *Vira*	*utsaha* (zeal)	pride, patience, jealousy, anger, etc.	misbehavior of antagonist, valour, sacrifice, etc.	patience, altruism, boasting, etc.
(6) *Bhayanak*	*bhaya* (fear)	distress, worry, excitement, etc.	crime by guru or king, horrifying form, horrifying sound, etc.	trembling, nervousness, drying of lips and throat, etc.
(7) *Vibhatsa*	*jugupsa* (loathing)	epilepsy, humility, torpor, etc.	seeing loathsome and ugly things, etc.	flinching, spitting, turning away, etc.
(8) *Adbhut*	*vismaya* (wonder)	argument, excitement, curiosity, etc.	divine vision, appearing of a god, illusion, magic, etc.	widening of eyes, staring, frowning, thrill, etc.
(9) *Shant*	*sham* (tranquillity)	patience, joy, detachment, etc.	detachment, fear of rebirth, knowledge of fundamentals, etc.	observing yogic conduct, philosophical contemplation, etc.
(10) *Vatsal*	*vatsalya* (affection)	joy, pride, frenzy, etc.	seeing a child, etc.	affectionate glance, laughing, taking the child in lap, etc.
(11) *Bhakti*	love for God	joy, curiosity, detachment, etc.	Rama, Krishna, Mahavir, etc.	widening of eyes, faltering speech, exhilaration, etc.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रस्तुत सूत्र में बताये गये नव रसों के नाम, उत्पत्ति स्थान और लक्षणों की तालिका इस प्रकार है–

रस	उत्पत्ति	लक्षण
वीर	परित्याग, तपश्चरण, शत्रुविनाश	अपश्चात्ताप, धैर्य, पराक्रम
शृंगार	रति, संयोग की अभिलाषा	विभूषा, विलास, कामचेष्टा, हास्य, लीला और रमण
अद्‌भुत	अपूर्व और अनुभूतपूर्व वस्तु	हर्ष और विवाद
भयंकर	भयंकर रूप आदि, अंधकार, चिन्ता और भयंकर कथा	संमोह, संभ्रम, विषाद और मरण
व्रीड़नक	गुह्य और गुरुस्त्री की मर्यादा का अतिक्रमण	लज्जा, शंका
बीभत्स	अशुचि पदार्थ, शव, अनिष्ट दृश्य और दुर्गंध	निर्वेद और जीव हिंसा के प्रति होने वाली घृणा
हास्य	रूप, वय, देश और भाषा आदि का विपर्यय	मुख, नेत्र का विकास
करुण	प्रिय–वियोग, वध, बंध, विनिपात, व्याधि और संभ्रम	शोक, विलाप, म्लानता और रोदन
शान्त	एकाग्रता और प्रशान्त भाव	अविकार

The table of the name, origin, and characteristics of nine rasas (sentiments) mentioned in this aphorism are as follows—

Rasa	**Origin**	**Characteristics**
Vira	renunciation, austerities, destruction of enemies	non-repentance, patience, valour
Shringar	indulgence, desire for union	adornment, erotic gestures, sexual act, laughter, merriment, and amorous dalliance.
Adbhut	novelty and unique experience	joy and sorrow
Raudra	horrendous forms, sounds, and darkness and talks of these	perplexity, alarm, sorrow, and death.
Vridanak	breaking code of secrecy and modest behaviour with respectable women	shame and apprehension

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Vibhatsa	filth, corpse, and obnoxious things	detachment, disgust, and apathy for violence
Hasya	paradox or bizarreness of form, age, dress, and language	brightening of the face and eyes
Karun	separation from beloved, confinement, killing, ailment, death, and fear	sorrow, lamenting, gloom, nervousness, and wailing
Prashant	concentration and complete serenity	absence of perversion

बत्तीस दोष–

सूत्र २६२/११ की व्याख्या में काव्य के बत्तीस दोषों का उल्लेख है, परन्तु उनका विवरण यहाँ नहीं दिया है। स्वर मंडल प्रकरण में भी बत्तीस दोषों का उल्लेख है। वहाँ टीकाकार में इनका संकेत किया है। ३२ दोष सार रूप में इस प्रकार हैं–

(१) असत्य प्रतिपादन	(२) हिंसाकारक प्रतिपादन
(३) अर्थशून्य केवल शाब्दिक संरचना	(४) असंबद्ध प्रतिपादन
(५) छलयुक्त प्रतिपादन	(६) द्रोहपूर्ण उपदेश
(७) निस्सारता	(८) आवश्यकता से अधिक अक्षर और पद
(९) अपेक्षित अक्षरों और पदों से हीन	(१०) पुनरुक्ति
(११) व्याहत पूर्वापर विरोध	(१२) युक्ति-शून्यता
(१३) व्युत्क्रम	(१४) वचन-व्यत्यय
(१५) विभक्ति-व्यत्यय	(१६) लिंग-व्यत्यय
(१७) स्वसिद्धान्त में अनुपदिष्ट	(१८) अपद-किसी अन्य छंद के अधिकार में अन्य छंद का कथन
(१९) स्वभाव हीन	(२०) व्यवहित
(२१) कालदोष-काल का व्यत्यय	(२२) यतिदोष-अस्थान में विराम
(२३) छविदोष-अलंकार शून्यता	(२४) समयविरुद्ध-स्वसिद्धान्त के विरुद्ध
(२५) वचनमात्र-निर्हेतुक	(२६) अर्थापत्ति दोष
(२७) असमास दोष	(२८) उपमा दोष
(२९) रूपक दोष	(३०) निर्देश दोष
(३१) पदार्थ दोष	(३२) सन्धि दोष।

(देखें–बृहत्कल्पभाष्य भाग प्रथम, गाथा २७८ से २८१ की वृत्ति तथा ज्ञान मुनि कृत हिन्दी टीका भाग २ पृ. २८८ से २९०। नवरसों का विस्तृत वर्णन भी इसी भाग २ में पृ. ३०७ पर देखा जा सकता है।)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

THIRTY TWO FAULTS

In the elaboration of aphorism 262/11 there is a mention of 32 faults but their details have not been given. In the discussion about circle of musical sounds these 32 faults also find a mention. Brief information about these faults is as follows—

(1) To propagate false concepts.

(2) To propagate violent concepts.

(3) Meaningless composition of word.

(4) Incongruent propagation

(5) To propagate deceitful concepts.

(6) Hostile preaching.

(7) Worthlessness.

(8) More then required syllabus and stanzas.

(9) Devoid of desired syllables and stanzas.

(10) Repetitiveness.

(11) Disturbing contradiction of sequence.

(12) Absence of logic.

(13) Disorder.

(14) Discrepancy of words.

(15) Discrepancy of inflection.

(16) Discrepancy of gender.

(17) Beyond one's faith.

(18) Metrical discrepancy.

(19) Devoid of intrinsic characteristics.

(20) Concealed or isolated.

(21) Discrepancy of period.

(22) Discrepancy of pause.

(23) Absence of ornamentation or rhetoric.

(24) Contradiction of one's on theory.

(25) Without cause and reason.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(26) Faulty use of double meaning.

(27) Avoiding compounding where required.

(28) Faulty metaphor.

(29) Faulty allegory.

(30) Faulty instruction.

(31) Faulty meaning.

(32) Faulty coalescence or compounding.

(for more details refer to Brihatkalpabhashya, vritti of verses 278-281; Tika of Anuyogadvara Sutra by Shri Jnana Muni, part-2, p. 288-290. Detailed description of nine rasas is also available in the same part-2, p. 307)

सचित्र अनुयोगद्वार सूत्र प्रथम भाग समाप्त

END OF ILLUSTRATED ANUYOGADVARA SUTRA FIRST PART

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उपप्रवर्त्तक
श्री अमर मुनि

प्रस्तुत सूत्र के सम्पादक श्री अमर मुनि जी, श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमणसंघ के एक तेजस्वी संत हैं। आपकी वाणी में जादू है। श्रोता जब आपश्री के मुख से जिनवाणी का रसास्वाद करते हैं तो झूमने लग जाते हैं।

जिनवाणी के परम उपासक गुरुभक्त श्री अमर मुनि जी का जन्म वि. सं. १९९३ भादवा सुदि ५ (सन् १९३६), क्वेटा (बलूचिस्तान) के मल्होत्रा परिवार में हुआ।

११ वर्ष की लघुवय में आप जैनागम रत्नाकर आचार्यसम्राट श्री आत्माराम जी महाराज की चरण-शरण में आये और आचार्यदेव ने अपने प्रिय शिष्यानुशिष्य भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी महाराज को इस रत्न को तराशने/सँवारने का दायित्व सौंपा। गुरुदेव श्री भण्डारी जी महाराज ने अमर को सचमुच अमरता के पथ पर बढ़ा दिया। आपने संस्कृत-प्राकृत-आगम-व्याकरण-साहित्य आदि का अध्ययन करके एक ओजस्वी प्रवचनकार, तेजस्वी धर्म-प्रचारक तथा जैन आगम साहित्य के अध्येता और व्याख्याता के रूप में जैन समाज में प्रसिद्धि प्राप्त की।

आपश्री ने भगवती सूत्र (४ भाग), प्रश्नव्याकरण सूत्र (२ भाग), सूत्रकृतांग सूत्र (२ भाग) आदि अनेक आगमों की सुन्दर विस्तृत व्याख्याएँ की हैं। आगम साहित्य का सचित्र प्रकाशन करने की अभिनव अद्वितीय संकल्पना की है।

UP-PRAVARTAK SHRI AMAR MUNI

The editor-in-chief of this Sutra, is a brilliant ascetic affliated with Shri Vardhaman Sthanakvasi Jain Shraman Sangh. He is endowed with a maganetic style of oration. When masses listen to the tenets of Jina they are spellbound.

A great worshiper of the tenets of Jina and a devotee of his Guru, Shri Amar Muni Ji was born in a Malhotra family of Queta (Baluchistan) on Bhadva Sudi 5th in the year 1993 V.

He took refuge with Jainagam Ratnakar Acharya Samrat Shri Atmaram Ji M. at an immature age of eleven years. Acharya Samrat entrusted his dear grand-disciple, Bhandari Shri Padmachandra Ji M. with the responsibility of cutting and polishing this raw gem. Gurudev Shri Bhandari Ji M. indeed, put Amar (immorta) on the path of immortality. He studied Sanskrit, Prakrit, Agams, Grammar and Literature to gain fame in the Jain society as an eloquent orator, an effective religions preacher and a scholar and interpreter of Jain Agam literature.

He has written nice and detailed commentaries of Bagavati Sutra (in four parts), Prashnavyakaran Sutra (in two parts), Sutrakritanga Sutra (in two parts) and some other Agams. He is the one who came out with the unique concept of the

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विश्व में पहली बार जैन साहित्य के इतिहास में एक नया शुभारम्भ

सचित्र आगम : हिन्दी एवं अंग्रेजी अनुवाद के साथ

For the first time in the history of Jain Literature a unique beginning Illustrated Agams With Hindi and English Translations

सचित्र उत्तराध्ययनसूत्र

(Illustrated Uttaradhyayan Sutra) **Rs. 500.00**

भगवान महावीर की अन्तिम वाणी अत्यन्त शिक्षाप्रद, ज्ञानवर्द्धक जीवन सन्देश।

The last sermon of Bhagavan Mahavir. Inspiring and enlightening teachings.

सचित्र अन्तकृद्दशासूत्र

(Illustrated Antakriddasha Surtra) **Rs. 500.00**

अष्टम अंग। ९० मोक्षगामी आत्माओं का तप-साधना पूर्ण रोचक जीवन वृत्तान्त।

The eighth Jain canon (Anga). Inspiring stories of the spiritual pursuits of 90 great men destined to be liberated.

सचित्र कल्पसूत्र *(Illustrated Kalpa-Sutra)* Rs. 500.00

पर्युषण पर्व में पठनीय २४ तीर्थंकरों का जीवन-चरित्र व स्थविरावली आदि का वर्णन। रंगीन चित्रमय।

Most suited for study during the Paryushan Parva. The biographies of the 24 Tirthankars along with the chronological list of the Sthavirs of the post Mahavir Jain tradition. Multicolored illustrations.

सचित्र ज्ञाता धर्म कथांगसूत्र (भाग १, २) Rs. 1000.00

(Illustrated Jnata Dharma Kathang Sutra, Part 1 & 2)

भगवान महावीर द्वारा कथित बोधप्रद दृष्टान्त एवं रूपकों आदि को सुरम्य चित्रों द्वारा सरल सुबोध शैली में प्रस्तुत किया गया है। दोनों भाग १०००/-.

Famous inspiring and enlightening tales told by Bhagavan Mahavir presented with colorful illustrations in this unique and attractive edition of the sixth Jain canon.

सचित्र दशवैकालिकसूत्र

(Illustrated Dashavaikalik Sutra) **Rs. 500.00**

जैन श्रमण की सरल आचार संहिता : जीवन में पद-पद पर काम आने वाले विवेकयुक्त, संयत व्यवहार, भोजन, भाषा, विनय आदि की मार्गदर्शक सूचनाएँ। आचार विधि को रंगीन चित्रों के माध्यम से आकर्षक और सुबोध बनाया गया है।

The simple rule book of Shraman conduct rendered vividly with the help of colorful illustrations. Useful at every step in life, even for common man, as a guide book for good behavior, balanced conduct, and norms of etiquette, food and speech.

सचित्र श्री नन्दीसूत्र

(Illustrated Sri Nandi Sutra) **Rs. 500.00**

मतिज्ञान-श्रुतज्ञान आदि पाँच ज्ञान का सर्वांग पूर्ण विवेचन चित्रों सहित।

All enveloping discussion of the five facets of knowledge including Mati-Jnana and Sruta Jnana.

सचित्र आचारांग सूत्र (भाग १, २)

(Illustrated Acharanga Sutra-Part 1&2) **Rs. 1000.00**

आचारांग सूत्र भगवान महावीर के दर्शन का आधारभूत प्रथम अंग सूत्र है।

Acharanga Sutra is the first Anga Sutra, the foundation of Bhagavan Mahavir's philosophy.

सचित्र उपासक दशा एवं अनुत्तरौपपातिक दशा सूत्र

(Illustrated Upasak Dasha and Anuttaraupapatik-Dasha Sutra) **Rs. 500.00**

१० श्रावकों तथा ३३ श्रमणों की तपःसाधना का वर्णन।

Description of Spiritul and ascetic practices of 10 Shravaks and 33 Shramans.

सभी सचित्र आगमों के सम्पादक वाणी भूषण उपप्रवर्तक श्री अमर मुनि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org